निजानन्द मीमांसा

लेखक

पं० श्याम सुन्दर त्रिवेदी

प्रकाशक

श्री स्वामी ऋषि कुमार

ऋषि कुञ्जाश्रम सत्सङ्ग समिति

पञ्चमठ रीवा (म० प्र०)

सन् १९७[illegible]] [मूल्य १० रुपया

निजानन्द मीमांसा

प्रणेता

पं० श्री श्याम सुन्दर त्रिवेदी

वसिष्ठ गोत्री

मु० पो० कपसा, रीवा (म० प्र०)

प्रकाशक

श्री स्वामी ऋषि कुमार जी

सहायक प्रकाशक

श्री अनसूया प्रसाद त्रिपाठी

एम० ए० (संस्कृत)

प्रकाशन काल

विक्रमाब्द २०३०

प्रथम·संस्करण १०००] [मूल्य १० रुपया

ॐ श्री परमात्मने नमः

निजानन्द मीमांसा

स्वल्प निवेदन

इस पुस्तिका मे निजानन्द संप्रदाय, जिसको (प्रणामी) संप्रदाय भी कहते हैं उस पर विचार किया गया है। इसमे देश और समाज के हित की भावना निहित है यह सत्य की कसौटी अध्यात्म ज्ञान की पराकाष्ठा है। इसमे जगत, जीव, ईश्वर इन तीनों पर दार्शनिक दृष्टिकोण से गंभीर विचार किया गया है। इसे पढ़ने मात्र से हृदय का अज्ञानान्धकार दूर हो जाता है और पाठकों को दिव्य सत्य ज्ञान की अनुभूति होने लगती है।

निजानन्द सम्प्रदाय के प्रवर्तक स्वामी प्राणनाथ जी की रचनाओं को देखकर प्रायः सभी मनुष्य भ्रम में पड़ जाया करते थे आज तक इस भ्रम को किसी ने दूर नहीं किया। इस ग्रन्थ में स्वामी जी के विभिन्न वचना वलियों के अर्थ का एकीकरण करके गोपनीय ज्ञान को प्रगट कर दिया है। इस पुस्तक के आधार से पढ़ने वाले जिज्ञासुओं के लिये कुलजम स्वरूप के मूल धार्मिक तत्वों का सम्यक् बोध कराने के लिये यह कुन्जी का काम करेगी। कुरान, पुराण के गुह्य अर्थ को खोलने की कुन्जी प्राणनाथ जी ने प्रात की थी। किन्तु तारतम वाणी के गुह्य अर्थ को खोलने की कुन्जी निजानन्द मीमांसा नामक ग्रन्थ है। इसलिये यह कह देना अनुचित न होगा कि इस पुस्तक का दूसरा नाम-तारतम वाणी की कुन्जी भी है। जब कि इस संप्रदाय के विभिन्न ग्रन्थ हैं तब इस पुस्तिका के लिखने की क्या आवश्यकता है। उन विभिन्न ग्रन्थों से साधारण पढ़े लिखे हुये मनुष्य को उसकी वास्त-

विकता का ज्ञान नहीं होता । अतः इस ग्रन्थ मे उनके मूलभूत सिद्धान्तों का संकलन कर सत्यता पर विचार किया गया है ।

जिससे जिज्ञासुओं को अनायास ही सम्यक बोध हो जाय । प्रथम पूर्वार्ध भाग मे संप्रदाय प्रवर्तक का जीवन चरित्र तथा उनके धार्मिक कल्पना का मूल सृजन आचार्य का धार्मिक विकास के लिये यत्र तत्र भ्रमण । उत्तरार्ध भाग मे संप्रदाय के मूल सिद्धान्तों के आधार पर उसकी वास्तविकता पर विचार किया गया है । पुस्तक लिखते समय इनके कुछ धार्मिक ग्रन्थ भी उपलब्ध थे । इस संप्रदाय के उपदेशको इल्मियों से कुछ काल तक हमारा सम्पर्क बना रहा जिससे बहुत कुछ बातें अवगत होती रही ।

ये लोग अपने को कृष्णोपाशक भी कहते हैं । किन्तु ये ११ वर्ष ५२ दिन की अवस्था तक ही कृष्ण की उपासना करते हैं कृष्ण गोकुल छोड़ कर जब मथुरा द्वारिका चले जाते हैं तब उन्हें विष्णु का अवतार मान कर अपूज्य मानते हैं । इनके ग्रन्थों के अध्ययन से पता लगता है कि न तो ये कृष्ण के ही उपासक हैं और न इस्लाम मत के ही । इन्होंने अपनी सनंध नामक पुस्तक प्रकर्ण २ चौपाई ३ मे लिखा है । करना सारा एक रस हिन्दु या मुसलमान धोखा सबका भान के सबका कहूँगी ज्ञान ३ । अतः इनकी वास्तविकता कुछ और ही है । ये दोनों हिन्दू और इस्लाम के बीच अपनी पूज्य भावना को लेकर एक नवीन संप्रदाय कायम कर संसार मे अपना गौरव चाहते हैं । राजनैतिक क्षेत्र मे भी दोनों दीनों की एकता की भावना वाला विचार नहीं पाया जाता । ये तो दोनों में दीन हीन अशिक्षित जनो पर अपना प्रभाव डालते हुए संप्रदाय में दीक्षित करते हुये देखे जाते हैं । यवनों के पास फकीर का भेष तथा हिन्दुओं के बीच साधु का भेष तिलक माला धारण किये हुये पाये जाते हैं । वर्तमान में इनकी ऊपरी रहन सहन कुछ हिन्दुओं से मिलती है किन्तु आन्तरिक धार्मिक दृष्टि कोण में पूर्ण रूपेण इनका मत इस्लाम धर्म से ही सम्बन्धित है । हमारे ग्रन्थ लिखने

का कारण यही है कि इस मत के जितने भी धार्मिक सिद्धान्त हैं वे सब वैदिक सिद्धान्त के विरुद्ध है। धर्म प्रवर्तक ने लिखा है कि मै वेद धर्म छीनने के लिये संसार मे आया हूँ (धनी आये वेद छुड़ावने) इस तरह इनके अनेक वाक्य है जो हिन्दू समाज के लिये खटकते हैं उन्हीं मिथ्याबादों पर इस ग्रन्थ मे आलोचनात्मक 'विचार किया गया हैं। पाठको को बहुत कुछ बाते इस पुस्तिका के आदि से अन्त तक पढ़ने से या इनके धार्मिक ग्रन्थों के देखने से स्पष्ट हो जायगा। इनके पढ़ने से उन्ही ब्यक्तियों को लाभ होगा जो इस संप्रदाय के रहस्य को समझने की जिज्ञासा रक्खेगे और जो इस सम्प्रदाय मे दीक्षित हैं वे यदि अपनी परम्पराओं और अंधविश्वासक को छोड़ कर अपनी बौद्धिक शक्ति के द्वारा वास्तविकता पर विचार करेंगे। जो लकीर के फकीर और अंधविश्वासी होंगे वे लाभ नहीं उठा सकते उनके लिये कटु भी हो सकता है (अप्रियस्य च सत्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः) मैं अपनी आन्तरिक भावना को संसार में ब्यक्त कर देना चाहता हूँ।

अस्तु पाठको से निवेदन है कि सत पथ अपनाने के लिये अल्पकालीन परम्पराओं व अंधविश्वास को त्याग कर निष्पक्ष हो सत असत वस्तु का विवेक करे तभी मै अपना श्रम सफल मानूँगा।

—लेखक

दो शब्द

ग्रन्थ की रचना समाप्त होने पर यह आवश्यकता समझी गई कि किसी विद्वान् महापुरुष द्वारा इसका संशोधन कार्य कराया जाकर उनसे ग्रन्थ प्रकाशन की आज्ञा प्राप्त की जाय। इस उद्देश्य को लेकर पहले मैं। चित्रकूट समीपस्थ धार कूँड़ी महाराज से मिला। इन्होंने ग्रन्थ को प्रकाशित करने की आज्ञा तो दे दिया किन्तु संशोधन कार्य के लिये श्री स्वामी ऋषि कुमार, ऋषि कुन्जाश्रम, पंच मठ, रीवा के लिये परामर्श दिया। मैं रीवा आकर आश्रम मे स्वामी जी से मिले। ग्रन्थ सम्बन्धी बातें करने पर वे बहुत प्रसन्न हुगे और संशोधन करा देने को स्वीकार कर लिया।

स्वामी जी ने अपना जप तप समाधि कार्य छोड़ कर अनवरत २० योम तक अपनी तपस्थली गुफा सून-सान स्थान में बैठ कर एकाग्रचित्त हो ग्रन्थ का संशोधन कार्य कराया और ग्रन्थ को प्रकाशित करने की आज्ञा प्रदान किया।

स्वामी जी अपना समाधि का कार्य त्याग कर अथक परिश्रम करते हुये इस धार्मिक कार्य के करने मे जो अपना अमूल्य समय दिया है उनका मै सदैव के लिये आभारी हूं।

—लेखक

प्राक्कथन

स्वामी ऋषि कुमार

ऋषि कुंजाश्रम—पंच मठ रीवा (म० प्र०)

गुरु पूर्णिमा विक्रमाब्द २०३०

निशा मुखेषु खद्योता स्तमसा भान्ति न ग्रहाः ।
यथा पापेन पाषण्डा । नहि वेदाः कलौ युगे ।। भागवत १०-२०-८

मार्गा वभूवुः सन्दिग्धा स्तृणै श्छन्ना ह्यसंस्कृताः ।
नाभ्यस्य मानाः श्रुतयो द्विजैः काल हता इव ।। भा० १०-२०-१६

कृष्ण पक्ष की संध्या में खद्योत चमकते हैं चन्द्र सूर्यादि ग्रह नहीं । यथा कलियुग में पाप के कारण पाषण्ड मत अधिक चमकते हैं वेद नहीं । वर्षा ऋतु मे तृण से आच्छन्न और असंस्कृत हो जाने के कारण मार्ग सन्दिग्ध हो जाते हैं । यथा द्विजों के द्वारा अभ्यास न किये जाने पर और बहुत काल बीत जाने पर श्रुतियाँ विस्मृत हो जाती हैं ।

निसितम घन खद्योत विराजा, जनु दम्भिन कर जुरा समाजा ।

हरित भूमि तृण संकुल समुझि परै नहिं पन्थ ।
जिमि पाषंड विवाद ते लुप्त होहिं सद् ग्रन्थ ।। रामचरित मानस

पण्डित श्री श्याम सुन्दर तिवारी द्वारा प्रणीत प्रस्तुत ग्रन्थ, स्वामी श्री प्राणनाथ द्वारा प्रणीत चतुर्दश ग्रन्थ समुच्चय तारतम वाणी या कुलजम सरूप ग्रन्थ तथा उनके द्वारा प्रवर्तित सम्प्रदाय प्रणामी धर्म की अत्यन्त विद्वतापूर्ण सची समालोचना है । पण्डितजी उनका कुटुम्ब और प्रायः समूचा

ग्राम इसी धर्म मे दीक्षित है। अतः वे इस धर्म की सभी अन्तरङ्ग और बहिरङ्ग बातों को अशेषतः जानते हैं, सुतरां उन्हें इस विषय पर विचार करने का पूर्ण अधिकार है। पण्डित जी के इस ग्रन्थ को मैं अत्यन्त कौतूहल के साथ आद्योपान्त अक्षरसः श्रवण करके सहर्ष प्रकाशन की अनुमति प्रदान किया हूं। और बीच-बीच मे समुचित संशोधन करके अर्वाचीन विचारधारा को ध्यान में रखते हुये उपादेय बनाने का प्रयास भी किया हूँ।

इस प्रसङ्ग मे पण्डितजी की मीमांसा को समझने और उसके यथा तथ्य की प्रमाणिकता को जानने के लिने मुझे अत्यन्त कठोर श्रम करके श्री प्राणनाथ जी की १६१२ पृष्ठो की तारतम वाणी नामक बृहद् ग्रन्थ माला को समाहित चित्त से अध्ययन करना पड़ा है। तत्पश्चात् अब मैं निष्पक्ष और सच्चे हृदय से यह बात कह सकता हूं कि पण्डित जी की पुस्तिका के प्रत्येक शब्द राग द्वेश विहीन विशुद्ध सत्य के शोधक और प्रतिपादक है। अप्रियस्य च सत्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः। अप्रिय सत्य का वक्ता और समबुद्धि वाला उसका श्रोता लोक में दोनो दुर्लभ हैं। अतः पण्डित जी का यह ग्रन्थ दुर्लभ और प्रणामी धर्मानुयायिओं द्वारा अवश्य पठनीय, मननीय एवं अनुकरणीय है।

"न विरुद्ध कथा रुचिः"—मेरी भी किसी की विरुद्ध कथा में कोई रुचि नहीं है। पण्डित जी के अनुरोध की रक्षा करने के लिये मेरी लेखनी द्वारा इस सन्दर्भ में जो भी शब्द चुम्बित हुये हैं वे श्री प्राणनाथ जी द्वारा रचित निम्न चतुर्दश ग्रन्थ समुच्चय (तारतम वाणी) द्वारा आद्योपान्त पदे पदे प्रमाणित हैं, भले ही मैं विस्तार भय से उन सब वाक्यों को ऊद्धृत न कर सकूँ :—(१) रास (२) प्रकाश (३) षटरुती (४) कलस (५) सनंध (६) किरन्तन (७) खुलासा (८) खिलवत (६) परिकर्मा (१०) सागर (११) सिनगार (१२) सिन्धी (१३) मारफत सागर (१४) क्यामतनामा।

इन ग्रन्थों की [illegible] से [illegible] प्रतिशत भाषा उर्दू अरबी है और पाद टीका

में दिये गये शब्दार्थों की सहायता से ही मैं उनका कुछ मर्म समझ सका हूं। इस्लाम ईसाई बौद्ध संसार के सभी धर्म अपने जगह पर उनके मतावलम्बियों के लिये ठीक हैं इनके विरुद्ध मुझे कुछ नहीं कहना है। इस सम्बन्ध में कुछ कहना केवल तभी अनिवार्य हो जाता है जब एक धर्म का आचार्य अपने धर्म को सर्वोत्तम और दूसरे के धर्म को निकृष्टतम बताकर अन्य धर्मावलम्बियों को छल पूर्वक धोखा देकर स्वधर्म मे दीक्षित करने का प्रयत्न करता है। पुराकाल से लेकर आज तक कभी किसी हिन्दू महात्मा और आचार्य ने यह जघन्य पाप नहीं किया। किन्तु इस्लाम और ईसाई धर्मानुयायी मौलवी और पादरियों ने सदा ही हिन्दू धर्म को अपना शिकार और निशाना बनाया हैं। तथा आज भी बना रहे हैं। इतिहास के पन्ने इन उदाहरणों से भरपूर है। इसके लिए भी मैं मौलवी और पादरियों को दोष न देकर हिन्दू धर्मानुयायिओं को ही उनकी अपनी आन्तरिक दुर्बलता के लिए उन्हें दोष देता हूँ। दुर्भाग्य-बस हिन्दू धर्मानुयायी प्रजा कपट मृग को असली स्वर्ण मृग मानो कर उसके पीछे अन्धों की भाँति बिना बिचारे दौड़ पड़ती है और ठगी जाती हैं। इसे बिधि विडम्बना के सिवाय और क्या कहा जाय। महात्मा गान्धी ने एक स्थल पर हिन्दू धर्म की परिभाषा मे लिखा है: – "दूसरे धर्मों की सभी अच्छी बातें जिसमे हों और जिसकी अनेकों अच्छी बातें दूसरे धर्म में न मिले वह हिन्दू धर्म है"।

हिन्दू प्रजा महाभारत के इस श्लोक को भूल गई है। न जातु कामान्न भयान्न लोभाद् धर्मंत्यजेज्जीवतस्यापि हेतोः। धर्मो नित्यः सुख दुःखे त्वनित्ये जीवो नित्यो हेतुरस्यत्वनित्यः।। कभी भी कामना से भय से लोभ से यहाँ तक की जीवन रक्षा हेतु भी स्वधर्म का त्याग नहीं करना चाहिये। धर्म नित्य है सुख-दुःख अनित्य हैं जीव नित्य है उसका हेतु अनित्य है। गीता मे भगवान ने कहा है–स्वधर्मे निधनंश्रेयः परधर्मो भयावहः। स्वधर्म में रह कर मरना भला और पर धर्म भयावह है। इसके विपरीत

गत एक हजार वर्षों से आज तक हिन्दू समाज की स्थिति ऐसी हो गई है कि मानो कलियुग केवल उन्हीं के लिये लगा हो। उसे ग्रास बनाने पर सभी तुले हुए हैं।

जलौघे निरभिद्यन्त सेतवो वर्षतीश्वरे।

पाषण्डिनामसद् वादै र्वेद मार्गाः कलौ यथा।। भागवत १०-२०-२३
मेघ वर्षने से जल वृद्धि के कारण सेतुयें भंग हो गई। यथा कलियुग में पाषण्डियो के असद् वाद से वेद मार्ग भग्न हो जाते हैं।

श्री प्राणनाथ जी ने अपने १६१२ पृष्ठों के ग्रन्थ मे आद्योपान्त श्री मोहम्मद सा० और कुरान की प्रशंसा किये हैं, कही भूल कर एक शब्द इनकी निन्दा मे नही लिखा गया है। किन्तु सहस्त्रों वार सहस्त्रों पदो मे स्थल-स्थल पर स्पष्ट शब्दो में इन्होंने वेद शास्त्र, संस्कृत भाषा, संस्कृत व्याकरण, शास्त्र प्रतिपाद्य विषय, हिन्दू जाति. हिन्दू धर्म, हिन्दू जीव, जनेऊ, चारवर्ण, हिन्दू परम्पराओं, हिन्दू देव मूर्तियों और नारायण, विष्णु आदि हिन्दू देवताओं की घोर निन्दा किया है। तथा उन्हे नीचा दिखाया हैं। राम नाम लेना और गङ्गा स्नान करना प्रणामी धर्म मे वर्जित है। इनके सम्प्रदाय में रामायण को छूना भी पाप माना गया है सुनना तो दूर रहा। इस संप्रदाय में मुर्दे गाड़े जाते हैं जलाये नहीं जाते। दूसरे सम्प्रदाय के मन्दिरों मे तो ये जाते ही नहीं। इनके मन्दिरों मे केवल मुकुट है उस मुकुट को जो भी अपने शिर पर रख ले वही इनका देवता है। इनके देवालय हैं किन्तु इनके देवता का कोई पता नहीं। मूर्ति पूजा ये मानते नहीं। इनका कहना है कि सबसे ऊँचे लोक में मोहम्मद सा० हैं। अन्य कोई अवतार वहाँ नहीं पहुँचे हैं। यह भी लिखा है कि जो महम्मद सा० को अन्य साधारण अवतारों के समान, मानता है वह मूर्ख हैं। विष्णु भगवान को एक आँख का काना गदहे पर सवार बताया गया हैं। जिस उच्च पद पर मोहम्मद सा० हैं वहाँ को जाने पर विष्णु के पैर जलने लगे और वह विवश होकर

नीचे वापस लौट आया। श्री प्राणनाथ जी ने लिखा है कि हिन्दुओं से वेद शास्त्र और जनेऊ छोड़ाने के ही लिए हिन्दू समाज में उनका आना हुआ है। मोहम्मद और कुरान को हिन्दू नहीं पहचान सके थे। इसीलिए मैं महंमद सा० प्राणनाथ के रूप मे आया हूं। यह अवतार की अन्तिम सीमा है। और कुरान एवं तारतम वाणी के बाद सारे शास्त्र बचन मनसूख-कैन्सिल कर दिये गये हैं। इसलिए उन्हे प्रमाण नहीं माना जा सकता।

ऐसी दशा में इनके धर्म और सम्प्रदाय को हिन्दू धर्म का एक अंग और शाखा भेद मानना किसी प्रकार भी मेरे समझ में नहीं आता। हिन्दू धर्म का कोई भी सम्प्रदाय वेद को अप्रामाण्य और रामायण अमान्य नहीं करता। इनके सम्प्रदाय में दीक्षित होकर जब तक कोई "मोमिन" न बन जाय, इन्होंने तब तक जीव का उद्धार नहीं माना हैं।

इन्होंने जो अपने सम्प्रदाय का नाम प्रणामी धर्म और अपना नाम प्राणनाथ रख लिया है इसी के पीछे ग्रामीण सामान्य हिन्दू जनता धोखे में आ गई है। मुझे तो इनके हिन्दू होने मे पूर्ण संदेह है। "इनका प्राणनाथ और प्रणामी धर्म" नाम हिन्दुओं को धोखा देकर स्वधर्म मे दीक्षित करने के लिए कल्पित और एक चाल मात्र मालूम पड़ती है। हिन्दुओं का भेद लेने के लिये श्री प्राणनाथ के गुरु देवचन्द्र पहले वल्लभ सम्प्रदाय में घुसे वहाँ उन्होंने कुछ दिन श्री मद्भागवत की कथा सुना। उन्होने हिन्दुओ को फुसलाने और अपने जाल में फसाने के लिए ब्रज रास प्रकरण को अपनाया तभी वे प्राणनाथ धनी श्री कृष्ण बने और अपना अलग सम्प्रदाय चलाया। ये अरब कवीलो के साथ भारत आये और हिन्दुओं का दिल दिमाक एवं दीन लूटा है। जब कि गजनवी केवल बाह्य दौलत लूटा। हिन्दुओ को आकृष्ट करने और ठगने के लिए इन्होने एक गहरी चाल और खेला है हिन्दुओ को दीक्षा देने के लिए इन्होने जो मंत्र बनाया हैं वह निम्न हैं।

निजनाम श्री कृष्ण जी, अनादि अक्षरातीत।
सो तो अब जाहिर भये, सब विध वतन सहित॥

सामान्य ग्रामीण हिन्दू जनता ने यह अर्थ लगाया कि मन्त्र में तो श्री कृष्ण का नाम है इसलिए इनका सम्प्रदाय हिन्दू धर्म का ही एक अंग है। किन्तु वास्तविक बात ऐसी नही है। इनके पूरे ग्रन्थ का अध्ययन करने से यह स्पष्ट है कि मुसलमानों के सामने ये अपने को आखरी मुहम्मद का अवतार और अपने हिन्दू भक्तों के सामने ये अपने को श्री कृष्ण का अवतार घोषित करते थे। हिन्दुओ को दिये जाने वाले ऊपर के इस मन्त्र में "निजनाम श्री कृष्ण जी" पद ध्यान देने योग्य हैं यह जो श्री कृष्ण है यह अपना ही निजनाम है, यशोदानन्दन देवकी पुत्र वृन्दावन विहारी श्री कृष्ण का वाचक वह नहीं है। मै अनादि और अक्षरातीत हूं और सब प्रकार से वतन सहित अर्थात् सशरीर साक्षात् अब जाहर या प्रकट हुआ हूँ। हिन्दू जनता को अपनी ओर आकृष्ट: कर स्वमत मे दीक्षित करने के लिए इन्होंने अपने समूचे ग्रन्थ में श्री कृष्ण, व्रज रास अनादि, और अक्षरातीत, आदि शब्दो को चुराया है वृन्दावन की गोपियाँ श्री कृष्ण को अपना प्राणनाथ मानती थी। इसलिए इन्होंने हिन्दू भक्त वनिताओ के प्राणनाथ बनने के लिए चालाकी से अपना नाम प्राणनाथ रख लिया है।

स्वामी प्राणनाथ जी का कहना है कि वृन्दावन वाले श्री कृष्ण में इन्होंने अपने तेज का संचार किया था और जब तक व्रज रास विलास करने वाले श्री कृष्ण ११ वर्ष ५२ दिन के हो गये तब तक उनमें मुझ प्राण नाथ का तेज रहा, तत्पश्चात मैं प्राणनाथ ने अपना दिव्य तेज राधा वल्लभ व्रज विलासी श्री कृष्ण से खींच लिया था और तब श्री कृष्ण एक सामान्य मानव मात्र शेष रह गये थे भगवान के अवतार नहीं। इससे स्पष्ट है कि ये अपने को श्री कृष्ण भगवान से भी बड़ा मानते थे क्योंकि इनमे भगवान श्री कृष्ण को बनाने बिगाड़ने की सामर्थ्य विद्यमान थी। श्री कृष्ण मे अपने तेज का संचार करके ये उन्हें भगवान बना सकते थे और उनसे जब इन्होंने अपना तेज वापस खीच लिया तब ११ वर्ष ५२ दिन बाद भगवान श्रीकृष्ण निस्तेज एक सामान्य मानव मात्र शेष बचे।

पाखण्ड और विडम्बना की भी आखिर एक सीमा होती है। परन्तु इन हत भागे हिन्दुओं को क्या कहा जाय जो अपना परम पवित्र वैदिक सनातन हिन्दू धर्म छोड़कर इस प्रकार के पाखण्डवाद के जाल में फँस कर स्वयं आत्म वंचना कर रहे हैं।

दक्षिण भारत की अपनी यात्रा के समय मैं ईसाई चर्चों में जाकर देखा कि अनेकों शूद्र नर नारी ललाट में चन्दन लेप कर वीरासन से ईसा मसीह का ध्यान करते हुए माला जप कर रहे हैं। असली बात यह है कि जन्म जात हिन्दुओं में माला चन्दन का पुराना संस्कार पड़ा हुआ है। इसलिए चालाक पादरियों ने उन्हें ईसाई मत के जाल में फसाने के लिए आरम्भ में माला चन्दन का भी सहारा लिया अन्यथा ईसाई धर्म से माला चन्दन का क्या सरोकार। इसी प्रकार स्वामी प्राणनाथ जी ने भी ब्रज रास श्री कृष्ण अक्षरातीत भागवत लीला आदि शब्दो को चुराकर भोले भाले हिन्दुओं को स्वमत में दीक्षित करने के लिए धोखा धड़ी किया है।

आज भी मैंने काशी मे पढ़े लिखे ऐसे मुसलमान मुल्लों को देखा है जो गेरुआ कपड़ा रुद्राक्ष का माला और दण्ड धारण कर काशी से बाहर सुदूर ग्रामों में जाते हैं और अपना नाम कल्पित हिन्दू सन्यासी का नाम बताकर हिन्दुओं के कँनफुकवा गुरु बनते पैर पुजाते और दक्षिणा लेते हैं। इस प्रकार हिन्दू जाति और सनातन धर्म को गुमराह करने के लिए ईसाई, पादरी, और मुसलमान मौलवी अनेक कुत्सित हथकण्डा अपनाये हैं। यह नामधारी स्वामी प्राणनाथ भी उन्हीं में से एक हैं। मुझे तो यह भारतीय मुसल्मान भी नहीं लगता। यह अरब से आया कोई मौलवी जान पड़ता है। इसने औरङ्गजेब को अपना शिष्य बनाने के लिए असफल प्रयास किया था और अपनी पुस्तक तारतम वाणी में हिन्दू मन्दिरों को तोड़ने वाले महमूद गजनवी की बड़ी प्रशंसा किया है।

तारतम वाणी सनंध-पृष्ठ ५०७ में प्राणनाथ जी ने लिखा है।

सनंध अरबी का

अरबी—सम्मेन कलीम कलामी, नास कुरब ना कसीर ।

उर्दू—नेक मैं कहूँ मेरी बोली मे, आदमी कबीले मेरे बहुत हैं ।

अना हाकी हकाइयां कलूब ना, लिसान इस्म कबीर ।।१।।

मैं कहूं बाते दिल अपने की, मेरे जिनके नाम बड़े हैं ।

फाल न फस इस्म ईमाम, वाद कलिम कुल्लो नाश ।

धराया अपना नाम ईमाम, पीछे कहेंगे सब आदमी ।

वला किन ला अरफ कुरान, अना मिन्हुम कुल्लो लिरास ।

ए पर न जाने कदी कुरान, मेरे तो उन्हो से सब लेना साथ सिरके ।

अल्ल जी हकाइयाँ कलूब ना, मा खफी मिन्कुम ।

जो बात मेरे दिल की, ना छिपाऊँ तुमसे ।

कुम्यकून कुरबना, अल्ल जी रूह मुस्लिम ।३।

तुम हो कबीले मेरे के, जो कोई रूह मुस्लिम है ।

लेस खबर मा कूम कमा, अल्ल जी बरारब ।

नहीं है खबर तुमको जैसी कछू, जो कि अरब है ।

"चुगुलखोर काटे हाथ पाऊँ"

उपर्युक्त अरबी और उर्दू दोनो वाक्य स्वयं स्वामी प्राणनाथ जी द्वारा ही रचित है। श्री प्राणनाथ जी अपने मुस्लिम भक्तों को सम्बोधन करके कहते हैं—"नेक मैं कहूँ मेरी बोली में" और अरबी से बोलते हैं। इसमे साफ जाहिर है कि इनकी निजी जबान (भाषा) अरबी थी और इसमे सन्देह की कोई गुंजाइश नही रह जाती कि जो शख्स स्वयं अपने मुख से कहता है कि जन्म से उस की जबान अरबी है वह हिन्दुओं को ठगने के लिए केवल प्राणनाथ नाम रख लेने मात्र से हिन्दू नहीं माना जा सकता। वे स्वयं कहते हैं—जो कोई रूह मुस्लिम कबीले हैं वे मेरे हैं। वे और भी कहते हैं—सनंध प्र० ३३

पुकार कह्या वेद कतेवो, पर वस न किया काहूं दिल ।
कर कर मेहेनत के थके, पर हुआ न काहूं निरमल ।।२४।।
सो ईमाम इत आइया, इन जिमीं हिन्दुस्तान ।
सब तलवे याही दिशा चौदे तवक की जहान ।।२७।।
पर मुझे प्यारी वरारव, जिन जिमि आये रसूल ।
मेहर नजर महम्मद की, पर काफर गये सब भूल ।।२८।।

वेदों ने पुकार पुकार कर बहुत कहा श्रम कर करके थक गये पर वेद मार्ग से किसी का हृदय निर्मल नहीं हुआ और न वे किसी का दिल ही अपने बस में कर सके । प्राणनाथ के रूप में ईमाम यद्यपि हिन्दूस्तान की जमीन मे आया है, पर मुझे तो अरब की ही भूमि प्यारी लगती हैं जिस भूमि मे कि कृपालु रसूल (महंमद) आए हैं जिसको कि हिन्दुस्तानी काफिर भूल गये हैं ।

ऊपर जो विचार व्यक्त किये गये हैं उनके पोषण में श्री प्राणनाथ जी के तारतम वाणी से कुछ वाक्य उद्धृत किये जाते हैं । विस्तार भय से उनका अर्थ नहीं दिया है । क्या० ना० छो० प्र२ १ चौ० ६५

कह्या काफर स्याह मुख आखर, मुख मोमिन नूर सुपेत ।

ये काले मुख हिन्दुस्तानी हिन्दू काफिर हैं । ये जो अपने 'मोमिन भक्त हैं उनका मुख उज्वल और ज्योतिर्मय है । क्या० ना० छो० प्र० १

हजरत[1] आए आया सब कोई, और ले चलेगे सब ।१०
सब नूर[2] आया महंमद नजर, महंमद पहुँचा हजूर[3] ।
ये जो अंधेरी से पैदा भए, काफिर नाम तिनको कहे ।
सोई कहूंगा जो लिखा कुरान, सवद न काढूं विना फुरमान[4]
साहेदी[5] देवे अल्ला कलाम,[6] सब दुनिया कवूल करे इस्लाम ।

---

१ प्राणनाथ जी । २ प्रकाश । ३ खुदा के पास । ४ कुरान । ५ साक्षी ६ खुदा के वचन ।

बिना मगज[1] ना महंमद पहिचान, बिना मगज ना पढ्या कुरान ।
बया० ना० प्र० ५ "देखो दुनिया की अकल,,
महंमद कर ही औरो समान, इस दुनिया की ए पहचान ।।४।।
मुख थे कहे किताबे[2] चार, पर हिरदै अंधे न करे बिचार ।।१२।।
और आखरी कहे महंमद, खतम किया इत बाँधी हद ।
अब और कहूँ सो सुनो, महंमद को क्यों औरो में गिनो ।
गिरी[3] महंमद तो होय पहिचान, जो मगज[4] मायने पाओ कुरान।
सो महमूद गजनवी सुलतान, मिले ईमाम सुख हुआ जहान ।
लागन[5] हिन्दू मुसलमान, महमूद गजनवी सुलतान ।
ढाये हिन्दुओं के खाने बुत[6], दिल में ईमाम की जारत[7] ।
जो खुदाए का पेगम्बर, तिनसे फिरे सो हुए काफर ।
काफर[8] करे वहुतक सोर, तो मोमिन सो न चले जोर ।
देखाई राह तौरत कुरान लाया नहीं जो यकीन[9] सो जल दोखज[10]
आए मिन दीने ।
हिन्दू फकीरों में पात साही करो । लिखा कुरान में सोई होय ।
कुरान चीज ऐसी बुजरक[11], फिर तिनमे ल्यावे सक ।
उपर्युक्त सारे वाक्य मोहम्मद .इस्लाम और कुरान की प्रशंसा में है
विस्तार भय से अर्थ नही दिया गया ।
तारतम महम्मद दीन देखाइया, और देखाया छल ।
वाणी मुझे भेजा कासिद[12] कर, मैं लाया फुरमान ।
४७८ पेज वेद किताब छुड़ावने, धनी आये इन ठौर ।

---

१ चारों वेद २ बिना गुह्य अर्थ को समझे हुए । अथवा दिमाक बुद्धि । ३ यदि महम्मद जमात की होवे । ४ छिपे हुए मायने । ५ युद्ध । ६ मन्दिर मूर्तियां । ७ दर्शनाभिलाषा । ८ बिना इमान वाले हिन्दू ९ विश्वास । १० नरकाग्नि । ११ श्रेष्ठ महान । १२ शंदेश वाहक बनाकर ।

धनी आए वेद छुड़ावने, ये बातें चितधर ।
सूद खाने वाले हुए अंधे, उसी खैंच से दोजख फन्दे ।
जो खुदाय का पेगंबर[1], तिनसे फिरे सो हुए काफिर[2] ।
एक मक्के का काला पत्थर, कुरान और खुदाए का घर ।
और काफिर दोजख[3] में जल, देखे भिस्ती[4] मरे जल ।
भिस्ती देखे दोजाखियो दुख, देखे मोमिन[5] होवे सुख ।
सो जले दोजख माहे काफिर ।

अव्वल यही है निमाज, जो गुजरे साहब सिरताज ।
तसबी[6] गोदड़ी करवा, छोड़ो जनेऊ हिरा हवा ।
या हंसकर छोड़ो या रोय, जिन करो अंदेशा कोय ।
मुस्लिम किस्ती पार पहुँचाये, काफर तूफाने दिये डुबाए ।
चाँद आँख दूजा कौन होय, इत महम्मद बिना न पावे कोय ।

जाहिर हुएइत ईमाम[7] हक, सोई काफिर जो ल्यावे सक ।
उल्लू न चाहे उग्या सूर, जिन अंधो का दुश्मन नूर ।
ए सुन वाका न लावे ईमान, सोई चमगीदड़ उल्लू जान ।
हजरत ईसारूह अल्ला नाम, कहूंगा जो कहा अल्ला[8] कलाम ।
कृपा भई हिन्दुओं पर घनी[9], जित आखर को आए धनी ।

विष्णु-वेद शास्त्र संस्कृत के लिए निन्दा वचन देखिए। नारायण और विष्णु के लिए प्राणनाथजी के ग्रन्थों में दज्जाल, जबराइल, अजाजील आदि शब्दों का भी प्रयोग किया गया है यह स्मरण रखना चाहिए ।

---

१ महम्मद । २ हिन्दू । ३ नरकाग्नि । ४ मोक्ष प्राप्त करने वाले मोमिन । ५ ब्रह्म सृष्टि-सुन्दरसाथ । ६ माला मृग चर्म कमंडल । ७ खुदा-महंमद रूप प्राणनाथ । ८ अल्लाह के शब्द कुरान । ९ अत्यन्त ।

वैराट वेद दोऊ कोहेड़ा[1], गूँथी सो छल की जाल ।
कोहेड़ा दोऊ भांत के, एक वैराट दूजा वेद । ता०वा० पृ०३७१

वेद का कोहेड़ा पृष्ठ ३७३

अब कहूँ कोहेड़ा वेद का, जाकी मीही गूँथी जाल ।
लगाए सब रबंदे[2], व्याकरण वाद अंधकार ।

पृष्ठ ३७४—बड़ा छल किया है शास्त्र ।

जाको नाम संस्कृत, सोतो संसे[3] ही की कृत ।
ए छल पंडित पढ़ ही, ताए मान देवे मूढ़ ।
एक उरझन वैराट की, दूजी वेद की उरझन ।

महंमद रूप प्राणनाथ के लिए—अवतार से उत्तम हुए, तहाँ अवतार का क्या काम ।

जो मो में ये निधि[3] आई, और न काहू जान ।
तारतम सब मे सार । सुख लेऊँ सुख देऊँ, सुख में जगाऊँ साथ ।

अंग मेरे संग पाइ, मे दिया तारतम वल ।
वैराट आकार ख्वाब[5] का, वेदे बाँधे किये वे सुध ।

लगाए सब रब्दे[3], व्याकरण वाद अंधकार
ऐसे बाँध बत्तीस श्लोक[7] में, बड़ा छल किया यों शास्त्र

स्वांत[8] त्रास न आवे सुपने, ऐसा व्याकरण ज्ञान ।
ए वानी ले वडी कीनी, दियो सो छल को मान ।
कहा दज्जाल[9] असवार गधे पर, काना आँख न एक ।

---

१ कुहरा अंधकार । २ धक्का । ३ संशय उत्पन्न करने वाली भाषा । ४ खुदा रूपी सम्पत्ति । ५ स्वप्न । ६ रौदना धक्का लगाना । ७ भागवत वेद स्तुति । ८ सुख शान्ति । ९ धर्महीन विष्णु ।

एक महंमद संग आखरी[1], बीच पहुँचा असराफील[2] ।
इत और न कोई पहुँचा, एक हक[3] हादी मोमिन बतन ।
ए वेद कतेव पुकार ही, कोई पहुँचा न अपनी अकल
"सो कहे कुरान विवेक के विध"
पाँच तत्व गुन तीनों ही , ए गोलोक चौदे भुवन ।
निरगुण सुन या निरंजन, ज्यों पैदा त्योंही पतन ।
मैं देत खुस खबरी, मुझे भेजा कासिद[4] कर, मैं लाया फुरमान[5] ।
रसूल[6] कहे मैं आखरी' मेरे पीछे न कोई ।
कौन सुख देवे तिनको[7] बिना एक महम्मद ।
जब आई आयत हकीकत, तब पिछली करी मनसूख[8] ।
आगे जाय जबराइल न सका, कहे पैर मेरे जलत ।
महंमद मोमिन[9] वास्ते, ले आया फुरवान[10] ।
ए ही सुन्नत[11] जमात, महंमद वेसक[12] दीन ।
लिखा वेद कतेव[13] में, ये चौदे तवक जे ।
वंझा[14] पूत सींग खरगोस, बहुत भाँति कहा ए ।
दज्जाल[15] एक आँख जाहेरी, कै विध तिनको लालत[16] करी ।
नाही दज्जाल आँख वातूनी[17], ईसा[18] मारसी इन काफर[19] ।

---

१ आखरी महंमद प्राणनाथ । २ कुरान मे वर्णित एक फिरस्ता (देवता) ३ खुदा और उसकी पत्नी मोमिनों के धाम में । ४ संदेस वाहक बनाकर । ५ कुरान और तारतम वाणी । ६ प्राणनाथ । ७ प्रणामी धर्मानुयायी । ८ रद, निरस्त । ९ मुस्लिम भक्त सुन्दर साथ । १० कुरान तारतम वाणी । ११ वे प्रणामी धर्मानुयायी ही सुन्नी मुसल्मानो के समूह हैं । १२ शंसय रहित ये सुन्दर साथ-महंमदीय धर्म के है । १३ कुरान । १४ वन्ध्या पुत्र । १५ विष्णु-नारायण । १६ निन्दा धिक्कार १७ आन्तरिक-हृदय के नेत्र । १८ प्राणनाथ । १९ धर्म हीन ।विष्णु को ।

वास्तविकता को समझने के लिए तारतम वाणी के उद्धरण ऊपर दिये गये हैं। सारी पुस्तक में इसी प्रकार के अनेको वाक्य भरे पड़े हैं। पाठक स्वयं निर्णय करें कि स्वामी प्राणनाथ और इनका प्रणामी धर्म क्या है। तथा इनके द्वारा प्रणीत ग्रन्थो का मुख्य तात्पर्य क्या हैं। मै निन्दा स्तुति कुछ नहीं करना चाहता। उन्ही के शब्दों से उनको समझना है और उनके प्रति धारणा बनानी है। हिन्दू जनता इनके जाल से सावधान रहे। मैने अपनी ओर से श्री प्राणनाथ और उनके प्रणामी धर्म के बारे में न्यूनाधिक एक शब्द भी कुछ नहीं कहा हैं। तथा कहना भी नहीं चाहता हूँ। स्वयं श्री प्राणनाथ जी ने अपने ग्रन्थों में जो कुछ लिखा है मैने उसका केवल अनुवाद मात्र किया हैं। अतः इस धर्म के अनुयायी मुझे क्षमा करें।

हस्ताक्षर स्वामी ऋषि कुमार
१५-७-७३

× × × × × ×

श्री हरि:

धर्म सम्राट पूज्य पाद श्री स्वामी करपात्री जी महाराज का शुभाशीर्वाद

पं० श्याम सुन्दर त्रिपाठी द्वारा लिखित निजानन्द मीमांसा का स्थाली पुलाकन्याय से अवलोकन किया पुस्तक मे निजानन्दीय वैदिक धर्म विरोधी सम्प्रदाय का यथार्थ रूप प्रगट करने का प्रयास किया गया है। पुस्तक उपयोगी है हमारा शुभाशिष है।

हस्ताक्षरः— करपात्री स्वामी

अनन्त श्री विभूषित जगद्गुरु शंकराचार्य ज्योतिष्पीठाधीश्वर स्वामी
श्री स्वरूपानन्द सरस्वती जी महाराज
ज्योतिर्मठ बदरिकाश्रम (हिमालय) उ० प्र०

संचार यात्रा स्थान
शिविर माघ मेला प्रयाग

श्री हरिः दिनाँक २४-१-७४

पंण्डित श्री श्याम सुन्दर जी के द्वारा लिखित "निजानन्द मीमांसा" नामक पुस्तक का सरसरी दृष्टि से अवलोकन किया। पुस्तक मे जिस सिद्धान्त की समालोचना की गई है वे सिद्धान्त वैदिक धर्म के विरुद्ध तो है ही मुस्लिम धर्म के भी पूर्णतया अनुकूल नहीं है। इस सम्प्रदाय के प्रवर्तक ने एक विचित्र ही घोल मोल प्रस्तुत किया है ऐसा प्रतीत होता है। जो लोग इस जाल मे फँस गये हैं। उनको पुनः स्वधर्म मे प्रतिष्ठित हो जाना चाहिये जो इसके आचार्य हैं उनको भी गंभीरता से पुनर्विचार करके अपने अनुनायियों को सनातन वैदिक धर्म की ही शिक्षा देनी चाहिए और स्वयं उस पर चलना चाहिए।

पण्डित जी ने इस पुस्तक के द्वारा समाज की महत्व पूर्ण सेवा की है इनको सब प्रकार का प्रोत्साहन मिलना चाहिए पुस्तक के प्रकाशन एवं प्रचार प्रसार के लिए हमारी शुभकामना है। श्रीचरणो की आज्ञा से

सचिव
उदय राय द्विवेदी शास्त्री

श्री हरिः

मानव मेधा का यह चरम उत्कर्ष है कि अपने विश्राम और विश्वास के लिये ईश्वर और उसकी प्राप्ति के साधनो की खोज की इसी प्रक्रिया से श्री प्राणनाथ जी महाराज की प्रतिभा ने प्रयास की अपना मनोनीति सिद्धान्त और उसके आचारण के लिये संघटन का सृजन किया। जो कि श्रद्धातिशयों के बीच दोनो अपने जगह पर चलते ही थे स्यात् आगे भी ......…………।
किन्तु पं० श्याम सुन्दर त्रिपाठी जी को विचिकित्सा हुई और वे निकट से

अध्ययन करना अपना एक कर्तव्य समझा समालोचना के दृष्टि से अपना अमूल्य समय और परिश्रम करके धार्मिक जगत् के सामने लाकर खड़ा कर दिये जो कि निष्पक्ष विचारकों को भी कहना पड़ रहा है कि समालोचक महोदय की समालोचना एक आलोक प्रदान कर रही है।

त्रिदण्डी वेदान्त रामानुजाचार्य
श्री बदरिकाश्रमस्थ
वि० सं० २०३० माघ शुक्ल २
शुक्रवार

❀❀❀❀❀❀❀❀❀❀❀❀❀❀❀❀❀❀❀❀❀❀❀❀❀❀❀❀❀❀❀❀❀

श्री राधिका विहारिणं वन्दे
श्री निम्बार्को जयति

अनन्त श्री जगद्गुरु भगवान श्री निम्बार्काचार्य पीठाधिपति
श्री राधा कृष्ण गोस्वामी

१२ महाजनी टोला, प्रयाग

पंडित श्याम सुन्दर जी त्रिपाठी परम्परित प्रणामी सम्प्रदाय के अनुयायी हैं, इन्होंने सम्प्रदाय के यथार्थ रूप को प्रगट कर भ्रामक विचारों का निराकरण कर श्लाघ्य कार्य किया है। इस मत के प्रचारक प्राणनाथ जी के यथार्थ स्वरूप को अभी तक कोई समझ नहीं पाया। प्राणनाथ जी ने नैष्ठिक निम्बार्क सम्प्रदायानुयायी वैष्णव देवचन्द्र को गुरु मानकर वैष्णव रूप से तिलक कंठी धारण कर प्रच्छन्न मोहम्मद धर्म का प्रचार करने का प्रयास किया। इस रहस्य को समझ कर ही लोगों को उक्त मत की ओर उन्मुख होना चाहिए। श्री कृष्ण रास आदि नामों को उक्त मत ने प्रस्तुत

कर हिन्दू समाज को बहुत बड़ा धोखा दिया है । विशुद्ध मुस्लिम धर्म पालन करना उचित है । किन्तु इस प्रकार प्रमत्त होकर दूषित धर्म को पालन करना बड़े कलंक की बात है । यह तो कृष्ण भक्त वैष्णव धर्म पर भी बड़ा भारी लांच्छन है । प्राणनाथजी रचित ग्रन्थ को अविलम्ब वैष्णवों को प्रचार कर धूर्तता का पर्दा फासकर हिन्दू समाज को सावधान कर देना चाहिए । भगवान श्री कृष्ण के स्वरूप का जो विकृत रूप उक्त मत में दिखलाया गया है तदर्थ कृष्ण भक्तों को कटिवद्ध होकर विरोध करना चाहिए ।

आचार्य चरण की आज्ञा से –
सुदर्शन शरण
(अधिकारी आचार्य पीठ)

रामायण प्रसाद पाण्डे
एडवोकेट

अमहिया रीवा (म० प्र०)
दिनांक ११ फरवरी १९७४

मैने श्री श्याम सुन्दर जी तिवारी द्वारा लिखित 'निजानन्द मीमांसा' का जो भी किंचित अवलोकन किया तो मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि यह मीमांसा एक ऐसी रचना से सम्बन्धित है जिसके श्री तिवारी स्वयं अनुयायी हैं । उन्होंने अपने गहन अध्ययन एवं विचारों को तार्किक एवं प्रमाणिक ढंग से रखने एवं सभी के मन बुद्धि एवं हृदय तक पहुँचाने व अपने ज्ञान विचार से तिमिराच्छादित अज्ञान तथा भ्रम से मुक्ति पाने हेतु सभी जिज्ञासुओं को जो मार्ग दर्शन दिया है वह न केवल स्तुत्य एवं श्लाघ्य है वरन् गहन विचार व अध्ययन एवं सत्य की खोज करने वालो के लिए एक महान् स्रोत है – श्री तिवारी जी की यह पुस्तक उनकी महान देन है जिससे उन्होंने समान रूप से सभी जिज्ञासुओं एवं धार्मिक वैज्ञानिको एवं पंडितो तथा विद्वानों को देकर ऐसे ही आन्दोलित किया है जैसे किसी शान्त जलाशय को प्रवल वायु के वेग से आन्दोलित कर दिया जाय । यह मीमांसा सभी के विचारों में ऐसी ही लहर पैदा करेगी—मुझे पूर्ण आशा है कि यह मीमांसा साणधार

लोगों विद्वानों तथा विचारकों के लिये प्रेरणा स्रोत बनी रहेगी व उन्हें वास्तविकता के निरूपण करने एवं उसका दर्शन करने में महान् सहायक है।

दिनांक ११-२-७४
हस्ताक्षर अंग्रेजी में रामायण प्रसाद पाण्डे
एडवोकेट रीवा

× × × × ×

मैंने श्री श्याम सुन्दर तिवारी द्वारा लिखित "निजानन्द मीमांसा" का अध्ययन किया। श्री तिवारी जी ने प्रणामी धर्म व निजानन्द संप्रदाय का गहन अध्ययन कर विवेचनात्मक मीमांसा लिखा है इसके अध्ययन से प्रणामी धर्म का सही रूप हिन्दू धर्मावलम्बियों को स्पष्ट हो जायगा और उन्हें नये सिरे से इस सम्बन्ध में विचार करने का अवसर मिलेगा।

आशा है पाठक गण इस पुस्तक को आलोचनात्मक दृष्टि के अध्ययन करेंगे।

हस्ताक्षर
गिरिजा प्रसाद मिश्र
एडवोकेट, रीवा

× × × × ×

श्री निवास तिवारी
सदस्य
मध्य प्रदेश विधान सभा

दूरभाष { रीवा २४६
भोपाल १२६४ }
दिनांक १३-२-७४

श्री श्याम सुन्दर जी तिवारी द्वारा लिखित "निजानन्द मीमांसा" का संक्षिप्त सारांश मुझे बताया गया। निश्चय ही यह पुस्तक धर्म प्रिय लोगों के लिए उपयोगी साबित होगी।

मुझे आशा है कि इस परिप्रेक्ष्य मे पाठक इस पुस्तक के अध्ययन के विशेष ज्ञानार्जन कर सकेंगे।

हस्ताक्षर—
श्री निवास तिवारी

प्रणामी धर्मानुयायिनः :—

राजीव लोचन सोहगौरा
(राजीव)
व्याख्याता
एम० ए० बी० एड० आङ्गल भाषा
शा० उ० मा० वि० रीवा नं० २
श्री श्याम सुन्दर तिवारी निवास ग्राम कपसा की कृति
"निजानन्द मीमासा" के लिए शुभ कामना।

'निजानन्द मीमांसा लिखकर,
अथक प्रयास किया लेखक ने।
निजानन्द की गूढ़ पहेली,
जन मानस को सौंप दिया।
वाणी की ही अनुकम्पा थी,
विषय बड़ा गम्भीर था।
झंझा के सब सहे झकोरे,
पावन सरिता बहा दिया।
श्याम सुन्दर की नव विचार की,
कृति है सदा महान।
गोपनीय निष्ठा को जिसने,
भावों का भंडार दे दिया।
परिवर्तन की पावन वेला,
चाह रही शुभ भावना।
जिसने मीमांसा के श्रम को,
आलोचक को सौंप दिया।

ह० राजीव
१६।२।७४

विषय सूची

ॐ श्री परमात्मने नमः

शं नो मित्रः शं वरुणः शं नो भवत्वर्यमा शं न इन्द्रो बृहस्पतिः शं नो विष्णु रुरुक्रमः नमो ब्रह्मणे नमस्ते वायो त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्मवदिष्यामि ऋतं वदिष्यामि सत्यं वदिष्यामि तन्मामवतु तद्वक्तारमवतु अवतुमाम अवतु वक्तारम् ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

निजानन्द मीमांसा (प्रणामी धर्म)

पूर्वार्ध भाग अध्याय १

निजानन्द स्वामी देवचन्द्र का परिचय

संप्रदाय प्रवर्तक का जीवन परिचय इतिहासकार लालदास जी के वीतक नामक ग्रंथ से लिया गया है। प्रमाण रूप से उनकी चौपाइयाँ भी उद्धृत की गई है।

यथा "अरब वाले महंमद साहब के मृत्यु के उपरान्त जब ९९० वर्ष और ९ माह व्यतीत हो चुके उस समय संसार रूप खेल देखने के लिये सखियां परमधाम से अवतीर्ण हुई वीतक प्रकर्ण २ चौपाई १५

साल नवसे नवे मासनव, हुये रसूल को जब। रूह अल्ला मिसल रूहे गाजियो सैयां उतरे तब ॥१५॥ उन्हीं सखियों को जागृत करने के लिये निजानन्द संप्रदाय के प्रधानाचार्य देवचन्द्र का जन्म मारवाड़ देश उमर कोट गांम, पिता का नाम मत्तू मेहेता कायस्थ माता कुंवर बाई

से विक्रम संवत् १६३८ कुमार सुदि १४ को हुआ वी० प्र० २ चौ० १६।१७

संवत सोलासै अड़तीसे, आश्विन सुदी चौदस को । जनमे दिन श्री देवचन्द्र जी, आय प्रगटे मारवाड़ में ॥१६॥ तामे गांम उमर कोट, मत्तू मेहेता घर अवतार । माता जो कुमरबाई, ताको कहूँ विस्तार ॥१७॥ ११ वर्ष की अवस्था में इनको वैराग्य प्राप्त हुआ सद्-गुरु की खोज करते हुये कच्छ से भोज नगर आये और वहाँ राधा वल्लभी संप्रदाय के हरदास जी से दीक्षित हुये इनकी बहुत दिनों तक इन्होंने संगति की गुरु ने बालमुकुन्द की मूर्ति को पूजा करने के लिये देना चाहा किन्तु वह मूर्ति गायब हो गई गुरु शिष्य ने बहुत ढूँढा किंतु वह न मिल सकी। अर्ध रात्रि होने पर जब हरदास जी कुछ निद्रित हो जाते हैं उसी समय बालमुकुन्द जी दर्शन देते हुये कहते हैं कि तुम हमारी पूजा करने के लिये जो देवचन्द्र को देते हो उनको तुम नहीं पह-चानते मैं उनकी सेवा सहन नहीं कर सकता हूँ यदि वे दुखी होवे तो हमारे वस्त्रों को पूजा के लिये दे देना हरदास जी ने इसी प्रकार किया देवचन्द्र बालमुकुन्द जी के जामा वस्त्रों को ले जाकर पूजते रहे। अंत में इनका विवाह हुआ और एक पुत्र इनसे उत्पन्न हुये जिनका नाम बिहारी जी था। कुछ समय बाद ये हलार देश जाम नगर आये यहाँ वल्लभ संप्रदाय के श्याम जी के मंदिर में कान्ह जी भट भागवत की कथा वाचते थे वहाँ निष्ठा से १४ वर्ष तक कथा सुनते रहे। इतिहास के लेखक ने इनकी पढ़ाई लिखाई के सम्बन्ध में कुछ नहीं लिखा। चालीस वर्ष की उम्र में **(महंमदे दिया दीदार)** खुदा का दर्शन हुआ। खुदा ने मंत्र दिया और कहा कि तुम ब्रज में रास में भी आये थे लेकिन इच्छा न पूर्ण होने से यह तीसरा खेल देखने को आये हो अब मैं तुमारे शरीर के अन्दर बैठूँगा तुम सुन्दर साथ को जागृत कर परमधाम ले आओ और ये

भागवत कागज तुमारा है इसका अर्थ तुम्ही से खुल सकता है अन्य कोई इसके अर्थ को नहीं खोल सकते। वीतक प्र० ५ चौ० ३२

ये भागवत कागद तुमारा, तुमे खुले कलांम ।
और कोई न खोल सके, ये जो खलक आम ।

यह कह कर खुदा अन्तर ध्यान हो गया। लेखक कुरान का प्रमाण दे कर कह रहा है। वी० प्र० ८।

सिपारे बार में मिने, पाने चौबीस में।
तपसीर के तीन सौ एक में, तुम देखियो तिनसे ॥१॥
श्री देवचन्द्रजी स्वरूप को, हके दिया तारतम नूर।
तिनका विस्तार क्यामते, होयगा बड़ा मजकूर ॥२॥
मूल वेद कतेबकी, साहेदिया लिखी सबंन।
सो आयमिली सब इतहां, ताय मोमनकरे रोसंन ॥३॥
और कागद ले आइया, महंमद अलेह सलांम।
सो वीतक देवचन्द्र जी, लिखे अल्ला कलांम ॥४॥
जनम से आखर लो, जोलो मोमिन पोहोंचे धाम।
सो सारी हकीकत इनमें, सब पूरे मनोरथ काम ॥६।

अर्थ—श्री देवचंद्र को खुदा ने तारतंम मंत्र दिया यह सिपारे १२ में पन्ने २४ में तपसीर ३०१ में तुम लोग देखो इसका विस्तार क्यामत के समय में होगा उक्त बातों की पहले से ही वेद और कुरान में साक्षियाँ लिखी है वे साक्षियाँ यहाँ पर सब मिल गई उन सबों को मोमिन (ब्रह्म सृष्टि) ही प्रकाशित कर सकते हैं। और एक कागज (कुरान) को महंमद अलेह सलाम ले आये उसमें भी देवचन्द्र का इतिहास अल्लाह के शब्दों

द्वारा जन्म से लेकर अन्त तक, जब तक मोमिन धाम को पहुंचते हैं वह सब हकीकत इसमें लिखी है"

मीमांसक :—उक्त बातें जो लालदास ने लिखी है यह सब अपने स्वार्थ सिद्धि के लिये है। खुदा का आधार लेकर अशिक्षित जनों को वर्गलाया है। क्या प्रमाण है कि खुदा ने दर्शन देकर कहा कि तुम ब्रज में रास में व इस तीसरे ब्रह्मांड में खेल देखने के लिये आये हो मैं तुमारे अंदर प्रवेश करूँगा तुम सब मोमिनो को जागृत कर ले चलो। जब आप देवचन्द्र को श्यामा जी का अवतार मानते हैं तो उनमें ब्रह्म शक्ति सम्पन्न होने से वे ब्रह्म से अभिन्न है क्योंकि शक्ति रूप श्यामा जी के बिना शक्तिमान रूप ब्रह्म का पृथक कोई अस्तित्व ही नहीं हो सकता जिस तरह जल और उसकी लहर दोनों एक ही है, कथन मात्र के लिये जल और लहर शब्द का प्रयोग है उसी तरह शक्ति रूप श्यामा जी और शक्तिमान रूप ब्रह्म दोनों एक ही है ऐसे ब्रह्म शक्ति से युक्त देवचन्द्र को खुदा का दर्शन हुआ और खुदा उनके अंदर प्रवेश कर गया यह कथन सर्वथा झूंठा और बनावटी है। उक्त प्रमाण के अनुसार या तो श्यामा जी का अवतार कहना झूठा है अथवा उनके अंदर खुदा का प्रवेश होना झूठा है। इस तरह नवीन संप्रदाय कायम करने की जो आपने बुनियाद डाली वह आपके कथन से ही मिथ्या सिद्ध हो जाता है।

और खुदा ने दर्शन देते हुये जो यह कहा कि भागवत कागद तुमारा है और इसका अर्थ तुम्ही से खुल सकता है अन्य कोई इसके अर्थ को नहीं खोल सकते। इस तरह खुदा के आशीर्वाद देते हुये भी देवचन्द्र ने प्राणनाथ ने लालदास ने सम्पूर्ण भागवत के अर्थ खोलने की बात तो दूर रही उसके एक भी श्लोक के अर्थ को नहीं खोला ऐसा न करने से खुदा ने यह बाते कही हैं यह बात भी झूठी हो जाती है क्योंकि

यदि सत्य में खुदा दर्शन देकर ऐसी बाते कहता तो उसके आशीर्वाद के वचन भी सत्य हो जाते फिर देवचन्द्र के अंदर खुदा ने प्रवेश किया इतने पर भी भागवत के एक श्लोक का भी अर्थ जब नहीं खोला गया इससे सिद्ध है कि खुदा ने दर्शन ही नहीं दिया। भागवत तो एक ऐतिहासिक ग्रन्थ है शुक मुनि को जो कहना था उसे स्पष्ट ही कह दिया है। बड़े-बड़े दार्शनिक ग्रन्थों को जिन्हें ऋषि मुनियों ने सूत्र रूप में लिखा था जिनका अर्थ साधारण मनुष्य को समझना कठिन था उन्हीं के सूत्रों की भाष्य विद्वानों ने लिख डाली फिर भागवत के अर्थ खोलने में कौन सी कठिनता है।

हमें इनकी धार्मिक बुनियाद को असत सिद्ध करने के लिये अन्य प्रमाण देने की कोई आवश्यकता नहीं है। ये तो अपने बचनों द्वारा ही अपने पक्ष को दूषित करते जाते हैं। लालदास ने जो यह कहा कि कुरान में लिखा हुआ है कि देवचन्द्र को खुदा ने तारतंम मंत्र दिया और उनके जन्म से लेकर जब तक मोमिन धाम को पहुंचते हैं तब तक का पूरा इतिहास लिखा हुआ है। इन बातों को आज तक किसी मौलवी ने नहीं स्वीकार किया कि निजानन्द संप्रदाय के सिद्धान्त कुरान में वर्णित है आप तो अशिक्षित व्यक्तियों के सामने ऐसा कहा करते हैं। यदि कुरान में वर्णन था तो कुरान के आयतो की टीका कर आपने प्रकाशित क्यों नहीं किया हाँ आपने इस्लाम मत का अनुगमन जरूर किया किन्तु यह तो ध्रुव सत्य है कि देवचन्द्र और प्राणनाथ के सम्बन्ध का वर्णन कुरान में लवलेश मात्र नहीं है यदि कुरान की आप टीका लिखते और सब आरफ (मौलवी) उसे स्वीकार करते तो मान लिया जाता। किन्तु ये बातें न होने से केवल कथन मात्र से आपकी सब बातें अप्रमाणित सिद्ध होती है। पूर्व पक्षी = अठारह हजार वाणी कुरान ही की तो टीका है। उत्तर पक्षी मैं तो नहीं मानता कि कुरान की टीका है कुरान के सिद्धान्तों का

कथन करने से टीका नहीं कही जा सकती टीका वह है कि उसके मूल आयतों की व्याख्या कर अर्थ स्पष्ट करना। वहाँ तो यत्रतत्र आयतो का उल्लेख है जिसको वर्णाक्षरों का ज्ञान प्राप्त कर इल्मी लोग ही नहीं समझ पाते फिर हम हिन्दू समाज आरबी भाषा से ज्ञानहीन होने के कारण क्या समझ सकते हैं। उन आयतो का सही अर्थ कुरान के आरफ[1] ही बता सकते हैं। पूर्वपत्ती यदि कुरान के आरफ उसका सही अर्थ बता सकते हैं तो आपने यह क्यों कहा कि ध्रुव सत्य है कुरान में निजानन्द संप्रदाय का वर्णन नहीं है उत्तर पत्ती-हमने इसलिये कहा कि इनके ग्रन्थों को अच्छी तरह हमने पढ़ा और मनन किया उनमें किसी विषय में सत्यता नहीं पायी जाती इससे कुरान को न जानते हुये भी पूर्ण विश्वास हो गया है कि वहाँ भी इनके विषयों का वर्णन नहीं होगा। जैसे एक मिट्टी के बर्तन पहचानने से सभी मिट्टी के पात्र पहचान लिये जाते हैं कि सब में वस्तु तत्व मिट्टी है उसी तरह शास्त्रों में इनके कोई सिद्धान्त न पाये जाने से कुरान में भी विश्वास है कि इनके सिद्धान्त नहीं है।

और जो लालदास ने कहा कि बालमुकुन्द की मूर्ति गायब हो गई हरदास को स्वप्न में कहा कि मैं इनकी सेवा नहीं सहन कर सकता यह भी एक पाखंड लीला है। बाल मुकुन्द कृष्ण देव चन्द्र की सेवा नही सहन कर सकते इसमे कौन सा रहस्य छिपा हुआ है। लेखक का रहस्य यहाँ यह है कि ये बाल मुकुन्द विष्णु रूप है और ये देवचन्द्र चौथे आसमान लाहूत के निवासी है जिस खुदा के दर्शन के लिए जाने पर विष्णु तक के पैर जलने लगते है। वह विष्णु देव चन्द्र की सेवा को कैसे सहन कर सकेगा।

---

१. आरफ—विद्वान

इस अध्याय के आरम्भ में आई हुई चौ० १५ का उत्तरार्ध भाग में विवेचन होगा।

"जिस समय देवचन्द्र कथा सुनते थे उस समय जामनगर में प्राण नाथ से मिलाप १२ वर्ष की अवस्था में हुआ ये भी प्रतिदिन उनकी धार्मिक चर्चा उपदेश सुनने के लिये आया करते थे कुछ दिनों बाद ये देव चन्द्र से दीक्षित हो गये। देवचंद्र ने लगभग ३०० सौ शिष्यों को दीक्षा मंत्र दिया। देवचन्द्र के पुत्र विहारी जी से प्राण नाथ का मत भेद हो गया था। वीतक प्र० १० चौ० १२

आओ विहारी जी, तुम बैठो मुझमेले। एक ठोर प्रसाद लीजिये बैठ के इकट्ठे, विहारी जी ने कह्या मैन बैठो संग तुम। श्री जी ने कह्या अरज तलवी हुकंम ॥१२॥

एक समय प्राणनाथ ने विहारी जी से एक साथ बैठकर भोजन करने के लिए कहा किन्तु विहारी जी ने इन्कार कर दिया स्वामी जी ने देवचन्द्र से शिकायत की किसी कदर पिता के कहने से भोजन करने बैठ तो गये किन्तु इनका मानसिक मनमोटाव बना ही रहा देवचन्द्र की लोक यात्रा के बाद इन दोनों में बड़ा मतभेद हो गया विहारी जी जामनगर से सूरत में प्राणनाथ को लिखते हैं। वीतक प्र० २८

उन लिख भेजी पाती को, तुमारी राह में और। और हमारी भी और है, भई जुदागी इन ठोर ॥६६॥ हम तुमको चीन्हिया, तुमारे मांहिकलाम[1]। तुम नाहीं हमारे साथ में, हम काढें तुम्हें

---

१. खुदा के फुरमाये हुए शब्द को कलाम कहते हैं वे शब्द कुरान की आयते है। कलांम शब्द के प्रमाणी करण के लिए स्वामी जी की निम्न चौ० है सिनगार प्र० २४ कलांम अल्लायों केहे वही एकेहेनी है मोमिन ४६ अर्थ :—अल्लाह ने अपने शब्दों (कुरान) की आयतो द्वारा कहा है कि ये सब बातें ब्रह्म सृष्टियों से कहना है उक्त चौ० द्वारा कलाम शब्द के अर्थ की अनुवृत्ति की गई है।

इस धाम ॥६७॥ हम जिन साथ को काढत, तिनको क्यो लिया बीच दीन। तो इत तुमको हमारा छूट गया आकीन ॥६८॥ तिस वास्ते तुमको, हम किये साथ से दूर। हमारे तुमारे नाता न रह्या, जिन पाती करो मजकूर ॥६६॥ इन भाँत पाती लिखी, आय पोहोची सूरत। तब श्री जीए विचारियो, ऐसा हुआ वखत ॥७०॥

विहारी जी अपने पत्र में लिखते हैं कि मैं तुम्हें पहचान गया किन्तु इस्लाम धर्म से सम्बन्ध रखते हो इससे हमारे और तुमारे मार्ग भिन्न है तुम हमारे साथ में नहीं हो तुमको अपनी सम्प्रदाय से अलग करता हूँ जिनको मैं अपनी संप्रदाय से अलग करता हूँ उनको तुम अपने धर्म में ले लेते हो इससे तुमारा हमारे ऊपर विश्वास ही नहीं है इससे तुमे अपने साथ से दूर किये देता हूँ हमारा तुमारा अब कोई सम्बन्ध नहीं है अब मैं पत्र व्यवहार भी नहीं चाहता। इस तरह के पत्र को पाकर प्राणनाथ बहुत दुखी हुये और बोले कि बहुत खराब समय आ गया।"

इस तरह के इतिहास से स्पष्ट है कि इन दोनों में संप्रदाय की नीव पड़ते ही पूर्ण रूपेण सांप्रदायिक मतभेद हो गया। विहारी जी का लक्ष था कि केवल कृष्णोपाशना का ही उपदेश दिया जाय वह भी हिन्दुओं को स्वामीजी यवनो को भी दीक्षित करते थे और तदनुकूल उपदेश भी देते थे जिन हीन जातियों को दीक्षित करते थे विहारी जी उसे समाज से अलग कर देते थे उन अलग किये हुये व्यक्तियों को स्वामीजी पुनः अपने समाज में मिला लेते थे। इस तरह दोनों में विशेष संघर्ष जीवन पर्यन्त जारी रहा।

इति निजानन्द मीमांसायां पूर्वार्ध भागे प्रथमोऽध्यायः १

अथ द्वितीयोऽध्यायः २

प्राणनाथ का जीवन चरित्र

बीतक प्र० १०

"संवत सोरा सै पचहत्तर, भादो वदी चौदस नाम।
प्रथम जाम और वाररव, प्रगटे धणी श्रीधाम ॥३५॥
हलार देश पुरी नौतन, उदरवाई धन।
केसौ ठाकुर पिता कहियत, तहाँ राज प्रगटे ॥३६॥

विक्रम संवत् १६७५ भाद्र वदी १४ प्रथम पहर रविवार को हलार देश जाम नगर में पिता केशौ ठाकुर माता धनबाई के उदर से श्री राज (मेहेराज ठाकुर) का जन्म हुआ। इनके पिता जाम नगर में राजा के यहाँ दीवानी का काम करते थे उसी पद पर मेहेराज ठाकुर ने भी काम किया। धणी देव चन्द्र अपने लोक यात्रा के समय इनको याद कर बुलवाया और कहा कि इन्द्रावती[1] सखी धाम (मृत्यु) के दरवाजे में रोती हुई खड़ी है जब तक वह नहीं आ जाती तब तक धाम यात्रा में रुकावट है अतः मेहेराज ठाकुर अपना काम दूसरे को देकर आ पहुंचे इनके पहुंचने पर गुरु गद्दी पर अपने पुत्र विहारी जी को बैठाया प्राणनाथ ने भी गद्दी पति के चरणों को टेका देव चंद्र ने संप्रदाय के प्रचार का भार स्वामी प्राणनाथ जी को देते हुए सब सुन्दर साथ[2] को जगाने के लिए कहा। बी० प्र० ११

१—प्रणामी धर्म में प्राणनाथ को इन्द्रावती सखी शब्द से संबोधित किया है।

२—प्रणामी धर्म के ग्रन्थों में सुन्दर साथ का नाम मोमिन (मुसलमान भक्तों के लिये आया है।)

संवत सत्रह सौ बारोत्तरे, भादोमास उजाला पख।
चतुर्दशी बुधवार को, हुई दृष्टि अलख ॥७२॥

विक्रम संवत १७१२ भाद्रमास शुक्ल पक्ष चतुर्दशी बुधवार को देवचंद्र ने इस लोक से प्रयाण किया।"

मीमांसक :—प्रथम अध्याय में जो देवचन्द्र का जीवन परिचय दिया गया है वह लालदास के वीतक नामक ग्रन्थ के व प्राणनाथ के सम्पूर्ण ग्रन्थों के अध्ययन से देवचन्द्र का हिन्दू होना नहीं पाया जाता। इन्होंने जो देवचन्द्र प्राणनाथ लालदास अपने नाम हिन्दी में रक्खा है और हिन्दू धर्म शास्त्रों में प्रयुक्त ब्रह्म सृष्टि, परमधाम, अक्षर, ब्रह्म और अक्षरातीत आदि शब्दों का जो प्रयोग किया है वह एक जाल मात्र है जो हिन्दू रूपी मछलियों को अपने सुन्नत जमात में लाने के लिये वंशी में लगे मांस खंड का काम करता है। हिन्दुओं को इससे भ्रान्त नहीं होना चाहिये। इन नामों की कल्पना करके इन लोगों ने स्थल-स्थल पर बार-बार इन वाक्यों को दोहराया है कि कुरान और महंमद की महिमा को हिन्दू लोग समझ नहीं पाये थे इसलिये हम लोग हिन्दुओं के घर में रूह अल्ला और आखरी महंमद के रूप में पैदा होकर हिन्दुओं में कुरान और मुस्लिम मत का प्रचार करने के लिये अवतीर्ण हुये हैं।

अस्तु इन्हीं के शब्द प्रमाणों द्वारा सिद्ध किया जाता है कि वे वास्तव में मुल्मिम थे। वीतक प्र० १०।

मूल श्री देवचन्द्र जी, उतरे अरस से। वास्ते खास उमत के, बिहार किया साथ में ॥३॥

अर्थ—पहले श्री देवचन्द्र जी खास उमत–सुन्नत जमात के लिये अरस–लाहूत से उतरे हुये हैं और उन्हीं के साथ में बिहार भी किया है। उक्त चौ० में देवचन्द्र को चौथे आसमान लाहूत से सुन्नी मुसल्मानों के लिये अवतरित होना बताया गया है। तथा वी० प्र० १६।

सृष्टि ब्रह्म की साथ हे, जाय श्री महंमद दिया पेगांम।
ल्याए कुंजी ईसा रूह अल्ला, दई सो हाथ ईमांम ॥२॥

अर्थ—ब्रह्म की सृष्टि सुन्दर साथ अर्थात् मोमिन है जिन मोमिनों को अरब में आकर महंमद साहब ने खुदा का संदेश (कुरान के द्वारा दिया है। और उस कुरान के खोलने की कुंजी ईसा रूह अल्ला अर्थात् देवचन्द्र ले आये हैं उस कुंजी को देवचन्द्र ने ईमाम—आखरी महंमद प्राणनाथ को दिया है। उक्त चौ० में स्पष्ट वर्णन है कि सुन्दर साथ प्रणामी मतावलम्बियों के लिये महंमद साहब ने खुदा का संदेश—कुरान ले आये हैं तथा देवचन्द्र को ईसा रूह अल्ला बताते हुये कुरान के अर्थ को खोलने की कुंजी ले आना बताया गया है और उस कुंजी को देवचन्द्र ने प्राणनाथ को दिया है। प्राणनाथ जी भी मारफत सागर प्रकर्ण ६ में लिखते हैं।

सोईमाम खोले बीच अरस रूहो। जो एक तन सुन्नत जमात ॥७२॥

उस कुंजी को प्राप्त कर मैं आखरी महंमद प्राणनाथ धाम की रूहों के समक्ष कुरान का अर्थ खोल रहा हूँ वे धाम की रूहें सुन्नी मुसल्मानों के एक ही अंग हैं। उक्त चौ० में धाम की रूहों और सुन्नी मुसल्मानों से अभिन्नता प्रदर्शित करते हुये उनके समक्ष कुरान का अर्थ खोलना बताया गया है इससे धाम की रूह—सुन्दर साथ और सुन्नत जमात में कोई भेद नहीं रह जाता इन विषयों की एकता का वर्णन स्थल-स्थल पर मिलता है। बी० प्र० ३०।

मोमिन सुन्नत जमात में, वार्ता करे बीतक। हक प्यार इनो पर, ये बात बड़ी बुजरक ॥५॥

अर्थ—मोमिन–खुदा के भक्त सुन्नी मुसल्मानों के बीच अपनी पूर्व-की अर्थात् धाम सम्बन्धी बीती हुई बातों को करते हैं इन सुन्नियों की गिरोह में खुदा का प्यार है ये बातें वहुत ही महत्वशाली है। उक्त पाँचमी चौ० से लालदास ने भी मोमिन—सुन्दर साथ से अपने धाम सम्बन्धी सुन्नत जमात में अभेदता का प्रतिपादन किया है।

अस्तु सुन्नत जमात के लिये ईसा रूह अल्ला रूप देवचन्द्र को अव-तरित बतलाने से लालदास का यह कथन कि ये हिंदू कायस्थ कुल में जन्म लिये यह मिथ्या हो जाता है। कुंजी ले आने से देवचन्द्र कुरान के अधिक विशेषज्ञ हो जाते हैं। जिससे उनके लिये हिन्दू लिखना एक तरह का उपहास हो जाता है। यदि यह भी मान लिया जाय कि हिन्दू रहे होंगे तो उक्त चौपाइयों के अनुसार बाद में मुसल्मान हुये होंगे। अतः प्राणनाथ और लालदास की तरह यदि उनके सिद्धान्त है तो देवचन्द्र नाम रखने से वे हिन्दू नहीं कहे जा सकते। मानव की संस्कृति से ही उसकी वास्तविकता का परिचय अंकित किया जा सकता है। वी० प्र० ४५।

वेद वंध की मरजादा, ताको सिर भाना मोमिन ॥६६॥

अर्थ—वेद के विधायक वाक्यों की धार्मिक मर्यादा रूपी सिर को मोमिनों ने नष्ट कर दिया है। धाम की रूह अर्थात् मोमिन देवचन्द्र भी हैं क्योंकि प्राणनाथ ने लिखा है कि (**घर मो नाम सुन्दर बाई**) अर्थात् धाम में देवचन्द्र का नाम सुन्दर बाई है। उस धाम की सभी रूहें मोमिन कही जाती हैं। अतः देवचन्द्र मोमिन होने के कारण वैदिक मर्यादा को नष्ट करने वाले हो जाते हैं इसलिये इनके हिन्दू होते हुये भी इन्हें हिन्दू कहना व्यर्थ हो जाता है। देवचन्द्र की स्वतन्त्र कोई रचना न होने से इन्हें न हिन्दू और न मुसल्मान ही कहा जा सकता संदेहात्मक

है। किन्तु लालदास व प्राणनाथ के कथन से ये हिन्दू जाति के नहीं सिद्ध होते इन्होंने हिन्दू जाति में जन्म बताकर हिन्दुओं को वर्गलाया है और हिन्दू नाम रख लिया है।

इसी तरह प्राणनाथ के शब्द प्रमाणों द्वारा भी सिद्ध किया जाता है कि ये हिन्दू नहीं थे। क्यामत नामा बड़ा प्र० १।

नव से नवे हुये वितीत, तब हजरत ईसा आये इत। सो लिखा सिपारे अग्यारे माहे, मैं खिलाफ बात कहूँगी नाहें ॥७॥

रूह अल्ला पहेने जामे दोय, ये लिखा कुरान में सोई होय। ये लिखा छठे सिपारे माहे, धोखेवाला देखे जाय ताहे ॥८॥

अर्थ—जब महंमद साहब को इस लोक से गये हुये नौ सै नब्बे वर्ष व्यतीत हो गये तब हजरत ईसा अर्थात् देवचन्द्र अरस अजीम से इस लोक में आये ये बातें कुरान के ग्यारवें सिपारे में लिखी हुई है मैं कुरान से खिलाफ होकर नहीं कह रहा हूँ। ७। रूहअल्ला देवचन्द्र ने लाहूत से आकर दो प्रकार के जामे अर्थात् शरीर को धारण किया है एक रूह अल्ला के रूप में देवचन्द्र दूसरा आखरी महंमद के रूप में प्राणनाथ जिसको इस विषय में संदेह हो वह कुरान के छठे सिपारे में देखे जो वहाँ लिखा हुआ है वही बातें हो रही है। मारफत सागर प्र० ६।

हक फुरमान मासूक लयाइया, कुंजी रूह अल्ला साथ। सो ईमाम खोले बीच अरस रूहो; जो एक तन सुन्नत जमात ॥७२॥

अर्थ—खुदा के फुरमान कुरान को महंमद साहब ले आये हैं और उस कुरान के अर्थ को खोलने की कुंजी रूह अल्ला-देवचन्द्र ले आये हैं उस कुंजी को प्राप्त कर मैं ईमाम आखरी महंमद प्राणनाथ धाम की

रूहों मोमिनो के बीच कुरान का अर्थ खोल रहा हूँ जो सुन्नत जमात अरस रूहों अर्थात् धाम की ब्रह्म सृष्टियों के एक ही अंग है ।७२।

अस्तु कुरान के अर्थ खोलने की कुंजी रूह अल्ला देवचन्द्र ले आये हैं और उस तारतम की कुंजी से सुन्नी समाज अर्थात् प्रणामियों में उसके अर्थों का प्रकाशन किया गया है इस प्रकार प्राणनाथ के कथन से भी देवचन्द्र का हिन्दू होना नहीं सिद्ध पाया जाता । मैं पूछना चाहता हूँ कि इस धर्म के गुरु वचनानुसार प्रणामी धर्म में दीक्षित हिन्दू लोग अपने को सुन्नत जमात कह कर गौरव का अनुभव करेंगे क्या ।

लालदास ने देवचन्द्र को वल्लभ संप्रदाय में हरदास जी से दीक्षित होना बताया है । बाद में जामनगर आकर वल्लभ संप्रदाय के श्यामजी के मंदिर में १४ वर्ष पर्यन्त निष्ठापूर्वक भागवत की कथा भी सुनना बताया है । वल्लभाचार्य की संप्रदाय वैष्णव संप्रदाय है ये कृष्ण को परात्पर विष्णु रूप ही मानते हैं और सूरदास जी भी इसी संप्रदाय में दीक्षित थे जो बालकृष्ण की उपासना करते हुये सूरसागर ग्रन्थ की रचना किया है । इन व्यक्तियों ने कृष्ण को ११ वर्ष तक महंमद रूप नहीं माना इन लोगों ने कृष्ण को जन्म से लेकर अन्त तक विष्णु रूप ही माना है । प्राणनाथ ने विष्णु रूप कृष्ण को खुदा नहीं माना है । विष्णु को खुदा के धाम में जाने का प्रयत्न करने पर भी नूर तजल्ली अर्थात् खुदा का तेज जलाता है । जिसका प्रमाण निम्न है । सिनगार प्र० २ ।

जित चल न सके जबराईल, कहे आगू जलत मेरे पर ।
जलावत नूर तजल्ली, मैं चल न सकों क्यों कर ॥५६॥

अर्थ—जिस खुदा के धाम में जबराईल—अर्थात् विष्णु जा नहीं सकता आगे जाने का प्रयत्न करने पर वह कहता है कि हमारे पैर जलते हैं जलाने वाला खुदा का तेज है मैं किस प्रकार वहाँ जा सकता हूँ ।५६।

यदि देवचन्द्र ने प्राणनाथ को कुरान पुराण के अ ः खोलने की कुंजी इस प्रकार दिया है तो देवचन्द्र हिन्दू कैसे कहे जा सकते हैं। देवचन्द्र को वैष्णव मत में दीक्षित बतलाने से उन्हें विष्णु उपासना का ही उपदेशक बतलाना चाहिये था ऐसा न बतलाने से यह सिद्ध हो जाता है कि प्राण-नाथ ने और लालदास ने भारतीय आर्यों को इस्लाम में दीक्षित करने का एक आधार बनाया है यदि हिन्दू वैष्णव धर्म को आधार नहीं बनाते तो भारतीय आर्य इस्लाम में कैसे दीक्षित हो सकते हैं।

अस्तु यदि प्रणामी धर्म वाले देवचन्द्र को हिन्दूमानकर वैष्णव संप्रदाय मे दीक्षित होना मानते है तो उन्हे चाहिये कि वे सनातन वैदिक वैष्णव मत को स्वीकार करे तभी देवचन्द्र का हिन्दू समाज मे जन्म व वैष्णव संप्रदाय से दीक्षित कहना सार्थक हो सकता है। देवचन्द्र की कोई रचना न होने से यह भी नही कहा जा सकता कि ये इस्लाम मत के पक्षपाती थे। प्रथम अध्याय मे वर्णन किये हुये लाल दास के अनुसार जो विहारी जी ने प्राण नाथ को पत्र दिया उसमे साफ लिखा हुआ है कि (**हम काढे तुम्हे इस धाम**) मै तुमको अपनी वल्लभ संप्रदाय से अलग किये देता हूँ क्योंकि तुम इस्लाम मत के पक्षपाती हो। यदि प्रणामी धर्म वाले विहारी जी के इस कथन को सत्यमान लेवे तो देवचन्द्र इस्लाम मत के दोष से मुक्त हो जाते है और वे हिन्दू वैष्णव माने जा सकते है। इसी तरह वर्तमान प्रणामी समाज भी यदि प्राण नाथ के सिद्धान्तों को त्याग कर विहारी जी के वल्लभ मत का अनुसरण करें तब तो इस समाज को भी हिन्दू वैष्णव कहा जा सकता है। यदि प्राण नाथ के कथनानुकूल देवचन्द्र को गुरु मानकर इस्लाम मत का उपदेशक माना जाता है तो इन्हे हिन्दू यह बतलाना मिथ्या सिद्ध होकर भारतीय आर्यो से छल करना सिद्ध हो जाता है। लाल दास ने यह भी लिखा है कि देवचन्द्र को ११ वर्ष की अवस्था मे वैराग्य प्राप्त हुआ

और वल्लभ संप्रदाय मे दीक्षित हुये फिर युवा अवस्था मे विवाह हुआ अर्थात वैराग्य के बाद इन्हे राग की प्राप्ति हुई जो भारतीय परम्परा के विरुद्ध है।

लाल दास ने प्राणनाथ को जो हिन्दू होना बताया है यह तो सर्वथा भूठा प्रतीत होता है। प्राणनाथ के १४ ग्रंथो मे यह कहीं नही वर्णन पाया जाता कि ये हिन्दू थे इन्होने आपनी तारतम वाणी मे सर्वत्र इस्लाम मत का ही उपदेश दिया है व अपने को स्पष्ट शब्दों मे मुसल्मान होना बताया है। जिसके निम्नप्रमाण है सनंध प्र० ३४

जो कोई मुस्लिम सो सब, हम सब मुस्लिम एक है।
असल ए कठोर हे हमारा, हे खसम एक हमारा विना मुस्लिम नही हे दूजा ॥१७॥

अर्थ—जो कोई संसार मे मुस्लिम है वे सब और हम सब निजानन्द संप्रदाय के जितने मुस्लिम हैं वे सभी एक हैं और हमारा एक ही असल स्थान (खुदा का धाम) है और एक ही हम सबों का मालिक खुदा है बिना मुस्लिम के संसार मे दूसरे का कोई अस्तित्व ही नही है। चौपाई मे हम शब्द का प्रयोग उत्तम पुरुष अपने के लिये हुआ है। सब शब्द का योग होने से उत्तम पुरुष बहुवचन भी हो जाता है जिसका अर्थ हुआ मै प्राणनाथ और सब हमारे अनुयायी मुस्लिम एक ही है। दूसरा प्रमाण क्यामत नामा प्र० ६

हो सैयाँ फुरमान ल्याये हम, आये वतंन से वास्ते तुंम।
इनमे खबर हे तुमारी, हकीकत देखो हमारी ॥१॥

अर्थ- प्राणनाथ जी कहते हैं कि अय सखियो—प्रणामीधर्मानुयायियों कुरान को मै ले आया हूँ और तुम्हारे ही लिये लाहूतधाम से आया हूँ इस कुरान मे तुमारी सब खबरे है और इसमे हमारी सब हकीकतो का वर्णन है। खुलासा प्र० ४

सुनत जमात याको कहे, और कह्या दीन उमत।
महंमद की गिरोमिने, सक न सुभेइत ॥१३॥

अर्थ :—प्रणामी धर्म के अनुयायी ब्रह्म सृष्टियों को ही सुन्नी मुसलमानों का समूह कहा गया है। और इसी को उमतो अर्थात् सबसे बड़े मौलवियों का दीन (धर्म) कहा गया है इस महंमद की गिरो (जमात) में से किसी को संदेह व भ्रम नहीं करना चाहिए अर्थात् प्रणामी समाज महंमद की ही गिरोह है। उक्त कथन से इस मत के अनुयायी हिन्दू लोग प्रणामी निजानन्द आदि हिन्दी बोधक शब्दों के चक्कर में पड़कर अपने को हिन्दू धर्मावलम्बी कैसे कह सकते है।

अस्तु प्राणनाथ जी जब अपनी रचना में अपने को मुसल्मान बताते हुए सब सुन्दर साथ को भी मुसल्मान बता रहे हैं तो अन्य लाल दास के कथन से वे हिन्दू कैसे प्रमाणित माने जा सकते हैं। कुरान को ले आने के कथन से इन्होंने अपने को महंमद बताया है और सखियों-ब्रह्म सृष्टियों के लिए कहते हैं कि मैं लाहूत से तुमारे लिए ही आया हूँ। इन प्रमाणों से सिद्ध होता है कि इतिहास के लेखक लालदास ने हिन्दुओं के सामने इनकी जातीयता को छिपाया है।

पूर्व पक्षी :—महात्मा फकीर होकर इन्होंने जातीयता को त्याग कर हिन्दू मुसल्मानों को दोनों भापा से समझाया है। उत्तर पक्षी :-यह कथन बिलकुल गलत हैं इन्होंने हिन्दू देवताओं से लाहूत धाम में कोई सम्बन्ध नहीं जोड़ा। पूर्व पक्षी :—ब्रह्म सृष्टि का अर्थ देवता है। उत्तर पक्षी :—ब्रह्म सृष्टि शब्द का अर्थ स्वामी जी ने देवता नहीं माना है और न इसका अर्थ देवता होता ही है। स्वामी जी ने इसका अर्थ सुन्नत जमात अर्थात् सुन्नी मुसल्मानों का समूह माना है। जिसके प्रमाण निम्न है। मारफत सागर प्र० १२

एही सुन्नत जमात, महंमद बेसक दीन। सक सुभे न इनमें, जित असराफील अमीन ॥१५॥

अर्थ :—स्वामी जी कहते हैं कि ये ब्रह्म सृष्टि ही सुन्नत जमात है ये संशय रहित महंमदी दीन (धर्म) के हैं इन विषयों में किसी प्रकार का संदेह व भ्रम नहीं है क्योंकि इन का वकील असराफील नाम का फिरस्ता है। तथा दूसरी चौ०

ए जो सुनत जमात, होय सके न जु देखिन। ए गिरो फोड़ क्यो जुदे पड़े, जिनो असल अरस में तन ॥१६॥

अर्थ—स्वामी जी कहते हैं ये जो सुन्नत जमात अर्थात् ब्रह्म सृष्टि है ये खुदा से एक क्षण के लिये भी जुदे नहीं पड़ सकते ये अपने गिरोह (समूह) से फूट कर अलग कैसे हो सकते हैं क्योंकि इनका असल शरीर लाहूत में है।१६। स्वामी जी ने ब्रह्म सृष्टि इस संस्कृत शब्द का जहाँ कही भी प्रयोग किया है वह सुन्नत जमात ही के लिये किया है। देखिये प्रकाश प्र० ३६

ब्रह्म सृष्टि बिना न जाने कोय, ये सृष्टि ब्रह्म से न्यारी न होय ॥७२॥

अर्थ—धाम की लीलाओं को ब्रह्म सृष्टि के बिना अन्य नहीं जान सकता ये ब्रह्म सृष्टि ब्रह्म से अलग नहीं हो सकती। उक्त १६ और ७२ चौ० में सुन्नत जमात और ब्रह्म सृष्टि शब्द एकार्थक है। क्योंकि उसी एक वस्तु तत्व को खुदा से पृथकता का निषेध बताते हुए सुन्नत जमात और ब्रह्म सृष्टि शब्द का प्रयोग केवल कथन मात्र के लिये भिन्न प्रयोग किया गया है वस्तु तत्व एक ही है।

अस्तु इन्होंने हिन्दू के देवताओं का अपने लाहूत धाम से कोई सम्बन्ध नहीं जोड़ा बल्कि इन्होंने यहाँ तक कहा है कि मैं प्राणनाथ बैकुंठ जाकर विष्णु को क्यामत की खबर दूँगा और विष्णु को मोक्ष प्रदान करके सब जगत को मोक्ष देऊँगा। उक्त आशय की चौ० निम्न है। प्रकाश प्र० ३१

वैकुंठ जाय विष्णु को, सब देसी खबर। विष्णु को पार पोहोचावही, सब जन सचराचर ॥१८॥

इस प्रकार के कथन से हिन्दू और मुसलमानों को दोनों भाषाओं से समझाना सिद्ध नहीं पाया जाता। और जो पूर्व पक्षी ने कहा कि महात्मा होने के कारण इन्होंने जातीयता को त्यागा है यह कथन भी सर्वथा गलत है क्योंकि इन्होंने परलोक अपने लाहूत धाम में भी सुन्नी मुसलमानों का ही यश गान किया है जिसका प्रमाण इनके चौदहों ग्रंथों के प्रत्येक प्रकरणों में भरा पड़ा हुआ है। अतएव जो व्यक्ति अपने को भारतीय आर्य कहने का दावा रखते हैं वे प्राणनाथ के बनाये हुए ग्रंथों को गंभीरता पूर्ण अध्ययन कर उसके धार्मिक मूल तत्वों की वास्तविकता पर विचार करें। मैं यह कहूँगा कि इन्होंने सम्राट औरंगजेब की ही नीति को अपनाया है। किन्तु वह भारत का शाशक था इस कारण बलात् आर्यो को इस्लाम में परिवर्तित करता था और इन्होंने हिन्दी और संस्कृत शब्दों को रखकर वाक् छल के द्वारा इस्लाम में परिवर्तन करने का अथक प्रयत्न किया है। दोनों के लक्ष एक है। अय प्रणामियों मैं भी तुमारे ही समाज का आदमी हूँ किसी दुर्भावना से इस ग्रंथ को नहीं लिख रहा हूँ। केवल देश और समाज सेवा का दृष्टि कोण रखते हुए सत्य का अन्वेषण करना ग्रंथ लिखने का मुख्य उद्देश्य है। आप शान्त हो अध्ययन करें। सत्यमेव जयते।

"देवचन्द्र जी के परलोक यात्रा के बाद स्वामी प्राणनाथ ने पूर्ण रूपेण संप्रदाय के प्रचार का भार वहन किया ये यत्र तत्र घूमते हुये जागनी लीला[1] का उपदेश देने लगे। बिहारी जी की अपेक्षा समाज इनकी ओर अधिक आकर्षित हुआ संप्रदाय में जन संख्या की वृद्धि होने लगी इन्होंने लालदास को भी दीक्षित किया यह इनका सबसे बड़ा सहायक और समाज में सम्मानित व्यक्ति हुआ निजानंद संप्रदाय के इतिहास का लेखक यही है। इनकी रचना जो बीतक नामक ग्रंथ है

---

१. जागनी लीला—जो मोमिन धाम से अवतरित हुए हैं उन्हें पूर्व जन्म का स्मरण दिलाकर जागृत करना।

इसमें खिचड़ी भाषा का प्रयोग है अधिकतर आरबी शब्दों का प्रयोग है लिपि हिन्दी है काव्य कला पक्ष से शून्य तुकबंदी चौ० से रचना की गई है भाषा की अशुद्धता विशेष रूप से पाई जाती है। इनकी जीवनी का कोई इतिहास उपलब्ध नहीं है और न इन्होंने वीतक में अपने लिये कुछ लिखा ही। इतना अवश्य लिखा हुआ है कि जिस समय ये भारत से माल जलयानों द्वारा ले जाकर अरब देश में सौदागीरी का कार्य कर रहे थे उस समय प्राणनाथ ने एक आदमी को भेज कर अरब देश से अपने पास बुला लिया। व्यापार में घाटा पड़ने के कारण इसको छोड़ दिया। लालदास के ग्रंथ के देखने से ऐसा आभास होता है कि ये हिन्दू नहीं थे स्वामी प्राणनाथ के बाद संप्रदाय में इन्हीं का आदर है। स्वामी जी धर्म प्रचार के लिये इनको हमेशा अपने पास रखते थे।

जब स्वामी जी का समाज में अधिक प्रभाव पड़ने लगा तब विहारी जी जो गुरु गद्दी पर बैठे थे उनका प्रकाश मलिन पड़ गया इन दोनों का मन मोटाव तो था ही जो प्रथम अध्याय में लिखा जा चुका है। स्वामी जी के सब शिष्यों ने मिल कर यह गोष्ठी की कि धणी देवचन्द्र जी विहारी जी के हृदय में विराजमान है अथवा स्वामी जी के सबो ने सिद्ध किया कि स्वामी जो के हृदय में विराजमान है। अतः सब लोगों ने स्वामी जी को सूरत की गद्दी पर बैठा दिया। विहारी जी के मृत्यु उपरान्त जामनगर के चाकला मन्दिर में स्वामी जी के शिष्यों का आधिपत्य हो गया। जाम नगर की गद्दी पर जो महन्त आशीन होते हैं वे पन्ना और सूरत नहीं जाते पन्ना वाले कहते हैं कि यह धाम है हमारी गद्दी असली है मैं प्राणनाथ स्वामी जी के आगे किसी को उच्चासन देकर आरती न उतारेंगे इस तरह गुरुत्व सम्मान न होने से जामनगर वाले पन्ना सूरत नहीं जाते थे।

प्राणनाथ और लालदास दोनों अपनी संप्रदाय के विकास के लिये अधिक प्रयत्नशील थे स्वमत पुष्टि के लिये इन्हें हिन्दू शास्त्रों के अलावा

इस्लाम के ग्रंथों से बहुत कुछ सहायता मिलने का इतिहास लालदास कृत वीतक नामक पुस्तक से मिलता है वे लिखते हैं कि सूरत नगर में एक सौदागर के पास तफसीर हुसेनी (कुरान का टीका) फारसी भाषा में है उसके लेने के लिये लालदास जी वहाँ कई बार गये किन्तु उसने दिया नहीं अन्त में स्वामी जी ने अपने शिष्य दयाराम को ४२ रुपये देकर पुस्तक मँगवा लिया उसे किसी मुल्ला से पढ़वाया। वी० प्र० ३७

प्रथम इना अंन जलना, सूरत इन पढ़ी जामे तीन तकरार। इसारते सारी खुली, जो लिखी परवर दिगार ॥७५॥ व्रजरास में हम थे, हम तीसरे आये इत। ये तो वही बात है, जो हमको कही तित ॥७६॥ इना आतेना सूरत ए पढ़ी मुल्ला जब जमुना ताल पाल की हकीकत पाई तब ॥७७॥

अर्थ—सबसे प्रथम इना अंन जलना सूरत को जब मुल्ला ने पढ़ा जिसमें तीन प्रकार के वायदे थे वे सब इसारते जो खुदा ने लिखी थी खुल गई।७५। वे कौन तीन प्रकार के वायदे थे वह बताते हैं। १ व्रज २ रास ३ जागनी तो पहले वायदे गोकुल में हमी आये थे दूसरे वायदे रास क्रीड़ा में भी मैं ही आया था और तीसरे वायदे वर्तमान समय में आखिरी महम्मद के रूप में मैं ही आया हूँ। तफसीर हुसेनी में तो वहीं लिखा हुआ है जो देवचन्द्र ने हमको बताया था। ७६। जब दूसरी सूरत इना आतेना को मुल्ला ने पढ़ा तो लाहूत[1] में जो जमुना नदी और ताल पाल है उसकी हकीकत सब मिल गई ।७७। इस प्रकार अपनी कल्पना के अनुसार उक्त सूरतो का अर्थ मान कर तीन दिन स्वामी जी सेज से उठे नहीं अपने शिष्यों को बुला कर कहा कि इस प्रसन्नता की खबर प्रत्येक सुन्दर साथ अर्थात् अनुयायियों के पास भेज दो कि हमने महम्मद साहब का पत्र पाया है जो महम्मद साहब ने कुरान के बीच कहा है

१. लाहूत-जहाँ से मुस्लिम भक्त मोमिन आते हैं उस धाम का नाम।

वे सब बातें रूह अल्ला कलांम अर्थात् देवचन्द्र जी से मिलती है इससे दोनों दीन मिल कर एक हो गये। वी० प्र० ३७

जब ईसा महम्मद मिल गये, कलमा और तारतंम। भागा दिल का कुफर, जाग देखी आतम ॥६४॥

यहाँ ईसा शब्द देवचन्द्र के लिये प्रयुक्त किया गया है और महम्मद कुरान के बनाने वाले जब ये दोनों एक में मिल गये और उधर कलमा (कुरान की आयते) देवचन्द्र का तारतम मंत्र इन सबों की एकता से दिल का अज्ञान दूर हो गया और आत्मा के जागृत होने से सब दृष्टि गोचर होने लगा। इस प्रकार की प्रसन्नता का पत्र प्रत्येक जगह पहुंचाया गया।"

मीमांसक :—स्वामीजी ने जो यहाँ दोनों दीनों की एकता सिद्ध किया वह एकता भी नहीं सिद्ध होती यदि आपको एकता सिद्ध करना अभीष्ट था तो प्रत्येक अवतारों और विभिन्न संप्रदायों के सिद्धान्त में एकता दिखाते तो यह अवश्य ही मान लिया जाता कि आपके सिद्धान्त बहुत ऊँचे हैं किन्तु आप जिस प्रथम वायदे व्रज और दूसरे वायदे रास में अपना आना बताते हैं और मथुरा द्वारिका में अपना आना नहीं बताते तथा मथुरा में अपने से भिन्न तत्व विष्णु को आना बताते हैं तो कहाँ एकता सिद्ध होती है। यदि आपका सिद्धान्त वेदानुकूल 'सर्वखल्विदं ब्रह्म' हो जाय तब तो कोई आपत्ति ही नहीं है। आप स्वतः भेद सिद्ध करते हैं आपने २४ अवतारों में रामादि को क्यों भिन्न कहा आप तो एक ही कृष्ण के कलेवर में स्थित आत्मा को कुछ काल पर्यन्त महंमद का रूप मानते हैं बाद में उसे महंमद न मानकर दूसरा तत्व विष्णु बताते हैं जब कृष्ण के एक ही शरीर में आपने भेद स्थापित कर दिया तो अन्य सबों में एकता कैसे हो सकती है। और आपने जो तफसीर हुसेनी को सुनकर उसके इसारती अर्थात् सांकेतिक अर्थों की कल्पना व्रज रास में मैं महंमद आया था यह किया यह भी गलत हो सकता है आप

इसारतों की वास्तविकता पर कैसे पहुंच गये क्या उसका इसारा व्रज रास जागनी के लिये है यह विश्वास नहीं किया जा सकता क्योंकि इसी तरह आप वेद शास्त्रों के विषय में भी कह देते हैं कि इन सब में हमारा ही वर्णन है। उदाहरण के लिये स्वामी जी की चौ० प्रस्तुत की जाती है खुलासा प्र० ७ चौ० १०।

फुरमान एक दूसरा, शुकजी ल्याये भागवत। ये खोल न सके त्रैगुण, यामे हमारी हकीकत।१०॥

एक जो दूसरा फुरमान भागवत नामक ग्रन्थ है इसको शुकदेव जी ले आये हैं इसके अर्थ को ब्रह्मा विष्णु महेश भी नहीं खोल सकते इसमें हमारी हकीकतों का वर्णन है। इसी तरह लालदास ने भी लिखा है। वी० प्र० ६।

कागद जो भागवत का, ले आया शुक मुनी। इनका अर्थ ब्रह्म सृष्टि[1] खोले जान अपनी ॥४॥

उक्त चौपाइयों के कथनानुकूल भागवत आदि ग्रन्थों में इनके विषय का कोई वर्णन न होने से जिस तरह यह कथन झूठा है उसी तरह तफ-सीर हुसेनी में भी व्रज रास और जागनी का इशारा न होगा यह विश्वास किया जा सकता है। यदि तफसीर हुसेनी का इशारा उक्त तीन वायदों के लिये हैं। तो मौलवी लोग इस अर्थ को क्यों नहीं मानते कि व्रज में रास में महंमद ही थे और तीसरे वायदे जागनी करने वाले आखरी महंमद प्राणनाथ हैं। यदि कुरान के आरफ लोग व्रज रास वाले कृष्ण को महंमद और आपको भी महंमद और सब संसार को महंमद रूप मान लेवे तो संसार से सांप्रदायिक झगड़े की बुनियाद ही खतम हो जाय। किन्तु इतना ऊँचा और उदार विचार वेदों के सिवा अन्य किसी का नहीं है। श्रुति का कथन है (**एकोदेवः सर्वभूतेषु गूढः सर्वव्यापी सर्व भूतान्तरात्मा**) वह एक ही देव संपूर्ण भूतों में छिपा हुआ सर्वत्र

१—ब्रह्म सृष्टि = प्रणामी धर्म में दीक्षित में मोमिन समाज

व्यापक है और सब प्राणियों का अन्तरात्मा है। वेद यह नहीं कहता कि यवनों ईशाइयों दुनिया की विभिन्न जातियों का वह अन्तरात्मा नहीं है वह तो सबको अपना ही रूप मानता है वेद तो भिन्नता प्रतिपादन करने वाले की निन्दा करता है श्रुति। (**मृत्योः समृत्यु माप्नोति य इह नानेव पश्यति**) जो ईश्वर के विषय में नानात्व (अनेक) कल्पना करता है वह मृत्यु से मृत्यु को प्राप्त होता है। वेदान्त का सिद्धान्त ज्ञान की उस चरम सीमा पर पहुंचाता है जहाँ राम और रहीम इन दोनों में एक ही तत्व भाषित होने लगते हैं। इससे स्पष्ट हो गया कि वैदिक सनातन धर्म से इन्हीं के कथनानुसार कोई एकता नहीं, अपितु इस्लाम धर्म के साथ प्रणामी धर्म की एकता है।

स्वामीजी ने मथुरा द्वारिका वाले कृष्ण को महंमद नहीं कहा वहाँ विष्णु का अवतार कह कर भेद सिद्ध किया है। अतः प्रणामी और हिन्दू धर्म मिलकर एक हो गये इस प्रकार का कथन केवल वाणी को श्रम देना है।

यदि आप मथुरा द्वारिका वाले कृष्ण को भी महंमद कहकर संबोधित करते तो हमारी कलम कभी न उठती अवश्य ही दोनों दीन एक हो जाते भाषा से हमें कोई द्वेष नहीं संसार में विभिन्न भाषायें हैं देशकाल के अनुसार उस एक ही तत्व को अनेक भाषाओं द्वारा व्यक्त कर सकते हैं उन सबों की वास्तविकता एक ही होना चाहिये। आप जब विष्णु को महंमद नहीं कहा भेद सिद्ध कर हिन्दुओं को अलग कर दिया केवल कलमा और तारतम की एकता बतलाते हैं तो इस रहस्य को मौलवी लोग जाने कि कलमा और तारतम किस प्रकार एक हुआ। जो भी हो स्वामीजी ने इस्लाम धर्म और प्रणामी मत की एकता सिद्ध करने का प्रयास अनेक स्थलों पर किया है। हिन्दू धर्म के साथ एकता नहीं सिद्ध किया।

इति निजानन्द मीमासायां पूर्वार्धे भागे द्वितीयोऽध्यायः २।

अथ तृतीयोऽध्यायः ३ । प्रश्नोत्तर

"जाम नगर में श्यामजी के मंदिर में कान्ह जी भट भागवत की कथा बाँच रहे थे वहाँ प्राणनाथ ने और उनके भाई गोवर्धनदास ने भट से प्रश्न किया। बी० प्र० ११।

तब पूँछी दोऊ भाइ ने, भट कितने गुन कै लोक। तत्व कहो कितने सही, कितने प्रलेलोक ॥६६॥ त्रिगुण से चौथो गुन नहीं, पाँच ते छठों न तत्व। चौदे ते लोक नहीं पंद्रमो, और प्रले चार हे सत ॥६७॥ तो कहो पूरन विष्णु सरूप जो, सो रहत कौन ठोर। कही क्षीर समुद्र अक्षयवट पर, रहे अंगुष्ठ मात्र न और ॥६८॥ चौथो गुन तुम न कह्यो, छठो तत्व नहीं होय। लोक कह्यो नहीं पंद्रमो, रहे कोन ठोर वह सोय ॥६६॥ तब भट की सुध बुध गईं, कही ये जवाव ब्रह्मा से न होय ॥

मीमांसक —पाठक गण स्वामीजी की ज्ञान गरिमा का अवलोकन करें इसी प्रकार के विद्याबल से इस संप्रदाय का रूप आधारित है जैसे प्रश्नकर्त्ता है वैसे ही उत्तरदाता या वही प्रश्नकर्त्ता और वही उत्तर दाता।६६। मी० चौ० में भट जी से पूँछा जाता है कि कितने गुण हैं और कितने लोक हैं। और तत्व कितने हैं और कितने लोक प्रलय के अंदर आते हैं। और आप ही ६७ मी चौ० में उत्तर देते हैं कि तीन गुण से चौथा गुण नहीं—स्वामीजी भट्टजी की तरफ से जो उत्तर दे रहे हैं कि तीन गुण है यह गलत है गुण तो २४ होते हैं। चौ० में प्रश्न गुण के लिये है यहाँ सत रज तम ये प्रकृति के गुण बतलाये गये हैं। अतः त्रिगुण कहने से प्रकृति का बोध होता है गुण का नहीं। न्याय शास्त्र में निम्न

२४ गुण माने गये हैं। रूप, रस, गंध, स्पर्श, संख्या, परिमाण, पृथक्त्व, संयोग, विभाग, परत्व, अपरत्व, गुरुत्व, द्रवत्व, स्नेह, शब्द, बुद्धि, सुख, दुख, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, धर्म, अधर्म, संस्कार इस तरह २४ गुण शास्त्रों में माने गये हैं। गुण और त्रिगुण में अन्तर है। सांख्य शास्त्र में (सत्व रज तमसां साम्यावस्था प्रकृतिः) सत रज तम इन तीनों गुणों की साम्यावस्था का नाम प्रकृति है।

और जो ६७ चौ० में बताया गया कि पाँच तत्व से छठा तत्व नहीं यह भी गलत है तत्व भी २४ होते हैं। गीता अ० १३ श्लोक ५।

महाभूतान्यहंकारो बुद्धि रव्यक्त मेवच इन्द्रियाणि दशैकं च पञ्चचेन्द्रिय गोचराः ॥५॥

अर्थ—महाभूतानि-पंच महाभूत (आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी अहंकार :—अहंकार बुद्धि :—बुद्धि च—और अव्यक्तम्—मूल प्रकृति अर्थात् त्रिगुणमयी माया एव-भी-च-तथा दश इन्द्रियाणि-श्रोत्र, त्वचा, नेत्र, रसना, घ्राण, वाक, हस्त, पाद, उपस्थ, गुदा, ये दश इन्द्रिया एकम्-मन च-और पंचइन्द्रियगोचराः—पाँच इन्द्रियों के विषय शब्द, स्पर्श रूप, रस, गंध, इस तरह भगवान ने २४ तत्व बताये हैं। अतः केवल पाँच ही तत्व होते हैं इस प्रकार का कथन शास्त्रोक्त पद्धति से विरुद्ध है।

और स्वामीजी ने जो यह कहा कि चौदह लोक जब चार प्रलय के, अन्दर आ जाते हैं तब विष्णु का स्वरूप कहाँ रहता है। इसका भी उत्तर, गीता में ही देखिये। गीता अ० ८।

अव्यक्ता द्वयक्तयः सर्वाः प्रभवन्त्य हरागमे, रात्र्यागमे प्रलीयन्ते तत्रैवाव्यक्त संज्ञके ॥१८॥

सर्वाः व्यक्तयः—संपूर्ण द्रश्यमात्र भूतगण अहरागमे—ब्रह्मा के दिन प्रवेश काल में अव्यक्तात्—अर्थात् ब्रह्मा की अव्यक्त प्रकृति से प्रभवन्ति-उत्पन्न होते हैं। रात्र्यागमे—ब्रह्मा के रात्रिकाल में तत्र—उस अव्यक्त

संज्ञके—अव्यक्त नामक ब्रह्मा के सूक्ष्म शरीर में एव – ही प्रलीयन्ते-लय हो जाते हैं। यहाँ प्राकृत प्रलय के समय कार्य ब्रह्म ब्रह्मा अपने लोक के सहित कारण रूप मूल प्रकृति जिसे अव्यक्त अक्षर कहा जाता है उसी में लय हो जाता है। और जिस विष्णु को आपने कहा कि वह कहाँ रहता है वह अक्षय अविनाशी है वह प्रकृति के लय होने पर भी अविकारी भाव से सर्वत्र स्थित है वह किसी देश विशेष में नहीं स्थित है जो देश विशेष में था वह अव्यक्त अक्षर में विलीन हो गया और प्रकृति से पर जो विष्णु तत्व है वह केवल अपने महिमा में स्थित है (श्रुति का भी इसी तरह निर्देश है। (**सभगवः कस्मिन् प्रतिष्ठत इति स्वेमहिम्नि**) वह ब्रह्म कहाँ प्रतिष्ठित है अपनी महिमा में। गीता अ० ८। **परस्तस्मात्तु भावोऽन्योऽव्यक्तोऽव्यक्तात्सनातनः यःससर्वेषुभूतेषु नश्यत्सुनविनश्यति॥२०॥** शब्दार्थ तु–परन्तु तस्मात् अव्यक्तात् परः- उस अव्यक्त नामक अक्षर से भी परे अन्य :—दूसरा अर्थात् विलक्षण यः—जो सनातनः अव्यक्तः भावः –सनातन अव्यक्त (निगुर्ण) भाव है सः—वह विष्णु (सच्चिदानन्दघन पूर्ण ब्रह्म परमात्मा) सर्वेषु भूतेषुनश्य त्सु=सब भूतों के नष्ट होने पर भी न विनश्यति–नहीं नष्ट हाता।२०। मालूम होता है कि स्वामी जी ने वैदिक ग्रन्थों को देखा ही नहीं बालकों जैसा प्रश्न करते हैं कि प्रलय होने पर भी विष्णु कहाँ रहता है इनका अभिप्राय यह कि प्राकृत प्रलय होने पर उसका भी विनाश हो जाता है किन्तु यह धारणा गलत है जो विभु और अनन्त है उसका अन्त बत- लाना अपनी अज्ञता का परिचय देना है। आपने जिस तरह अपने खुदा को देश विशेष में घर बनाकर स्थित माना है उसी तरह शास्त्रीय सिद्धांतों को समझ रक्खा है आपने जिस तरह परिकर्मा नामक ग्रन्थ में खुदा का वर्णन किया है वह अवश्य ही विनाश शील सिद्ध हो जाता है। और जो भट जी के तरफ से उत्तर दिया गया कि वह क्षीर सागर अक्षयवट में रहता है यह पुराणों का मत स्थूल बुद्धि वाले मनुष्यों को समझाने के

लिये है। जैसे मूर्तिपूजा का विधान है कि उपास्य देव के स्थूल रूप में जब चित्त की स्थिरता हो जायगी और अंतःकरण पवित्र हो जायगा तब सूक्ष्म तत्व का उपदेश भी ग्रहण करने की शक्ति हो जायगी इसी से उपदेशकों ने स्थूल से सूक्ष्म की ओर बढ़ने का निर्देश किया है। इसी तरह अक्षयवट का भी कथन है। जैसे आप ही ईश्वर का सर्वत्र होना नहीं मानते वैसे ही स्थूल विचार वाले मनुष्यों को यदि कह दिया जाय कि वह आकाश के समान सर्वत्र व्यापक है तो उनकी समझ में नहीं आयेगा उनकी दृष्टि तो स्थूल वस्तु पर है सूक्ष्म तत्व का ज्ञान कैसे हो। अतएव यह सर्वथा सिद्ध है कि इन्होंने हिन्दू धर्म और उसके मूल उपास्य देव विष्णु भगवान का खंडन हीं किया है।

अस्तु जिस तरह स्थूल विचार वाले स्वामी जी के प्रश्न थे उसी तरह भट जी ने भी स्थूल विचार वाले उत्तर दे दिये अतः भट के उत्तर भी ठीक है और जो यह लिखा कि भट जी की सुध-बुध चली गई तो ऐसा कौन सा जटिल प्रश्न था जिसका जबाब ब्रह्मा भी नहीं दे सकते थे जो ब्रह्मा ज्ञान की निधि है और जो वेद ज्ञान से जगत् का सर्जन करता है यदि वह आपके प्रश्नों का उत्तर नहीं दे सकता था तो आप ही उत्तर लिखते क्योंकि आप अपने को ब्रह्मा से भी बढ़ कर चौथे आसमान के रहने वाले साक्षात् खुदा के रूप बतलाते हैं। जिसका प्रमाण निम्न है। खुलासा प्र० १३

चरन रज ब्रह्म सृष्टि की ढूँढ थके त्रिगुन
कै विध करी तपस्या यों केहे वत वेद वचंन ॥५५॥

अर्थ :—स्वामीजी कहते हैं कि मोमिनो के चरण धूलि के लिये ब्रह्मा विष्णु शंकर ढूँढ़ते-ढूँढ़ते थक गये और कई प्रकार की तपस्या किया है इस तरह वेदों का कथन है। और भट जी की सुधबुध चली गई इसका क्या प्रमाण है लेखक तो आप ही हैं अपने गौरव के लिये आपका भी कथन हो सकता है।

इसी तरह के प्रश्न इन्होंने हवसे में जाकर व्यास जी से किये हैं।
"वीतक प्र० १५

एक हीरे का मंदिर, ताको बड़ो विस्तार। चौरासी लाख जोंजन, ताको करो विचार ॥३९॥ एह ठोर हे किनकी, सो मोहे कहो सुकंन। तब जवाब व्यासे दिया, होए दिल मगंन ॥४०॥ एह ठोर हे अच्छर की, लिख्या शास्त्रो में। तब कदमों लाग फेर कह्या' एहठोर पाऊँ तुमसे ॥४१॥ ए उपर तले माहे बाहिर, किये ब्रह्मांड तीत। सोमोको समझाओ, एजोठोर अतीत ॥४२॥ पाँच तत्व तीन गुन, और मूल प्रकृति। इनको नास तुम कह्यो, एठोर अक्षर की कित ॥४३॥ तब जवाब व्यासे दिया, एठोर आदि नारायन। क्षीर सागर मे रहत हे, लिखी शास्त्रो में पेहेचान ॥४५॥ तब श्रीजी[1] ने कह्या, एतो कही मिने ईंड। ये महाप्रले में ना रहे, उड़े त्रिगुण समेत ब्रह्मांड ॥४६॥"

मीमांसक :—अब व्यास ने बतला दिया कि यह अच्छर का ठौर है तो अच्छर का अर्थ ही अविनाशी होता है और वह अविनाशी आदि-नारायण है तो उसके महाप्रलय के अन्दर आने का प्रश्न ही नहीं उठता। क्या ईश्वर तत्व को महाप्रलय के अन्दर आने का शास्त्रों में निर्देश है। व्यास के बताये हुये तत्व को आपने कैसे कल्पना कर लिया कि ये बातें सब ईंड[2] की है। आपने जो परिकर्मा नामक ग्रंथ में खुदा के धाम सम्बन्ध में लिखा है **(साक बाँदर जो ल्यावत, सखियाँ सबे समारत)** खुदा के भोजन के निमित्त बन्दर जो साक भाजी ले आते हैं उसे सखियाँ

---

१ = श्री जी = स्वामी प्राणनाथ

२ ईंड = ब्रह्मांड

(अर्थात् मोमिन) सुधारती है यह आपका कहा हुआ ईंड का नहीं हुआ और अक्षर नारायण जो ईश्वर बोधक शब्द है वे ईंड के हो गये। इस प्रकार इन्होंने हिन्दुओं के नारायण को नाशवान बताया है अ० १२ में देखिये इन्होंने खुदा के वर्णन में सब भौतिक तत्वों का वर्णन किया है जिससे उसका विनाश अवश्यंभावी है। किन्तु जिस नारायण को शास्त्र अक्षर कहता है उसका विनाश कैसे सम्भव हो सकता है। इसी अक्षर को भगवान ने परमगति और परमधाम बताया है। गीता अ० ८

अव्यक्तोऽक्षर इत्युक्त स्तमाहुः परमां गतिम् यं प्राप्य ननिवर्तन्ते तद्धाम परमंमम् ।२१। व्याख्या-अव्यक्त: अक्षर: इति उक्त: = जिसे अव्यक्त अक्षर ऐसा कहा गया है तम परमांगतिम् आहु: = उस ही अक्षर नामक अव्यक्त भाव को परम गति कहते हैं यं प्राप्य न निवर्तन्ते = जिस सनातन अव्यक्त भाव को प्राप्त कर जीव पीछे नहीं लौटते तत् मम् परमंधाम = वह मेरा परमधाम है। और उक्त ४२ चौ० में जो कहा गया कि अक्षर का ठोर कहाँ है ऊपर, तले, मध्य, बाहर या ब्रह्मांड से परे है इस तरह स्वामी जी ने ईश्वर को देश विशेष में स्थित मान कर ऊपर और तले की जो कल्पना की है यह शास्त्रीय मर्यादा से भिन्न है। ईश्वर व्यापक होने से सर्वत्र है इसका प्रमाण इसी ग्रंथ में कई जगह पाठकों को मिलेंगे। यहाँ गीता अ० १३ श्लोक १५ का प्रमाण दिया जा रहा है।

वहिरन्तश्च भूतानामचरं चरमेवच, सूक्ष्मत्वात्तदविज्ञेयं दूरस्थं चान्तिके च तत् ॥१५॥ व्याख्या-भूतानां वहि: अन्त: = वह परमात्मा चराचर सब भूतों के बाहर भीतर परिपूर्ण है च चरम् अचरम् एव = और चर अचर रूप भी वही है च = और तत = वह सूक्ष्मत्वात् अविज्ञेयम् = सूक्ष्म होने से जाना नहीं जा सकता च = तथा अन्ति के च दूरस्थम्-तत् = अति समीप में और दूर में भी स्थित वही है। अर्थात् वह ईश्वर सर्वत्र परिपूर्ण और सब का आत्मा होने से अत्यन्त समीप में है। तथा अज्ञानी पुरुषों के लिये न जानने के कारण अत्यन्त दूर है।

अस्तु इन प्रमाणों द्वारा आदि नारायण अक्षर का सर्वत्र होना सिद्ध पाया जाता है और स्वामी जी के मतानुकूल उसे ऊपर नीचे या किसी देश विशेष में मानने से वह काल से कवलित हो जाता है जिससे ईश्वरत्व सिद्धी नहीं होती।

और ४३ चौ० में जो मूल प्रकृति का नास बताया गया यह कथन व्यास का नहीं इस तरह अविद्या जनक कथन आप ही के हैं। किस प्रमाण से आपने मूल प्रकृति का विनास बताया मूल प्रकृति तो ईश्वर की एक अचिन्त्य शक्ति है उसके विनास से जगत की उत्पत्ति नहीं हो सकती और जगत की उत्पत्ति वेदों में वर्णित है। **(सूर्या चन्द्रमसौधाता यथा पूर्व मकल्पयत)** इस तरह सृष्टि रचना का प्रमाण होने से उसे विनासी नहीं कहा जा सकता क्योंकि जिस तरह मिट्टी के अभाव में घटोत्पत्ति असंभव है उसी तरह प्रकृति के अभाव बतलाने से जगत् की उत्पत्ति भी असंभव है। और जहाँ शास्त्रों में प्राकृत प्रलयादि का वर्णन है वहाँ प्रकृति के कार्य का विनास बताया गया है कारण का नहीं स्थूल वस्तु के अभाव से सूक्ष्म वस्तु का अभाव नहीं होता जिस तरह घट रूप कार्य के विनास से कारण रूप मिट्टी का अभाव नहीं देखा जाता उसी तरह प्रकृति के कार्य रूप जगत् का अभाव होने से कारण रूप प्रकृति का अभाव होना नहीं सिद्ध पाया जाता। भगवान ने गीता में भी प्रकृति पुरुष को अनादि माना है गीता अ० १३ श्लोक १६। **प्रकृति पुरुषं चैव विद्धय नादी उभा वपि विकारांश्च गुणांश्चैव विद्धि प्रकृति संभवान्।**

व्याख्या :—प्रकृतिं = अर्थात् त्रिगुणमयी मेरी माया चपुरुषम् = और पुरुष अर्थात् क्षेत्रज्ञ उभौ एव = इन दोनों को ही अनादी विद्धि = अनादि अर्थात् नित्य जान च विकारान् = और राग द्वेषादि विकारों को च गुणान् = तथा त्रिगुणात्मक सम्पूर्ण पदार्थों को अपि = भी प्रकृति संभ-

वान एव विद्धि=प्रकृति से ही उत्पन्न हुये जान। वेदों में भी जगत् का उपादान कारण प्रकृति को ही माना गया है। **अजामेकां लोहित शुक्ल कृष्णां वह्वीः प्रजाः सजमानां सरूपाम् अजोह्येकोजुपमाणोऽनुशेतेजहात्येनां भुक्तभोगामजोऽन्यः** । और पुरुष को निमित्त कारण माना गया है। **यतो व इमानिभूतानि जायन्ते येन जातानिजीवन्ति यं प्रयन्त्यभिसं विशन्ति तद् विजिज्ञासस्वतद् ब्रह्म इति श्रुतिः।** जिस तरह तन्तु रूप उपादान कारण के अभाव में निमित्त कारण रूप जुलाहा पट रूप कार्य की सिद्धि नहीं कर पाता उसी तरह प्रकृति रूप उपादान कारण के अभाव में निमित्त कारण रूप ब्रह्म सृष्टि की रचना नहीं कर सकता इन्हीं वैदिक सिद्धान्तों को लक्ष्य करके भगवान ने कहा है। गीता अ० ९ श्लोक १० **(मयाध्यक्षेण प्रकृतिः सूयते सचराचरम्)** हे अर्जुन मुझ अधिष्ठाता के सकास से यह मेरी माया चराचर सहित सम्पूर्ण जगत को रचती है। अतः पुरुष जगत् का निमित्त कारण है।

अस्तु स्वामीजी नारायणादि ईश्वर बोधक शब्दों से जन समूह का विश्वास हटाने के लिये सर्वत्र यही उपदेश देते हैं कि इन सबों का महा प्रलय में नास है शास्त्रों में जो कुछ वर्णन है वह सब ईंड का है केवल हमारा उपदेश ईंड के परे का है। पाठक गण इनके बनाये हुये परिकर्मा नामक ग्रन्थ अथवा इसी ग्रन्थ के १२ अ० में देखे कि इन्होंने किस प्रकार ईंड के परे खुदा का वर्णन किया है। केवल कथन मात्र से यह प्रमाणित नहीं माना जा सकता कि मैं माया के परे की वस्तु का वर्णन कर रहा हूँ।

इति निजानन्द मीमांसायां पूर्वार्ध भागे तृतीयोऽध्यायः ३

अथ चतुर्थोऽध्यायः ४

मत प्रवर्तन दिल्ली का इतिहास

"प्राणनाथ जी अनूपपुर आदि स्थानों से मत का प्रचार करते हुये दिल्ली आये शिष्य शेष निजाम के घर अपना पड़ाव डाला और एक मास तक प्रत्येक के घरो में जाकर अपनी ईमामत को स्वीकार करने के लिये कहते रहे किन्तु किसी ने उनके सिद्धान्तों को स्वीकार नहीं किया। फिर चाँदनी चौक में शिष्य रोहेल खान के यहाँ चार मास रहे। बीतक प्र० ३७।

तब इतदज्जाल ने, गुलवा किया अति जोर। कहूँ रहने न देव ही, वो होत करने लगा सोर ॥१४॥

दिल्ली में इनके उपदेशों को सुनकर लोग गलवा मचा देते थे इनका रहना ही कठिन हो जाता था। फिर एकान्त स्थान में जाकर अपने साथियों से परामर्श किया कि अब रुक्का पत्र के द्वारा पेगांम सर्वत्र भेजा जाय किसी मौलवी के द्वारा फारसी भाषा में रुक्के तैयार किये गये। बीतक प्र० ३७।

हकीकत कयामत की, और पेहेचान ईमाम। हजरत ईसा आइया, हकीकत दीन इस्लाम ॥१७॥

अर्थ—कयामत की हकीकतों का वर्णन करने वाले आखरी महंमद रूप प्राणनाथ जी आये हैं और दीन इस्लाम का वर्णन करने वाले देवचन्द्र जी भी आये हैं इन दोनों को पहचानो। जिसका सारांस यह है कि जो कुरान में यह लिखा है कि आखर जमाने में ईमाम मेहेदी प्रगट होकर कयामत करेंगे और सबों को भिस्त (मोक्ष) देंगे वह कयामत का समय आ पहुंचा है। मैं ईमाम मेहेदी आखर जमाने का प्रगट हो गया हूँ

सब कोई हमारी ईमामत दीन इस्लाम को स्वीकार करो नहीं तो खुदा की लानत होगी। और आजू जमाजूज जाहेर हो गये हैं सूरज पश्चिम में उदय हो गया। इस आशय के पत्र सर्वत्र प्रसारित किये गये। किन्तु १५ दिन तक स्वामीजी के साथी पत्र के जवाब के लिये घूमते रहे किसी ने जवाब नहीं दिया अन्त में एक मौलवी ने कहा यह पत्र किसने भेजा है जवाब दिया गया कि पहाड़ से एक फकीर ने भेजा है। मौलवी ने कहा तुम तो ईमामत का दावा लेकर आये हो हम इसका जवाब क्या दे सकते हैं। इसका जवाब सुलतान दे सकता है। मौलवियों के अलावा लोगों ने कहा यह क्यामत का बड़ा भारी मुकदमा तुम ले आये हो मैं इसका जवाब अकेले नहीं दे सकता ये काम काजी मुल्ला का है। मैं कुरान की बातों और दीन इस्लाम की हकीकतों को क्या जानूँ। पत्र वाहक कान्ह जी ने कहा कि आप इस खबर को सुलतान के समीप भेज दें। वह इन्कार करते हुए बोला कि सुलतान के पास खबर देने की मुझ में शक्ति नहीं है। कार्य में सफलता न प्राप्त कर पत्र वाहक स्वामी जी के पास आकर बोले कि रुक्के का जवाब कोई नहीं देता सब समाचारों को सुनकर स्वामी जी बहुत दुखी हुये और सबों को गोष्ठी के लिये इकट्ठा कर बोले कि साकुमार बाई (औरंगजेब) और साकुंडल बाई (छत्रसाल) व अन्य सब बारह हजार सखियों को जो संसार रूप खेल देखने को आई हैं उन्हें अवश्य ही जागृत कर शिष्य बनाना है दोनों के शिष्य होने से सारा संसार दीन इस्लाम हो सकता है और यही बात धाम यात्रा के समय रूह अल्ला (देवचन्द्र) ने कही है इससे औरंगजेब के पास रुक्का पहुंचाना बहुत ही जरूरी है। ऐसा परामर्श कर इन्होंने दूसरा रुक्का तैयार किया और सब से पहले रात्रि के समय मस्जिद में जाकर सनंधे[1] गाने लगे परन्तु कोई प्रभाव न पड़ा दूसरे दिन राजमहलों में रुक्के चपकाये गये रुक्के का आशय निम्न प्रकार का है बीतक प्र० ३०।

१. संनध-स्वामी जी का बनाया हुआ कुरान की आयतो का अर्थ-साक्षी

तिन रुक्के में लिखा, जो कोई मुसल्मान। तिनको खबर कहत हो, तुम ल्याइयो ईमान ॥८॥ रूह अल्ला मिसल गाजियो, आये अरस से उतर। रसूल इनके सामल, आये अपने वायदे पर ॥९॥ और असराफील आइया, जोस जबराइल संग। सो उतरे अरस अजीम से, खुद खसम के संग ॥१०॥ सुन सावचेत होइयो, जिन करो गफलत। जो कौल तुमसो किया था, सो आया फरदा रोज कयामत ॥११॥ बिन सुने इन रुक्के को, जो बैठे इन दरबार। तिनको लानत खुदाय की, पोहोचे न परवर दिगार ॥१२॥

इस प्रकार चिपके हुये रुक्के को सबों ने बाँचा राज दरबार में भी यह बात फैल गई सुलतान औरंगजेब ने भी रुक्का पढ़ा।

एक दिन सुलतान जुम्मे निमाज के लिये निकला उसका सेक्रेटरी सबकी फरियाद की अर्जियाँ ले रहा था उसी समय लालदास (इसी इतिहास का लेखक) ने भी अपनी अर्जी पेश की उसे उसने फाड़कर जेब में डाल ली और बोला ये बातें मोमिनों की है इसे मुझे छिपाना है। तब लालदास आदि ने कहा महल में रुक्के चपकाने वाले हमी लोग हैं। आप हमारे दिये हुये पेगाम पर ध्यान क्यों नहीं देते यह सुन वहाँ के लोगों ने पीछे घसीट कर बहार भगा दिया। इस बात का पता स्वामी जी को दिया गया वे उस समय उदयपुर में थे इन्होंने पत्र में लिखा आप सब कोई दीन इस्लाम के कार्य में डटे रहो मैं शीघ्र आ रहा हूँ स्वामीजी दूसरे दिन दिल्ली आ पहुंचे। पुनः सबों से गोष्टी की गई सब मोमिन मिल कर गर्जने लगे चाहे हमलोग टूक-टूक हो जायँ मगर दीन इस्लाम का कार्य नहीं छोड़ सकते। उसी तरह मस्जिद में जाकर वे फिर सनंधे गाने लगे इनका जोरों से पढ़ना सुनकर मस्जिद का ईमाम ऊपर से नीचे

की ओर आया और रेहेमत-रेहेमत कहते हुए इन लोगों का हाथ पकड़ कर सुलतान के समीप ले गया और अंदर जाकर बोला कि ईमाम का पैगांम आया है। यह बात सुनकर औरंगजेब बाहर निकला और चबूतरे पर आकर खड़ा हो गया और बोल तुम लोगों का क्या कार्य है। इन लोगों ने कहा कि हम लोग दीन इस्लाम के आशिक हैं सुलतान ने कहा कुछ अपना निजी काम बतलाओ या जो कुछ माँगना हो तो माँगो इन्होंने कहा मैं यही माँगता हूँ कि आप हमसे रूबरू बातें करें और हमारी आपके बातचीत के दरम्यान में कोई अन्य व्यक्ति न आ सके। सुलतान ने जवाब दिया कि मैं ऐसे मुरदारों से बातचीत नहीं करना चाहता। पौलाद खान को इशारा किया गया कि इन लोगों को गिरफ्तार किया जाय तुरन्त कोतवाल के हवाले कर बन्द कर दिया गया। बीतक प्र० ४५।

पीछे उनके मन में, हमारा भरा औगुंन। क्या हिन्दू या मुसल्मान ये, किनके भेजे आये हे॥ कछु दगा है इन मन, ऐसा जान साथ कों। किये कोतवाल हवाले मोमिन॥

गिरफ्तार हुये मोमिनों की पेशियाँ भी चालू हो गई। बी० प्र० ४१।

इन समे दिल्ली मिने, घरघर पड़ी खड़भड़। जिनके घर बीच थे, तिन भया बड़ा डर॥४६॥

इस तरह दिल्ली में सर्वत्र आतंक छा गया जिसके घर में स्वामी जी रहते थे उसे भी डर हो गया कि कहीं हम भी न फँस जाँय। स्वामीजी इन परिस्थितियों को देखते हुये मोमिनों को कैद से न छोड़ाकर पुनः उदयपुर चले आये। ये जिस कामना को लेकर सुलतान के समीप गये वह सिद्ध न हो पाया इनका यह उद्देश्य था कि यदि बादशाह हमारा शिष्य हो जायगा तो मैं आसानी से इस्लाम धर्म का प्रचार कर विशेष

प्रभुत्व प्राप्त कर लेंगे। किन्तु उसमें विशेष शक्ति थी उसके दिल में संदेह हो गया कि ये व्यक्ति मुझसे एकान्त में क्यों बातें करना चाहते हैं। ये हिन्दू हैं या मुसलमान इनको भेजा किसने हमें कहीं धोखा तो नहीं हो रहा है ऐसा सोचकर कैद करने का हुक्म दे दिया। कैद से मुक्त होने पर भी इनकी परीक्षा के लिये सुलतान के गुप्तचर इनका पीछा तब तक करते रहे जब तक इन्होंने पन्ना जंगल की शरण नहीं ले लिया।

इनके शिष्य हिन्दू हीन वर्ग के और अशिक्षित मुसलमान भी हुये जैसे नूर महंमद, मुराद खाँन, अबदुल्ला नबी, यार खाँन इत्यादि। ये जब हिन्दुओं को शिष्य बनाते थे तो हिन्दुओं की सी वेष भूषा धारण करते थे और कहते थे कि मैं निष्कलंक बुद्धावतार प्रगट हो गया हूँ और जब मुसलमानों को शिष्य बनाने का मौका पाते थे तब कहते थे कि कुरान में जो आखरी महंमद प्रगट होने को कहा है वह मैं प्रगट हो गया हूँ हमारी इमामत को स्वीकार करो।

जेल से छूट कर जब मोमिन लोग स्वामी जी से मिले तब इन्होंने मुसलमानी वेष भूषा को बदल कर हिन्दुओं की वेष भूषा को धारण कर लिया। वीतक प्र० ४६

आय पहुँचे उदयपुर, मुलाकात करी श्रीराज। भेष बदल सामिल भये, भये इस्लाम के काज ॥५०॥

जेल से छूट कर आये हुये मोमिनो ने अपना सब वृत्तान्त स्वामी जी से कह सुनाया औरंगजेब के पैगाम स्वीकार न करने की बात को सुन कर स्वामी जी क्रोधावेश में हो गये और बोले। वी० प्र० ४१

भेज इनो तिनको, दिया कसाला जोर। अब लिये कहा जात है, मारो इस ही सोर ।२। मैं भेजे मोमिनो को, दे अपना पेगांम। तो गुनाह बैठा इनो पर, कोई न बचावे इन काम ॥३॥ जैसा मारना पैगम्बर, तैसा तिनके दोस्त। जाहेर होसी जहांन

में, इनो ऊपर अफसोस ॥४॥ सबों की लानत इनों पर, लिखी अल्ला कलाम। महम्मद से सुन कर हुये, इनो छोड़ा दीन इस्लाम ॥५॥ पर इतये क्या करे, जो लिखी लोभोफुज में। तिसी माफक होत है, और न आवे बुझ ॥६॥ पहले सिपारे मिने, पाने बाँसठ मिने बयान। वरक तपसीर का चौदमा, तहाँ लिखी ये पेहेचान।७॥ कुरान का प्रमाण आयत (मा इवद् अलल जी नेक फरूमिन अहलिल किती विव ललम सरारि किन)
स्वामी जी कह रहे हैं कि मैं मोमिनों को सुलतान के पास पेगाम देकर भेजा था किन्तु इसने स्वीकार नहीं किया उल्टा इनको दुख पहुंचाया तो इसका गुनाह इसी को लगा इस गुनाह से अब बादशाह की कौन रक्षा कर सकता है और इसके शिष्य न होने पर सब संसार बिना दीन का हो गया इसलिये सब संसार का गुनाह इसी के सिर पर है अल्लाह ने कुरान के बीच लिखा है कि ये महम्मद के पेगांम को नहीं ग्रहण करेगा अपने दीन को छोड़ देगा उसी तरह हुआ भी उसके ज्ञान नहीं आया उपरोक्त बातें कुरान के पहले सिपारे पन्ने ६२ में तपसीर १४ में लिखा है। स्वामी जी के असन्तुष्ट होने के कारण सोते समय रात्रि को सुलतान का तख्त उलट पड़ा जिससे वह भयभीत हो सशंकित हो उठा।

अब उदयपुर की जनता का आवाज सुनिये। वी० प्र० ४६

कोई कहे ये ठग है, इनो भेष धरा मोमिन ॥५६॥ कोई कहे ये मुसलमान है, भेजे है सुलतान। तुमको मुसलमान करने, कहे वचन पेहेचान ॥५७॥ कोई कहे कुरान पढ़त हैं, कोई कहे वेद कतेव। इन भाँत राना आगे, बाते बनावे ऐव ॥५८॥

वहाँ की जनता इनके आचरण व्यवहारों का परिचय देती हुई कह रही है इन लोगों ने जो फकीरों का भेष धारण किया है इससे जाहिर

होता है कि लोग ठग है कोई यह भी निश्चय करते है कि ये मुसलमान है और सुलतान ने हिन्दुओं को मुसलमान बनाने के लिये भेजा है इसी से ये अपने विश्वासपूर्ण वचनों द्वारा हिन्दुओं को आकर्षित करते हैं। इस प्रकार इनके व्यवहारों की अनेक बुराइयाँ राणा के समीप में पहुंचती थी। इन सब बातों की परीक्षा के लिये राणा ने अपने पन्डितों को भेज दिया। वीतक प्र० ४७

राणा पंडित भेज दिये, जायके देखो तुम। उहाँ कैसी चरचा होत है, सुनाओ सारी हंम ॥५६॥ वे तो आये पेटारथू, नहीं काप आलंम। देखी तो चर चावड़ो, क्या जवाब देओगे तुम ॥६०॥ और चालीस प्रश्न भागवत के, पन्द्रा वेदान्त के सुनाये कांन। इन प्रश्नों की हमको कर देओ पेहेंचान ॥६१॥ जवाब न आयो उनको, दियो न जाय उत्तर। तब सब मिल विचार करके करने लगे फिकर ॥६२॥ ये तो बुरे वैरागी, हमारा मानेंगे रोजगार। इनकी निन्दा कीजिये, तुम सब होय खबरदार ॥६३॥"

मीमांसक :—जिस समय औरंगजेब दिल्ली के गद्दी पर बैठा था उस समय देश में हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच क्या परिस्थिति थी यह इतिहासों के देखने से पता चलता है ऐसे समय में स्वामी जी मुसलमानों के यहाँ निवास करते थे क्या वहाँ हिन्दू नहीं थे।

पूर्व पक्षी :—महापुरुष समदर्शी हुआ करते हैं। उनमें किसी प्रकार का भेद भाव नहीं हुआ करता। जैसे महात्मा गाँधी किसी जाति या संप्रदाय से भेद भाव न रख कर सब के साथ भोजन व्यवहार किया करते थे ऐसा करने पर उन्हें लघु नहीं कहा गया उन्हें सब संसार महापुरुष ही कहा करता था वैसे ही प्राणनाथ को भी समझिये।

उत्तर पक्षी :—मैं मानता हूँ कि महापुरुष समदर्शी हुआ करते हैं। किन्तु जब उनमें समदर्शीपने के सभी सामान्य लक्षण पाये जाँय केवल दूसरे के साथ भजन करने या उसके पास निवास करने मात्र से कोई समदर्शी नहीं कहा जाता। समदर्शी वही है जो प्रत्येक प्राणीमात्र को अपने ही समान देखे। इस प्रकार के गुण स्वामी जी में नहीं पाये जाते।

इन्होंने अपने को सबसे ऊँचा बता कर अध्यात्म क्षेत्र में भी हिन्दू और मुसलमानों में भेद सिद्ध किया है तथा हिन्दू वैदिक धर्म की बुनियाद को ही खत्म करने की चेष्टा किया है इन्होंने हिन्दू आप्त पुरुषों का निरादर किया है तथा महम्मद सुन्नी समाज की प्रशंसा किया है। ऐसे भेद और फूट डालने वाले व्यक्ति को समदर्शी महापुरुष नहीं कहा जा सकता। पाठकों को इन सब बातों का प्रमाण पूरे ग्रंथ के पढ़ने से मिलेगा इनकी जीवन चर्या में ही देखिये जिस समाज से अपना सम्पर्क स्थापित करना चाहते हैं उसी अनुरूप अपनी वेष भूषा बदल देते हैं यदि आप हिन्दू थे तो दिल्ली में मोमिन (मुसलमान) का भेष क्यों धारण किया और राणा के उदयपुर में जाकर उस भेष को बदल कर हिन्दू का भेष धारण क्यों किया इस प्रकार कार्य व्यवहारों में एकता न होने से उदयपुर की जनता का आवाज अक्षरसह सत्य है। चाहे सुलतान ने स्वामी जी को न भेजा हो किन्तु बनावटी वेष भूषा से वास्तविकता नहीं छिपाई जा सकती महात्मा पुरुषों के मन, वचन, कर्म इन तीनों में एकता होनी चाहिये जैसा कि नीतिज्ञों का कथन है (मनस्येकं वचस्येकं कर्मण्येकं महात्मनाम्) इसी परीक्षा के लिये तो राणा ने पंडितों को भेजा। आपने उन पंडितों से भागवत के चालीस प्रश्न और वेदान्त के पन्द्रह प्रश्न किये। उन प्रश्नों का इनके बीतक नामक ग्रंथ में उल्लेख नहीं है। इस कारण प्रश्नों की प्रमाणिकता नहीं सिद्ध होती यदि आपके द्वारा प्रश्न किये गये थे तो उन सभी प्रश्नों का ग्रंथ में उल्लेख होना

चाहिये। दूसरा जो यह कहा गया कि उन पंडितों ने उत्तर नहीं दिया तो इसका क्या प्रमाण है कि राणा के पंडितों ने उत्तर नहीं दिया, प्रमाण हीन कथन से यह भी सम्भव हो सकता है कि शायद प्राणनाथ या लालदास ही पंडितों के प्रश्नों का उतर न दे सके हों। प्रमाण हीन दूसरे की पराजयता व अपनी विजय बतलाने से सिद्ध हो जाता है कि लालदास ने शिष्यों के सामने अपनी सम्प्रदाय की प्रतिष्ठा रखने के लिये उक्त ६१।६२। चौपाई की झूंठी रचना की है।

"अस्तु परीक्षा खतम होने पर इनके पास कोतवाल आकर उपस्थित हो जाता है उसने कहा आपको राणा ने यहाँ से चले जाने का हुक्म दे दिया है। बीतक प्र० ४८।

फेर कोतवाल आइया ल्याया, हुकुंम दूसरी वेर। राने रजा दै तुमको योकर कह्या फेर ॥२१॥ एही हमको काढत, छुड़ाय' दियो ठोर। जहाँ खेचे तहाँ जायगे, अब ढूँढो ठौर और ॥२३॥'

उक्त चौपाई से सूचित होता है कि राणा के रजा देने का यह दूसरा हुक्म है। यहाँ यह संदेह होता है कि उस मध्यकालीन युग में धार्मिकता के कारण मनुष्य अधिकतर साधु सेवी हुआ करते थे इन्हें राणा ने बार-बार रजा क्यों दिया। इस संदेह का निवारण इसी अध्याय में आई हुई ५७ चौ० से हो जाता है उदयपुर की जनता जो यह कह रही थी कि ये मुसलमान है तुम लोगों को मुसलमान बनाने के लिये ऐसे वचन बोलते हैं दूसरा इन्हीं बातों के कारण पंडितों द्वारा परीक्षा किये जाने पर राणा को विश्वास हो गया होगा कि जनता की आवाज गलत नहीं है सब सही है ऐसा मान कर उसने स्वामी जी को रजा देने का दूसरा आदेश दे दिया। जो मनुष्य संपूर्ण संसार के हित करने की कामना में लगा रहता है वही सच्चा साधु है ऐसा साधु किसी को अप्रिय नहीं हो सकता मनुष्य की बात ही क्या। उसके सामने हिंसक जानवर भी अपनी स्वाभाविक क्रूरता को त्याग देते हैं।

इति निजानन्द मीमांसायां पूर्वार्ध भागे चतुर्थोऽध्यायः ४

अथ पंचमोऽध्यायः ५

औरंगाबाद का इतिहास

"बीतक—प्र० ५१ स्वामीजी मंदसोर से भ्रमण करते हुये औरंगाबाद आये यहाँ पर भाउसिंह से मिले इनको इन्होंने व्रज रास की कथा सुनाई जिससे वह प्रसन्न हुआ किन्तु जब ये कुरान कलमा और तारतम की एकता का प्रतिपादन करने लगे तब भाउसिंह ने कहा चार मुसलमान हमारे नौकर हैं उन्हें यह उपदेश दीजिये मुझे यह आवश्यकता नहीं स्वामी जी बोलें तो उन्हीं को हमारे पास भेजिये इस तरह वे चार मुसलमान प्रतिदिन इनकी संगति करते रहे। इनको देख कर अव्वल खां जहान महंमद और महीन खां भी इनकी संगति के लिये आते थे और शिष्य हो गये। बी० प्र० ५१।

तब श्री राज आरोग के, पौढ़े सेज बुजरक। जब दिन पीछला, घड़ी रहत हे सात॥ तब श्री राज उठत हे, करे साथ सो बात॥६३॥ चरचा होत अति बड़ी, हुआ सिनगार का बखत। संझा कों आरती होवे, सब साथ खड़ा देखत॥६४॥ एक बाजू लालदास, दूजी भट भवानी। चरचा कुरान भागवत, की होत हे लटपट॥६५॥

उक्त चौ० में स्वामी जी के दिनचर्या का वर्णन है। प्रातःकाल कथा उपदेश से निवृत्त होकर भोजन करते थे फिर अच्छी शय्या पर सोते थे सात घड़ी दिन बाकी रहने पर सोकर उठते थे। पश्चात् धार्मिक चर्चा करते थे सन्ध्या के समय में श्रृङ्गार सजाया जाता था तदनन्तर आरती उतारी जाती थी और साथ (शिष्य) गण खड़े हुए देखते थे। एक तरफ लालदास कुरान की दूसरी तरफ भवानी भट भागवत की चर्चा करते थे।

कुरान भागवत की जो चर्चा हुआ करती थी उसका निम्न चौपाइयों द्वारा प्रति पाद्य विषय एक ही बताया है । बीतक प्र० ५१ ।

आया चरचा सुनने, स्वाल किया एक इत । मुरदे क्यों कर उठेगे, वखत रोज क्यामत ॥७४॥ दिया जवाब श्री जी साहेब ने, काढ दिखाया फिर कांन । दुनी करी किस वास्ते, सोकर दई पेहेचान ॥७५॥ इसक खद के वास्ते, उतर आये मोमिन । नूर जल्लाले मागिया, देखो इसक रूहंन ॥७६॥ तिस वास्ते देखाइया, दो तकरार दो बेर । प्रात को ये तीसरा, रच्या ईंड ये फेर ॥७७॥ रास लीला खेल के, आये बराख स्यांम । सो कागद कलांम अल्लाह का, ल्याया महंमद अलेह सलांम ॥७८॥ करी सरत दशमी अग्यारही, हम आवेगे फेर । जो रूहे थी ब्रजरास में, सो आवे दूजी बेर ॥७९॥ तब काजी होय के, हिसाब लेवे हक । सिफाइत महंमद की, करे महंमद बुजरक ॥८०॥ अकले भई लोक में, सब होवे एक दीन । चौदे तबकों मिने, सब ल्यावे आकीन ॥८१॥ अक्षर अक्षरातीत बिना, रहे ना कोई और । नूर और नूरत जल्ला, जाहेर होवे सब ठोर ॥८२॥ जब नींद उड़ी नूर जल्लाल की, उठ बैठे अदर । तब धाम का याद करे, चित चूभे यों कर ॥८३॥ मोमिन मिलावेको, जब ये करे याद । तब आठो भिस्त को, उठ खड़ी बुनियाद ॥८४॥ जो ईमान लेयके, सोवे बीच कबर । सो चुभे नूर के चित्त में, भूले नही क्यो ये कर ॥८५॥ यूँ उठेगे मुरदे, कबरो से क्यामत । तिन सुमे की रामत, करी महंमदे इत ॥८६॥

अर्थ : –एक व्यक्ति इनका उपदेश सुनते हुये प्रश्न करता है कि क्यामत के समय में कब्र से मुर्दे किस प्रकार उठेंगे स्वामी जी कुरान खोलकर बताने लगे कि नूर जम्माल (खुदा) का और रूहों का परस्पर कैसा इश्क है इस इश्क को जानने के लिए नूर जल्लाल ने सृष्टि की रचना की उसी सृष्टि रचना रूपी खेल देखने के लिये हम सबसे पहले ब्रज में आये दूसरी बार रास लीला में आये तीसरी बार अरब में महंमद अलेह सलांम इस नाम से प्रसिद्ध हो अल्लाह का कलांम अर्थात् कुरान ले आये। उस कुरान में अल्लाह ने यह शर्त लिखी है दशमी और अग्यारही मे मैं फिर आऊँगा और जो रूहे ब्रज रास में थो वे भी दूसरी बार आयेगी उस समय खुदा काजी ❀ बन कर सबका हिसाब लेगा। इस तरह महंमद की सिफायत को बुजरक महंमद ही कर सकता है दुनिया में सबों के अकूल (जागृत बुद्धि) हो एक दीन हो जायगा। चौदहों लोक के विश्वास प्राप्त करेंगे। अक्षर नूरतजल्ला अक्षरातीत के बिना कोई न रह कर ये सबों में जाहिर होंगे। जिस समय नूरजल्लाल की निद्रा का अभाव होगा उस समय वह जागृत हो धाम को और मोमिनो के मिलावे को जब याद करेगा तब ये बातें उसके हृदय में चुभ जायगी। उसी समय आठ प्रकार के मोक्ष की बुनियाद तैयार हो जायगी जो ईमान लेकर कबर में सोये हुए हैं वे भी नूरतजल्ला के चित्त में चुभे हुए हैं उसको वे कभी भूल नहीं सकते। इस तरह कबरों में गड़े हुए मुर्दे क़यामत के समय में उठेंगे और उन्हें मोक्ष होगा।”

मीमांसक—स्वामी जी से चाहे कोई किसी प्रकार का प्रश्न करेगा उन सबों का उत्तर अपने संप्रदाय की बुनियाद को कायम बनाने का ही देते हैं और यही विषय इनके प्रत्येक ग्रन्थों के प्रकरणों में विभिन्न रूप से वर्णित है। अस्तु सांप्रदायिक बुनियाद पर उत्तरार्ध भाग में विचार होगा। यदि कुरान में अल्लाह की शर्त के अनुसार खुद खुदा काजी बन

❀ ये काजी बनकर आये हुए प्राणनाथ जी है।

कर दशमी ग्यारहवीं सदी में प्राणनाथ के रूप में प्रगट हुआ तो दुनियाँ के मौलवी लोगों ने उनकी इमामत क्यों नहीं स्वीकार किया क्या मौलवियों ने कुरान में लिखी हुई इसारतों को नहीं समझा केवल आप ही ने समझ पाया। दूसरा यह कि आप नूर जल्लाल के स्वप्न से सृष्टि की उत्पत्ति मानते हैं तो जब उसके निद्रा का अभाव होगा तो स्वप्न रूप सृष्टि स्वतः विलीन हो जायगी कबर में गड़े हुए मुर्दे किस प्रकार विलीनता से बच सकते हैं और यह भी संभव नहीं कि अनादि काल के गड़े हुये मुर्दे कबर से उठे। इस पार्थिव शरीर से जीवात्मा के निकलने पर वह शीघ्र ही पृथ्वी तत्व में विलीन हो जायगा मुर्दे की रक्षा किसी प्रकार संभव नहीं हो सकती। ऐसे अनुभव और प्रमाण सून्य बातों पर कौन विश्वास कर सकता है। संभव हो सकता है कि मौलवियों ने भी ऐसी असम्भव बातों को न स्वीकार किया होगा।" बीतक प्र० ५१।

पठान फते महंमद, ये बात सुनी कांन। कह्या जहांन महंमद को, कर दे वैरागी की पेहेचान ॥९६॥ चालीस हदी से लिख दै, जो इनके करे मायने। तो तेहेकीक जानियो, होवे खावंद जमाने ॥९७॥ ल्याया हदीसा जहान महंमद, कही आगे श्री जी साहेब। तुही कर इनका मायना, किल्ली रूह अल्ला की पावे जब ॥९८॥ तब इनो तलब करी, किल्ली अल्ला कलांम। तब जहांन महंमद को, भई पेहेचान इस्लाम ॥९९॥ तब सब खुल गइ, हकीकत मारफत द्वार। नजर भई वका मिने, किया दीदार परवर दिगार ॥१००॥

अर्थ—आखर जमाने का खावंद प्रगट हो गया इस तरह जहान महंमद की बातों को सुनकर फते महंमद कहता है कि मुझे भी वैरागी का परिचय करा दो। इस तरह चालीस हदी से पेश कर स्वामी जी से

बोला इन हदीसों का अर्थ आप खोलिये क्योंकि रूह अल्ला के शब्दों का अर्थ खोलने की कुञ्जी आपके पास है। स्वामी जी ने हदीसों के अर्थ खोल दिया। इस तरह जहान महंमद को इस्लाम धर्म का पहचान हो जाने से ज्ञान के दरवाजे खुल गये। धाम की ओर दृष्टि होने से उसने प्रत्यक्ष खुदा स्वामी जी का दर्शन किया।"

यदि वस्तुतः स्वामी जी ने हदीसों का अर्थ खोल कर सिद्ध कर दिया कि मैं ही आखर जमाने का खावंद कयामत करने वाला हूँ तो आपने उन एक भी हदीसों व उनके अर्थ को नहीं लिखा जिसको पढ़कर सब संसार को विश्वास हो जाता है कि सही आप ही आखरी महंमद है। चालीस हदीसों में से एक भी न लिखने से सब बातें मिथ्या प्रतीत होती हैं।"

"जहान महंमद को तो स्वामी जी पर विश्वास हो गया किन्तु फते महंमद को विश्वास नहीं हुआ वह निम्न चौपाई के अनुसार बोलता है।" बीतक प्र० ५१।

तब फते महंमदे कह्या, जो लो पातसाह न आवे बीच दीन। तो लो आगाह हम क्यो करे, पेहेले क्यों ल्यावे आकीन ॥१०६॥ तब जहांन महंमदे कह्या, तुमारा ईमान ऊपर सुलतान। ऐसा तुम क्यो कहो, जब देखो हक पेहेचान ॥१०७॥ ये खट पट भई आपुस में, तब इने छोड़ दिये पठान। तुम मने करो जहांन महंमद, उत जावे नही निदान ॥१०८॥ मिल पठानो मने किया, जहान महंमद को, सबंन। तुम क्यो वैरागी के कदमो लगे, ते क्या जाना मोमिन ॥१०९॥ लड़ाई होने लगी, सुनी श्री जी साहब ने बात। तब बरजा जहान महंमद को, जिन तुम जिद करने जात ॥११०॥

अर्थ—फते महंमद कहता है कि जब तक औरङ्गजेब वैरागी के दीन में नहीं आता तब तक मैं किस लिये अगुआ होकर पहले इनका विश्वास करूँ । जहान महंमद बोला क्या तुम्हारा ईमान सुलतान पर ही निर्भर है जब तुमने खुदा को पहचान कर प्रत्यक्ष देख लिया फिर ऐसी बातें क्यों करते हो। इस तरह इन दोनों की लड़ाई होने पर फते महंमद ने बहुत से पठानों से कहा कि उसका वैरागी के पास जाना बिलकुल बन्द कर दो। पठानों ने जाकर कहा कि तुम वैरागी के कदमों में क्यों लगते हो तुमने यह कैसे पहचान कर लिया कि ये मोमिन है इस प्रकार की लड़ाई को स्वामी जी ने सुना तब जहांन महंमद से कहा कि तुम उन लोगों के पास जिद करने को मत जाओ। बीतक प्र० ५१।

तब जहांन महंमदे कह्या, मोहे दज्जाल लगा वरजन । मे तिनका कह्या क्यो करो, ईमान खतरा होय मोमिन ।।११३।। पठानो परियान किया, जहान महंमद डारे मार । इन हमारे दीन में, छोड़ दिया वेवहार ।।११४।। पेहेले तो वैरागी से, करें लड़ाई जोर । आपुस में सब मिल के, करने लगे सोर ।।११५।। तब रात को मिल के, आये जने दस बार । श्री जी साहेब बैठे हते, आगे हुसेनी वाचे उस्तवार ।।११६।। देख दज्जाल मजलस, करने लगा सोर । ये भगत जी ये क्या है. हम करे लड़ाई जोर ।।११९।। तुम टीका माला पेहेंनत, और क्यों पढ़त कुरान । एह चाहे नहीं, तुम कहो सुनो कान ।।१२०।।

अर्थ—जहान महंमद ने स्वामी जी से कहा कि ये सब दज्जाल आपके पास आने में मना करते हैं। मैं उनका रोकना नहीं मानूँगा क्योंकि मोमिनो के ईमान में खतरा पहुंचता है। इधर सब पठानों ने

मिल कर निश्चय किया कि जहान महंमद को मार डाला जाय इसने हमारे दीन का व्यवहार छोड़ दिया है। सबसे पहले वैरागी से लड़ाई लेना चाहिये। इस तरह मिल कर सोर करने लगे। रात को दस बारह आदमी मिल कर स्वामी जी के पास आये उस समय वे हुसेनी बाँच कर सबों को धार्मिक शिक्षा दे रहे थे। पठानों ने कहा ये भगत जी ये क्या हो रहा है। तुम चन्दन टीका माला भी पहनते हो और कुरान भी पढ़ते हो यह (हिन्दुओं के लिये) रवाज नहीं है जैसा कि तुम यह उपदेश दे रहे हो। इस तरह वे लड़ झगड़ कर वापस अपने घर चले गये।" इतिहासकार ने स्वामी जी के विषय में जहाँ कहीं भी पुस्तकें पढ़ते हुये बताया है वहाँ सब कुरान से सम्बन्धित पुस्तकों को ही बताया है हिन्दू ग्रन्थों को पढ़ते हुये कहीं भी नहीं लिखा।

"स्वामी जी झगड़ा के कारण उस स्थान को छोड़ कर फतू अल्ला के घर चले आये और छिप गये पठानों के ढूँढ़ने पर जब ये नहीं मिले तब फते महंमद निम्न चौ० द्वारा बोलता है।" वीतक प्र० ५१।

फते महंमद ने तिन समे, किया चाकरों हुकुंम। ढूँढ काढ़ो वैरागी, देवे कैद में हम ॥१२६॥ जहांन महंमद आइया, फतू अल्ला के घर। तहाँ वैरागी देख के, पूँछी श्री जी खबर ॥१३५॥ श्री जी साहेब बैठे हैं, इन हवेली में एतो ठौर दज्जाल की, तुम डरत नहीं इनसे ॥१३६॥ इनके आदमी तुमकों, ढूँढत फिरत सब ठोर। ये मोहोल फतू अल्ला का, ये लड़ेगा तुम सों जोर ॥१३७॥ सिताब निकलो इहाँ से, मोहे दिखाओ श्री जी साहेब। साथ ल्याये कदमो, हकीकत कही सब ॥१३८॥ जब तक दिन लगा डूबने, श्री जी साहेब मेले लालदास। तफसीर लिखते मुल्ला के, छोड़ी तिनकी

आस ॥१३६॥ बुलाय ल्याये चरनदास को, तपसीर छोड़ी ठोर। सात कोस चले गये, भया भाउसिंह नगर भोर ॥१४०॥ वीरजी पटुआ औरंगाबाद, सेख बदल लालखाँन। इने आकोट से विदा किये, क्यों ये होय पेहेचान ॥१४५॥

अर्थ—स्वामी जी का पता न लगने पर फतेमहंमद ने अपने नौकरों को हुक्म दिया कि उस वैरागी को ढूँढ़ो जिससे उसे हम कैद में कर सकें। इस बात का पता जहांन महंमद को मिल गया वह तुरन्त फत्तू अल्ला के घर आया और बाहर स्वामी जी के एक शिष्य को देखकर बोला कि श्री जी साहब कहाँ है। उसने बताया कि इसी हवेली के अंदर हैं जहान महंमद ने कहा यह स्थान बिना ईमान वालों का ही है तुम्हें इनसे डर नहीं है क्या। इन दज्जालों के आदमी तुम लोगों को सब स्थानों पर ढूँढ़ रहे हैं। यह घर फत्तू अल्ला का है यह बड़ी जोरों से लड़ाई करेगा तुम लोग शीघ्र ही यहाँ से निकल जाओ। इस प्रकार कहते हुये स्वामी जी के पास पहुंच कदमों लग कर सब वृत्तान्त कह सुनाया। उस समय दिन डूब रहा था स्वामी जी और लालदास मिल कर मुल्ला के तपसीर की नकल कर रहे थे ,उसे शीघ्र ही बन्द करके और चरनदास के पास उसे छोड़ कर रात्रि में ही सात कोस निकल गये उन्हें सूर्योदय भाउसिंह नगर में हुआ वहाँ से चलकर ये आकोट में आ पहुंचे। रात्रि में इन्हें पहुंचाने के लिये औरंगाबाद के तीन आदमी वीरजी पटुआ, सेख बदल, लालखाँन जो साथ में आये थे उन्हें आकोट से विदा कर दिया क्योंकि ये लोग स्वामी जी के उपदेशों को सुनते हुये भी उन्हें खुदा होने का विश्वास नहीं करते थे।"

इति निजानन्द मीमांसायां पूर्वार्ध भागे पंचमोऽध्यायः ५

अथ षष्ठोऽध्याय: ६

रामनगर का इतिहास

आकोट आदि स्थानों से भ्रमण करते हुये स्वामी जी मेरते पहुंचे । वी० प्र० ५२ ।

ऐसे समे मेरते से, भेजे पेगम्बर । राठोर जसमंतसिंह सो, जाय देओ खबर ॥६६॥ जब पेगांम गया उनपे, सुन्या नहीं काँन । आजूज माजूज जो मारया, बिना देखे ईमान ॥६७॥ फेर आये दिल्ली से हेर मे, तब भई सामी सरियत । ये आया हमे उठावने, फरदा रोज क्यामत ॥६८॥

स्वामी जी मेरते में आकर राठोर यशवन्तसिंह के पास पैगाम भेजा किन्तु इन्होंने उपदेश को सुना तक नहीं । अत: स्वामी जी पुन: दिल्ली आये और सामना देकर (सरियत) धर्म के लिये लड़ने लगे । वहाँ के निवासियों ने विचार किया कि ये पुन: कयामत के दिन का फरदा लेकर हम लोगों के अस्तित्व को उठाना चाहता है । इस खबर को जब सुलतान ने सुना तब उसे ईमान आया किन्तु दज्जालों ने उसे उल्टा सीधा समझा कर स्वामी जी से परिचय न होने दिया । वी० प्र० ५२ ।

इत आय के दज्जाल ने, कह्या मोमिनो से । मेरी पातशाहो से, खड़ भड़ पाड़ी तुमे ॥७४॥ इहाँ से जाओ भाग के, कैद में करो तुम । मोमिन डरे तिनसे, तावे हुये हक हुकुम ॥७५॥ दज्जाल गुस्से होयके, पेगांम दिया भान । मोमिन कैद करके, लारी द्रष्ट सुलतान ॥७६॥

पेगांम स्वीकार करना तो दूर रहा सुलतान के जनो ने कहा कि तुम हमारे शासन मे गड़ बड़ी करते हो अतः तुम लोग यहाँ से भग जाओ नही तो कैद कर लिये जाओगे मोमिन लोग यह सुन कर डर तो गये किन्तु हक (स्वामी, के हुकुंम के आधीन होने के कारण लड़ते रहे। बादशाह के कर्मचारियों ने क्रुद्ध होकर स्वामी जी के मोमिनो को पुनः कैद कर लिया। इनके जीवन चरित्र के लेखक लालदास ने स्वामी जी को कैद होने को कहीं नही लिखा चाहे संप्रदाय मे अपकिर्ति के भय से न लिखा हो। यहाँ कुछ इनके इतिहासों मे मत भेद दिखाई देता है वृत्तान्त मुक्तावली मे स्वामी जी के शिष्यों को कैद हो जाने पर स्वामी जी अजमेर होते हुये उदयपुर आये यह लिखा है और लालदास की बीतक मे दिल्ली मे मोमिनो के कैद होने पर स्वामी जी को रामनगर आना बताया है। वृत्तान्त मुक्तावली यह भी प्रणामी संप्रदायका ऐतिहासिक पुस्तक है इसके लेखक बृजभूषण जी है। ये स्वामी जी के समकालीन नही इससे इनकी रचना का उतना महत्व नही फिर भी समाज इस ग्रन्थ को भी आदर की दृष्टि से देखती है।

अस्तु उक्त ग्रन्थ के आधार से स्वामी जी दिल्ली से अजमेर आये।। वृत्तान्त मुक्तावली प्रकर्ण ५६

दिल्ली ते इतकूँच करि काढ्यो या समै शाहि। आयो अजमेर जब, भई हिन्द सुधताहि ।।५७।। राँणा हिन्दुन मे सिरे मुस्लिम कीजे तास। हिन्दू कोई न बचे, एक दिनयों आस ।५८।

अर्थ--स्वामी जी को दिल्ली से जब बादशाह ने हटाया तब ये अजमेर आये और इनका ध्यान हिन्दुओं पर पड़ा कि राणा हिन्दुओं मे अगुआ है यदि इसे मुस्लिम बना लिया जाय तो कोई हिन्दू नही बच सकते सारे संसार मे इस्लाम धर्म हो जाने का विश्वास है। ऐसा विचार कर आप उदयपुर आये और राणा को पेगांम देकर कहा। वृत्तान्त मु० प्र० ५६

खड्ग बाँधि तुम शाहि सों, हमसंग मिलो न फेर। सब राजा एकत्र ह्वै करौ शाहि को जेर ॥

आप सब राजे महाराजे हमारे साथ शीघ्र मिल कर संगठित हो जाइये शस्त्र धारण कर बादशाह से लड़े और उसे पराजित करें। राणा ने जबाब दिया कि बादशाह से लड़ाई लेने की हम लोगों मे शक्ति नहीं है अतः ये काम मुझसे नहीं होगा।

मोमिनो के कैद हो जाने से क्रुद्ध हो स्वामी जी ने सुलतान से लड़ाई लेने का विचार भी व्यक्त किया है। राणा पहले ही अपने पंडितों द्वारा इनकी परीक्षा ले चुके थे अतः उन्होंने इनके पेगांम को अस्वीकार कर दिया। इस तरह इनके मन की कल्पना मन ही में रह गई उपाय करने पर भी सफलता नहीं प्राप्त कर सके। प्रश्न यह उठता है कि स्वामी जी क्या सारे भारत में इस्लाम धर्म ही चाहते थे। नहीं यह बात नहीं वे न हिन्दू वैदिक धर्म ही चाहते थे और न इस्लाम धर्म ही वे दोनों धर्मियों को अपना शिष्य बना कर इस्लाम धर्म की एक नवीन सम्प्रदाय कायम कर अपना प्रभुत्व चाहते थे इनके इतिहास धार्मिक ग्रंथों के अध्ययन से यही निष्कर्ष निकलता है।

उदयपुर से चल कर आप राम नगर आये यहाँ इन्होंने बहुत दिनों तक निवास किया वीतक प्रकर्ण ५५ में बहुत से मनुष्यों का सम्प्रदाय में दीक्षित होने का वर्णन है। वी० प्र० ५६।

इन समे सुलतान का, हुआ हुकुंम पुरदिलखान। रहे राम नगर एक वैरागी, तिनकी तुम करियो पेहेचान ॥४८॥ ये कौन कहाँ से आये, हे इनका मतलब कौन।

जिस समय ये अपने सम्प्रदाय के अभ्युदय में लगे हुये थे उसी समय औरंगजेब का आदेश पुरदिल खान के पास पहुंचा कि रामनगर

में रहने वाले फकीर की तुम जाँच करो कि यह कौन है कहाँ से आया है इसके यहाँ आने का क्या मतलब है इस शाही आदेश की सूचना पुरदिल खाँन ने शेख विदर के पास भेजा वह गढ़े में आकर रामनगर के राजा के पास आदेश भेजा। वी० प्र० ५६।

मे आया फकीरो पर, पकड़ देओ मेरे हाँथ। न तो महुंम तुम पर, ये चलो मेरे साथ ॥५१॥ हुकुंम पातसाह के। हम आये तुम पर, जो ढील करो इन बात मे, तो होत गुनाह तुम पर ॥५२॥

सेखाखिदर राजा को आदेश में लिखता है कि मैं 'फकीरों के विषय में आया हूँ आप उन फकीरों को हमें पकड़ा दें ये हमारे साथ चले न पकड़ाये जाने पर इसका मुहुंम तुम पर होगा यदि शाही हुक्म के पालन में कुछ ढीलापन किया गया तो इसका अपराध तुम्हीं पर होगा (**ये बात राजा सुन के भेज दिया कोतवाल**) इस आदेश को सुन कर राजा ने कोतवाल को फ.ीरों के पास भेज दिया कोतवाल ने फकीरों से कहा कि तुम लोग यहाँ से कुछ दिनों के लिये अन्यत्र चले जाओ फिर बाद में यहाँ आना क्योंकि बादशाह का बहुत बड़ा दबदबा है उसके दबाव को हम सहन नहीं कर सकते जैसा उसका हुक्म होगा उसका हम उल्लंघन नहीं कर सकते। स्वामी जी ने झुककर जवाब दिया हम बादशाह से नहीं डरते वह हमें किसलिए बुलाता है ? वही क्यों नहीं आता मैं तो उसी के आने का मार्ग देख रहा हूँ मैं अपने घर में बैठा हूँ वहाँ नहीं जाऊँगा। कोतवाल ने आकर राजा से स्वामी जी का कहा हुआ समाचार बताया। राजा ने दूसरी बार कोतवाल से कहला भेजा कि मैं अपने धर्म के लिए डरता हूँ कि कहीं सुलतान के कर्मचारी तुम लोगों को पकड़ न ले जाँय। इससे आप लोग दस बीस कोस की दूर पर छिप कर बैठें कुछ दिन बाद हम आपको बुला लेंगे। स्वामी जी ने कहा आप लोग हमारे विषय में कुछ

फिक्र न कीजिए यदि बादशाह के कर्मचारी हमारे पास आयेंगे तो हम खुद निपट लेंगे। हमारे सामने आते ही उनकी कोई शक्ति काम में नहीं आयेगी हमारे वाणी उपदेश को सुन कर वे स्वतः द्रवित हो जायँगे। कोतवाल फिर लौट जाता है। वी० प्र० ५६।

यो करते दिन दूसरे, सेख खिदर पोहोचे धाय। मुलाकात राजा सो करीं, पेहेले एही बताय।७४॥ हम आये इन काम कों, पकड़ देओ वैरागी तुम। हजूर में ले जायेंगे, हमको हे हुकुम।७५॥ जो तुम इनकी न्यात करो, तोहे मुहुंम तुम पर। के तो इनको पकड़ देओ, न तो बाँधो कमर॥७६॥

इस तरह पुरदिल खाँन से शासित सेख खिदर राम नगर आ पहुंचा और राजा से बोला कि मैं इस कार्य के लिये हुकुम लेकर आया हूँ कि आप इन वैरागियों को मुझे पकड़ा दें मैं इनको हजूर के समीप ले जाना चाहता हूँ यदि तुम इनका पक्षपात करोगे तो इसका मुहुंम तुम पर होगा इसलिये या तो इनको पकड़ा दो या लड़ाई के लिये कम्मर बाँधो। राजा ने जवाब दिया कि इनसे हमारा कोई मतलब नहीं है यदि यह हुक्म सुलतान का हमारे लिये है तो मैं उसे शिरोधार्य करता हूँ आप इन वैरागियों को पकड़ ले जाइये। इस प्रकार राजा के कहने पर सेख खिदर दीवान भिखारीदास के घर आया उससे भी सब हाल बताकर कहा कि ये वैरागी किस तरह पकड़े जाँय, दीवान ने कहा कि मैं पहले उनके पास जाता हूँ देखें वे किस कदर पकड़े जा सकते हैं। दीवान भी स्वामी जी के पास जाकर सुलतान के हुक्म को सुनाया। उन्होंने कहा कि मैं यही चाहता था कि कोई हमें सुलतान के समीप ले चले किन्तु आप पहले हमारे उपदेशों को सुनिये। वी० प्र० ५६।

तीन रात और तीन दिन, कह्या तारतम समझाय। स्वाल कुरान भागवत के, सब ठोर दिये बताय॥८६॥ विरोध सारा

भान के, बताया एक दीन। मारा सक सैतान का, तब ही ल्याया आकीन ॥६०॥ गया शेख खिदर पे, कही हकीकत सब। में देख्या हादी आखर जमाने का, शेख खिदर पूँछा तब ॥६१॥

स्वामी जी ने दीवान को तीन रात दिन तक तारतम का रहस्य समझाया कुरान भागवत के सब प्रश्नों को सुलझा दिया साम्प्रदायिक विरोध को नष्ट कर सब संसार में एक दीन कर दिया। इस तरह जब सैतानों के सन्देह को नष्ट कर दिया तब दीवान ने विश्वास किया और शेख खिदर के समीप जाकर सब हकीकत कह सुनाया कि मैं आखिर जमाने के हादी को देखा शेख बोला कि तुमने कैसे पहचाना व उनमें हादी होने के कौन से चिह्न हैं। बी० प्र० ५६।

तब स्वाल कहे कुरान के, और भागवत के प्रश्न। इनको खोल के, कर देओ दिल रोसंन ॥६२॥ सातो निसान क्यामत के, करी तिनकी चरचा जोर। एक दाब तल अरज, और दिखाया दज्जाल का सोर ॥६४॥ और आजूज माजूज, आये ईसा हज़रत। असराफीले सूर फूकिया, सब बताय दिया इत ॥६५॥ सूरज ऊगा मगरब ,जाहेर हुये ईमाम , मायने खोल के, बताय दिये तमाम ॥६६॥

दीवान ने कहा कि उन्होंने कुरान और भागवत के सब प्रश्नों को खोल कर हृदय को प्रकाशित कर दिया कुरान में कयामत के जो सात चिह्न बताये थे उसको निम्न तरह खोला। १-दाब तल अरज। २-दज्जाल का सोर। ३-आजूज माजूज। ४-ईसा हजरत का आना। ५-असराफील का स्वर फूकना। ६-सूर्य का पश्चिम में उदय होना। ७-और आखिरी ईमाम का जाहिर होना। इस तरह इनका मायना खोल देने से मुझे विश्वास हो गया कि ये आखिरी ईमाम है। यहाँ भी इतिहासकार ने

भागवत के कोई प्रश्न नहीं लिखे जिनके अर्थों को स्वामी जी ने खोला है। और कुरान के कयामत के समय के जो सात निसान खोले हैं उनमें कोई ज्ञान की गरिमा नहीं पाई जाती इसमें केवल यह सिद्ध किया गया है कि मैं आखिरी महंमद हूँ किन्तु किसी भी मौलवी ने आपके लिये आखिरी महंमद होने का विश्वास नहीं किया।

शेख इन बातों को सुन कर स्वामी जी के पास आया उसे भी उक्त चर्चा सुनाते हुए अपने को महंमद घोषित किया। वहाँ बहुत से नागरिक इकट्ठा थे उन लोगों ने स्वामी जी का अपवाद निम्न तरह किया। बी० प्र० ५६।

इन समे दज्जाल ने, बड़ा किया सोर। इहाँ कुरान तपसीरे धरी थी, करने लगा जिद। ये हिन्दुओं को खान ही, तुम क्यों चरचा करो महंमद ॥१०६॥ तब शेख को गुस्सा चढ़ा, इने उठाय देओ मरदंक। देओ धक्के इनको, करने लगा हरकत हक ॥१०७॥ सबों ने दई लानत, उठाया मजलस से। स्याह मुह ले उठया, बैठा दज्जाल इनमें ॥१०८॥

जिस समय स्वामी जी कुरान की तपसीरे रक्खे हुये उसी के आधार से शेख को उपदेश दे रहे थे उस समय मजलस (सभा) में उपस्थित कोई व्यक्ति सोर मचाते हुए बोल उठा कि हिन्दुओं में यह रीति रिवाज नहीं है। अतः तुम महंमद की चर्चा क्यों करते हो इन बातों को सुनकर शेख को क्रोध आ गया और बोला कि यह अल्लाह के कार्य में नुकसान पहुँचाता है। इसे धक्के देकर मजलस से बाहर कर दो लोगों ने उसे अपराधी कह कर मजलस से बाहर कर दिया जिससे वह अपना काला मुख लेकर चला गया। शेख इनके उपदेश से प्रभावित हुआ शेख लौट कर राजा से बोला कि आप इनके दर्शन के लिये नहीं गये मैं तो उन्हें पहचान गया ये हादी का स्वरूप है इन्होंने कुरान से हमारे सन्देह को

दूर कर दिया है। शेख की बातों को सुन कर राजा के समीप वर्ती कहने लगे। वी० प्र० ५६।

तब लोको ने कह्या, राजा को सुकंन। है इनके हाँथ धुर की, सो हाँथ रहे मोमिन ॥११६॥ जो कोई जात है, सिर पर डारत तिनके। सोई उनका होत है, तुम समझ जाओ सो होवत में ।।११७।।

अर्थ—लोगों ने राजा से कहा कि इनके पास जादूगरी की धूल है वह मोमिनो के हाथ रहा करती है जो कोई इनकी संगति के लिए जाता है उसके सिर पर डाल देते हैं जिससे वह मनुष्य इनके आधीन हो जाता है। राजा ने कहा शेख के कहने से मैं दूर से ही दर्शन करके लौट आऊँगा। राजा ने एक बगीचे में स्वामी जी का निमंत्रण किया। वी० प्र० ५६।

हादी के सनमुख, खड़ा रह्या ना बैठा जे। दिल में देहेसत इनको, जिन अपने करेये ॥१२०॥ आय सोही पीछा फिरा, सुनी न चरचा कान। बिना अंकूर क्या करे, कर ना सके पेहेचान ॥१२१॥

अर्थ—निमंत्रण में आये हुए हादी के सामने राजा खड़ा रहा बैठा नहीं क्योंकि इनके दिल में यह भय था कि कहीं ये हमें भी अपने अधीन न कर ले। चर्चा उपदेश भी नहीं सुना जैसा आया उसी तरह चला भी गया बिना खुदा के धाम से सम्बन्ध न होने के कारण वह पहचान ही कैसे कर सकता है। कुछ समय बाद पुरदिलखांन से शासित एहदी गुल महंमद ने धामोनी से दौड़ा किया और राजा को लिख भेजा कि अपने गांम में रहने वाले वैरागी को शीघ्र पकड़ा दो। वी० प्र० ५६।

तब राजा डरया, इन पर दबदबा पातशाही। इने हम अपने गांम क्यों रखे, बड़ी बदकारी बताई ॥१२६॥ तब राजा

ने भेजे गुमास्ते अपने, तुम जाओ हमारे देश से । हम न सह सके खरखसे ॥१३०॥ देखी नजर राजा की, देहेसत भई केहेर । तब उहाँ से उठ चले, जिमी देखी जेहेर ॥१३१॥

अर्थ—राजा इस पत्र को पाकर डरा कि इन फकीरों पर बादशाह का बड़ा दबदबा है इनके जरिये हमें भी बड़ी बदकारे सहन करना पड़ रहा है । इससे अपने गांम में इन्हें रक्खा ही क्यों जाय ऐसा विचार कर राजा ने अपने गुमास्तों को स्वामी जी के पास भेज कर हुक्म दिया कि आप हमारे देश से चले जाँय मैं इस प्रकार बादशाह के दबाव को नहीं सहन कर सकता । इस तरह राजा का आदेश पाकर स्वामी जी डरे और सारे संसार को जेहेर के समान देख कर वहाँ से चल पड़े । विक्रम संवत १७३६ माघ सुदी दशमी को रामनगर छोड़कर गढ़े में आ पहुंचे । बी० प्र० ५६ ।

हादी उहाँ से चल के, गढे पोहेचे आय । उहाँ भगवन्त राय का, बेटा हाँक मताय ॥१३७॥ उसने दिल में यों लिया, लूट लेवे बैरागी हम । एही हराम खोरी के, लोको आगे कहे सुकंन ॥१३८॥

अर्थ—हादी (स्वामी) जी के गढ़े पहुंचने पर एक भगवन्त राय के लड़के ने हंगामा मचा दिया वह बोला यह बैरागी हिन्दुओं को इस्लाम मत का उपदेश देकर मुसल्मान बनाया करता है । अतः इसे लूट लिया जाय किन्तु गंगाराम वाजपेयी ने उसे बहुत समझाया यदि बैरागी को तुम लोग गांम में लूट लोगे तो बड़ी ही बदनामी होगी । इन सब बातों को सुन कर हादी ने मोमिनो से परामर्श कर मउ के लिए प्रस्थान किया ।

इति निजानन्द मीमांसायां पूर्वार्ध भागे षष्ठोऽध्यायः ६ ।

अथ सप्तमोऽध्यायः ७

पन्ना का इतिहास

स्वामी जी अपनी अभीष्ट सिद्धि के लिये सतत् प्रयत्न करते हुये भी सुलतान को अपने कब्जे में न ला सके उसी तरह राजा महाराजाओं से सम्पर्क स्थापित किया किन्तु वहाँ भी असफल ही रहे। इन्होंने महाराजा छत्रसाल पन्ना को भी मिलाने की कोशिश किया। मध्यकालीन युग में इस्लामी शासकों से हिन्दू राजा महाराजा रुष्ट तो थे ही। अतः पन्ना के महाराजा छत्रसाल अपने स्वार्थ के लिये और स्वामी जी अपने स्वार्थ के लिये दोनों आपस में मिले। स्वामी जी जंगल की शरण ले महाराजा के पास छिपना चाहते थे और छत्रसाल चाहते थे कि इनके पास बहुत सी संख्या में शिष्य हैं इनसे सम्पर्क स्थापित करने से ये सैनिक शक्ति में सहयोग देंगे। अतः स्वामी जी गढ़े से महाराजा से मिलने के लिए मउ आये और महाराजा से मिले। वी० प्र० ५७।

वह बखत महाराज को, थी महुँम अफगांन। मैं अस्वारी तैयार, आय लगे चरंन ॥२६॥ श्रीराज रूमाल लेयके, सिर पर धरा महाराज। हाथ धरा सिर ऊपर, होय पूरन मनोरथ काज ॥२७॥

उस समय शाही सूबा अफगन खाँ लड़ाई के लिए आ रहा था महाराजा उसी से मुठभेड़ करने की तैयारी में थे जब स्वामी जी से नत मस्तक होते हैं तब उन्होंने रूमाल लेकर सिर पर हाथ रक्खा और आशीर्वाद देते हुये बोले कि तुम्हारे सबमनोरथ सिद्ध होंगे। महाराजा ने अपनी सेना के सहित लड़ाई के लिए प्रयाण किया। विजय प्राप्त कर जब वे लौटे तब स्वामी जी के शिष्यों ने कहा यह विजय स्वामी जी की कृपा से हुई है। विक्रम सम्वत १७४० में प्राणनाथ पन्ना में पधारे और यहीं

टिक गये। स्वामी जी ने बहुत दिनों तक कुरान सम्बन्धी उपदेशों को महाराजा से छिपाकर रक्खा था एक समय छत्रसाल जी स्वामी जी से मिलने आये। वी० प्र० ५७।

बैठे सब एकान्त में, ये समे आये महाराज। दूर बैठ मन विचारिया, ये क्यों बैठे आय ॥७४॥

अर्थ—उस समय ये लोग एकान्त में बैठे हुए थे ऐसे समय में छत्रसाल जी आकर दूर बैठ गये और विचार करने लगे कि ये सब एकान्त में क्यों बैठे हैं। स्वामी जी के साथ कुछ आदमी बैठे थे लालदास कुरान बाँच रहे थे और स्वामीजी उसका अर्थ कर रहे थे। वी० प्र० ५७।

बुलाय के लालदास को, पूँछी राजा ने येह। तुम कहा गुप्त बाँचत हो, हमको कहिये तेह ॥७५॥ तब कहा उत लाल ने, हमको हुकुम नाहे। पूँछें जाय हजूर में, तब कहे तुमे आय ॥७६॥ जाय लाले पूँछी हजूर में, तब बुलाये हजूर महाराज। कही ये बात जो कुरान की, तुमसो छिपाई लो आज ॥७७॥ सो अब ये केहेत है, इनमें बात अपनी सब। श्री महंमद साहेब कुरान ले आये, सो सब अपनो सबब ॥७८॥ यामे अपनी वीतक सब हे, श्री देवचन्द जी को। मेरो तेरो नाम जा दिन जो बीती हम तीनों में, सो सब लिखी तमाम ॥७९॥

अर्थ—छत्रसाल ने लालदास को बुलाकर पूछा कि आप लोग गुप्त क्या बाँच रहे थे। लालदास ने जवाब दिया कि यह बताने के लिए हुक्म नहीं है पहले मैं स्वामी जी से पूँछ लेवें तब लौट कर आपसे बतायेंगे लालदास ने जाकर हजूर से पूँछा हजूर ने आज्ञा दिया कि महाराजा को यहाँ बुला लाओ आने पर स्वामी जी ने कहा कि कुरान की बातों को मैं आज तक आपसे छिपा रक्खा था वह आज आपसे प्रगट

करता हूँ ये महंमद साहब जो कुरान को ले आये हैं उसमें सब अपनी बातें लिखी है तथा अपने ही कारण कुरान आया है इससें सब अपना इतिहास लिखा हुआ है। और देवचन्द्र का मेरा तेरा भी नाम लिखा है। और जिस दिन हम तीनों में जो बातें व्यतीत हुई वे सब बातें इसमें लिखी हुई है।

मीमांसक :—स्वामी जी इस्लाम मत प्रचार के लिए जितने भी व्यवहार कार्य है वे सब छल कपट और पाखण्ड से पूर्ण है जहाँ भी जाते हैं वहाँ हंगामा मच जाता है। उस स्थान में टिकना दुर्लभ हो जाता है। हिन्दुओं के बीच तिलक माला धारण कर कृष्ण भक्ति का बहाना बना कर साधारण मनुष्य को सम्प्रदाय में दीक्षित करते हैं। तदनन्तर उसी कृष्ण को हेय बताकर महंमद और कुरान की प्रतिष्ठा करते हैं। इन्हीं कपटपूर्ण व्यवहारों से सम्प्रदाय की स्थापना हुई। जो वास्तव में न हिन्दू कहे जा सकते हैं न मुस्लिम ही यद्यपि ये लोग स्वामी जी के बाद अपने को हिन्दू घोषित करते हैं किन्तु अन्तर टटोलने से मुस्लिम ही सिद्ध होते हैं। हिन्दू घोषित करने का यह भी कारण हो सकता है कि भारत में हिन्दुओं की प्रधानता है। स्वामी जी के समय दोनों वर्ग के शिष्य हुए किन्तु इनके बाद जो शिष्य हुए वे विशेष कर हिन्दू ही हुए और सभी शिष्य इनके धार्मिक ग्रन्थों को न देख समझ सकने के कारण वास्तविकता से अनभिज्ञ ही रहे। समाज का उद्देश्य केवल कांन फूकाना मात्र है इन्हें धर्म, कर्म और ज्ञान से कोई प्रयोजन नहीं। इस तरह परम्परा गत अन्ध विश्वासियों ने समाज की वृद्धि की। यद्यपि ये परम्परागत हिन्दू जातीयता का सर्वथा त्याग तो नहीं कर सकते उसमें भी संकोच है इन हेतुओं से अपने को हिन्दू घोपित करते हैं। देखा भी जाता है कि कुछ पढ़े लिखे लोग अपने पूर्वजों के अंधविश्वासों को देख मुख फाड़कर रह जाते हैं पर कुछ कर नहीं सकते चाहे हृदय की धारणा भले ही कुछ और हो उसी में घसिटते जाते हैं।

अस्तु स्वामी जी के मन में कुछ और वचन और कर्म में कुछ और ही है ये बात इनके हर एक जगह के लेखों से स्पष्ट है। मैं इनके संप्रदाय की जो मीमांसा कर रहा हूँ वह इनकी चौपाइयों के प्रमाणों से युक्त है। इसी अध्याय में देखिये स्वामी जी कुरान को छिपा कर गुप्त स्थान में पढ़ने और उसकी व्याख्या कर उपदेश देने का स्पष्ट वर्णन है। क्या कोई यह सिद्ध कर सकता है कि कुरान में कृष्ण चरित्र का वर्णन है। यदि आपके मतानुकूल है तो छिपाने की क्या आवश्यकता है। उसे छिपाकर उपदेश देने से स्पष्ट होता है कि आप ही का हृदय साक्षी नहीं देता इस तरह अनिश्चयात्मक ज्ञान से स्वत: पथ भ्रष्ट हो रहे हो। छिपाने का कारण यह भी प्रतीत होता है यदि कुरान के उपदेश को हिन्दुओं के सामने करेंगे तो जैसा झगड़ा अन्यत्र हो जाया करता था वैसा ही पन्ना में भी हो जायगा। इन्हीं बातों को सोच समझ लालदास को हुक्म दे रक्खा था कि यहाँ कुरान की चर्चा हिन्दुओं के सामने नहीं करना इसी से लालदास ने छत्रसाल के पूँछने पर बताया नहीं। जब वे स्वामी जी से मिले तब कहने लगे मैं इतने दिनों तक आप से कुरान की बातों को छिपा रक्खा था। किन्तु इसमें सब अपने सम्प्रदाय की बातें हैं कुरान में हमारा तुम्हारा और देवचन्द्र का नाम है। यहाँ पर स्वामी जी ने साकुमार बाई (अर्थात् औरंगजेब) का नाम छोड़ दिया इसका क्या कारण है। आपके मतानुकूल जिस तरह साकुण्डल बाई (छत्रसाल) परमधाम की वासना है उसी तरह साकुमार बाई (औरंग-जेब) भी तो धाम की वासना है। औरंगजेब ने तुम्हारी इमामत को नहीं स्वीकार किया उल्टा मोमिनो को कैद कर लिया जिससे उसका नाम कुरान से खारिच कर दिया गया और पहले दिल्ली में जब पैगाम पहुंचाया जाता था तब उसका भी नाम था। औरंगजेब को अपने समाज और धर्म में दीक्षित करने के लिये पहले यह जाल रचा गया था कि पूर्व जन्म में हमारा तुम्हारा सम्बन्ध रहा और हम तुम एक ही

लाहूत धाम में थे परन्तु औरंगजेब एक कट्टर मुसल्मान था इसलिए उसके पास इनकी दाल नहीं गली। तब पन्ना महाराजा छत्रसाल को अपना लाहूत धाम का अनन्य सहयोगी बताकर अपने जाल में फसाने का प्रयास किया। इससे इन्हें कुछ आंशिक सफलता इसलिए मिल सकी कि ये ऐसे मौके पर राजा के पास पहुंचे जिस समय औरंगजेब के सेनापति अफगन खाँ ने आक्रमण कर दिया था और महाराजा संकट में थे। विजय के बाद प्राणनाथ ने अपने अनुयायियों के द्वारा आम जनता में यह हल्ला मचवा दिया कि यह विजय उन्हीं के आशीर्वाद से हुई। यही कारण है कि राजा के सहयोग से पन्ना में प्रणामीधर्म का अड्डा कायम हो सका। किन्तु पन्ना राज परिवार वस्तुतः प्रणामीधर्म में कभी भी दीक्षित नहीं हुआ। ये तो केवल पन्ना राज्य की हिन्दू प्रजा में अपने मत का प्रचार करने के लिये राज परिवार का आशीर्वाद मात्र चाहते थे। पाठकों ने समझ लिया होगा कि स्वामी जी परिस्थिति के अनुसार बरसाती गिरगिट की भांति किस तरह अपना रंग बदल जाते थे क्योंकि अवसरवादी आदमी का कोई सिद्धान्त नहीं होता। इस तरह विचार कर देखने से यह निश्चय हो जाता है कि महाराजा का नाम कुरान में बतलाना यह उनके लिए प्रलोभन मात्र है। यदि कुरान में उक्त सभी व्यक्तियों के नाम और आपकी सम्प्रदाय के सभी विषयों का वर्णन है तो बड़े-बड़े आरफ मौलवी लोग इसको प्रमाणित करें नहीं तो पूर्णरूपेण विश्वास है कि ये सब बातें बाग् जाल मात्र है। और न कुरान का प्रमाण ही लिखा कि हम सब लाहूत धाम के संगी हैं विश्व के किसी भी मौलवी ने कुरान की किसी भी आयत का ऐसा अर्थ नहीं किया जिससे उपर्युक्त बात प्रमाणित होती हो।

इसी तरह केवल वचनों द्वारा हिन्दू शास्त्रों के विषय में भी कहा गया है निम्न चौ० स्वामी जी की ही रचना है।

वेदो कह्या आखर, जमाने ये ही है सिरदार।

वेदो में लिखा हुआ है कि आखिर (कयामत) के समय में सब को शासित करने वाले प्राणनाथ ही है। इस तरह के बहुत से लेख इनके हैं जो इस ग्रन्थ के आदि से अन्त तक पढ़ने से सब पता चल जाता है कि स्वामी जी ने जनता को फँसाने के लिये शास्त्रों का प्रमाण किस तरह पेश किया है ये जहाँ कहीं भी हिन्दुओं में उपदेश देते पाये जाते हैं वहाँ केवल इतना ही कथन है कि ऐसा शास्त्रों में भी कहा है। किन्तु शास्त्रों के एक भी वाक्य का प्रमाण अपनी रचना में नहीं लिखा। इस्लाम मत के सिद्धान्तों का प्रतिपादन शास्त्रों में हो ही कैसे सकता है और प्रत्यक्ष करके देखा भी जा चुका है कि आपके सभी सिद्धान्त वेदशास्त्र विरुद्ध है। आप तो खुद लिखते हैं (शास्त्र तो गोरख धन्ध) जितने शास्त्र हैं वे सब गोरख धन्धे के समान हैं। दूसरी चौ० (व्याकरणवाद अन्धकार) संस्कृत व्याकरण को आपने अन्धकार (अज्ञान) मय बताया है जो वेदों का एक प्रमुख अंग है। तीसरी चौ० (धनी आए वेद छुड़ावने) प्राणनाथ वेद को छीनने के लिए संसार में आये हैं। उक्त चौपाइयों के जो एक-एक चरण दिए गए हैं वे सब पूरी चौ० उत्तरार्ध भाग में आपको पढ़ने के लिये मिलेगी। विचार करने की आवश्यकता है कि क्या ऐसे वाक्य हिन्दू कभी लिख सकता है। इतिहासकार लालदास के ग्रन्थ को देख कर कोई भी व्यक्ति इन्हें हिन्दू नहीं कह सकता नाम बदलने से जातीयता नहीं छिपाई जा सकती। ऐसा ही स्वामी जी के विषय में भी समझिये। इन्हीं कारणों से सम्प्रदाय के लोगों ने इन दोनों के बनाए हुए ग्रन्थों को छपाकर प्रकाशित नहीं किया सम्भव हो सकता है कि छत्रसाल को कुरान की बातें जिस तरह छिपाई गई हो उसी तरह इनकी रचनाओं में प्रत्येक स्थल पर कुरान सम्बन्धी चर्चा होने से उसे भी प्रकाशित करने से रोक गए हों। वर्तमान समय में यह सुना जाता है कि स्वामी जी के प्रत्येक ग्रन्थों प्रकरणों चौपाइयों को तोड़ मरोड़ कर अर्थात् कुरान सम्बन्धी विषयों को हटाकर उसका कुछ अंश छप चुका है। साम्प्र-

दायिक लोग चाहे कितना ही प्रयत्न क्यों न करें इनके प्रत्येक ग्रन्थों के प्रकरणों में इस्लाम मत का ही प्रतिपादन किया गया है। काले कम्बल में दूसरा रंग नही चढ़ सकता। अब निम्न चौपाइयों को देखिये। बी० प्र० ५७।

ये बात राजा के घर मे, कोई-कोई को न आई नजर। परचो लीजे इनको, ये हिन्दू बाँचे क्यों कर ॥८५॥ तब बुलाये बल दीवान नें, काजी मुल्ला पंडित। तिन सौंते हकीक करने, चर्चा कराई इत ॥८६॥

स्वामी जी की ये कुरान सम्बन्धी बातें महाराजा छत्रसाल के घर वालों के समझ न आई इनकी परीक्षा लेना चाहिये कि ये हिन्दू होते हुये अपने मत की पुष्टि के लिये कुरान की आयतो का प्रमाण तथा उपदेश क्यों देते हैं इस विवादास्पद वस्तु के निर्णय या इनकी वास्तविकता जानने के लिये राजा के बलकरण दीवान ने काजी मुल्ला पंडितों को इकट्ठा किया। स्वामी जी ने काजी से प्रश्न किया। बी० प्र० ५७।

क्यों दुनिया की पैदायस, लिखी बीच कुरान। समझ जवाब दीजियो, ये बात बड़ी फिरकान ॥९२॥

दुनियाँ की उत्पत्ति कुरान में किस प्रकार लिखी हैं इसका जवाब समझ कर दीजिये क्योंकि कुरान का यह गम्भीर विषय है। काजी जवाब देता है। बी० प्र० ५७।

पाँच भाँत की पैदायस, लिखी अल्ला कलाम। खबर कोई न पावही, पढ़ी खलक तमाम ॥९५॥

अल्ला कलाम ने दुनियाँ की पैदाइस पाँच प्रकार की लिखी है संपूर्ण संसार के लोग कुरान को पढ़ गये किन्तु किसी को पता नहीं चला। स्वामीजी के शिष्यों ने कुरान को काजी के सामने रक्खा, बी० प्र० ५७।

तब कुरान आगे धरा, खोल देखो किताब। तिलकल रसूल में लिखा, आया नहीं जवाब ॥६६॥ कुंन सेती पैदा हुये, ये जो आमखलक। एक कहे एक हाथ से, दो हाथो कहे हक ॥६७॥ और एक जमात को, ले आया उठाय इफतदाय। और एक खिलकत ओर से, ये पाँचो की पैदाय ॥६८॥

काजी को जब कुरान खोल कर देखाया और कहा देखो तिलकल रसूल में इस प्रकार लिखा है किन्तु तुमसे जवाब देते नहीं बनता यह संसार कुंन-माया (अहंकार) से १. एक हाथ से २. खुदा के दोनों हाथों से ३. और एक जमात को उठा ले आया ४. और एक खिलकत से ५ॐ इस तरह दुनियाँ की पैदायस पाँच प्रकार की कुरान में लिखी है। यहाँ स्वामी जी ने केवल विवरण कर बता दिया किन्तु काजी ने तो पाँच प्रकार की पैदायस तो बता ही दिया क्या वह विवरण नहीं कर सकता था। मालूम होता है स्वामी जी मौलवियों से भी अधिक कुरान में अधिकार रखते हैं।

फिर बल करण दीवान ने पंडितों से इनकी परीक्षा के लिये १. बद्री २. सुन्दर ३. वल्लभ इन तीन पंडितों को स्वामी जी के पास भेजा दोनों में भागवत सम्बन्धी चर्चा हुई और वे तीनों पंडित पराजित हो गये। इतिहास के लेखक ने भागवत के कौन से प्रश्न किये और किस विषय की चर्चा हुई यह कुछ नहीं लिखा केवल उन्हें पराजित कर दिया गया इस कथन मात्र से उनकी पराजयता नहीं मानी जा सकती। वी० प्र० ५७।

ॐदो प्रकार की उत्पत्ति का स्पष्टी करण नहीं होता केवल तीन का होता है जीवों की उत्पत्ति माया से ईश्वरी सृष्टि की उत्पत्ति खुदा के एक हाथ से और ब्रह्म सृष्टि की उत्पत्ति खुदा के दोनों हाथों से हुई।

सुन्दर वलभ वद्री, भले मिले कलि माहि। चौदह विद्या निपुन है, पर जानत एकौ नाहि ॥१२२॥

इस प्रकार किसी की खिल्ली उड़ाना भी मानवता नहीं यदि आप अपने पक्ष को भागवत के प्रमाणों द्वारा सिद्ध कर दूसरे के पक्ष में सप्रमाण दोष दिखाते तो माना भी जा सकता था। इस तरह सुंदर, वलभ, वद्री भी कह सकते हैं कि मैं स्वामी जी को पराजित कर दिया।

इति निजानन्द मीमांसायां पूर्वार्ध भागे सप्तमोऽध्यायः ७

—:o:—

अथ अष्टमोऽध्यायः ८

समाज की स्थिरता

पन्ना मे स्वामी जी का स्थिर निवास हो जाने पर वहां के निवासियों को यह शंका हुई कि इनका खर्च कहां से चलता है कुछ लोगों ने कहा कि इनके पास कोई रसायन है जिससे इनका सब खर्च चलता है। वी० प्र० ५७

तब एक दिन महाराज ने, पूंछी राज से येह। सब के मन मे धोखो है, ये खरच होत हे जेह ॥१२८॥

एक दिन छत्रसाल जी ने (राज) स्वामी जी पूँछा कि सबों के मन मे संदेह है कि अपका यह खर्च कहाँ से चलता है। स्वामी जी ने उत्तर दिया कि यह खर्च मेरते से सुन्दर साथ देते है। वी प्र० ५७

तब बोले बल करण दीवान ये बात है से हेल। एक जागा मारिये, ताकी चौथ दीजे सब मिल ॥१३८॥

अर्थ—बल करण दीवान ने सबों से परामर्श करके कहा कि ये बात बहुत ही सहज है एक जागा (कोईगांम) है उसे मारकर अपने अधीन करके, उसका चौथाई हिस्सा सब मिलकर देवे। वी० प्र० ५७

ये बात पकी करके, लिखाय लइ महराज। तब सब साथ मे आय के अरज करी आगे राज ॥१३६॥ और करी अरज हजूर मे, करो इलाज बाहर निकरने को। सब ठाकुरो मिल बिचार कियो, एक जागा मारने को ॥१४१॥ हमको बड़ी उमेद है, आप हो असवार। चले आगे अस्वारी मे, हम जलेब मे होय होसियार ॥१४२॥ तब संवत सत्रा सैतातालीसे, अस्वारी करी जब। हस्ती पर चढ़ाय के, आगे सेना चलाई तब ॥१४३॥

उक्त बातों का निश्चय कर छत्रसाल जी ने सब ठाकुरों से कागज लिखा लिया और स्वामी जी के पास आकर कहा आप बाहर निकलने की तैयारी कीजिये सब ठाकुरों ने मिल कर एक जगह को छीनने का निश्चय किया है मुझे भी पूर्ण उम्मेद है कि सफलता मिलेगी अतः आप अस्वारी मे सवार हो आगे चले। स्वामी जी विक्रम संवत १७४३ में हस्ती पर सवार हो कर सेना को आगे करके चले और कालपी गांम के समीप आ पहुंचे।

मीमांसकः—स्वामी जी के साथ मे ले आये हुये सेनानियों ने यहाँ आकर क्या कार्य किया यह इतिहास के लेखक ने कुछ भी नहीं लिखा इस विषय को छोड कर इन्होने लिखा है कि ये कालपी से अस्वारी मे सवार हो सेवड़े आ पहुंचे। वी० प्र० ५७।

इहाँ से अस्वारी कर, सेवड़े आये जब। वसंत सुरकी आय मिला, कदम पकडे तब ॥१५५॥ फेर मिठ्ठ पीरजादे ने, युरी करी

नजर । पाँच हजार अस्वार ले दौड़ा, राह मे भई फजर ॥१६२॥ तिनको मारया चमारो ने, फिरया स्याह मुह ले ॥१६३॥

सेवड़े मे इनके पहुंचने पर वसन्त सुरकी ने इनके चरणों को टेका और वह इन्हे चित्रकूट ले गया। फिर मिठू पीरजादे ने पाँच हजार अश्वारोहियों को साथ मे लेकर इनका पीछा करने को दौड़ा किया उसे ये लिखते हैं कि चमारों ने मारकर पराजित किया जिससे वह अपना काला मुख लेकर वापस लौट गया। इन बातों मे भी कोई तथ्यता नहीं मालूम होती क्योंकि वी० प्र० ५८ मे लिखा हुआ है कि पुरदिल खांन का पत्र छत्रसाल के पास आया कि ये क्यामत का समय जो आने के लिये कहते हैं वह किस प्रमाण से। यह मिठू पीरजादा, पुरदिल खांन से शासित बादशाह का सेनानी था। प्र० ५८ मे शाही सेना पतियों का कई बार आक्रमण करना लिखा है किन्तु वह अत्यन्त सूक्ष्म इशारा मात्र है ऐतिहासिक ढंग से नहीं लिखा गया नमूना के लिये चौ० देखिये वी० प्र० ५८

वाइस अस्वारो मारी, फौज तीन हजार। भागा जाय भेड़ ज्यो, विना तेज देख्या खुआर ॥१७॥

अब इस चौपाई से यह पता नहीं चलता कि यह कौन सी सेना है जो मारी गई लेखक ने इन लड़ाइयों के इतिहास को स्पष्ट नहीं लिखा केवल अपनी विजय की घोषणा की गई है। कुछ भी हो इनकी चौपाइयों से तो स्पष्ट ही है कि स्वामी जी ने महाराजा के साथ लड़ाइयों मे भाग अवश्य ही लिया।

महाराजा छत्रसाल को स्वामी जी से दीक्षित होने के सम्बन्ध मे भी लिखा है। वी० प्र० ५८।

आरती निछावर करके, कही धन धन दिन है आज ॥४९॥ ह टीका एही पावड़ो, एही निछावर आप। श्री प्राणनाथ के

चरण पर, छत्रसाल वल जाय ॥५०॥ पेहेले दाता हम भये, गुरु को दीनो शीष। पीछे दाता गुरु भये, सब कुछ करी वक सीस ॥५७॥

उक्त कथन से इन्होने महाराजा को दीक्षित बतलाया है और धार्मिक ग्रंथों मे इनकी प्रशंसा लिखी है। स्वामी जी ने औरंगजेब की तरह इन्हे भी परम धाम की वास्ना१ साकुंडल वाई नाम बताया है इनके मत के मानने वाले छत्रसाल के नाम का जप भी करते है तथा पूजन के अन्त मे और भोजन के आरम्भ काल मे ऊँचे स्वर से जयध्वनि करते हैं। नाम जप का मंत्र इस प्रकार है:—

कृष्ण महंमद धणी देवचन्द्र, प्राणनाथ छत्रसाल। ये पाँचो स्वरुप को जो भजे, दुख मिटे 'तत्काल ॥

अस्तु इस मत वाले इनको शिष्य होना मानते है किन्तु इनके बाद महाराज के वंश मे किसी का शिष्य होना नहीं पाया जाता। वर्तमान में भी उनके वंशज इस सम्प्रदाय से दीक्षित नहीं है। कुछ भी हो यह तो मानना ही पड़ेगा कि पन्नाराज परिवार का कुछ आश्रय प्राणनाथ को प्राप्त था यह समय की परिस्थिति से भी संभव है। क्योंकि मुस्लिम शासन से हिन्दू जनता त्रस्त थी शाही सेना का आक्रमण व गुप्तचर इन दोनों का पीछा करते रहते थे महाराजा छत्रसाल वीर थे इन्होंने प्राणनाथ को बहुदल बल के साथ देखकर अपने पास टिका लिया। और स्वामी जी भी वीर पुरुष का आश्रय ले निरापद होना चाहते थे दोनों का स्वार्थ बराबर था।

पन्ना में आवाद होकर इनके शिष्य "धामी" इस नाम से प्रसिद्ध हुए स्वामी जी के साथ में अनेक वर्ण जाति के मनुष्य थे किन्तु यहाँ

वास्ना = लाहूत धाम की सखी।

आने पर सबों ने अपनी जातीयता को त्याग कर धामी कहलाने लगे लोक में धामी कोई जाति नहीं किन्तु इसका अर्थ ये लोग बतलाते हैं कि हम लोग इस्लाम धर्म के सबसे ऊँचे लाहूत धाम से आये हैं इसलिए हम सब धाभी कहलाते हैं। ऐसा अर्थ मानने से प्रणामी संप्रदाय के सभी मनुष्य धामी कहे जा सकते हैं। क्योंकि स्वामी जी का उद्देश्य केवल ब्रह्मसृष्टियों को जागृत करना है जो लाहूत धाम से 'अवतरित हुई है अतः जो भी जागृत हो दीक्षित हुए हैं वे सभी धामी कहे जा सकते हैं। किन्तु समाज में धामी शब्द का प्रयोग उन्हीं के लिए है जो स्वामी जी के साथ पन्ना में आबाद हुए हैं। इस प्रकार समाज की मान्यता से यह कथन निराधार हो जाता है कि मैं धाम से आया हूँ इसलिए मैं धामी कहलाता हूँ। वस्तुतः ये धामी शब्द व्यक्ति के पूर्व जातीयता का विलयी करण है। स्वामी जी के वचन से भी उक्त बात की पुष्टि हो जाती है वे वचन निम्न है। (सब जाते मिल भई एक ठोर, कोई न कहे धणी मेरा और)। ये हिन्दुओं के सदृश अपना कोई जातीय संस्कार नहीं करते शादी विवाह आपस में ही आदान प्रदान कर लेते हैं इसका कारण यह भी है कि इन्हें कोई हिन्दू या मुस्लिम न लड़की देता है न लेता ही है। ये लोग मुर्दे का अग्नि संस्कार नहीं करते मिट्टी दान देते हैं।

इनके मन्दिरों का दरवाजा पश्चिम की ओर होता है। और गुम्मट नाम के मन्दिर में पंजे का चिह्न है जिसे मुस्लिम लोग हजरत का प्रधान चिह्न मानते हैं गुम्मट में प्राणनाथ को जिस स्थान पर दफनाया गया है ठीक उसी (कब्र) स्थान पर प्रतिमा का रूप देकर वस्त्राभूषणों से सुसज्जित कर अष्ट पहर की पूजा आरती भोग लगाते हैं। इसके अलावा अन्य मौलवी (इल्मियों) को जहाँ मिट्टी दान देते हैं उस जगह चबूतरा बनाकर कब्र की पूजा करते हैं। यद्यपि स्वामी जी के मतानुकूल किसी प्रकार की प्रतिमा का पूजन करने का विधान नहीं है। इस प्रकार की इनकी मान्यता केवल हिन्दुओं से विरुद्ध आचरण प्रदर्शन करना मात्र

है। वह यह कि जो हिन्दू लोग करेंगे उससे हम विपरीत ही कार्य करेंगे। इनके मन्दिरों (मस्जिदों) में भी प्रतिमा की पूजा होती है। मन्दिरों में मुस्लिम बादशाहों के समान सिंघासन पर ताज कलंगी तुर्रा किरीट जड़ावदार वस्त्र नाना आभूषणों से सुसज्जित कर आरती पूजा भोग लगाते हैं तो क्या यह प्रतिमा नहीं है। केवल पत्थर या किसी धातु से निर्मित वस्तु को ही प्रतिमा नहीं कहा जाता प्रतिमा नाम आकार का है वह आकार इनके मस्जिदों में भी पाया जाता है। इससे सिद्ध है कि ये लोग भी प्रतिमा पूजते हैं। प्रणामी प्रतिमा नहीं पूजते इस प्रकार का कथन हिन्दुओं से विपरीतता प्रदर्शन करना मात्र है।

और ये निर्गुणवादी भी नहीं हैं जिससे ये कह सकें कि हम प्रतिमा नहीं पूजते। स्वामी जी का परिकर्मा नामक ग्रन्थ सगुणवाद से भरा हुआ है उत्तरार्ध भाग अ० ६ में देखिये :—जिस धाम में हस्तपादादि युक्त सिंहासन पर युगल जोड़ी विराजमान है तथा सखियाँ उनकी सेवा के लिये तत्पर हैं नदी, पहाड़, सूर्य, चन्द्र, दिन, रात्रि, ऋतुयें, नाना प्रकार के पशु-पक्षियों से समन्वित वनों का वर्णन होने से यह सगुण वाद नहीं है तो क्या है। अतएव इनके जो दास वाणी में लिखा है कि **(सगुण निर्गुण से भिन्न अखण्ड सनातन हो)** इसका भी पूर्वोक्त कथनानुसार निराकरण हो जाता है। निर्गुण सगुण से हमारा ब्रह्म भिन्न है इस प्रकार के कथन मात्र से भिन्नता नहीं सिद्ध होती क्योंकि तुम्हारे स्वामी जी ने धाम में सब प्राकृत तत्वों का वर्णन किया है। प्राकृत तत्वों का वर्णन करते हुए उसे दिव्य सच्चिदानन्दमय कहना वाणी को श्रम देना मात्र है। इन हेतुओं से तुम्हारे धाम में सगुणवाद सिद्ध हो जाने से प्रतिमा का पूजन करना स्वतः सिद्ध हो जाता है।

इनके मुख्य तीन तीर्थ हैं पन्ना, जामनगर, सूरत ये लोग कहते हैं कि जब आखिरी महम्मद (प्राणनाथ) ने जन्म लिया तब अरब से मक्का, मदीना, इन दोनों हजों (तीर्थों) की शफकत बरकत (अर्थात्

अस्तित्व) उठ कर पन्ना और सूरत में चला आया जिससे पन्ना को मक्का हज (तीर्थ) और सूरत को मदीना हज (तीर्थ) कहा जाता है।

इन तीनों स्थानों से दीक्षित हुए मनुष्य के लिए बड़े-बड़े प्रतिबन्ध हैं दीक्षित मोमिनो के लिये दूसरे सम्प्रदाय सम्बन्धी बातें करना रामायण, गीता, भागवत, उपनिषद्, ग्रन्थों का अध्ययन व सुनना दूसरे के मन्दिर में जाना ब्रह्मा, विष्णु, महेश व अन्य देवी देवताओं का नाम लेना व उनको सिर झुकाना गंगा आदि किसी तीर्थों में जाना उसे तीर्थ दृष्टि से देखना आदि महान अपराध माना गया है। यदि कोई भी ऐसा करते पाया गया उसे (रेहेनी) के आधार पर दण्ड दिया जाता है। मोमिन समाज से वह बहिष्कृत किया जाकर मन्दिर में प्रवेश निषेध तथा चरणा मृत प्रसाद बन्द कर दिया जाता है। प्राश्चित मनवाकर दण्ड वसूल कर क्षमा याचना कराई जाती है तब वह समाज में मिल पाता है। अधिकांश लोग इसमें अपढ़ हुआ करते हैं क्योंकि खास कर मन्दिरों से सम्पर्क रखने वालों को वर्णमाला का ज्ञान कराकर इलंम लुदंनी का ज्ञान (जिन १४ पुस्तकों की रचना स्वामी जी ने की है) उसकी शिक्षा दी जाती है विक्रम संवत १९८४/८५ में पन्ना में कुरान की पाठशाला खुली थी मौलवी लोग मोमिनो को आयनो का अर्थ समझाते थे। इस शाला का संचालक पंजाब प्रान्त ग्राम कमालिया का निवासी सुन्दर लाल चौधरी था। पन्ना में स्वामी जी के निवास स्थान गुम्मट बंगला आदि मन्दिरों में प्रत्येक जगह दीवारों पर कुरान की आयते लिखी हुई थी किन्तु वे अब कुछ काल पूर्व लोक निन्दा के भय से हटा दी गई हैं। जिसे इलंम लुदंनो का ज्ञान हो वही गुरु गद्दी पर बैठता है। किसी से वाद विवाद के भय से आवश्यकता पड़ने ,पर संस्कृत भाषा के जानने वाले को कुछ प्रलोभन अथवा कुछ काल तक के लिए वेतन निर्धारित कर नियुक्त कर लेते हैं जो संस्कृत भाषा जानता हो और इलंम लुदंनी जानता हो वह गद्दी का अधिकारी नहीं होगा गुरु गद्दी में बैठने वाला व्यक्ति

नियमित समय पर मजलिस करता है। अर्थात् स्वामी जी के बनाये हुए ग्रन्थ को उच्च सिंहासन में रख कर उसका अर्थ सुनाता समझाता है कई जगह उस ग्रन्थ की तथा मजलिस करने वाले की आरती और द्रव्यादिको से निछावर भी की जाती है।

इति निजानन्द मीमांसायां पूर्वार्धे भागे अष्टमोऽध्यायः ८

अभ्यासार्थक प्रश्न :—

१—पूर्वार्ध भाग के प्रत्येक अध्यायों से छाँट कर इनके ऐतिहासिक जीवन की क्रमबद्ध सूचियाँ तैयार कीजिए।

समाप्तोऽयं पूर्वार्धे भागः।

श्री परमात्मने नमः

उत्तरार्ध भागः

प्रथमोऽध्याय १

संप्रदाय का मूलाधार

उत्तरार्ध भाग मे निजानन्द संप्रदाय के मूल भूत सिद्धान्तों का उल्लेख करते हुये उस पर विचार किया जायगा।

पूर्वार्ध भाग मे इस संप्रदाय के प्रधान आचार्य देवचन्द्र का जीवन परिचय दे दिया गया है हिन्दू वैष्णव धर्मावलम्बियों को मोमिन समाज की ओर आकृष्ट करने के लिये जैसा कि ये भ्रमात्मक मिथ्या प्रचार करते है तदनुसार तथा कथित वल्लभ संप्रदाय मे दीक्षित हो कर देवचन्द्रजी ने जाम नगर मंदिर मे १४ वर्ष तक श्री मद्भागवत की कथा श्रवण किये तदनन्तर इन्होने निजानंद संप्रदाय को कायम करने के लिये मानसिक कल्पना कर लोगों से कहा कि मुझे ईश्वर ने दर्शन देकर कहा है कि तुम श्यामा जी के अवतार हो तुमारी अंगजा बारह हजार सखियों ने लाहुत मे खुदा से संसारिक खेल देखने को मागा था वह संसारिक खेल स्वप्नावस्था मे तुम सबों को देख रहे है। किन्तु यहाँ सब साखियाँ माया के प्रपंच मे पड़ कर हक अर्थात खुदा को भूल गई हैं अब तुम सब रुहो को जागृत कर परम धाम मे ले आओ। और मैं तुमे दर्शन देकर अन्तरध्यान हो रहा हूँ अन्तर्ध्यान होकर तुमारे हृदय मे प्रवेश करुँगा। इसी आधार को लेकर ये अपने संप्रदाय का प्रचार करने लगे। लोगों का कथन है कि

इन्होने लगभग ३०० लोगों को अपना शिष्य बनाया इनकी किसी प्रकार की साहित्यिक रचना नही पाई जाती इनके सम्बन्ध मे जो वर्णन मिलता है वह प्राणनाथ जी व लालदास की रचना मे पाया जाता है। संप्रदाय का नाम निजानन्द और प्रणामी धर्म जो यह रक्खा गया है यह इनके आदिग्रंथ कुमजम सरूप नामक ग्रंथ मे कहीं नहीं पाया जाता जिससे प्रतीत होता है कि भोले भाले हिन्दुओं को बहकाने और भ्रम मे डालने के लिये निजानन्द संप्रदाय या प्रणामी धर्म नामवाद मे रख लिया इनके समाज का मौलिक नाम मोमिन समाज या सुन्नत जमात है जिसके निम्न प्रमाण है। सिनगार प्र० २४

मोमिन उतरे नूर विलंद से, सो याही कल मे पोहोचे वाहेदत ॥५१॥

अर्थः—मोमिन समाज खुदा के धाम से अवतरित हुये हैं वे इसी इलंम लुदन्नी व कुरान की आयतो द्वारा उस अद्वैतधाम मे पहुंच सकते हैं। मारफत सागर प्र० १२

एही सुन्नत जमात, महंमद वेसक दीन ॥१५॥

और इन्ही मोमिन समाज को सुन्नत भी कहा गया है संसय रहित ये महंमदीय धर्म के है। इनकी संप्रदाय मे प्रमाण रूप ग्रन्थ प्राणनाथ की रचनाओं को ही माना जाता है संप्रदाय प्रवर्तक के आदि ग्रंन्थो मे कहीं भी प्रणामी धर्म या निजानन्द संप्रदाय का उल्लेख नहीं है। अतः यह निर्भ्रान्त सिद्ध है कि मोमिन समाज मे हिन्दुओं के दीक्षित होने से बाद मे उक्त नाम संप्रदाय का रक्खा गया है। जिससे हिन्दुओं को सतर्क हो जाना चाहिये।

प्राणनाथ का साहित्यिक परिचय

स्वामी जी यत्र तत्र भ्रमण करते हुये १४ पुस्तकें लिखीं हैं जिनका नाम इस प्रकार है १—रास २—प्रकाश ३—खटरुती ४—कलस ५—

सनंध ६—किरतन ७—खुलासा ८—खिलवत ६—सागर १०—सिनगार ११—परिकर्मा १२—मारफत सागर १३—सिंधी १४—क्यामत नामा इन ग्रंथो मे हिन्दी वर्णाक्षरों की लिपी है हिन्दी होते हुये भी इनकी भाषा खिचड़ी है इनकी रचना मे पाँच भाषाओं का मिश्रण है १ हिन्दी २ गुजराती ३ सिन्धी ४ जाटी ५ आरवी । परन्तु इनकी रचना मे तीन चौथाई शब्द अरवी के ही पाये जाते है यद्यपि इन्होंने कहा है (**सब से सरल जान कहूँगी हिन्दुस्तान**) तो भी उक्त भाषाओं का प्रयोग तुक वंदी चौ० के द्वारा किया है इनमे किसी छंद अलंकार की योजना नहीं है। इनके भाषा की अशुद्धता तो स्थल स्थल पर खटकती है १४ ग्रंथो मे उसी उसी विषय का वर्णन होने से पुनरुक्तियो का वाहुल्य है। इन्होंने अपने ग्रंथ लिखते समय कहा है (लघु दीरघ पिंगल चतुराई ये तो छे किवनी वड़ाई) याने लघु दीर्घ यह पिंगल शास्त्र की चतुरता से कविता करना संसार के वड़ाई के लिये है। हमे तो धणी जी के आज्ञानुकूल उनका गुण गान करना है ।

इनके विभिन्न ग्रंथो से संकलित की हुई चौपाइयों मे से आमूलत कोई परिवर्तन नही किया गया है केवल मूर्धन्य ष की जगह कंठ स्थानीय ख वर्ण का परिवर्तन पाठकों की सुविधा के लिये कर दिया गया है।

अव जिन मुख्य सिद्धान्तों को लेकर इन्होने अपने संप्रदाय की नींव डाली है उन्ही मूल तत्वों को लेकर विचार किया जाता है। "**पेहेले हके लई दिल मे, ता पीछे आई माहेनूर। ता पीछे हादी रुहंन, यो कर हुआ जहूर ॥**

प्राणनाथ जी कहते है कि अरस अजीम मे सब से पहले हक (खुदा) के दिल मे मोमिनो को संसारिक खेल दिखाने की इच्छा हुई इसके वाद (हक अर्थात खुदा की प्रेरणा से) नूर जल्लाल को यह इच्छा हुई कि हम खुदा के साथ मोमिनो का प्रेम विलास देखें इसके वाद हादी (खुदा की पत्नी)

और उनके रूह (मोमिनों) को नूर जल्लाल के सृष्टि रचना रूप खेल देखने की इच्छा हुई किन्तु प्रेरक सब का खुदा ही है खुलासा प्र० १६

रूहेवे नियाज थी, बीच वका बारे हजार। जाने न आप अरस को, साहे वियां अपार ॥४६॥ सुध नही दुख सुख की, न सुध विरह मिलाप। न सुध बुजर की अरस की, खबर न खावंद आप ॥४७॥ साहेब बंदे की सुध नही, छोटा बड़ा क्यो कर। न सुध एक न दोय की, न साँच झूठ खबर ॥४८॥ न सुध दोस्त दुस-मन, न सुध नफा नुकसान। न सुध दूर नजीक की, न सुध कुफर ईमान ॥४६॥ तिस वास्ते खेल देखाइया, ये वात दिल मे आन। झूठा निमूना देखाय के, रुहो होय हक पेहेचान ॥५०॥

अर्थः—स्वामी जी कहते हैं कि वका (परम धाम) मे रूहे (सखियाँ) वे नियाज अर्थात् अज्ञान:दशा पर थी वे अपने को और अरस (परम धाम की अपार बड़ाइयों को नहीं जानती थी उन्हे दुख, सुख वियोग, संयोग खावंद (स्वामी) और अपने आपकी भी सुध नही थी। स्वामी, सेवक, छोटा, बड़ा, एक और दो; सच्चा, झूठा, दोस्त, दुश्मन, नफा, नुकसान, दूर, नजदीक, ईमानदारी, वेइमानी, इन किसी भी वातों का विवेक न था इस वास्ते (रूहों को) संसार का झूठा नमूना दिखाया गया जिससे रूहो को खुदा की पहचान हो जाय।"

मीमांसक :—स्वामी जी ने अपनी कल्पना के अनुसार मुसल्मानों के अपने परमधाम में रहने वाली रूहों में २६ प्रकार के अज्ञानता का आरोप लगाया है जो ब्रह्मधाम में किसी प्रकार सम्भव नहीं हो सकता। रूह का अर्थ स्वामी जी ने भी आत्मा माना है। आत्मा के सम्बन्ध का वर्णन भागवत दशम स्कंध अध्याय ४७ में देखिये। **(आत्मा ज्ञान मयो शुद्धो व्यतिरिक्तो गुणान्वयः)** आत्मा तो गुणों से रहित ज्ञानमय तथा शुद्ध है और जो प्राकृत गुणों से युक्त है वह

भिन्न वस्तु है। श्रुति का भी वचन है (ह्येष आत्मा ज्ञानमयो विज्ञानमः) निश्चय ही यह आत्मा ज्ञानमय और विज्ञानमय है। खेद है कि स्वामी जी के सभी सिद्धान्त वेद विरुद्ध प्रतीत होते हैं। ब्रह्मधाम से जीवात्मा अपने अज्ञान को नष्ट कर ज्ञान के द्वारा ही मुक्त होता है। (ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः) श्रुति का भी कथन है कि बिना ज्ञान के मुक्ति नहीं होती। यदि हृदय का अज्ञान नहीं दूर हुआ तो वहाँ किसी की गति ही नहीं हो सकती उक्त बातों का ज्ञान तो संसार में साधारण मनुष्य को भी होता है वहाँ तो अज्ञानान्धकार को नष्ट कर दिव्य ज्ञान प्राप्त कर ही आत्मायें जाती है। गीता का भी वचन है (ज्ञानं लब्धा परां शान्ति मचिरेणाधि गच्छति) मुक्तात्मा ज्ञान को प्राप्त कर शीघ्र ही परम शान्ति को प्राप्त होता है। ब्रह्म वेत्ता पुरुष के सम्बन्ध में श्रुति कहती है (ब्रह्म विद ब्रह्मैव भवति नास्या कुले अब्रह्मविद् भवति, तरति शोकं तरति पापमानं गुहा ग्रन्थिभ्यो विमुक्तो अमृतो भवति) ब्रह्म को जानने वाला ब्रह्म ही होता है उसके कुल में अब्रह्मविद् नहीं होते वह सब प्रकार के शोकों से तर जाता है और सब पापों से तर जाता है हृदय की अज्ञान रूपी गाँठ को ज्ञान से छेदन कर संसारी बंधनों से मुक्त हो अमृत तत्व को प्राप्त करता है। स्वामी जी ने बताया कि मुक्तात्माओं को न अपना ज्ञान है न खुदा का ही ज्ञान है। इन्होंने रूहों के लिये उक्त ४६ चौ० से ४६ चौ० तक में २६ प्रकार का अज्ञान बताया है जो साधारण से साधारण मनुष्य भी ब्रह्म धाम में इस प्रकार अज्ञान का होना नहीं मान सकता। और जो ब्रह्म के समीपस्थ रहने वाली सखियों को झूंठा संसार रूपी नमूना दिखा कर ब्रह्म की पहचान के लिये कहा गया यह भी सम्भव नहीं क्योंकि जिसे मिथ्या ज्ञान होगा उसे मिथ्या वस्तु के प्रत्यक्ष कराने से मिथ्या नहीं निवृत्त होगा। जैसे अंधेरी कोठरी में और आवरण कर दिया जाय

तो वहाँ और अधिक अंधेरा ही होगा अंधकार को दूर करने के लिये प्रकाश की आवश्यकता है। उसी तरह ब्रह्म प्रियाओं को यदि धाम में किसी प्रकार का ज्ञान नहीं है तो मिथ्या संसार के देखने से खुदा का ज्ञान कैसे होगा। क्योंकि विरोधी वस्तु ही दूसरे को बाध कर सकती है जैसे अंधकार को प्रकाश ही बाध कर सकता है वैसे ही अज्ञान को ज्ञान ही बाध कर सकता है। कहा भी है (**मिथ्या ज्ञान निवृत्तेर्ज्ञान मात्र साध्यत्वात्**) अर्थात् मिथ्या ज्ञान की निवृत्ति के लिये ज्ञान मात्र ही साधन है अन्य नही। जैसे रस्सी में जो सर्प का भ्रम हो जाता है वह भ्रम यथार्थ ज्ञान से ही दूर हो सकता है।

ब्रह्म सूत्र (**निषेधश्चबलीयान**) व्यास जी कहते हैं कि वेदों का का निषेधक वाक्य बलवान होता है वेद का निषेधक वाक्य निम्न है (**तमेव विदित्वाति मृत्यु मेतिनान्यः पंथा विद्यतेऽनयाय**) उस सत ब्रह्म के ज्ञान होने पर ही संसार रूप मृत्यु सागर से मनुष्य पार कर सकता है ज्ञान के सिवाय अन्य कोई दूसरा मार्ग नहीं है। **कारण भावे कार्या भाव, इति न्यायेन ज्ञान बुद्ध्य भावे तत्कार्य भूतो मोक्ष एतेषां कदापि न सम्भवतीत्यर्थः**। तात्पर्य यह है कि कारण के अभाव में कार्य का अभाव होना निश्चित है इस न्याय से रूहों में ज्ञान बुद्धि के अभाव से उसका कार्य भूत मोक्ष कभी सम्भव नहीं है। अतएव स्वामी जी के कथनानुकूल वे रूहे मुक्तात्मा नहीं सिद्ध होती।

अस्तु परमधाम में रूहों के अज्ञान की निवृत्ति ज्ञान के द्वारा ही हो सकती है संसार रूप खेल देखने से अज्ञान की निवृत्ति नहीं हो सकती। स्वामी जी ने उक्त पाँच चौपाइयों में खुदा के धाम में जो अज्ञान बताया तो वह खुदा का धाम नहीं है उसमें इनके वर्णन से खुदा के लक्षण नहीं पाये जाते यह तो स्वामी जी के मानसिक कल्पना का धाम है जो अनुभवादि प्रमाणों से शून्य है। इन्होंने नवीन सम्प्रदाय की कल्पना करते

समय उसकी मूल नीव पर ध्यान नहीं दिया यदि आपके खुदा के धाम में सखियों को अज्ञान था वे खुदा को नहीं पहचानती थी तो स्वामी जी हमारे भारतीय वैदिक दर्शनों का अध्ययन कर इस ब्रह्म विद्या को वहाँ ले जाकर बारह हजार मोमिनों को पढ़ाते तो उनको खुदा का और अपने आपकी पहचान हो जाती। इस ब्रह्म विद्या का ऐसा प्रभाव है। श्रुति (**तस्मिन ज्ञाते सर्वं विज्ञातं भवति**) उस ब्रह्म विद्या द्वारा ब्रह्म के जान लेने पर सभी कुछ जाना हुआ सा हो जाता है। कलमा और तारतम के उपदेश से मोमिनों का अज्ञान नहीं दूर होगा क्योंकि यह कलमा और तारतम आपके पास खुदा के धाम में पहले भी था यदि इससे उनका अज्ञान दूर होना होता तो धाम में ही दूर हो जाता यदि वहाँ दूर नहीं हुआ तो यह संसार तो अज्ञान का घर ही है यहाँ कैसे दूर होगा।

एक बड़ी विचित्र बात है कि इन्होंने जिस परम धाम की कल्पना किया है वहाँ रहने वाले आत्माओं को अज्ञानान्धकार में निमग्न बताया है और ये भी कहा है कि संसार में आकर ज्ञान की प्राप्ति होगी। संसार के जितने भी धर्म हैं अपने कल्पित सर्वोच्च धाम में अज्ञानान्धकार किसी ने स्वीकार नहीं किया है यदि इनके कल्पित परम धाम में ही अन्धकार है तो इस अज्ञान्धकार पूर्ण संसार में आकर किसी जीव को सत्य ज्ञान हो ही नहीं सकता इसलिये हिन्दुओं को इनके ग्रन्थ में प्रयुक्त परम धाम ब्रह्म लोक अक्षर ब्रह्म आदि शब्दों से भ्रान्त नहीं होना चाहिये। यदि इनका कोई परमधाम है तो वह हिन्दू शास्त्रों में वर्णित परमधाम से सर्वथा भिन्न है और वहाँ घोर अंधकार छाया हुआ है। तथा भले ही प्राणनाथ और उनके सहचर मोमिनो को संसार में आकर कुछ ज्ञान प्राप्त हो जाय जैसा कि ये दावा करते हैं परन्तु जब ये लोग मर कर उसी अंधकार पूर्ण परमधाम में पहुचेगे तो पुनः वहाँ के अज्ञानान्धकार से इनका संसार में प्राप्त अल्प ज्ञान ढक जायगा और इस धर्म के मानने वाले मोमिन समाज के अनुयायी मरने के बाद भी

मोक्ष प्राप्त न करके उनका जीवात्मा घोरान्धकार में ही प्रवेश करेगा। ये बात स्वयं प्राणनाथ जी के द्वारा प्रणीत ग्रन्थों से ही सिद्ध है। अतः हिन्दुओं को इनसे सावधान हो जाना चाहिये।

धाम में अज्ञान बताने से निम्न नियम वहाँ भी लागू होगा। **(अज्ञान संज्ञौ भव वंध मोक्षौ)** अज्ञानता होने से ही संसार में बन्धन और मोक्ष है यही दोष वहाँ भी सिद्ध हो जाता है जिससे लोक और ब्रह्म धाम में कोई अन्तर ही नहीं रह जाता इन दोनों में कोई अन्तर न होने से आपका उपदेश और सम्प्रदाय की स्थापना करना व्यर्थ हो जाता है क्योंकि जब एक कीचड़ से निकल कर दूसरे अधिक कीचड़ में फस जाना है तो वहाँ जाने का प्रयास ही क्यों किया जाय। अधिक कीचड़ कहने का तात्पर्य यह है कि स्वामी जी ने रूहों को धाम में विशेष अज्ञानावस्था में बताया जो यहाँ प्रत्येक मनुष्य को इतना ज्ञान है। उस लोक को खुदा का धाम बताकर वहाँ के मुक्तात्माओं को अज्ञान मय बताना यह एक अपनी अज्ञता का परिचय देना मात्र है रूहों को वहाँ अज्ञानमय होना सर्वथा असम्भव है। ऐसे परमधाम में कोई जाना ही क्यों चाहेगा और उसकी प्राप्ति के लिये भजन साधन और तपश्चर्या क्यों कोई करेगा।

जब उनका परमधाम में अज्ञान होना नहीं सिद्ध पाया जाता तो रूहों का संसार रूप खेल देखने को आना भी नहीं सिद्ध पाया जाता। तथा उक्त प्रमाणों से लालदास का भी जो यह कथन है कि देवचन्द को खुदा ने दर्शन देकर कहा कि रूहें संसार रूप खेल देखने को आई हैं तुम जागृत कर लाहूत में ले आओ यह भी मिथ्या और कल्पित सिद्ध हो जाता है। और उनके न आने से स्वामी जी का उपदेश भी व्यर्थ हो जाता है। और स्वामी जी मुख्य इसी सिद्धान्त को लेकर सम्प्रदाय की स्थापना करते हैं कि धाम से अवतरित रूहों को मैं जागृत करने के लिये

आया हूँ। किन्तु मुक्तात्मा ब्रह्म धाम से नहीं लौटते यह वेदों का अटल सिद्धान्त है जिस लोक से जीवात्मा लौटता है उसे मुक्तात्मा और ब्रह्म धाम नहीं कह सकते। ब्रह्म सूत्र :—(**अनावृत्ति शब्दात्**) व्यास जी कहते हैं कि शब्द वेद प्रमाण से मुक्तात्मा ब्रह्म धाम से नहीं लौटते। वेद प्रमाण यह है (**न च पुनरावर्तते ब्रह्मैव सन ब्रह्ममाप्येति**) मुक्तात्मा की पुन: आवृत्ति नहीं होती वह ब्रह्म रूप होकर ब्रह्म को प्राप्त हो जाता है।

अस्तु मुक्तात्मा (रूहे) ब्रह्म धाम से नहीं अवतरित हुई यह भली भाँति सिद्ध किया जा चुका उनके अवतरित न होने से सम्प्रदाय स्थापित करने का कोई कारण ही नहीं बन पाता।

इति निजानन्द मीमांसायां उत्तरार्ध भागे प्रथमोऽध्याय: १

अभ्यासार्थक प्रश्न

१—सम्प्रदाय का मूलाधार विषय क्या है ?

२—यह सिद्ध कीजिए कि मुक्तात्माओं को अज्ञान नहीं हो सकता।

३—मिथ्या ज्ञान से मिथ्या ज्ञान की निवृत्ति नहीं हो सकती यह क्यों कहा गया उदाहरण से स्पष्ट कीजिये।

४—मुक्तात्मा ब्रह्म धाम से नहीं लौटते इस विषय में कौन से प्रमाण प्रस्तुत किये गये हैं।

५—सम्दाय की स्थापना नहीं बन प्रपाती इस विषय में अपने विचार व्यक्त कीजिये।

अथ द्वितीयोऽध्यायः २

सृष्टि उत्पन्न होने का मूल कारण ।

इस अध्याय में स्वामी जी के मतानुसार सृष्टि उत्पन्न होने के मूल कारण पर विचार किया गया है । प्रकास :—प्र० ३६ ।

अब लीला हम जाहेर करे, जो सुख सैयाँ हिरदे धरे । पीछे सुख होसी सबंन, पसरसी चौदे भवंन ॥१॥ अब सुनियो ब्रह्म सृष्टि विचार, जो कोई निज वतनी सिरदार । अपना धणी श्री श्यामाश्याम, अपना बासा है निज धाम ॥२॥ वानी चित दे सुनियो साथ, कृपा करके कहे प्राणनाथ । ये किव कर जिन जानो मंन, श्री धणी जी ल्याये धाम से वचंन ॥३॥ अब खेल उपजे के कहूँ कारंन, ये दोऊ इच्छा भई उत्पन्न । बिना कारण कारज न होय, सो कहूँ याके कारण दोय ॥६॥ ये उपजाये हमारे धणी, सो तो बातें हे अति घनी । नेक तामें करूँ रोसंन, संसैभान देऊँ सबंन ॥७॥ अब सुनियो मूल वचंन प्रकार, जब नहीं उपजो मोह अहंकार । ना निराकार नाही सुंन, ना निरगुन ना निरंजन ॥८॥ ना ईश्वर न मूल प्रकृति, ता दिन की कहूँ आपा बीती । या समे श्री वैकुंठनाथ, इच्छा दरसन करने साथ ॥९॥ अच्छर मन उपजी ये आस, देखो धणी जी को प्रेम विलास । तब सखियन मन उपजी एह, खेल अच्छर का देखे

जेह ॥१२॥ तब हम जाय पिया से कही, खेल अक्षर का देखे सही। जब यह बात पिया ने सुनी, तब बरजे हाँसी करने धनी ॥१३॥ मने किये हमको तीन बेर, तब हम माग्या फेर फेर फेर। धणी कहे घर की न रहसी सुध, भूल सी आप न रेहेसी या बुद्ध ॥१४॥ तो मने करत है हंम, हमको भी भूलोगे तुंम। तब हम फेर धणी सों कहा, कहा कर सी हमको माया ॥१५॥ तब हम मिल के कियो विचार, कह्या एक दूजी हूजो होसि-यार। खेल देखन की पिया सो कही, तब हम दोऊ पर आज्ञा भई ॥१६॥ ये कहे भिन्न भिन्न, खेल देखन के दोऊ कारंन। उपज्यो मोह सुरत संचरी, खेल हुआ माया विस्तरी ॥१७॥ इत अक्षर को विलस्यो मंन, पाँच तत्व चौदे भवंन ॥१८॥

अर्थ—स्वामी जी कहते हैं कि मैं अपनी साम्प्रदायिक लीला को जाहिर करता हूँ जिस लीला के सुख को सखियाँ हृदय में धारण करे पीछे तो सबों को सुख होगा और चौदहों लोकों में फैल जायगा। जो कोई धाम की सम्बन्धनी सखियाँ हैं वे सुने हम सबों का निवास स्थान धाम में है और हम लोगों के धणी श्यामाश्याम हैं इन वचनों को आप चित देकर सुने दया करके प्राणनाथ कह रहे हैं यह हमारी वाणी काव्य रचना नहीं है इस वाणी को धणी जी धाम से ले आये हैं। अब सृष्टि उत्पन्न के कारण बतलाता हूँ क्योंकि बिना कारण कार्य नहीं होता सृष्टि उत्पन्न होने के दो कारण हैं। पहला कारण अक्षर ब्रह्म को धणी जी का विलास देखने की इच्छा दूसरा कारण सखियों को अक्षर ब्रह्म की सृष्टि रचना देखने की इच्छा इन दोनों के इच्छाओं को प्रेरित करने वाले धणी जी हैं जिनकी बातें अत्यन्त रहस्यपूर्ण है उन सब रहस्यों को प्रगट

कर सब शंसयों को दूर कर देना है अवमूल आदि वचनों को सुनिये जिस समय मोह, अहङ्कार, सून्य, निरगुण, निरञ्जन, ईश्वर, मूल प्रकृति, ये कुछ भी नहीं उत्पन्न हुये थे उस समय की घटना का वर्णन करता हूँ। अक्षर ब्रह्म के मन में यह इच्छा हुई कि मैं धणी जी का सखियों के साथ विलास करना देखे और सखियों को यह इच्छा हुई कि हम लोग अक्षर ब्रह्म के सृष्टि रचना को देखे। सखियों ने अपनी कामना को प्रियतम से कहा उन्होंने हँसते हुये तीन बार रोका और हम लोगों ने तीन बार सृष्टि रचना रूप खेल देखने को माँगा। धणी जी कहते थे कि तुम्हें घर की सुध न रह जायगी भूल जाओगी यह बुद्धि नहीं रह जायगी।※ तुम लोग हमको भी भूल जाओगी हम लोगों ने फिर धणी जी से कहा कि हम लोगों को माया क्या कर सकती है। इस प्रकार हमारे निवेदन करने पर हम दोनों के लिये (अक्षर ब्रह्म और सखियों को) आज्ञा दे दी गई। इस तरह भिन्न-भिन्न सृष्टि रचना के मुख्य दो कारण कहे गये। इच्छा का संचरण होने पर मोह की उत्पत्ति हुई माया का विस्तार हो खेल की रचना हुई इस समय अक्षर का मन विकारमय हुआ जिससे पाँच तत्व चौदह भुवनों की रचना हुई।"

मीमांसक :- स्वामी जी ने ब्रह्म को सावयव माना है उसी अनुसार तीन तत्व को नित्य माना है। १—अक्षरातीत २—सखियाँ ३—अक्षर ब्रह्म, इन्होंने लिखा है कि अक्षरातीत धाम के आगे उत्तर दिशा पर यमुना नदी बही है और यमुना नदी के उस पार अक्षरधाम है। इस अविनाशी अक्षर ब्रह्म को सखियो के साथ धणी जी का प्रेम विलास

※ इस सम्बन्ध में स्वामी जी ने कुरान की आयतो का प्रमाण पेश किया है वह आयत निम्न है। (अलस्तोबेरब्बकुंम) इसका अर्थ ये लोग इस प्रकार करते हैं कि राज जी ने सखियों से कहा कि तुम लोग संसारी खेल देखने से हमको भूल जाओगी सखियों ने कहा (बले न भूले हंस) हम लोग आपको कभी भी नहीं भूल सकती।

देखने की इच्छा हुई यह जो कहा गया यह युक्ति सम्भव नहीं क्योंकि तीनों को आप नित्य मानते हैं नित्य मानने पर क्या अक्षर ब्रह्म ने धणी जी का सखियों के साथ में प्रेम विलास करना कभी नहीं देखा था क्या स्वामी जी ने जब इस मृत्यु लोक में जन्म लिया तभी अक्षर ब्रह्म को धणी जी का विलास देखने की इच्छा हुई। यदि कहो कि कभी भी नहीं देखा था तो आपके कहे हुये तीनों नित्य पदार्थ अनित्य हो जाते हैं। क्योंकि जब कभी भी नहीं देखा था तो उस दृश्य का अभाव रहा होगा अभाव होने से पुनः भावोत्पत्ति होने से अनित्य हो जाता है। नित्यत्वादि धर्म से हीन होने पर वह ब्रह्म तत्व नहीं है। यदि नित्य मान कर यह कहो कि धणी के विलास को पहले भी देखा था। पुनः देखने की इच्छा हुई तो अक्षर ब्रह्म को शास्त्रों में आप्तकाम, निष्काम कहा गया है उसमें कामनाओं के उत्पन्न बतलाने से वह ब्रह्म लक्षण से हीन हो जाता है।

स्वामी जी का यह भी कथन है कि अक्षर ब्रह्म प्रतिदिन अक्षरातीत के दर्शन के लिए जाते और दर्शन कर लौट आते हैं। इस तरह प्रतिदिन आने जाने वाले अक्षर को धणी के विलास का पता नहीं हुआ यह कैसे सम्भव हो सकता है जब नित्य आने जाने वाले को पता नहीं है तो स्वामी जी को अक्षरातीत के विलास का पता कहाँ से चल गया। यदि कोई कहे कि धणी की प्रेरणा से अक्षर को विलास देखने की इच्छा हुई तो वहीं परमधाम में धणी का विलास क्यों नहीं देख लिया इस नश्वर जगत में धणी जी सखियाँ अक्षर ब्रह्म के आने की क्या आवश्यकता थी अपने धाम ही में सब विलास की लीला दिखा देते। यदि कोई कहे कि सखियाँ भी अक्षर की सृष्टि रचना रूप खेल देखना चाहती थीं इसलिए यहाँ आईं। तो यह भी सम्भव नहीं क्योंकि मुक्तात्मा धाम से ही दिव्य नेत्रों द्वारा अक्षर की सृष्टि लीला देख सकती थी दुखमय संसार

में उनका जन्म लेना निरर्थक है। यदि हठात् उनका आना मानते हो तो वे ब्रह्म धामस्थ मुक्तात्मा भी नहीं हैं।

स्वामी जी ने अक्षर ब्रह्म को और सखियों को जो सृष्टि होने का मूल कारण माना है उसमें बहुत से दोष उत्पन्न होते हैं। शास्त्रों में सृष्टि की उत्पत्ति प्रत्येक कल्प में मानी गई है। अत: इनके मतानुसार हर एक सृष्टि के आरम्भ काल में धणी जी का विलास देखना ही सृष्टि उत्पत्ति का कारण होगा। जिससे धणी जी का सखियों का अक्षर ब्रह्म का पुन: पुन:जन्म मृत्यु रूप संसार में आवागमन करना पड़ता होगा जिससे विषयी जीव और मुक्तात्मा में कोई भेद नहीं पाया जाता। (इन्होंने अपने ग्रन्थों में यह कहीं नहीं कहा कि प्रत्येक सृष्टि के आरम्भ में धणी जी का विलास देखने के लिए अक्षर ब्रह्म सृष्टि रचना करता है) और सखियाँ उस सृष्टि रचना को देखती हैं और धणी जी तारतंम ज्ञान देकर उन्हें मुक्त करते हैं। केवल स्वामी जी ने जन्म लिया तब सृष्टि रचना के नवीन दो कारण बन गये यह किसी प्रकार युक्ति संगत नहीं। जगत का कारण केवल एक ईश्वर ही है और प्रत्येक सृष्टि के आरम्भ काल में वही कारण रहता है वह किसी नवीन कारण को लेकर सृष्टि रचना नहीं करता। वेदों का भी इसी प्रकार कथन है (**सूर्याचन्द्र मसौधाता यथा पूर्वम कल्पयत**)

अर्थ :—जिस तरह पहले सृष्टि की रचना होती चली आ रही है उसी तरह ईश्वर ने फिर भी सूर्य चन्द्रादिको के सहित सृष्टि रचना की। इस वेद मंत्र में जो पूर्व शब्द का प्रयोग है वह नवीन सृष्टि रचना को बाध करता है।

इसी तरह आठमी नौमी चौ० में इन्होंने कहा है कि जिस समय प्रकृति का सर्वथा अभाव था उस समय की यह घटना है। सृष्टि को उत्पन्न हुये अनेकों युग व्यतीत हो चुके तो इतने दिनों तक यह आपकी

लीला कहाँ रही वर्णन तो सृष्टि रचना के पूर्व का करते हैं और यह लीला आपके जन्म के बाद वि० सं० १७४० में प्रगट होती है। पहले इस घटना का कोई प्रमाण न होने व इनके वर्णन के अनुसार किसी क्रम का मिलान न बैठने से ये सब बातें मिथ्या और कल्पित प्रतीत होती है। सनंघ प्र० ३६।

ये जो नूर मकान आगू अरस के, नूर बका असल। ये रुहे असल कानो सुनियो, असल तनो के दिल ॥३७॥

अर्थ :—स्वामी जी लिखते हैं कि अय मोमिनों अपने असल शरीर के हृदय से और अपने असल कर्णों से सुनिये यह अरस अजीम के आगे जो नूर मकान (अक्षर धाम) है। वह भी नित्य है।

मीमांसक :—ईश्वर को शास्त्रों में असीम, अनन्त कहा गया है। परम धाम के आगे अक्षर धाम आने से परम धाम का अन्त हो गया और अक्षर धाम आ गया जो इसका भी अन्त होगा ही। अतएव जिस वस्तु का आदि और अन्त सीमा निर्देश है अर्थात् किसी देश विशेष में स्थिति है वह वस्तु देश काल से परिच्छिन्न है वही नित्य नहीं हो सकता। **(यद्यत्स विशेषं तत्तत्वट पटादिवद् विनाशि)** जो वस्तु सविशेष (सीमित) होती है वह घट और पट समान अनित्य होती है। यह न्याय शास्त्र का सिद्धान्त है इस तरह आपके कथन से अक्षरातीत धाम और अक्षरधाम दोनों अनित्य हो गये। उक्त चौ० मे जो (नूरबका असल) कहा गया वह नित्य नहीं सिद्ध होता। और आपकी रूहे अपने सत्य शरीर रूपी हृदय के द्वारा सत्य कर्णों से आपके उपदेश को कैसे सुने क्योंकि वे तो इस संसार में नश्वर शरीर को धारण किये हुए है असल शरीर व कर्ण कहाँ से पावे यह उपदेश तो आप उनको परमधाम ही में दे सकते थे जहाँ उनका असल शरीर है।

शास्त्रों में अक्षर शब्द ब्रह्म के विशेषण मे प्रयुक्त हुआ है जिसका अर्थ ही अविनाशी होता है। किन्तु स्वामी जी का काल्पनिक वर्णन होने से जब उसकी मीमांसा की जाती है तब वह सत्य की कसौटी में खरा नहीं उतरता देखिये श्रुति जिस अक्षर ब्रह्म को निष्काम निरीह विभु बताती है उस अक्षर को धणी जी का विलास देखने की इच्छा हुई इस प्रकार का कथन साम्प्रदायिक कल्पना का आधार बनाना मात्र है। श्रुति (**पूर्ण मिदं पूर्ण मदः**) वह सब तरह से पूर्ण है। इच्छा कामनाये माया के विकार से उत्पन्न होते हैं ये जीव के लक्षण हैं उसे इन्होंने ब्रह्म में आरोपित किया है। श्रुतियों में उसे विभु भी कहा है।

(नित्यं विभुँ सर्वगतम् सुशूक्ष्मं तदव्ययंयद्भूत योनि परिपश्यन्तिधीराः)

वह अक्षर नित्य व्यापक सर्वगत अत्यन्त शूक्ष्म अविनाशी सब भूतों का कारण है उसे विद्वान अपने हृदय रूपी गुहा में देखते हैं। इस प्रकार श्रुतियों ने उसे विभु कहा है जो वस्तु एक देश में होती है वह दूसरे स्थान भी जा सकती है किन्तु विभु पदार्थ निष्क्रिय होता है उसकी गति एक स्थान से दूसरे स्थान में नहीं हो सकती। जैसे कोई कहे कि महाकाश एक स्थान से दूसरे स्थान गया यह सर्वथा असम्भव है क्योंकि वह उस स्थान में तब जा सकता है जब वह उस स्थान में न हो। उस अक्षर ब्रह्म के सर्वत्र परिपूर्ण होने से महाकाश के सदृश उसका गति नहीं हो सकती। इन अनेक हेतुओं से धणी जी का दर्शन करने के लिये अक्षर ब्रह्म का जाना नहीं सिद्ध हो पाता।

जो अक्षर ब्रह्म आप्त काम है वह किस कामना को लेकर किसी के विलास देखने की इच्छा करे। वह आनन्द मय है वह अपने को आनन्दित करने के लिये इतर पदार्थ की अपेक्षा नहीं करता प्रेम विलासादि विषय जन्य व्यवहार उसे आनन्दित नहीं कर सकते क्योंकि वह विषयों से सर्वथा अतीत है। वह आत्म क्रीड़

आत्मानन्द है श्रुति का भी इसी प्रकार कथन है (**आनन्दं ब्रह्मेति व्यजानीयात्**)। स्वामी जी ने जो तीन अनादि ब्रह्म तत्व माना है इस प्रकार की मान्यता मानने पर वेद वाक्यों से विरोध होता है श्रुति का कथन है (**सदेव सोम्येदमग्रआसी देक मेवाद्वितीयं**) हे सौम्य यह सृष्टि के पूर्व अद्वितीय सत ब्रह्म ही था। इस प्रकार वैदिक वाक्यों द्वारा विचार करने पर यह सिद्ध हो जाता है कि सृष्टि के पूर्व न धाम के धणी जी थे और न सखियाँ ही थीं यह स्वामी जी का बौद्धिक श्रम मिथ्या है इसमें किसी प्रकार की वास्तविकता नहीं पाई जाती पाठक बन्धु गम्भीर दृष्टि से विचार करें।

प्राणनाथ ने अपने अक्षर ब्रह्म या अक्षरातीत ब्रह्म, को सावयव बताया है जो सावयव है वह स्थूल और नश्वर है अर्थात् पाँच भौतिक है अतएव हिन्दुओं के ब्रह्म से वह भिन्न है हिन्दुओं के सगुण और निर्गुण ब्रह्म से उसका कोई सम्बन्ध नहीं है हिन्दू शास्त्रों में वर्णित जो ब्रह्म अक्षर, अक्षरातीत और परमधाम आदि शब्दों का प्रयोग किया है वह केवल हिन्दुओं को अपने सम्प्रदाय में आकृष्ट करने के लिये भ्रमात्मक प्रयोग है। अतः हिन्दुओं को इनके शब्द जाल चक्र में नहीं फसना चाहिये।

इति निजानन्द मीमांसायां उत्तरार्ध भागे द्वितीयोऽध्यायः २

अभ्यास के लिये प्रश्न

१—सम्प्रदाय प्रवर्तक ने सृष्टि उत्पत्ति के जो कारण बताये हैं उसे अपनी भाषा में व्यक्त कीजिये।

२—उक्त घटना की सत्यता पर विचार करते हुए टिप्पणियाँ लिखिये।

३—सृष्टि रचना के मूल दो कारणों को किन किन युक्तियों व प्रमाणों द्वारा असिद्ध किया गया।

४—ईश्वर कामना रहित है इस विषय में अपने विचार व्यक्त कीजिये।

अथ तृतीयोऽध्यायः ३

सखियों का धाम से अवतरित होना

इस अध्याय में सखियाँ अक्षरातीतधाम से अवतरित हुई इस विषय पर विचार किया गया है। दूसरे अध्याय में यह वर्णन आ चुका है कि सखियों को अक्षर ब्रह्म की सृष्टि रचना रूप खेल देखने की इच्छा हुई। उसी प्रकार अक्षर ब्रह्म को धणी* जी के साथ सखियों का विलास (प्रेम बिहार) देखने की इच्छा हुई उसी इच्छा की पूर्ति के लिये तीनों ने इस लोक में जन्म लिया अक्षर ब्रह्म का मन विकारमय हुआ जिससे पाँच तत्व चौदहों भुवनों की रचना हुई प्रकास प्र० ३६।

जब आज्ञा भई हम पर, तब जान्या गोकुल घर ॥१६॥
ज्यो नीद में देखिये सुपंन, यों उपजे हम व्रज वधू जन ॥२०॥

अर्थ—स्वामी जी कहते हैं जब हमारे लिये धणी जी की आज्ञा हुई तब निद्रा अवस्था में स्वप्न के समान हम सब सखियाँ गोकुल में प्रगट हुई।

मीमांसक :—अक्षर ब्रह्म ने सृष्टि की रचना किया तो इस सृष्टि रचना को सखियाँ स्वप्नावस्था में कैसे देखने लगी। स्वप्ना तो स्वप्न दृष्टा के अन्तःकरण में ही होता है उसे अन्य साधनों की अपेक्षा नहीं होती दूसरा सृष्टि रचना करे और दूसरा उसे स्वप्नावस्था में देखे यह अनुभव सिद्ध नहीं, लोक में ऐसा व्यवहार नहीं देखा जाता। स्वप्न देखी सुनी हुई वस्तुओं का व जिनका पूर्व से ही हृदय में संस्कार होता है

---

*—धणी शब्द का प्रयोग जो इन्होंने यहाँ बार बार किया है वह इनकी परिभाषा से अक्षरातीत के लिये है।

उन्हीं वस्तु का साक्षात्कार होता है। जब जागृत में सखियों ने कभी सृष्टि देखा ही नहीं तो उन्हें स्वप्न कैसे हो सकता है। क्या अक्षर ब्रह्म की सृष्टि रचना को सखियाँ परमधाम में जागृत अवस्था में नहीं देख सकती थीं क्या वे भी सांसारिक प्राणियों की तरह ही हैं। उन्हें ब्रह्मधामस्थ होने से अनन्त शक्ति सम्पन्न होना चाहिये यदि वहाँ से सृष्टि नहीं देख सकती तो वे ब्रह्म धाम में नहीं है।

उक्त २० चौ० में स्वामी जी ने सखियों को स्वप्न के समान गोकुल में जन्म लेना कहा सो यह सबों को अनुभव है कि स्वप्न मिथ्या होता है स्वप्न के मिथ्या होने से उनका जन्म ग्रहण करना भी मिथ्या है जन्म के मिथ्या होने से उन सखियों का बहाना बनाकर उन्हें उपदेश देना भी मिथ्या है। स्वामी जी ने अपने प्रत्येक ग्रन्थों में स्पष्ट रूप से कहा है कि रुहें सृष्टि को स्वप्नावस्था में देख रही है। जब सखियों को निन्द्रावस्था में स्वप्न हो रहा है तब उनका गोकुल में जन्म लेना कैसे सम्भव है। मोहन कहता है कि मैं आज रात्रि को स्वप्न देखा मैं अपने इष्ट मित्रों के सहित बाजार घूम रहा था कि अचानक पहाड़ की चोटी पर पहुंच गया वहाँ से चलते-चलते एक गहरे प्रपात को देख भयभीत हो गया। जिससे निद्रा खुल गई। इस तरह मोहन के स्वप्न देखने से कोई न कहेगा कि उसने जन्म लिया। इससे जन्म लेना और स्वप्न होना दोनों एक नहीं है। दोनों प्रकार के वर्णनों से दोनो ही बातें काल्पनिक प्रतीत होती हैं।

स्वामी जी करें क्या नवीन सम्प्रदाय की कल्पना के लिये जिन जिन विषयों को चुन कर रखा गया है। उसी में फँस जाते हैं यदि साफ-साफ यही कह देते हैं कि जन्म लिया तो मुक्तात्माओं का पुनर्जन्म होने से मृत्यु लोक के सदृश ही उनका जन्म मरण हो जाता है यदि स्वप्न कहते हैं तो स्वप्न की सब क्रियायें मिथ्या होती है जागृत होने पर स्वप्न की कोई वास्तविकता नहीं रहती। रह गया अब सम्प्रदाय की कल्पना किस प्रकार की जाय इसलिये दोनों को जोड़ दिया जाय।

इन्होने जो यह संप्रदाय की भित्ति तैयार किया है उसके वर्णन विषय मे एक रूपता नही है। ये कहीं धणी जी के जोश का आना कहीं अक्षर की आत्मा का आना और दोनों को स्वप्न होना बताया है अगले अध्यायों मे इन विषयों के प्रमाण मिलेगे। संदेह इस बात का होता है कि क्या अक्षर ने धणी जी के विलास को स्वप्न मे ही देखना चाहा। स्वप्न का सुख तो क्षणिक मिथ्या होता है वह सतचित आनन्द स्वरूप अक्षर स्वप्न के क्षणिक सुख के लिये इच्छा करे इस बात को कौन मान सकता है।

उक्त चौ० मे इन्होंने जो यह कहा कि धणी जी की आज्ञा होने पर हम सब सखियाँ गोकुल मे अवतरित हुई भागवत वर्णित कृष्ण गोपी संवाद द्वापर के अन्त मे मिलता है सृष्टि रचना हुये अनेको युग व्यतीत हो चुके वर्तमान मे शास्त्रों के अनुसार यह अठाइसवां कलियुग चल रहा है और पिछले अध्याओं मे इन्होंने यह कहा है कि जब प्रकृति कार्य कुछ भी नही था तब की यह घटना है तो इतने युग तक वे सखियाँ कहां रहीं और इस सम्बन्ध मे स्वामी जी ने कुछ लिखा नहीं इसका इतिहास न उपलब्ध होने से तथा इनके वर्णन का कोई क्रम न बैठने से ये बातें कल्पित प्रतीत होती है। यदि यह भी माना जाय कि गोकुल मे रहने वाली गोपिकायें आप ही के धाम से अवतरित हुई तो यह सम्बन्ध भी नही बैठता क्योंकि अब से पाँच हजार वर्ष पहले जिस समय कृष्ण और गोपिकायें धरा धाम मे थी उस समय निजानंद का संप्रदाय बना ही नहीं था। जिन सिद्धान्तो का उपदेश बि० संवत १७४० मे पन्ना मे आपने किया। आप ने यह भी कहा है कि उस कृष्ण कलेवर मे मैं महंमद रूप से स्थित था। कृष्ण कलेवर मे आप की स्थिरता होने से आपको उस समय भी सखियों को कलमा और तारतम का उपदेश देना चाहिये था किन्तु उस समय कलमा तारतम का उपदेश न होने से कृष्ण कलेवर मे आप महंमद रुप से स्थित नही थे। अस्तु उस युग मे

निजानन्द मत का प्रचार न होने से गोकुल मे रहने वाली गोपिकायें आप के धाम से नहीं अवतरित हुई।

अब भागवत धर्म के अनुसार भी स्वामी जी के धाम से सखियाँ नही अवतरित हुई यह प्रमाणित किया जाता है। भागवत पू० दशम-स्कंध अ०१ मे गोपियों के जन्म लेने का वर्णन मिलता है। ब्रह्मा जी सब देवताओं को लेकर क्षीरसागर मे भगवान विष्णु के पास गये और दैत्यों से पीड़ित भूमि भार को उद्धार करने के लिये स्तुति किया। आकाश वाणी के द्वारा भगवान ने देवताओं को आश्वासन दिया (**भवद्भिरंशैर्य दुपूपजन्यताम्**) आप देवगण अंश से यदु कुल मे जन्म लेवें (**वासुदेव गृहे साक्षात पुरुषः परः जनिष्यते तत्प्रियार्थं संभवन्तु सुरास्त्रियः**) वसुदेव जी के घर मे साक्षात् परम पुरुष परमात्मा उत्पन्न होंगे उनके प्रेमार्थ आप सब देवगण स्त्री रूप से प्रकट हो। इस तरह भागवत के अनुकुल देवताओं का यदुकुल मे जन्म लेना कहा गया है। भागवत मे स्वामी जी के लाहूत सम्बन्धी रूहें (मोमीनों) को गोकुल मे अवतरित होना नही बताया गया। कृष्ण गोपी युग में भगवान वेद व्यास थे इससे उनकी रचना का प्रमाण सत्य है और आपका जन्म तीन सौ चौवन वर्ष से अधिक न होने से प्रमाणित नहीं माना जा सकता।

इन्होंने अपने को महंमद और कृष्ण रूप दोनों कहा है किन्तु यह कथन तभी सत्य हो सकता है जब आपके उपदेश कृष्ण के अनुकूल होवे भगवान कृष्ण का गीता में कथन है (**यद्गत्वाननिवर्तन्तेतद्धामपरमंमम**) जहाँ मुक्तामा जाकर नहीं लौटते वहीं मेरा परमधाम है। और स्वामी जी का इससे विपरीत कि धाम से सखियाँ अवतरित हुई अतः दोनों के धार्मिक उपदेश में भिन्नता होने से स्वामी जी कृष्ण नहीं कहे जा सकते। महंमद चाहे आप भले ही हो इस विषय को मौलवी लोग जाने। अस्तु इस्लाम धर्म के अनुसार लाहूत से भले ही रूहे अवतरित

होती हो किन्तु हिन्दू शास्त्र के अनुसार ब्रह्म धामस्थ मुक्तात्माओं का धाम से अवतरित होना निषेध है। युक्ति से भी उनका लौटना नहीं पाया जाता। क्योंकि यहाँ जीवात्मा संसार रूप जन्म मृत्यु के बन्धन से छूटने के लिये निरंतर प्रयत्न करते हुये ज्ञान को प्राप्त कर मोक्ष का अधिकारी होता है मुक्त होकर ब्रह्म के अखंड आनंद का अनुभव करता है वह मुक्तात्मा इस ब्रह्मानन्द को छोड़कर इस दुःखमय संसार में क्या कभी आने की इच्छा करेगा। यदि जीवात्मा को वहाँ से लौट कर संसार ही में मरना पचना है तो मुक्ति के लिये प्रयास ही क्यों किया जाय और शास्त्रों का उपासना इन्द्रिय निग्रहादि उपदेश भी व्यर्थ हो जाते हैं।

अस्तु इस अध्याय में अनेक प्रमाणों द्वारा यह सिद्ध किया जा चुका कि सखियाँ धाम से नहीं अवतरित हुई और इस सम्प्रदाय का मूलाधार सखियों का इस संसार में आना ही है। उन्हीं के जागृत करने के लिये इनके इलंमलुदंनी तारतम ज्ञान की सार्थकता है। सखियों का धाम से न अवतरित सिद्ध हो जाने से इनके सब धार्मिक उपदेश व्यर्थ हो जाते है और सम्प्रदाय कल्पना का कोई आधार नहीं बन पाता। यहाँ पाठकों को यह स्पष्ट समझ लेना चाहिये कि इन्होंने जो गोकुल और कृष्ण आदि शब्दों का प्रयोग किया है वह केवल कृष्ण भक्त वैष्णवों को धोखे में डाल कर अपने मोमिन समाज में आकृष्ट करने के लिये किया है। हिन्दू शास्त्रों में वर्णित भगवान श्री कृष्ण गोकुल और व्रज की लीलाओं से इनका कोई सम्बन्ध नहीं।

इति निजानन्द मीमांसायां उत्तरार्ध भागे तृतीयोऽध्यायः ३

अभ्यासार्थक प्रश्न

१—इस अध्याय में कौन सी सखियों का जन्म लेना मिथ्या कहा गया है।

२—स्वप्न पूर्व संस्कार से होते हैं इस विषय में अपना मत व्यक्त कीजिये।

३—संसार में जन्म लेने वाले प्राणी को क्या स्वप्न का रूप कह सकते है।

४—गोकुल में उत्पन्न होने वाली गोपिकाओं के विषय में क्या कहा गया है।

५—मुक्तात्माओं का धाम से लौटना क्यों सम्भव नहीं।

अथ चतुर्थोऽध्यायः ४

कृष्ण स्वरूप मे भेद

इस अध्याय में कृष्ण के स्वरूप भेद पर विचार किया जायेगा प्रकास प्र० ३६ **कंस के बंध वसुदेव देवकी, इत आई सुरत चतुर्भुज की॥२१॥ सुरत विष्णु की चतुर्भुज जोय, दिये दरसन वसुदेव देवकी सोय। पीछे फिरे कहिक हकीकत, अब दो भुजा की कहूँ विगत ॥२२॥ मूल सुरत अक्षर की जेह, जिन चाहया देखन प्रेम सनेह। सो सुरत ले धणी को आवेस। नंद घर कियो प्रवेश ॥२३॥ दो भुजा सरुप जो श्याम आतम अक्षर जोस धणी धाम। ये खेल देखा सैयाँ सबंन, हम खेले धणी आनन्द अतिघन ॥२४॥**

अर्थ—यहाँ पर स्वामीजी कृष्ण स्वरूप में भेद बताते हुये कह रहे हैं कि कंस के द्वारा बन्दी वसुदेव देवकी के कारावास मे जो चतुर्भुज भगवान प्रगट हुये और वसुदेव देवकी को दर्शन दिया वह विष्णु का स्वरूप है उनकी स्तुति करने के बाद भगवान ने कहा कि अब जो दो भुजा वाला रूप होगा उसको नन्द के यहाँ पहुंचा देना ऐसा कह अन्तर्ध्यान होने के बाद जो दो भुजा वाला बालक रूप हुआ वह वही है

जिस अक्षर ब्रह्म की मूल सुरत ने अक्षरातीत को परमधाम में सखियों के साथ रमण करते देखा था जिससे उसे पुनः कामना हुई थी कि मैं धणीं जी के प्रेम विलास को फिर से देखें, उसी अक्षर ब्रह्म की इच्छा पूर्ति करने के लिये व सखियों की इच्छा पूर्ति करने के लिये। अक्षर ब्रह्म की सुरत ने अक्षरातीत के आवेस को ग्रहण कर नन्द यशोदा के घर में प्रवेश किया। अब वही दो भुजा वाले जो कृष्ण है उनमें आत्मा अक्षर की है और धाम में रहने वाले धणी जी का जो समिश्रित है। इसलिये ये पूर्ण ब्रह्म है और जिस चतुर्भुज रूप ने वसुदेव को दर्शन दिया वह विष्णु का रूप है। इस तरह इन्होने भेद माना है।

मीमांसक :—स्वामी जी ने जो केवल दो भुजा वाले कृष्ण को ११ वर्ष ५२ दिन की अवस्था तक ही पूर्ण ब्रह्म कहा है यह युक्ति और प्रमाण विरुद्ध है। इस तरह का भेद प्रतिपादन कहीं नहीं पाया जाता ये किस प्रमाण के आधार पर भेद सिद्ध करते हैं यह आपने कुछ नहीं लिखा बिना किसी प्रमाण के द्वारा आपके कथन मात्र से भेद कैसे सिद्ध होगा। कृष्ण चरित्र वर्णन का सबसे प्रधान ग्रंथ श्री मद्भागवत है उसमें उक्त चौपाइयों के अनुकूल भेद नहीं सिद्ध होता। देखिये जिसे आप विष्णु कह कर हेय बताते हैं। और दो भुजा वाले को पूर्ण ब्रह्म कहते है उसके सम्बन्ध में व्यास जी क्या कहते हैं। भा० दशम स्कन्ध अध्याय ३ श्लोक १३ **विदितोऽसि भवान साक्षात् पुरुषः प्रकृतेः परः केवलानुभवा नंद स्वरूपः सव बुद्धि हक ॥१३॥** जब भगवान चतुर्भुज रूप प्रगट होते हैं तभी वसुदेव जी स्तुति करते हुये कहते हैं। मैं जान गया कि आप प्रकृति से पर साक्षात् पूर्ण ब्रह्म है यह आपका आनन्दमय स्वरूप केवल अनुभव के द्वारा बुद्धि रूप गुहा में प्रकाशित होता है। अर्थात् जिनके हृदय की अविद्या रूप ग्रंथि ज्ञान के द्वारा नष्ट हो चुकी है उनके अन्तःकरण में केवल अनुभव के द्वारा आपका यह आनन्दमय स्वरूप भाषित होता है।

इस तरह स्वामी जी जिस चतुर्भुज रूप को विष्णु कह कर उसे पूर्ण ब्रह्म नहीं मानते हेय बताते हैं उसी को वसुदेव जी परम तत्व पूर्ण ब्रह्म मान कर स्तुति करते हैं। श्लोक में जो प्रकृति से पर साक्षात् पुरुष विशेषण शब्दों का प्रयोग हुआ है वह विष्णु के ही लिये हुआ है। इससे भागवत के अनुसार विष्णु का परात्पर ब्रह्म होना सिद्ध हो जाता है। और अक्षर की आत्मा में धणी जी का जोश प्रविष्ट हुआ तब वह पूर्ण ब्रह्म हुआ। ऐसा वर्णन कहीं भी नहीं है। तो व्यास जी ऐसे आप्त महापुरुषों के वाक्य को न मान कर इस्लाम मत के प्रचार करने वाले आपके वाक्यों को कौन ऐसा हिन्दू होगा जो मान्यता देगा। जो व्यास संसार में अपनी अलौकिक प्रतिभा रखता है जिसने वेदों का विभाजन किया और उन्हीं वेदों के जटिल सिद्धान्तों को सुलझाने के लिये ब्रह्म सूत्र (वेदान्त दर्शन) व पुराणों की रचना की ऐसे व्यक्ति के महोपकार को संसार का कोई प्राणी नहीं भूल सकता उसके वचनों को अवश्य ही प्रमाणित मानेगा। महाभारतादि ऐतिहासिक ग्रंथों के अध्ययन से पता चलता है कि व्यास जी कृष्ण के समय में थे। समकालीन होने से भी कृष्ण चरित्र के विषय में उनके वाक्य प्रमाणित माने जा सकते हैं। और आपके वाक्य इसलिये प्रमाणित नहीं माने जा सकते हैं कि आप वेद विरोधी हैं। पूर्व पक्षी :—क्या प्रमाण है कि स्वामी जी वेद विरोधी हैं।

उत्तर पक्षी :—देखिये इनका खुलासा नामक ग्रंथ प्र० १२ चौ० ६३ **(धनी आये वेद छुड़ावने)** अर्थ प्राणनाथ संसार मे वेद छीनने के लिये आये है। यह इसारा मात्र लिख रहा हूँ ग्रंथ के पूरे अध्ययन से पाठकों को पता चल जायगा कि वस्तुतः वेद विरोधी है या नहीं। इन कारणों से कृष्ण के विषय में आपके वचन प्रमाणित नहीं माने जा सकते। कृष्ण वैदिक धर्म के रक्षक हैं इस बात को प्रत्येक व्यक्ति जानता

है। उन्होंने गीता मे वेद को कितने उच्च भूमा में प्रतिष्ठित किया है यह उनके वचन से स्पष्ट है गीता अ० ३ **कर्म ब्रह्मोद्भवं विद्धि ब्रह्मा-क्षर समुद्भवम् तस्मात् सर्वगतं ब्रह्म नित्यंयज्ञे प्रतिष्ठितम्** । अय अर्जुन तू कर्म कांड को वेद से उत्पन्न हुआ जान और वेद अविनासी अक्षर से उत्पन्न हुआ है तिससे वह सर्व व्यापक ब्रह्म यज्ञ रूपक्रिया में नित्य प्रतिष्ठित है। भगवान ने वेद के वास्तविक रूप का परिचय दिया है जो प्रत्येक प्राणी मात्र के लिये उसका अनुशासन मान्य होना चाहिये।

स्वामी जी ने दो भुजावाले कृष्ण को जो परात्पर ब्रह्म कहा उस विषय मे भागवत के अनुसार विचार किया जाता है। भा० दशम स्कंध अ०३ श्लोक ४६ **इत्युक्त्वाऽऽसीद्धरिस्तूष्णीम् भगवानात्म मायया, पित्रोः सम्पश्यतोः सद्यो बभूव प्राकृतः शिशुः** । हरि (विष्णु) पूर्व वृत्तान्तो को कह कर चुप हो गये और माता पिता के देखते देखते अपनी माया के द्वारा शीघ्र ही प्राकृत शिशु (साधारण बालक) हो गये। इस श्लोक के उल्लेख से स्वामी जी के वचनों में यह विपरीततादि खाई जा रही है कि जिस दो भुजा वाले को ये पूर्ण ब्रह्म कह रहे है उसे यहाँ प्राकृत शिशु बताया गया है। वस्तुतः जो परमतत्व चतुर्भुज रूप मे था वही परम तत्व प्राकृत शिशु होने पर भी है क्योंकि श्लोक में हरि शब्द का प्रयोग होने से विष्णु कोही प्राकृत शिशु होना कहा गया है। अस्तु इस भागवत के प्रमाण से सिद्ध हो जाता है कि वसुदेव जी जिस प्राकृत शिशु को लेकर नंद के यहाँ पहुंचाया वह विष्णु का ही रूप है जब कि ये उसे विष्णु का रूप नही मानते। भागवत ग्रंथ के किसी भी श्लोक मे दो भुजा वाले कृष्ण मे अक्षर की आत्मा और धणी जी का जोश प्रवेश होने का वर्णन नही है इससे उक्त चौ० मे वर्णित तथ्य अप्रमाणित हो जाता है।

ईश्वर के अनेक नामों का शास्त्रों में प्रयोग हुआ है जैसे हरि, नारायण, अक्षर, आत्मा, ॐकार, ब्रह्मा, शिव, राम, विष्णु, आदि जिस तरह

ईश्वर अनन्त है उसी तरह उनके नाम भी अनन्त है तुलसीदास जी ने कहा है (राम न सकहि नाम गुणगाई) वे सब नाम पूर्ण ब्रह्म ही के है उपाधिगत भेद मिथ्या है वस्तु तत्व सभी में एक है। विष्णु शब्द को स्वामी जी ने न्यून और विनाशी अर्थ में प्रयुक्त किया है और उसी अनुकूल इनके सम्दाय वाले अपढ़ लोग प्रयोग करते हैं यह विद्वत समाज वैदिक प्रक्रिया से सर्वथा विरुद्ध है। विष्लृ व्याप्तौ धातु सेनु प्रत्यय करने पर विष्णु शब्द बनता है जिसका अर्थ होता है व्यापक उसी व्यापक तत्व को अक्षर कहा गया है और अक्षर का अर्थ अविनाशी ब्रह्म होता है और अविनाशी वही पदार्थ होगा जो विभु होगा और विभु अर्थ में विष्लृ धातु व्याकरण शास्त्र से सिद्ध है। अतः विष्णु शब्द से परात्पर ब्रह्म का ही बोध होता है।

इससे स्पष्ट है कि भागवतादि ग्रन्थों में वर्णित श्री कृष्ण लीला के साथ इन्होंने जो अपनी लीला का सम्बन्ध जोड़ने का झूठा प्रयास किया है वह केवल कृष्ण भक्त वैष्णवों को धोखा देकर अपने मोमिन सम्प्रदाय की ओर खीचने के लिये किया है। भगवान श्री कृष्ण की लीलाओं से इनके कृष्ण वसुदेव और नन्द यशोदा आदि का कोई सम्बन्ध नही है। यह इनका एक घपला मात्र है।

स्वामी जी ने ईश्वर के जितने विशेषण शब्दों को कहीं से सुना है उन सब शब्दों को क्रम वार नीचे से ऊपर की ओर पृथक-पृथक नाम निर्धारित कर एक नक्शा तैयार किया है जिसे ये लोग वैराट पट कहते हैं। उस वैराट पट के नक्शे में क्रमशः चौदह लोक अंकित किये गये हैं इसके बाद अनेकों लोकों की कल्पना किया है। कुछ उदाहरण के लिखे जाते हैं। शिवलोक, सदाशिवलोक, महानारायण सुमंगला शक्तिलोक, कबीरलोक, गोलोक, केवललोक, अव्याकृतलोक, प्रणव-लोक, प्रकृति पुरुषलोक, इन सबों के ऊपर नूर जल्लाल लोक व जिसके ऊपर कुछ भी नहीं है वह चौथा आसमान नूर जम्माल लोक जहाँ से

रूहे (मोमिन) उतरे हुये हैं। इस तरह इन्होंने अपने धाम को सर्वोपरि बताया है। स्वामी जी के सिनगार नामक ग्रन्थ प्र० २४ चौ० ५१ को देखिये।

नूर के पार नूर तजल्ला, रसूल अल्ला पोहेचे इत, मोमिन उतरे नूर विलंद से, सो याही कलमे पोहेचे वाहे दत ॥५१॥

अर्थ :—नूर (अक्षर) के आगे नूर तजल्ला (अक्षरातीत धाम है) रसूल अल्ला* इसी धाम तक पहुंचे हुये हैं और मोमिन (सखिया) भी वहीं से उतरी हैं सो इसी कलमे कुरान की आयतों द्वारा (अथवा इलंम लुदंनी द्वारा) वहाँ अद्वैत भूमि में पहुंचाया जा सकता है।

स्वामी जी ने इस्लाम मत में खुदा का सबसे ऊँचा स्थान निर्धारित किया है और हिन्दुओं के ब्रह्म धाम को नीचे बताकर उसे असत हीन और विनाशी बताया है। सिनगार प्र० १।

सतलोक मृतलोक दो कहे, और स्वर्ग कह्या अमृत। जो नीके किताबे देखिये, तो ये सब उड़सी असत ॥८॥

अर्थ :—स्पष्ट है यहां सत लोक शब्द से वैकुण्ठ सहित विष्णु को असत विनाशी बताया है। विष्णु शब्द की व्याख्या पहले की जा चुकी है यदि इन्होंने सगुण पक्ष लेकर उसे विनासी असत बताया हो तो यह भी शास्त्रोक्त पद्धति से विरुद्ध है क्योंकि भगवान सगुण निर्गुण रूप में कोई तारतम्य नहीं है। श्रुति का आदेश है (**द्वावेव ब्रह्मणो मूर्तं मूर्तश्चा मूर्तश्चेति**) ब्रह्म के दोनों रूप हैं मूर्तिमान और अमूर्तिमान उसका कोई स्वरूप न्यूनाधिक नहीं हो सकता क्योंकि वह निर्गुण ब्रह्म ही सृष्टि काल में अपनी त्रिगुणात्मिक माया का अवलम्बन कर जगत का सर्जन करता है जैसा कि कहा गया है (**ब्रह्मत्वे सृजते लोकान् विष्णुत्वे पालयत्यापि**

*रसूल अल्ला इस शब्द का प्रयोग महम्मद रूप प्राणनाथ के लिए भी किया गया है।

रुद्रत्वे संहरत्वेव तिस्रोवस्था स्वयं भुवा) वह स्वयम्भू परमात्मा रजोगुण को अवलम्बन कर ब्रह्मा रूप से सृष्टि की रचना करता है और सतोगुण का अवलम्बन कर विष्णु रूप से जगत का पालन करता है और तमोगुण का अवलम्बन कर रुद्ररूप से जगत का संहार करता है। इस तरह उसकी तीन अवस्थायें हैं। युक्ति से भी देखिये। (**यथैकस्मिन स्फटिके नील पीतादि गुणयोगान्नीलः पीत इति व्यपदेशस्तथैकस्मिन्नपि पर ब्रह्मणि सृष्टि समये रजोगुणयोगात्प्रजापतिरिति स्थिति समये सत्व गुणयोगाद्विष्णुरिति विनास समये तमोगुण योगात् रुद्र इति व्यपदेशः**) जिस तरह एक शुद्ध स्फटिक में नीले पीले आदि गुणों से योग से नील स्फटिक पीत स्फटिक ऐसा व्यपदेश किया जाता है उसी तरह एक ही परब्रह्म में सृष्टि के समय रजोगुण के योग से प्रजापति स्थिति काल में सत्व गुण के योग से विष्णु विनास काल में तमोगुण के योग से रुद्र यह व्यपदेश किया जाता है। अतः विष्णु को यदि सगुण रूप भी मान लिया जाय तो वह परम अक्षर रूप विष्णु अपनी अनिर्वाच्य माया शक्ति से त्रिगुणात्मक रूप होने पर भी वह परब्रह्म ही है।

भागवत में भी परीक्षित जी शुक मुनि से कहते हैं (**विष्णोर्वीर्याणिशंषनः**) आप विष्णु के पराक्रम का वर्णन कीजिये जिसके आधार पर सम्पूर्ण दशम स्कंध में विष्णु (कृष्ण) के पराक्रम लीलाओं का वर्णन है। भागवत में यह कहीं भी चर्चा नहीं है कि दो भुजा वाले कृष्ण में धणी जी का जोस और अक्षर की आत्मा ने प्रवेश किया। यह भी कथन अनुभवादि प्रमाणों से शून्य होने के कारण मिथ्या है। देखिये शास्त्रों में आत्मा को विभु कहा गया है (**आकाश वत सर्व गतश्च नित्यः**) आत्मा आकाश के समान व्यापक और नित्य है।

और जो अक्षर शब्द है वह आत्मा का विशेषण है कैसी है आत्मा जो क्षर (विनास) भाव से रहित है याने अक्षर (अविनाशी) है। ऐसी आकाश वत सर्व व्यापक अक्षर आत्मा का आना जाना सिद्ध नहीं होता। इसीलिये तो वेदो में उसे निष्क्रिय कहा है। आकाश को यदि कोई कहे कि हमने मुट्ठी में ले लिया यह मिथ्या है। व्यापक वस्तु चल विचल नहीं हो सकती यदि वह क्रियाशील होता है तो वह विभु नहीं हो सकता विभु न होने से ईश्वर की सिद्धि नहीं होती। अस्तु धणी जी का जोस और अक्षर की आत्मा दो भुजा वाले कृष्ण में प्रवेश होना सिद्ध नहीं पाया जाता। इन्हीं कारणों से स्वामी जी ने खुदा को व्यापक नहीं माना है हक, के हुकुम को व्यापक माना है।

अब रही धणी जी के जोश की बात वह भी गोकुल में कृष्ण के अन्दर आया। जोस अथवा आवेश कोई वस्तु नहीं है जो दूसरे में प्रवेश कर सके यह तो लोक में एक मनोवृत्ति के वेग के विषय में प्रयोग करते देखा जाता है। जैसे अमुक व्यक्ति ने बड़े जोश या आवेश के साथ अपना भाषण दिया तो वह केवल एक मनोवृत्ति का वेग है वह किसी व्यक्ति के शरीर में प्रविष्ट होकर कार्य नहीं कर सकता उसकी सीमा जोश में आने वाले व्यक्ति ही पर सीमित है। अतः धणी जी का जोस कृष्ण कलेवर में प्रवेश होना नहीं सिद्ध पाया जाता प्रमाण ही न होने के कारण स्वामी जी की साम्प्रदायिक कल्पना मात्र है।

इति निजानन्द मीमांसायां उत्तरार्ध भागे चतुर्थोऽध्यायः ४

अभ्यासार्थक प्रश्न

१—सम्प्रदाय प्रवर्तक ने कृष्ण में किस तरह भेद दर्शाया है।

२—लेखक ने किन-किन प्रमाणों से कृष्ण स्वरूप में अभेद सिद्ध किया है।

३—विष्णु महात्म्य [illegible] सिद्ध कीजिये।

४—वैराट पट नक्शे से क्या शिक्षा दी गई है उसका उद्देश्य क्या है।

५—सप्रमाण सिद्ध कीजिये धणी जी का जो सब अक्षर की आत्मा कृष्ण कलेवर में नहीं प्रवेश हुआ।

अथ पंचमोऽध्याय: ५

व्रज रास लीला

"इस अध्याय में व्रज रास लीला के सम्बन्ध में विचार किया जायगा। प्रकाश प्र० ३६।

ये काल माया मे विलास जो करे, सो पूरी नीद मे सब विसरे। पूरी नीद का जो सुपंन, काल माया नाम धराया तिन ॥२६॥

अर्थ :—व्रज में कृष्ण ने जो वाल लीलायें की वह काल माया के ब्रह्मांड में की थी और पूर्ण निन्द्रावस्था में अतएव गोपियाँ और कृष्ण व्रज में विलास करना भूल गये और पूर्ण निन्द्रा का जो स्वप्न है उसी को कालमाया कहते हैं।"

मीमांसक :—स्वामी जी ने पहले भी सखियों को अज्ञान जनित वताया है अब यहाँ संसार में व्रज के बीच आकर पूर्ण निन्द्रायुक्त होने से कृष्ण भी गोपियों के साथ खेलते हुये भी खेल करना भूल गये। जिसके मूल परम धाम ही में अज्ञान वताया गया तो इस संसार में उन्हें भूल क्यों न हो। सखियों को तो परम धाम में यह व्रज लीला

स्वप्न हो रहा है और स्वप्न की चीजों को भूल जाना स्वाभाविक है। और चौ० में जो यह कहा गया कि पूर्ण निद्रा का जो स्वप्न है उसी का नाम काल माया है यह भी ठीक नहीं क्योंकि पूर्ण निन्द्रा में स्वप्न होता ही नहीं यह प्रत्येक प्राणी को प्रत्यक्ष अनुभव है। मनुष्य की तीन अवस्थायें होती हैं। जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति; पूर्ण निन्द्रा सुषुप्ति कहलाती है इस अवस्था में मनुष्य को किसी प्रकार का ज्ञान नहीं रहता स्वप्नावस्था में कुछ निद्रा कुछ जागृति दोनों रहती है तभी स्वप्न होता है और जागृत होने पर स्वप्नावस्था का अभाव हो जाता है। अतः पूरी निद्रा को स्वप्न बताना और उसी स्वप्न को काल माया नाम रखना यह सर्वथा असंगत है। प्रकाश प्र० ३६।

"जब धाम धणि ये कियो विचार, ये दोऊ मगन हुये खेले नर नार। मूल वचंन की नाहीं सुध, ये दोऊ खेले सुपने की बुध ॥२७॥ ये बात धणी चित सो ल्याय, आधी नींद तब दई उड़ाय। अग्यारे वरष और वामन दिन, ता पीछे पोहेचे वृन्दावन ॥२८॥

अर्थ :—कृष्ण और सखियों को मग्न होकर खेलते देखकर धाम धणी ने विचार किया कि इन लोगों को परमधाम के बीच मूल बातों का कोई ज्ञान नहीं है। ये दोनों स्वप्न की बुद्धि में खेल रहे हैं ऐसा विचार कर जो पूर्ण निद्रा में स्वप्न देख रहे थे उसकी आधी निद्रा उड़ा दिया इसके बाद ग्यारह वर्ष वामन दिन व्यतीत होने पर वृन्दावन पहुंचे।"

मीमांसक:—हमें यहाँ भागवतीय लीला से कोई प्रयोजन नहीं है। मैं स्वामी जी की कल्पना पर विचार कर रहा हूँ। इन्होंने यह पहले ही कहा है कि अक्षर की आत्मा धणी जी का जोश नन्द पुत्र कृष्ण में जब प्रवेश किया तब वे पूर्ण ब्रह्म हुये। ऐसी मान्यता मानने पर आपके

कल्पित कृष्ण में दोष आते हैं वह यह कि जिसे आप पूर्ण ब्रह्म कहते हैं उसी को मूल बातों अर्थात परम धाम का ज्ञान रहना नहीं बताते और उन्हें स्वाप्निक बुद्धि में खेलना बताते हैं। दूसरा यह कि धाम धणी ही तो अक्षर की आत्मा मे प्रवेशकर आये फिर अन्य किस धाम के धणी ने देखा की ये दोनो मग्न होकर खेल रहे है दो मे एक ही बात हो सकती है या तो आपका धाम धणी आया नही यदि आया माने तो उसे मूल बातो का (अर्थात परम धाम का) ज्ञान नही रहा ज्ञान न होने से वह पूर्ण ब्रह्म नहीं हो सकता। और जो स्वप्न बुद्धि मे खेलना बताया गया तो यह भी संभव नहीं हो सकता क्योंकि दो भुजा वाले कृष्ण को आप पूर्ण ब्रह्म मानते हैं ब्रह्म मे स्वाप्निक बुद्धि की कल्पना असंगत है क्योंकि वह जागृत, स्वप्न, सुषुप्ति, तुर्या, इन चारों अवस्थाओं से परे हैं ये अवस्थायें देहधारी जीवात्माओं की होती है ब्रह्म की नही कहा भी है

(जागृत स्वप्न सुषुप्ति तुर्या तीतोऽन्तर्यामी गोपालः)

अतएव ब्रह्म में जो स्वप्नावस्था का आरोप किया गया वह उपयुक्त नहीं।

अब रास लीला पर संक्षिप्त विचार किया जा रहा है। "प्रकाश प्र० ३६।

ये जो अग्यारे वरस लो लीला करी, काल मायातित ही पर हरी ॥३२॥

स्वामी जी कहते हैं कि ब्रज में ११ वर्ष लीला करने पर काल माया मय ब्रह्मांड का अभाव हो गया अर्थात् महाप्रलय हो गई। इस प्रकार का कथन सर्वथा असंगत है इस बात को कोई नहीं स्वीकार कर सकता कि ब्रज भूमि उसके अन्तर्गत रहने वाले प्रत्येक प्राणियों का महाप्रलय हो चुका था कृष्ण चरित्र का सब से बड़ा इतिहास भागवत है उसमें यह वर्णन नहीं पाया जाता और न अनुभव से ही सिद्ध होता। अतः उक्त बातें भी प्रमाण हीन होने से अमान्य हैं। प्रकाश प्र० ३६।

अग्यारे वरष और वामन दिन, ता पीछे पोहोचे वृन्दावन ॥२८॥ तहाँ जायके बेनबजाये, सखिया सबे लई बुलाये। तामसियां राजसियां चली, स्वातसिया शरीर छोड़ के मिली ॥२९॥ और कुमारिका ब्रज वधू संग जेह, सुरत अक्षर की सबे तेह। जो व्रत कर मिली संग श्याम, मूल अंग याके नाही धाम ॥३०॥ वेन सुन के चली कुमार, भवसागर यो उतरी पार। इनकी सुरत मिली सब सखियो माहे, अंग याके रास में नाहे ॥३१॥ या विध मुक्ति इनों की भई, कुमारिका सखिया जो कही ॥

अर्थ :—ग्यारह वर्ष वामन दिन व्यतीत होने पर कृष्ण वृन्दावन पहुंचे वहाँ जाकर बंशी बजाया उसकी आवाज सुनकर राजसी सखी चल पड़ी और स्वातसी सखी शरीर छोड़ कर कृष्ण से मिली और अक्षर की सुरत से उत्पन्न जो कुमारिका सखी थीं जिन्होंने कृष्ण से मिलने का व्रत धारण किया था जिनका मूल शरीर धाम में नहीं है जो ब्रज वधुओं के सङ्ग रहती थी वे भी बंशी की आवाज सुनकर चल पड़ी वहाँ जाकर उनकी सुरत सब सखियों में मिल गई जिससे उनकी भी मुक्ति हो गई। अतः कुमारिका सखियों का शरीर रास क्रीड़ा में न था।"

मीमांसक :—स्वामी जी ने जो यह कहा ११ वर्ष ५२ दिन बाद कृष्ण वृन्दावन पहुंच कर रास खेला तो आप उक्त अवधि तक ही कृष्ण में धणी जी का जोश मानते हैं इसी हेतु उसे पूर्ण ब्रह्म भी कहते हैं उक्त अवधि के बाद कृष्ण को विष्णुरूप मानते हैं तो सखियों ने जो रास खेला वह विष्णु के ही साथ खेलना सिद्ध पाया जाता है।

इस कथन से तो आपके सम्प्रदायिक कल्पना का जो मूल भित्ति है वह ही खतम हो जाती है। क्योंकि जिस उद्देश्य को लेकर अक्षर ब्रह्म ने धणी जी के साथ सखियों का विलास देखना चाहा था उसकी पूर्ति नहीं होती यहाँ तो आप ही ने विष्णु को रास खेलना सिद्ध कर दिया। यदि यह कहो कि रास के समय धणी जी थे तो उक्त २८वीं चौ० की रचना गलत है और उसी अवधि तक कृष्ण को पूर्ण ब्रह्म मानना भी गलत है।

बंशी का आवाज सुनकर सब सखियाँ आईं उनमें स्वातसी[1] सखी अपने शरीर को छोड़कर मिली यदि स्वातसी सखियों का शरीर पात होता है तो आपके कथन में पहला दोष यह आता है कि उन्होंने कृष्ण के साथ रास खेला नहीं। दूसरा दोष अक्षर ब्रह्म ने धणी जी के साथ जो विलास देखना चाहा था उसकी पूर्ति नहीं होती। तीसरा दोष यह कि भागवतादि ग्रन्थों में कोई भी सखी का रास खेलते समय शरीर पात होने का वर्णन नहीं है। चौथा दोष यह कि आपने निम्न चौ० में लिखा है। प्रकाश प्र० ३६ चौ० ४१।

रास खेल के फिरे सब एह, साथ सकल मन अधिक सनेह।

अर्थ :—कृष्ण से अधिक प्रेम करने वाले (साथ) अर्थात् सखियाँ रास क्रीड़ा कर सब व्रज लौट आईं। जिन स्वातसी सखियों का शरीर पात हो चुका था उनका व्रज में लौटना कैसे सम्भव है। अतः यह भी कथन अनुभव शून्य होने से मिथ्या है। स्वामी जी ने परम धाम से बारह हजार सखियों को अवतरित होना बताया है जिसमें यहाँ वर्णन केवल राजसी और तामसी सखियों का किया है। स्वातसी सखियों

---

[1] स्वातसी सखी नाम की कोई भी वस्तु भागवत में वर्णित नहीं है ऐसा जान पड़ता है कि प्राणनाथ ने सात्वकी शब्द को भ्रम से स्वात सी ऐसा कह दिया है।

के शरीर पात होने से आठ हजार सखियों ने रास खेला और अक्षर ब्रह्म की सुरत से उत्पन्न जो चौवीस हजार कुमारिका सखियाँ थी उनका भी शरीर रास में न था क्योंकि रास खेलने वाली एक-एक सखी में तीन-तीन कुमारिका सखी उनमें प्रवेश कर गई जिससे उनकी भी मुक्ति हो गई। कुमारिका सखियों के सम्बन्ध में स्वामी जी ने अपने परम धाम में इनकी चर्चा नहीं की है कि इन्होंने भी धणी जी का विलास देखना चाहा था पूर्व में इनका कोई कथानक न आने से ये बातें भी बनावटी प्रतीत होती हैं। भागवत में कुमारिका सखियों का भी वर्णन नहीं मिलता और न इन्हें रास खेलने वाली सखियों में प्रवेश करना ही कहीं लिखा है यदि २४ हजार कुमारिका सखी और चार हजार स्वातसी सखियों का; कुल २८ हजार सखियों का रास खेलते समय शरीर न रह गया तो व्रज में लौट कर कौन गया। इस प्रकार के कथन से व्रज सखियों से शून्य हो जाता है व्रजवासियों के लिये कृष्ण की वह रास एक महाप्रलय हो गई। भागवत दशम स्कंध पूर्वार्ध रास क्रीड़ा वर्णन अध्याय ३३ श्लोक ३६।

(ब्रह्म रात्र उपावृत्ते वासुदेवा नुमोदिताः अनिच्छन्त्यो ययुर्गोप्यः स्वगृहान् भगवत्प्रियाः।

अर्थ :—उस ब्रह्म रात्रि में रास क्रीड़ा खतम होने पर कृष्ण की आज्ञा पाकर भगवान से प्रेम करने वाली गोपिकायें घर जाने की इच्छा न होते हुये भी अपने घर (व्रज) को लौट आईं। अस्तु भागवत में सब सखियों के लौटने का वर्णन है। किन्हीं सखियों का दूसरी सखियों में प्रवेश होने का अथवा किसी सखी के शरीर पात होने का वर्णन नहीं है।

श्री मद्भागवत के दशम स्कंध अध्याय २६में यह प्रसंग आया है कि भगवान श्री कृष्ण ने पूर्व रात्रि में वंशी वादन करके रास लीला के लिये व्रज गोपियों का आह्वान किया तब गोपियों के दो भेद हो

गये। जो गोपिकायें पति, पुत्र, घर, द्वार का काम काज पूर्ण अनाशक्त भाव से केवल भगत्प्रीत्यर्थ करती थी और जिनका मन वस्तुत: संसार की किसी भी वस्तु में आसक्त नहीं था तथा जो त्रिगुणातीत दिव्य भावापन्न गोपिकायें थी केवल वेही सशरीर भगवान की रासलीला में सम्मिलित हो सकी थीं। जिन गोपिकाओं की लेश भी पति पुत्र गृह कार्य में आशक्ति थी वे सशरीर भगवान की रासलीला में सम्मिलित नहीं हो सकी उनके सम्बन्ध में लिखा है। **दुःसह प्रेष्ठ विरह तीव्र ताप धुता शुभाः ध्यान प्राप्त्या च्युता श्लेष निर्वृत्याक्षीण मंगलाः तमेव परमात्मानं जार बुद्ध्यापि संगताः जहुर्गुण मयं देहं सद्यः प्रक्षीण बंधनाः।** अर्थात् जो गोपिकायें घर के भीतर फस गई और गोप लोगों ने जिन्हें भीतर बन्द कर दिया उनका परम प्रिय भगवान श्री कृष्ण के तीव्र विरह ताप से रजस्तमोमय अशुभ विरहाग्नि में जल गया और ध्यान में प्राप्त श्री कृष्ण के आलिंगन से उनका मंगल अर्थात् सत्व गुण भी क्षीण हो गया उन गोपिकाओं ने त्रिगुण मय शरीर का त्याग कर दिया एवं दिव्य सूक्ष्म गुणातीत देह को प्राप्त कर वे भी दिव्य शरीर से भगवान की लीला में सम्मिलित हो गई भगवान त्रिगुणातीत है इसलिये गुणातीत भक्त ही त्रिगुणातीत भगवान से मिलने की पात्रता रख सकता है। परन्तु इन्होंने राजसी तामसी स्वभाव वाली गोपिकाओं से कृष्ण के मिलने की बात लिखा है और सात्यकी गोपिकाओं के साथ रास क्रीड़ा का वर्णन नहीं किया इससे स्पष्ट है कि भागवत में वर्णित श्री कृष्ण और गोपिकाओं के रासलीला से इनकी लीलाओं का कोई संबन्ध नहीं है इनकी लीला सर्वथा कपोल कल्पित है। और कृष्ण भक्त हिन्दुओं को भ्रम में डाल कर मुसल्मान बनाने के लिये श्री कृष्ण और गोपिकाओं के साथ अपनी लीला का संबन्ध जोड़ने के लिये झूठा व्यर्थ प्रयास किया है।

"अब योग माया का अवलम्बन कर जो रास खेला गया उसका नमूना देखिये। प्रकास प्र० ३६

कछुक नींद कछु जागृत भये, योग माया के सिनगार जो कहे ॥२३॥ योग माया मे खेल जो खेले, संगजोस धणी के मेले योग माया मे वाढ्यो आवेश, सुध नही दुख सुख लव लेश ॥२४॥ फेर मूल सरूपे देख्या तित, ये दोऊ मगन हुये खेलत जब जोस लियो खेचकर, तबचित चौक भई अक्षर ॥२५॥ कौन वन कौन सखी कौन हंम, यो चौक के फिरी आतंम ॥२६॥

अर्थ:—स्वामी जी यहाँ योग माया का परिचय देते हुये कह रहे हैं कि कुछ निद्रावस्था और कुछ जागृत अवस्था अर्थात स्वप्नावस्था ही योग माया का स्वरूप है अत: योग माया मे जो खेल खेला गया वह धणी जी के जोश के साथ खेला गया उस योग माया के खेल मे ऐसा जोश बढ़ा कि उन्हे दुख सुख का लव लेश मात्र ज्ञान नही रह गया इन बातो को मूल सरूप (धणी) ने देखा (विचार किया) कि ये दोनो (कृष्ण,सखी) मग्न होकर रास खेल रहे है ऐसा जानकर धणी जी ने अपना जोश खीच लिया जिससे अक्षर का चित चौक उठा और विचार करने लगा कि वह कौन सा वन और कौन सी सखी और कौन मै था इस तरह आश्चर्य होने से अक्षर की आत्मा अपने धाम को लौट आई"।

मीमांसक:—कुछ निद्रा और कुछ जागृत अर्थात् स्वप्नावस्था में योग माया का ब्रह्मांड बना इससे जो रास खेला गया वह धणी जी के जोश के साथ खेला गया उक्त वर्णन भागवतादिग्रन्थो मे नही है। अत: ये अप्रामाणित हो जाता है स्वप्नवस्था से योग माया की उत्पत्ति नही हो सकती क्यों कि योग माया भगवान की अचिन्त्य शक्ति है

स्वप्न का अभाव होना प्रत्यक्ष है किन्तु भगवत शक्ति का अभाव नहीं हो सकता। शुकदेव जी ने योग माया के सम्बन्ध में इस प्रकार कहा है। भा० दसम स्कंध अ० २६ श्लोक १ **भगवानपिताः रात्रीः शरदोत्फूल्ल माल्लिका वीक्ष्यरन्तुं मनश्चक्रे योग माया मुपाश्रितः॥१॥** भगवान ने शरद कालीन ऋतु से विकसित हुई मल्लिकाओं से युक्त उस रात्रि को देखकर योग माया का अवलम्बन लेकर रमण करने की इच्छा किया। भागवत् मे यह कहीं नहीं लिखा कि व्रज में पूर्ण निद्रा युक्त काल माया मय ब्रह्मांड का अभाव होकर नवीन स्वप्नावस्था से उत्पन्न योग माया मय ब्रह्मांड मे रास हुआ। उक्त श्लोक मे योग माया का अवलम्बन कर जो भगवान ने रमण करने की इच्छा की वह कुछ निद्रा कुछ जागृत स्वप्नावस्था नहीं है योग माया शब्द से भगवान की अचिन्त्य शक्ति है उसी अनिर्वाच्यशक्ति से तो वे शक्ति मान है जिससे जगत का सर्जन पालन संहार करते हैं। स्वप्नावस्था से योग माया मय ब्रह्मांड बनने पर कृष्ण ने रास क्रीड़ा किया यह मानना सर्वथा असंगत है। क्योंकि प्रत्यक्ष देखा जाता है कि स्वप्नावस्था मे प्राणी को किसी अन्य साधन की अपेक्षा नहीं होती वहाँ तो जन्मान्तर के संस्कार जो अन्त:करण में स्थित है वे ही स्वप्नावस्था के कारण होते हैं। रास खेलते समय स्वप्नावस्था का जो ब्रह्मांड होना कहा गया तो क्या कृष्ण और गोपिकायें स्वप्न रूप थी उन्हे स्वप्न का रूप मानने से जिस प्रकार स्वप्न की सृष्टि मिथ्या होती है उसी तरह कृष्ण गोपिकायें मिथ्या हो जाती है। इस तरह मिथ्या वस्तु के लिये धार्मिक उपदेश देना भी मिथ्या है। वस्तुत: इन्होने स्वप्न से ही सृष्टि की उत्पत्ति माना है। इस विषय का विशेष वर्णन अ० ११ और बारह में आयेगा। व्रज में की हुई कृष्ण लीलाओं को कालमाया मय ब्रह्मांड बताकर उसका अभाव (महाप्रलय) मानते हैं। रास क्रीड़ा के लिये पुन: योग माया मय ब्रह्मांड

उत्पन्न होना बताते है। इन विषयों के प्रमाणीकरण के लिये इन्होने किसी शास्त्र का आधार नही लिया कथन मात्र के लिये भागवत को आधार बताते है किन्तु ऐसी अनुभव शुन्य बातें पुराणों से नहीं पाई जाती।

फिर ३४ चौ० देखिये योग माया के ब्रह्मांड मे रास खेलते समय उन्हे ऐसा जोश बढ़ा कि उन्हें दुख सुख का लवलेश मात्र का ज्ञान नही रहा। आप कृष्ण को पूर्ण ब्रह्म मानते हैं और उन्हीं को खेलते समय किसी प्रकार का ज्ञान नही रहा इस प्रकार का कथन नितान्त अज्ञता पूर्ण है। ईश्वर किसी काल मे ज्ञान हीन नही हो सकता। और क्रीड़ा विलास आनंद के ही लिये किया जाता है जब उसके सुख का अनुभव ही नहीं होगा तो निरर्थक क्रीड़ा ही क्यों की जाय। ३५।३६ चौ० देखिये--कृष्ण गोपिकाओं को रास खेलना देखकर मूल स्वरूप को ईर्षा क्यों हुई मूल स्वरूप का जोश भी तो उसी मे सम्मिलित था उनको ज्ञान करा देता। किन्तु मूल स्वरूप कृष्ण गोपिकाओं को सावधान न कर अपना जोश ही खींच लिया जिससे अक्षर ब्रह्म का चित्त भौचक्के मे पड़ अपने आत्मा के सहित लौट आया। जोश ऐसा कौन सा बलवान तत्व है जिसके चले जाने पर अक्षर की आत्मा अपने धाम को खिंच गई। इस प्रकार के वर्णन मे एक बड़ा दोष उपस्थित हो जाता है वह यहाँ कि अक्षर की आत्मा खिंच (धाम को) चले जाने से कृष्ण शरीर चेतना हीन होना चाहिये। किन्तु भागवतादि ग्रन्थो मे रास क्रीड़ा करते समय कृष्ण को चैतन्य शून्य होना कही नही लिखा है जिससे ३६ मी चौ० अप्रामाणित है यदि चेतन्य हीन नही मानते तो वे कृष्ण किस आत्मा से जीवित रहे। यह आपने कुछ नही लिखा। यदि विष्णु की आत्मा से जीवित रहना कहा जाय तो वह आपके कथनानुसार कुछ काल बाद जब जरासंध ने मथुरा पर आक्रमण किया

तब विष्णु की आत्मा का प्रवेश होना मानते है अत: उक्त कथन से कृष्ण का चेतना शून्य होना पाया जाता है।

स्वामी जी के कथनानुसार ३५।३६ चौ० में कृष्ण का चैतन्य शून्य होना पाया जाता है। अस्तु इस विषय पर पुन: विचार किया जाता है। धणी जी के जोस खींचने पर कृष्ण स्वरुप में स्थित अक्षर ब्रह्म को यह ज्ञान नही रहा कि मैं कौन हूँ कौन सा यह वन है व ये कौन सी सखी है। इससे स्पष्ट होता है कि कृष्ण को चेतना देने वाला जोश ही था किन्तु तत्वज्ञों ने आत्मा को प्रकाशित करने वाला कोई पदार्थ नहीं माना है आत्मा को तो शास्त्रों में सतचित आनंद स्वरूप माना है और अक्षर शब्द शास्त्रो में ब्रह्म शब्द से वाच्य है। यदि इस ब्रह्म तत्व में चेतना (ज्ञान) शक्ति नहीं पाई जाती तो जोश में कौन सी चेतना शक्ति है जो ज्ञान घन अक्षर को भी प्रकाशित कर रहा था यह तो ऐसा ही प्रतीत होता है जैसे कोई सूर्य के सामने दीपक का प्रकाश करे। शास्त्रों में आत्मा को ज्ञान का अधिकरण माना है **(ज्ञानाधिकरण आत्मा स द्विविधः जीवात्मा परमात्मश्चेति तत्रेश्वरः सर्वज्ञः परमात्मा एक एव जीवस्तु प्रति शरीरंभिन्नो विभुर्नित्यश्च)** अर्थ स्पष्ट है अतएव **(नित्यज्ञानाधिकरणत्वम् ईश्वरत्वम्)** इन प्रमाणों से सिद्ध है कि उसका नित्यज्ञान किसी काल में परिच्छिन्न नही होता। ज्ञान का विपर्यय होना चेतना शून्य होना ये जीव के लक्षण है। स्वामी जी ने तो वर्णन ब्रह्म विषय का किया है किन्तु अपने वक्तव्य विषयो पर ध्यान नही दिया यह तो एक साधारण मनुष्य भी समझ सकता है कि ईश्वर किसी काल में भी ज्ञानहीन नही हो सकता। इन्होने अपने को खुदा का रूप घोषित किया है किन्तु इनके धार्मिक उपदेशों के देखने से ज्ञात होता है कि साधारण मानव के समान भी ज्ञान नहीं। जिन्होने इनके धार्मिक

सिद्धान्तों को कभी देखा नही समझा नही केवल कान फुका लिया है ऐसे अंध विश्वासियों ने ही इस संप्रदाय पर विश्वास किया है उक्त वर्णन से स्पष्ट है कि इन्होने भागवत में वर्णित रास लीला और योग माया शब्दो को चुराकर हिन्दु वैष्णव भक्तों को धोखा दिया है।

इति निजानंद मीमांसायां उत्तरार्ध भागे पंचमोऽध्याय: ५।

अभ्यासार्थक प्रश्न—छांट कर लिखिये।

१—पूर्ण निद्रा युक्त स्वप्न से कालमायामय ब्रह्मांड की उत्पत्ति किस प्रकार संभव नहीं।

२—सिद्ध कीजिये कि कृष्ण ने ब्रज में जो लीलायें की वह स्वाप्निक बुद्धि में नहीं की।

३—पूर्व पक्षी की अट्ठाइसमी चौ० के रचना को गलत किस तरह कहा गया।

४—स्वातसी, कुमारिका सखी के शरीर पात के विषय में अपने विचार व्यक्त कीजिये।

५—सिद्ध कीजिये कि योगमाया की उत्पत्ति किसी के स्वप्न से नहीं है।

६—प्रमाणित कीजिये कि रास खेलते समय कृष्ण चेतना शून्य नहीं हुये और न उनकी आत्मा अन्य लोक को गई।

अथ षष्ठोऽध्यायः ६

रासलीला

इस अध्याय में भी रासलीला पर विचार किया जायगा। पूर्व अध्याय में यह वर्णन आ चुका है कि धणी जी के जोस खीच लेने पर अक्षर की आत्मा जागृत अवस्था में आकर वापस अपने धाम को लौट गई। "प्रकास प्र० ३६ **रास आया मिने जागृतबुद्ध, चूभ रही हिरदे में सुध ॥३६॥ कै सुखरास मे खेले रंग, सो हिरदे भये अभंग। या बिध रास भयो अखंड, थिर चर योग माया को ब्रह्मांड ॥३७॥ तब इत भये अन्तर ध्यान, सब सखिया भई मृतक समान। जीवन निकसे बांधी आस, करने धनी जी सो प्रेम विलास ॥३८॥** अर्थ :—स्वप्नावस्था दूर होने पर जब अक्षर की आत्मा जागृत अवस्था में आई तब उन्होंने रास क्रीड़ा को स्मरण किया जिससे वह हृदय में चूभ गई (अतिशय प्रिय होने के कारण) रास खेलने के अनेको आनन्द उनके हृदय में अभंग (अखंड) रूप होकर स्थिर हो गये। इस तरह स्वप्नावस्था में योग माया से उत्पन जो कुछ भी थिर और चर वस्तुयें थी वे सब रास-लीला के सहित अक्षर ब्रह्म के हृदय में अखंड हो गये। अखंड होने पर कृष्ण अन्तर्ध्यान हो गये वियोग से सब सखियाँ मृतक समान हो गई धणी जी से पुनः प्रेम विलास होगा इस आशा से उनके प्राण नहीं निकल रहे थे।"

मीमांसक :—स्वामी जी ने ब्रज रासलीला को अक्षर के हृदय

में अखंड करने के लिये जो कहा वह उपयुक्त नहीं क्योंकि जो अक्षर ब्रह्म अनन्त ज्ञान राशि और आनन्द स्वरूप है व सब कामनाओं से रहित निरीह हैं वह किस कामना में पड़ कर तुम्हारे बताये हुये स्वाप्निक बृजरास को हृदय में स्थिर करे। श्रुति कहती है **(आनन्दं ब्रह्मे तिव्यजानीयात्)** वह ब्रह्म स्वतः आनन्द स्वरूप है वह अपने आनन्द के लिये इतर पदार्थों की अपेक्षा नहीं करता उसे आनन्दित करने वाली कोई वस्तु नहीं है। फिर स्वाप्निक सुख तो स्वतः मिथ्या होता है। लोक में भी स्वाप्निक सुख मिथ्या माना गया है उस सुख से कोई मनुष्य अपने को तृप्त नहीं मानता तो वह अक्षर ब्रह्म स्वप्न के आनंद को सत्य मान कर अपने हृदय में कैसे अखंड कर सकता है। और आप की जो यह कल्पना है कि उसे अक्षरातीत की लीला देखने की इच्छा थी जिससे रासलीला को देख कर अपनी इच्छा की पूर्ति किया यह भी संभव नहीं क्योंकि कामनायें माया बद्ध जीव को होती है। यदि आप उसमें कामनाओं का विकार मानते हैं तो वह ब्रह्म तत्व नहीं है। वर्णन तो ब्रह्म विषय का करते हैं और उस ब्रह्म तत्व में जीव के लक्षण बताते हैं। यदि आप शुद्ध ब्रह्म तत्व का वर्णन करते हैं तो उसमें अपनी बौद्धिक कल्पना क्यों करते हैं वह तुमारे मन वाणी का विषय नहीं है वह स्वतः विषयी है वह किसी का विषय नहीं हो सकता यदि मन बुद्धि इन्द्रियाँ उसे अपना विषय बना लेगी तो वह अल्पमायिक हो जायगा जिससे ब्रह्म की सिद्धि नहीं होती इसी से तो कहा गया है (यो बुद्धेः परतस्तु सः)।

दूसरी प्रकार यह भी है कि आप उस ब्रजरास को अक्षर ब्रह्म तथा सखियों का स्वप्न बता रहे हैं इससे जो वस्तु स्वप्न से उत्पन्न है वह अखंड कैसे हो सकती है अखंड उसे कहते हैं जिसका कभी

भी खंडन हो अर्थात जो वस्तु जिस रूप में निश्चित की गई हो वह वस्तु अपने रूप को कभी भी (भूत, भविष्य, वर्तमान) में भी न त्यागे ज्यों कि त्यों स्थिर बनी रहे वह अखंड है। अखंड शब्द सत शब्द से वाच्य है और स्वप्न असत शब्द से वाच्य है अत: दोनों में महदन्तर है। जो स्वप्न जागृत अवस्था में न था और शुषुप्ति अवस्था में भी न था केवल मध्यावस्था स्वप्न में जिसकी प्रतीति हो रही है वह अखंड कैसे हो सकता है। यह तो प्रत्येक प्राणी को अनुभव है कि जागृत अवस्था में स्वप्न का सर्वथा अभाव देखा जाता है। और परमधाम के बीच जब वे दोनों जागृत अवस्था में थे उस समय व्रज रास को नहीं देख रहे थे इससे जिस वस्तु का पूर्व में अभाव था उसका अन्त में भी अभाव होना स्वाभाविक है केवल मध्यावस्था में प्रतीत होने वाली वस्तु अखंड नहीं हो सकती।

३८ चौ० में स्वामी जी लिखते हैं कि रास खेलते समय कृष्ण अन्तर्धान हो गये जिससे सब सखियाँ मृतक समान हो गई। जब कृष्ण स्वरूप में स्थित अक्षर आत्मा को अपने धाम को वापस लौटने के लिये ३६ चौ० में कहा फिर यहाँ उन्हें अन्तर्धान होने के लिये क्यों कहा अन्तर्धान के समय कृष्ण कलेवर में किसकी आत्मा थी। पहले अक्षर की आत्मा को जो आपने बताया वह तो धणी जी के जोस के साथ अपने धाम को चली गई थी। अत: अन्तर्धान के समय कृष्ण में किसकी आत्मा थी इस विषय में कुछ नहीं लिखा गया। अन्तर्धान होना और चेतन सत्ता का शक्ति से निकल जाना एक नहीं। अन्तर्धान शरीर के सहित छिपना है और चेतन तत्व का शरीर से जाना मृत्यु है। स्वामी जी यहाँ भागवत वर्णित रासलीला से अपना सांप्रदायिक सम्बन्ध जोड़ना चाहते हैं क्योंकि भगवत से ऐसा वर्णन आता है कि रास खेलते समय एक

सखी को एकान्त में ले जाकर उसे भी छोड़ कर अन्तर्धान हो गये थे किन्तु वहां यह वर्णन नहीं मिलता कि धणी जी के जोस के साथ अक्षर की आत्मा कृष्ण कलेवर से धाम को लौट गई थी।

प्रकाश प्र० ३६ **धणी दियो आवेश, फिर आई सुरत। तब सैयों को उपज्यो आनन्द, सब ब्रह्म को कियो निकंद ॥३६॥ आया सरूप कर नया सिनगार, भजनानन्द सुख लियो अपार। दोऊ आतम खेले मिने खाँत, सुख जोस दियो धणी के भाँत ॥४०॥** अर्थ :—अन्तर्ध्यान होने के बाद धणी जी ने फिर अपना आवेश (जोश) अक्षर ब्रह्म को दिया जिससे उनकी सुरत कृष्ण कलेवर में पुनः स्थित हुई अर्थात् प्रगट हो गये) तब सखियों को आनन्द उत्पन्न हुआ और वियोग के सभी दुख दूर हो गये। कृष्ण का सरूप नया सिनगार करके उपस्थित हुआ जिससे सखियों को अपार सुख मिला और दोनो की आत्मा (१—अक्षर ब्रह्म २—धणी जी की) मिल कर रास खेला धणी जी के जोस ने अनेको प्रकार के सुख (अक्षर की आत्मा को व सखियों को) दिया।"

मीमांसक :—जब अक्षर ब्रह्म जागृत बुद्धि में आकर रास के सुख को अपने हृदय में अखण्ड कर लिया तब धणी जी ने अपना आवेश (जोश) अक्षर को देकर कृष्ण कलेवर में क्यों प्रवेश किया क्योंकि रास क्रीड़ा का सुख तो उसके हृदय पर ही अखण्ड रूप से स्थिति हो चुका था। जो वस्तु हमारे पास है और उस उपस्थित वस्तु से जब हम आनन्द का अनुभव कर रहे हैं तो उसे छोड़ कर लोकान्तर में जाने की क्या आवश्यकता है। इससे सिद्ध होता है कि अक्षर ने उस रास को अपने हृदय में अखण्ड नहीं किया। और जो बार-बार

अक्षर ब्रह्म को प्रेरित करने वाला धणी जी का जोश बताते है वह धणी कोई अन्य नहीं है वह धणी आप प्राणनाथ ही हैं आप ही की यह प्रेरणा है जो अपनी मनमाना कल्पना द्वारा परात्पर अक्षर ब्रह्म को भी प्रेरित करना बता रही है। वेदों में उस अक्षर ब्रह्म का कोई प्रेरक नहीं बताया गया है। श्रुति (**न तस्य कश्चित पति रस्ति लोके न चेशिता नैव च तस्य लिङ्गम् सकारणं कारणाधिपाधियो न चास्य कश्चित जनिता न चाधिपः**) उस ईश्वर का कोई स्वामी नहीं न उसका कोई प्रेरक है और न उसका कोई लिङ्ग (चिह्न) है वह सब कारणों का कारण है और सब का अधिपति है उसको कोई उत्पन्न करने वाला नहीं है। इन वेद वचनों से सिद्ध है कि अक्षर को प्रेरित करने वाले धणीं (प्राणनाथ) नहीं हो-सकते। चालीसवीं चौ० देखिये यहाँ धणी और अक्षर इन दोनों की आत्माओं का सखियों के साथ खेलना बताया गया है इससे धणी का भी आना सिद्ध हो जाता है और जोश शब्द का जो प्रत्येक जगह प्रयोग किया गया है वह धणी के आत्मा का बोधक हो जाता है। अस्तु दो आत्माओं का कृष्ण कलेवर में प्रवेश होना सम्भव नहीं क्योंकि अक्षर ब्रह्म ज्ञान धन और अनन्त है उसके चैतन्य धन होने से इतर वस्तुओं का समावेश नहीं हो सकता। जिस तरह लोहे के पिंड में अन्य वस्तुओं का प्रवेश नहीं हो सकता।

पूर्व पक्षी :—लोहे के पिंड को अग्नि द्वारा पिघला कर अन्य लोहा मिलाया जा सकता है।

उत्तर पक्षी :—तुम लोहे में लोहा मिला सकते हो किन्तु वेदों में तो उसे अनन्त कहा है जिसका कोई अन्त ही नहीं है जहाँ भी तुम्हारी मन बुद्धि जाती है वहीं पूर्ण रूपेण उपस्थित है तब उसमें प्रवेश होने का स्थान ही कहाँ है। दूसरा उदाहरण जिस तरह जल से पूर्ण कुम्भ

में दूसरा जल नहीं प्रवेश कर सकता उसी तरह कृष्ण कलेवर में अन्य आत्माओं का समावेश होना असम्भव है। प्रकाश प्र० ३६।

रास खेल के फिरे सब येह, साथ सकल मन अधिक सनेह ॥४१॥ पीछे योग माया को भयो पतन, तब नीद रही अक्षर सैयंन ॥४२॥

रास क्रीड़ा खेल कर सब सखियाँ व्रज को लौट आईं उस समय सबों के मन में कृष्ण के प्रति अधिक स्नेह था रास खेलने के बाद योग माया भी खतम हो जाती है किन्तु योग माया के अभाव में भी अक्षर ब्रह्म और सखियों को निद्रा बनी रहती है।"

मीमांसक :—योग माया के पतन होने पर इन्होंने सृष्टि का प्रलय होना माना है। क्योंकि योग माया से निर्मित जो रास हो रही थी वह रूहों और अक्षर ब्रह्म के स्वप्न से हो रही थी उक्त ४२ चौ० में स्वप्न का अभाव बताया गया है इससे योग माया के ब्रह्मांड का अभाव होना स्वाभाविक है। और स्वप्न का अभाव बतलाने से सम्पूर्ण सृष्टि का अभाव हो जाना चाहिये किन्तु कृष्ण के जन्म से लेकर आज तक प्रलय नहीं हुई यह प्रत्यक्ष है। ये कृष्ण चरित्र का वर्णन तो करते हैं किन्तु उन्हीं के वचनों पर ध्यान नहीं दिया। गीता अ० ८ श्लोक १८।

(अव्यक्ता द्वयक्तयः सर्वाः प्रभवन्त्यहरागमे रात्र्यागमे प्रलयिन्ते तत्रैवाव्यक्त संज्ञके ॥१८॥

अन्वयार्थ :—सर्वाः = सम्पूर्ण व्यक्तयः = दृश्य मात्र भूतगण अहरागमे = ब्रह्मा के दिन के प्रवेश काल में अव्यक्तात् = अव्यक्त से अर्थात् ब्रह्मा के सूक्ष्म शरीर से प्रभवन्ति = उत्पन्न होते हैं रात्यागमे = और ब्रह्मा की रात्रि के प्रवेश काल में तत्र = उस अव्यक्त संज्ञके एव = अव्यक्त नामक ब्रह्मा के सूक्ष्म शरीर में ही प्रलीयन्ते = लय हो जाते

हैं। यहाँ भगवान के वचनों से इनके वाक्यों में यह विरोध दिखाया जा रहा है कि ये स्वप्न से सृष्टि मानते हैं और स्वप्न के अभाव में सृष्टि का प्रलय होना मानते हैं किन्तु भगवान ब्रह्मा के दिन प्रवेश काल में सृष्टि की उत्पत्ति माना है और ब्रह्मा के रात्रि काल में उसका विनास माना है। इससे जिनका इन्होने वर्णन किया है उन्हीं के वचनों से विरोध होने के कारण इनकी बातें मान्य नहीं हो सकती।

स्वामी जी ने यह भी कहा है (**जागे पीछे सब फोक**) अर्थात् रूहों के परम धाम में जागृत होने पर सृष्टि का अभाव हो जायगा। यहाँ यह विचार करने की आवश्यकता है यदि इन्होंने सृष्टि की उत्पत्ति स्वप्न से माना है तो स्वप्न के खतम होने पर ही सृष्टि का अभाव हो जाना चाहिये किन्तु सृष्टि रचना ज्यों की त्यों बनी रहने से यह प्रत्यक्त प्रमाण है कि रूहों के स्वप्न से सृष्टि की रचना नहीं हुई अध्याय ११-१२ में स्वप्न सृष्टि पर विशेष विचार किया गया है वहाँ ही देखा जाय। पूर्वोक्त ४२ चौ० में योग माया के अभाव होने पर जो अक्षर ब्रह्म सखियों को निद्रित रहना बताया गया है इससे निश्चय है कि अभी इनको स्वप्न होना बाकी है। वह आगे अध्याय में बताया जायगा।

इति निजानन्द मीमांसायां उत्तरार्ध भागे षष्ठोऽध्यायः ६

अभ्यास के लिये प्रश्न

१—अक्षर ब्रह्म के हृदय में रास अखण्ड न होने का विवेचन किस प्रकार किया गया है।

२—लेखक का प्राणनाथ को धणी शब्द से सम्बोधित करने का क्या आशय है।

६—यह सिद्ध कीजिये कि अक्षर ब्रह्म को प्रेरणा देने वाला कोई अन्य नहीं हो सकता ।

४—सृष्टि उत्पत्ति के विषय में दोनों विचार धाराओं की आलोचना कीजिये ।

५—योग माया के अभाव में अक्षर ब्रह्म, रूहों को निद्रित रहना क्यों बताया गया ।

—: ० :—

अथ सप्तमोऽध्यायः ७

प्रतिबिम्ब लीला

इस अध्याय में प्रतिबिम्ब लीला पर विचार किया जायगा । "प्रकास प्र० ३६ ।

व्रजरास लीला दोऊ माहे, दुख तामसियों देख्या नाहे ।
प्रेम पियासों न करे अन्तर, तोये दुख देखे क्यों कर ॥४४॥
कछुक हमको रह्यो अंदेस, सो राखे नही धनी लवलेस ।
ताकार नये भये सुपंन, हुये हुकुमे चौदे भवंन ॥४५॥

अर्थ :—वृज और रास इन दोनों लीलाओं के बीच में जो तामस स्वभाव की सखियाँ थी उन्हें दुख का अनुभव नहीं हुआ था क्योंकि अपने प्रियतम से प्रेम करने में जब किसी प्रकार का फर्क ही नहीं पड़ा तो ये संसारी दुख देख ही कैसे सकती हैं दुख का अनुभव होने से हम लोगों के हृदय में यह एक चाहना रह गई थी कि सांसारिक लीला को पुनः देखे उस चाह न को प्रियतम लवलेस मात्र नहीं रखना

चाहते थे इस कारण धणी जी के हुक्म से स्वप्न रूप में चौदह लोकों की पुन: रचना हुई ।"

मीमांसक :—स्वामी जी ने तीन प्रकार की सखी माना है जब कृष्ण ने वृन्दावन में बंशी बजाया उसे सुनकर (सात्वकी) सखी अपने शरीर को त्याग कर कृष्ण में मिल गई इसके प्रमाण रूप चौपाइयों को उत्तरार्ध भाग अध्याय ५ में २८।२६ चौ० में देखिये स्वातसी सखियों की कृष्ण में मिलने से मुक्ति हो गई और रास भी नहीं खेला इन्हें संसारी दुखों का भी अनुभव हो चुका था जिससे इन्हें पुन: दुखमय संसार को देखने की इच्छा नहीं हुई केवल उक्त ४४ चौ० के अनुसार तामसी सखियों को दुख का अनुभव करने की कामना रह गई थी इससे उनके लिये चौदह लोकों की रचना की गई । और राजसी सखियों के सम्बन्ध में कुछ नहीं लिखा न तो उन्हें कृष्ण कलेवर में ही मिलने के लिये कहा और न उन्हें पुन: जन्म लेने को ही बताते अत: ये राजसी सखी कहाँ गई क्या ये जागृत हो उठी अथवा अक्षर के हृदय में अखंड रूप से स्थित हो गई । यदि अखंड माना जाय तो तामसी सखी भी रास खेल रही थी वे अखंड क्यों नहीं हुई तामसीं सखियों के ही लिये केवल क्यों आना बताया जाता है । यदि राजसी सखियों को जागृत माना जाय तो स्वप्न के अभाव में सृष्टि का भी अभाव होना चाहिये । अत: इनके वक्तव्य विषयों का कोई संदर्भ न बैठने से सब बातें कल्पित हो जाती है । पुनश्च श्री मद् भागवत के रास पंचाध्यायी प्रकरण में इस प्रकार का कोई भी संकेत नहीं है कि सात्विकी सखियाँ जिन्हें ये भूल से स्वातसी कहते हैं वे श्री कृष्ण भगवान में लय हो गई थी तथा ऐसा भी कोई भेद नहीं किया गया है कि केवल तामसी गोपिकाओं के साथ ही भगवान ने रास लीला किया हो। त्रिगुणानुसार त्रिविध गोपिकाओं की कोई चर्चा रास लीला के प्रसंग में नहीं है इससे स्पष्ट है कि इनकी सारी बातें निर्मूल और मनगढ़न्त है ।

तामसी सखियों के सम्बन्ध में जो कहा गया कि इन्होंने प्रियतम से प्रेम करने में किसी प्रकार का फर्क नहीं किया तो मानों स्वातसी सखियों ने प्रियतम से प्रेम करने में फर्क डाला होगा इसी से उन्हें संसारी दुखों का अनुभव हुआ। दुखों का अनुभव कर लेने से पुनः संसार देखने की इच्छा नहीं रही वे मुक्त मान ली गई। और जिन तामसी सखियों ने किसी प्रकार के प्रेम करने में कमी नहीं की थी उन्हें उस उत्तम कर्तव्य का फल विपरीत मिला कि प्रियतम ने उन्हें दुखमय संसार देखने की प्रेरणा करा दी जिससे उन्हें पुनः जन्म लेकर जन्म मृत्यु रूप दुखों का पुनः पुनः अनुभव करना पड़ रहा है। मैं पूछता हूँ कि क्या भगवान से मिलने के बाद भी उन्हें दुख ही हाथ लगा। और इस तीसरे ब्रह्मांड की अवधि भी निश्चित नहीं है अतः इनके साथ प्रियतम ने न्याय का बर्ताव नहीं किया बल्कि तामसी सखियों के साथ पक्षपातपूर्ण अन्याय किया गया। यह दंड तो स्वातसी सखियों को मिलना चाहिये था क्योंकि उन लोगों ने प्रियतम से प्रेम करने में कमी की थी जिससे दुखमय संसार का अनुभव कर लेने से वे मुक्त मान ली गई। अतः स्वामी जी का सिद्धान्त हुआ कि सांसारिक दुखों का अनुभव करने से मुक्ति हो सकती है ईश्वर से प्रेम करने पर जन्म मृत्यु का चक्कर नहीं छूट सकता। दूसरा स्वामी जी ने यह भी कहा है राजसी तामसी सखियों ने जो रास खेला उसे अक्षर ने अपने हृदय में अखंड कर लिया तो तामसी सखियों के अखंड होने पर वे पुनः इस लोक में कैसे आ गई इस कथन से अक्षर के हृदय में रास अखंड होना नहीं पाया जाता। यदि कहो कि अक्षर ब्रह्म के स्मरण मात्र से उनकी अखंडता है तो क्या गोलोक वासी कृष्ण सखियां स्मरण मात्र के लिये है उनकी गोलोक धाम में कोई वास्तविकता नहीं है। इस तरह मानने पर आगे आने वाली चौ० में जो प्रतिबिम्बवाद का वर्णन किया है वह किसी तरह नहीं सिद्ध हो पायेगा। "प्रकास प्र० ३६

कालमाया को ये जो इंड, उपज्यो और जानो सोई ब्रह्मांड । ये तीसरा इंड नया भया जो अब, अक्षर की सुरत का सब ॥४६॥ या हाँ सुरत की सखियां भई, प्रतिबिम्बवेद रुचा जो कही । जाको कह्यो ऊधव ज्ञान योगारंभ, सो क्यों माने प्रेम लीला प्रतिबिम्ब ॥४७॥ जो ऊधव ने दई सिखापन, सो मुख पर मारे फेर वचंन । याही ब्रह्म में छोड़ी देह, सो पोहोची जहाँ सरूप सनेह ॥४८॥ अक्षर हिरदे रास अखंड कह्यो, ये प्रतिबिम्ब साथ तहाँ पोहच्यो । ये प्रतिबिम्ब लीला भई जो इत, सो कारण ब्रह्म सृष्टि के सत ॥४९॥ जो प्रगट लीला न होवे दोय, तो असल नकल सुध क्यों होय । ताकारन ये भई नकल, सुध करने संसार सकल ॥५०॥

काल माया का जो यह ब्रह्मांड उत्पन्न हुआ है इसे अन्य ही ब्रह्मांड उत्पन्न हुआ जानो ये जो अब तीसरा नया ब्रह्मांड उत्पन्न हुआ है यह सब अक्षर की सुरत से उत्पन्न हुआ है और इसी अक्षर की सुरत से प्रतिबिम्ब रूप सखियाँ उत्पन्न हुई जिन्हें वेद ऋचाये भी कहते हैं (अक्षर के चित्त में जो रास अखंड हुआ है उसका प्रतिबिम्ब रूप सखियाँ जो ब्रज में थी उन्हीं को स्वामी जी ने वेद ऋचाये कहा है) जिन्हें उद्धव जी ने ज्ञान योग का उपदेश दिया वे प्रतिबिम्ब रूप सखियाँ प्रेम लीला को छोड़ कर ज्ञान योग की शिक्षा कैसे माने जो उद्धव ने शिक्षा दी थी उसका उन्होंने मुख तोड़ जवाब दिया था। कृष्ण के वियोग में इन्होंने अपने शरीर को छोड़ दिया और जिस सरूप से प्रेम था वहाँ पहुंच गई। अर्थात् अक्षर के हृदय में जो रास अखंड कहा गया है वहीं पर ये प्रतिबिम्ब रूप ब्रज की सखियाँ

पहुंची। यह अक्षर के हृदय की व्रज में जो प्रतिबिम्ब लीला हुई है वह सत्य में ब्रह्म सृष्टियों के कारण ही हुई है यदि दोनों लीलायें प्रगट न की जातीं तो असल नकल का ज्ञान कैसे हो सकता है इसी कारण यह नकल रचना की गई है जिससे सब संसार को ज्ञान हो जाय ५० ।"

मीमांसक :—स्वामी जी ने जो यह कहा कि काल माया का जो नया ब्रह्मांड हुआ है यह अक्षर की सुरत से उत्पन्न है ऐसा मानने से पैतालिसमी चौ० से विरोध पाया जाता है क्योंकि वहाँ स्वप्न से सृष्टि बताया है और यहाँ छयालीसमी चौ० में काल माया ब्रह्मांड की उत्पत्ति अक्षर के सुरत से बताया क्या सुरत और स्वप्न एक है सुरत शब्द का अर्थ लोक में मानसिक चेष्टा के लिये प्रयोग करते देखा गया है। एक न होने से आपके चौ० की रचना गलत है। इसी तरह आगे देखिये। इसी अक्षर के सुरत (मानसिक संकल्प से) प्रतिबिम्ब रूप सखियाँ उत्पन्न हुई जिन्हें वेदऋचा कहा गया है। यहाँ स्वामी जी ने अक्षर के मानसिक संकल्प से और प्रतिबिम्ब रूप इन दोनों से सखियों का व्रज में उत्पन्न होना बताया इस कथन से भी परस्पर वाक्यों में विरोध है क्योंकि प्रतिबिम्ब और सुरत एक नहीं यदि व्रज की सखियों को प्रतिबिम्ब मानते हो तो उसे अक्षर की सुरत से उत्पन्न होना क्यों कहते हो प्रतिबिम्ब किसी के द्वारा उत्पन्न नहीं किया जाता ये तो बहुत मोटी बातें हैं इन विषयों को तो सभी समझते हैं। इन्हीं चौ० के आधार को लेकर आनन्द सागर में में बताया गया है कि जिस रास क्रीड़ा को चिन्तन कर अक्षर ने हृदय में अखण्ड किया है उसे ही नित्य गो लोक धाम भी कहते हैं इस धाम में रमण करते हुये कृष्ण को देख कर श्रुतियों ने कृष्ण से प्रार्थना की कि हम लोग भी आपके साथ रमण करना चाहती हैं। कृष्ण ने कहा आप लोग मृत्यु लोक में जन्म ले वहाँ आपकी इच्छा

पूर्ति होगी। यहाँ भी यह संदेह है कि गोलोक को नित्य कैसे कहा जा सकता है वल्लभ सम्प्रदाय वाले भले ही गोलोक को नित्य कहें किन्तु स्वामीजी के सिद्धान्तानुकूल यदि आनंद सागर में वर्णन है तो गोलोक धाम की नित्यता नहीं सिद्ध होती क्योंकि मृत्यु लोक वाली रास क्रीड़ा को अखंड करने के लिये जो बताया गया है उसी को नित्य गोलोक धाम भी बताया जाता है जिस समय कृष्ण का अवतार नहीं हुआ था उस समय वह गोलोक नहीं था इससे पूर्व में अभाव होने के कारण आपके कथनानुसार गोलोक की नित्यता नहीं सिद्ध होती। फिर जब गोलोक वासी कृष्ण से श्रुतियों ने रमण करने की इच्छा की तो कृष्ण वहीं रमण करा देते। यहाँ आने की क्या आवश्यकता है। अक्षर ब्रह्म के स्मरण मात्र से रास की अखण्डता मानने पर श्रुतियों ने कृष्ण से प्रार्थना कैसे कर लिया क्योंकि स्मरण की हुई वस्तु का कोई आकार नहीं होता। आकार न होने से प्रतिबिम्ब नहीं पड़ सकता इन हेतुओं से सिद्ध हो जाता है व्रज की कृष्ण सखियाँ किसी का प्रतिबिम्ब नहीं है और आकार न होने से श्रुतियों का प्रार्थना करना भी बनावटी बातें सिद्ध हो जाती है।

भागवत में जो यह वर्णन आया है कि भगवान अन्तर्धान होने के बाद जब प्रगट हो जाते हैं तब उसी रात्रि में पुनः रास होता है। उसी के आधार से इन लोगों का कथन है कि अन्तर्धान के पूर्व जो रास हुई वह योग मायामय ब्रह्मांड में अक्षर की आत्मा धणी जी के जोश के साथ हुई थी अब काल मायामय ईंड[1] में प्रतिबिम्ब रूप कृष्ण सखियों का पुनः रास होने लगा किन्तु इन बातों को कोई जान न सका। योग माया के ब्रह्मांड के समान ही कालमाया ब्रह्मांड होकर उसी प्रकार गोप गोपी नन्द यशोदा वृन्दावन तैयार हो गया और यह भी नहीं जाना कि इसके पूर्व रास हुआ था या नहीं।

---

१ ईंड अर्थात् ब्रह्मांड।

मीमांसक :—इस प्रतिबिम्बवाद का वर्णन भागवतादि ग्रन्थों में न होने से अप्रमाणित सिद्ध होता है। इसी तरह युक्ति से भी अप्रमाणित किया जा रहा है। प्रतिबिम्ब जड़ होता है उसे क्रीड़ा के आनन्द का अनुभव नहीं हो सकता और न उसमें स्वत: कोई क्रियाशीलता ही उत्पन्न हो सकती। यह तो एक प्रतिच्छाया रूप है उसका कोई छेदन भेदन करे तो उसमें कोई असर नहीं पड़ता। किन्तु भगवान कृष्ण बोलते थे हँसते थे क्रीड़ा करते थे दुष्टों का दमन करते थे अर्जुनादि को निमित्त बनाकर वैदिक धर्म का उपदेश देते थे। इससे वे चैतन्य रूप थे प्रतिबिम्ब जड़ रूप न थे। जो उद्धव जी ने सखियों को ज्ञान योग का उपदेश दिया तो क्या उद्धव जी मूर्ख थे जो प्रतिबिम्ब जड़ को ज्ञान योग की शिक्षा देते। प्रतिबिम्ब कभी सुन समझ नहीं सकता। उन सखियों ने तो उद्धव को जवाब दिया है। इन युक्तियों से भी सिद्ध हो जाता है कि इह लोक में जो भगवान ने रास क्रीड़ा की है वह अक्षर के हृदय (गोलोक) का प्रतिबिम्ब नहीं है। और जो यह कहा गया कि योग माया के ब्रह्मांड के समान ही यह काल मायामय ब्रह्मांड रचा गया उसी तरह गोप गोपी आदि तैयार हो गये, किसी ने जाना नहीं। यह भी सम्भव नहीं जब प्रलय मानते हो तो विपरीतता अवश्य होनी चाहिये। और जब प्रलय होना भागवतादि के रचयिता आदि किसी ने नहीं जाना तो आप कैसे जान गये कि प्रलय हो चुकी थी। इन बातों का आपके पास क्या उत्तर है।

इस समय कलि संवत ५०७२ चल रहा है श्री कृष्ण भगवान कुल १२५ वर्ष संसार में रहे श्री कृष्ण के महा प्रयाण के दूसरे दिन से कलि संवत चला। प्राणनाथ का जन्म विक्रम संवत १६७५ में हुआ इस समय वि० संवत् २०२६ चल रहा है २०२६—१६७५ = ३५४ वर्ष अर्थात् अब से ३५४ वर्ष पहले प्राणनाथ का जन्म हुआ और श्री कृष्ण भगवान को पृथ्वी से गये ५ हजार वर्ष से अधिक हो गये।

इसलिये ये कहना कि प्राणनाथ ने भगवान श्री कृष्ण में अपने जोश या आवेश का संचार करके रास लीला रचाया यह सर्वथा झूठ कपोल कल्पित और अपढ़ लोगों को बहकाने के लिये है। इन्होंने अपने को श्री कृष्ण से भी बड़ा सिद्ध करने के लिये इस प्रकार की मनगढ़न्त कल्पित बातें लिखा है जनता को इनकी झूठी बातों से सतर्क हो जाना चाहिये श्री कृष्ण के अवतार के समय जब इनका शरीर ही नहीं था तब कैसे इन्होंने श्री कृष्ण में अपने जोश या तेज का संचार किया और कैसे इन्होंने व्रज की रास लीला देखा।

"इन्होंने इस विषय को वैराट पट के नक्शे से यह भी बताया है कि अक्षर ब्रह्म के केवल स्वभाव में नित्य गोलोक की स्थिति है जहाँ कृष्ण सखियों का नित्य रास होता है १। इसी तरह अक्षर ब्रह्म का सवल स्वभाव है इस सबल स्वभाव में केवल स्वभाव वाले रास क्रीड़ा का प्रतिबिम्ब पड़ता है जिससे यहाँ भी नित्य रास होता है २। इसी तरह अक्षर ब्रह्म का तृतीय स्वभाव अव्याकृत है इसमें भी सबल स्वभाव वाले रास क्रीड़ा का प्रतिबिम्ब पड़ता है जिससे यहाँ भी गो लोक धाम की नित्य रास क्रीड़ा होती है ३। इसी तरह अव्याकृत स्वभाव वाले का प्रतिबिम्ब मृत्यु लोक व्रज में पड़ा जिससे यहाँ भी रास क्रीड़ा हुई ४। ऐसा इनका कथन है।"

मीमांसक :—केवल स्वभाव में स्थित गोलोक धाम को नित्य मानने पर स्वामी जी की कही हुई छठवें अध्याय में सैंतीसवीं चौ० से विरोध होता है। वहाँ कहा गया है कि धणी जी के जोश के साथ जब अक्षर ब्रह्म की आत्मा अपने धाम को लौट गई तब अक्षर ब्रह्म जागृत बुद्धि में आकर रास क्रीड़ा को स्मरण कर अपने हृदय में अखण्ड कर लिया। यदि स्वप्नावस्था के पूर्व जागृत अवस्था में उसके हृदय में रास अखण्ड होता तो स्वप्न के रास क्रीड़ा को अखंड ही क्यों करता इससे सिद्ध है कि केवल स्वभाव में नित्य गो लोक

की स्थिति नहीं है। यदि हठात् नित्य ही कहते हो तो ३७ चौ० की रचना गलत है मृत्यु लोक वाली रास क्रीड़ा को अक्षर ने अखण्ड नहीं किया। केवल स्वभाव में नित्य गोलोक की स्थिति होने से अक्षर की आत्मा धणी जी के जोश के साथ इस रास क्रीड़ा को देखने क्यों आई थीं क्योंकि वहाँ अक्षर के हृदय में ही केवल स्वभाव में नित्य रास होता रहता है जो वस्तु हमारे पास नित्य रूप से स्थित है उसी वस्तु को खोजने के लिये लोकान्तर में जाने की क्या आवश्यकता है फिर स्वामी जी ने उसे असल कहा है और इस रासलीला को नकल भी बताया है तो क्या अक्षर ब्रह्म धणी जी के जोश की संगति पाकर इतना ज्ञान शून्य हो गये कि उन्हें असल नकल का भी ज्ञान नहीं रह गया। फिर केवल स्वभाव में नित्य रास होना मानने से और व्रज में उसका चौथा नम्बर का प्रतिबिम्ब बताने से यहाँ व्रज में भी नित्य रास क्रीड़ा का प्रतिबिम्ब पड़ना चाहिये किन्तु अब इसका प्रत्यक्ष न होने से केवल स्वभाव में नित्य गोलोक की कल्पना तथा उसके प्रतिबिम्ब रूप गोपी कृष्ण की कल्पना सब मिथ्या हो जाती है। और जो क्रमशः इन्होंने प्रतिबिम्ब का प्रतिबिम्ब बताया यह भी युक्ति सम्भव नहीं, क्योंकि लोक में ऐसा कोई उदाहरण नहीं पाया जाता कि प्रतिबिम्ब का प्रतिबिम्ब दूसरे स्थान में पड़े अधिष्ठान रूप वस्तु तत्व का एक ही बार प्रतिबिम्ब पड़ता है क्योंकि वह एक प्रतिच्छाया है। अस्तु अनुभवादि प्रमाणों से शून्य होने के कारण और भागवतादि ग्रन्थों में भी इस प्रतिबिम्बवाद का वर्णन न होने से सबों के लिये अमान्य हो जाता है।

"पूर्व वर्णित ४८ चौ० के अनुसार स्वामी जी का कथन है कि जब कृष्ण रास क्रीड़ा आदि खतम कर मथुरा चले गये इसी कृष्ण के वियोग के कारण प्रतिबिम्ब रूप सखियों ने शरीर छोड़ दिया और जिस सरूप से इनका प्रेम था उस स्थान पर पहुंची। याने अक्षर

ब्रह्म के हृदय में जो रास अखण्ड हुआ वहाँ प्रतिबिम्ब रूप सखियाँ पहुंची।"

मीमांसक :—जब कि अक्षर ब्रह्म के हृदय में अखण्ड रूप से रास क्रीड़ा होती रहती है और उसका यह प्रतिबिम्ब है तो कृष्ण के मथुरा जाने पर रास लीला क्यों बन्द हो गई और वेद ऋचा रूप सखियों ने तो नित्य गोलोक में यही वरदान मांगा था कि जैसे ये लोग आपके साथ रमण करती हैं उसी तरह हम भी रमण करना चाहती हूँ कृष्ण ने मृत्यु लोक का वादा किया था वादा के अनुसार वेद ऋचाओं ने रास खेला। मथुरा जाने पर उन्होंने शरीर क्यों त्याग दिया यदि वियोग सह्य न था तो वे मथुरा चली जाती वियोग दूर हो जाता। शरीर छोड़ने से व्रज गोपियों से सून्य हो जाता है आपकी जितनी भी सखी आई उन सब का शरीर छोड़ना लिखते हैं भागवत में तो यह कहीं नहीं लिखा है कि गोपियों ने शरीर त्याग दिया। इनका जो यह कहना कि कृष्ण के मथुरा चले जाने के बाद गोपियों ने प्राण छोड़ दिया यह बात सर्वथा गलत है क्योंकि श्रीकृष्ण का सन्देश लेकर उद्धव जी द्वारिका से वृन्दावन गये थे और गोपिकाओं के साथ उनकी अनेक चर्चायें भी हुई थीं। श्री कृष्ण वृन्दावन से मथुरा और मथुरा से द्वारिका पुरी गये थे इसलिये ऐतिहासिक दृष्टिकोण से भी प्राणनाथ की सारी बातें झूठी सिद्ध होती हैं। यहाँ प्रतिविम्ब रूप सखियों के शरीर त्यागने में कुछ रहस्य छिपा हुआ है—वह यह कि मथुरा जाने पर कृष्ण विष्णु रूप हो गये उनका प्रेम गोलोक वासी से था इसी से उन्होंने शरीर त्याग दिया फिर प्रतिबिम्ब का कोई अपना आकार नहीं होता वह पर मुखापेक्षी है बिम्ब के नष्ट होने पर ही प्रतिबिम्ब नष्ट हो जाता है। इस कथन से गोलोक की सखियों का भी नष्ट होना सिद्ध हो जाता है। अस्तु ऐसी अनु-

भव शून्य बातों का कोई प्रमाण न होने से इनकी सभी बातें मिथ्या पाई जाती हैं।

पूर्वोक्त ४६।४७ चौ० में एक दोष और दृष्टिगत होता है वह यह कि वेद ऋचाओं को अक्षर की सुरत से उत्पन्न होना बताया गया है और उसी चौ० में प्रतिबिम्ब भी कहा गया है। इस तरह इन दो प्रकार के वर्णनों में कौन सी बात मानी जाय दोनों का मानना युक्ति सम्भव नहीं। यदि वेद ऋचाओं का उत्पन्न होना मानते हो तो उनको गोलोक धाम का प्रतिबिम्ब क्यों बताते हो। आपके मतानुकूल गो लोक धाम भी तो उसी को कहा गया है जिसे अक्षर ने अपने हृदय में अखण्ड किया है। इसका प्रतिबिम्ब बताने से यहाँ राजसी, तामसी, सखियों के प्रतिबिम्ब का रास खेलना हो जाता है। वेद ऋचाओं का रास खेलना नहीं सिद्ध होता। कल्पित रचनाओं में भी विषयों के वर्णन में एक वाक्यता होना आवश्यक है इस काल माया मय रास में दो प्रकार के वर्णनों से दोनों बातें असत्य प्रतीत होती है।

"प्रकास:—प्र० ३६। **सारे अरथ तब होवे सत, जब प्रगट लीला दोउ होवे इत। याही ईंड में श्री कृष्ण जी भये, सो अग्यारे दिन व्रज मथुरा में रहे ॥५१॥ दिन अग्यारे ग्वालो भेष, तिन पर नहीं धनी को आवेस। सात दिन गोकुल में रहे, चार दिन मथुरा के कहे ॥५२॥ गजमल्ल को कारज कियो, उग्रसेन को टीका दियो। काला गृह दरशन दियो जिन, आय छोड़ायो बंधते तिन ॥५३॥ वसुदेव देवकी के लोहे भान, उतार्यो भेष कियो अस्नान। जब राज वागे को कियो सिनगार, तब बल पराक्रम न रह्यो लगार ॥५४॥ आये जरा संध मथुरा घेरी सही, तब कृष्ण को अति चिन्ता**

भई। यूँ याद आया करते विचार, तब कृष्ण विष्णु भये निरधार ॥५५॥ तब वैकुण्ठ में विष्णू न कहे, इत सोले कला संपूरन भये। या दिन थे भयो अवतार, ये प्रगट वचन देखो विचार ॥५६॥ शिशुपाल की जोत वैकुंठे गई, समाई श्रीकृष्ण में तित न रही। आयुध मगाय अपने लिये, के विधजुध असुरन से किये ॥५७॥

स्वामी जी कहते हैं कि कुरान पुरान के सभी अर्थ तब सत्य हो सकते हैं जब दोनों लीला (एक तो धणी जी के जोश वाली असली लीला दूसरी गोलोक वासी कृष्ण की नकल प्रतिबिम्ब लीला) इस संसार में प्रगट होवे। इसी काल मायामय ईंड में गोलोक वासी कृष्ण प्रतिबिम्ब रूप से हुये हैं जो ग्यारह दिन तक व्रज मथुरा में निवास किये हैं। अब कृष्ण के स्वरूप में भेद करते हुये निषेध मुख से कहते हैं कि ग्यारह दिन तक कृष्ण जो ग्वाल भेष पर रहे उस पर धणी जी का आवेश नहीं था वह तो गोलोक वासी कृष्ण का प्रतिबिम्ब है (अब विवरण करके बताते हैं) सात दिवस पर्यन्त गोकुल में रहे (वहाँ सात दिनों तक प्रतिबिम्ब रूप वेद ऋचाओं के साथ रास खेला) और चार दिन मथुरा में रह कर गजमल्ल युद्ध करके कंस को मारा और उग्रशेन को राजतिलक दिया वसुदेव देवकी को कारावास में दरशन देकर लौह बंधन से मुक्त किया तदन्तर अपने गोप भेष को उतार कर स्नान किया जब राज (कृष्ण) ने वस्त्रादि से अपना शृङ्गार किया उस समय उनमें किसी प्रकार का बल पराक्रम न था (क्योंकि गोलोक का वह प्रतिबिम्ब भी केवल ग्यारह दिन रह कर अपने गोलोक धाम चला गया) जिस समय जरासंध ने मथुरा पर घेरा डाला उस समय कृष्ण को अत्यन्त चिन्ता हो गई विचार करने पर जब उन्हें स्मरण हुआ तब उसी समय वे कृष्ण विष्णु रूप

हो गये। उस समय वैकुण्ठ विष्णु से खाली हो गया यहाँ से सोलह कला कृष्ण की संपूर्ण हो जाती हैं। जिस दिन से इनका अवतार हुआ है उस दिन से लेकर हमारे उक्त प्रगट वचनों को विचार कर देखो। शिशुपाल के मारे जाने पर उसकी ज्योति वैकुंठ गई किन्तु वहाँ विष्णु को उपस्थित न पाकर कृष्ण में आकर प्रवेश कर गई। और, कृष्ण ने वैकुण्ठ से सब आयुधों को मगाकर असुरों से युद्ध किया। ५७।"

मीमांसक :—स्वामी जी ने जो यह कहा कि सब शास्त्रों के अर्थ सभी सत्य हो सकते हैं जब यहाँ दोनों लीला प्रगट होवे। इन दोनों लीलाओं के प्रगट होने पर भी आपके कथनानुसार शास्त्रों के कोई अर्थ सत्य नहीं होते क्योंकि शास्त्रों में निम्न अर्थों (विषयों) का वर्णन कहीं नहीं है। १—धणी जी के जोस सहित अक्षर का आना। २—गो लोक से प्रतिबिम्ब रूप ब्रज में आना। ३—कृष्ण का महंमद रूप हो अरब देश जाना। ४—लाहूत से खुदा का अवतार बन कर प्राणनाथ रूप से जागनी लीला करना। इन विषयों का भागवत में कहीं भी वर्णन न होने से आपके कोई अर्थ सत्य नहीं होते। इसी अध्याय में ही नहीं पिछले अध्याओं में भी जहाँ आपके मूल भूत सिद्धान्तों का उल्लेख हुआ है वहाँ भी सब कल्पित रचना प्रमाणित हुई है। अस्तु कृष्ण के पार्थिव शरीर में इन्होंने उक्त चौ० में एक भेद और दिखाया है। वह यह कि जब गोलोक वासी का प्रतिबिम्ब सात दिन गोकुल में और चार दिन मथुरा में रह कर अपने धाम को चला जाता है तब कृष्ण विष्णु रूप हो जाते हैं। इस तरह कृष्ण के तीन भेद हुये। १—धणी जी के जोश वाला। २—प्रतिबिम्ब वाला। ३—विष्णु रूप वाला। किन्तु कृष्ण में भेद दिखाने के लिये इनके पास कोई प्रमाण नहीं है। इन्होंने रास खेलते समय धणी (महम्मद) को ही रास खेलना माना है। जिसका प्रमाण निम्न है खुलासा प्र० १३।

श्री कृष्ण जी ए व्रज रास में, पूरे व्रह्म सृष्टि मन काम। सोई सरूप ल्याया फुरमान, तब रसूल कहलाया श्याम ॥७५॥

अर्थ :—श्री कृष्ण जी व्रज रास में ब्रह्म सृष्टियों के मनोरथों को रास क्रीड़ा द्वारा पूर्ण किया फिर वही कृष्ण का स्वरूप अरब देश में जन्म लेकर कुरान को ले आया कुरान के ले आने पर वे ही कृष्ण महम्मद कहे गये। प्राणनाथ ने रास खेलना विष्णु को नहीं माना है। भागवत दशम स्कन्द अध्याय ३३ श्लोक ४० में विष्णु को ही रास खेलना कहा गया है।

(विक्रीडितं व्रज वधू भिरिदं च विष्णोः श्रद्धान्वितोऽनु-शृणुयादथवर्णयेद्यः भक्तिं परां भगवति प्रतिलभ्य कामं हृद्रोगमाश्चपहिनोत्यचिरेणधीरः ॥४०॥

अर्थ :—व्रज वधुओं के साथ भगवान विष्णु के इस रास क्रीड़ा को जो धैर्यवान मनुष्य श्रद्धा के साथ सुनता है अथवा वर्णन करता है वह शीघ्र ही काम विकारों और हृदय के रोगों से मुक्त होकर परा भक्ति को प्राप्त करता है। इस तरह भागवत में किसी जगह कृष्ण स्वरूप में भेद नहीं बताया गया है वल्लभाचार्य जी कृष्ण के अनन्य उपासक माने गये हैं उनकी सम्प्रदाय में भी कृष्ण में भेद नहीं माना गया केवल यह कथन स्वामी जी का ही है। अन्य किसी का नहीं। अस्तु इनके वाक्य आप्त वाक्य न होने से प्रमाणित नहीं माने जा सकते। (**वाक्यंद्विविधं—लौकिकं वैदिकं च वैदिक मीश्वरोक्तत्वात्सर्वमेव प्रमाणम् लौकिकं त्वाप्तोक्तं प्रमाणं अन्यद प्रमाणम्**) वाक्य दो प्रकार के होते हैं लौकिक और वैदिक। वैदिक वाक्य ईश्वर का कहा हुआ होने से वे सब प्रकार से प्रमाणित है

और लौकिक वाक्य आप्त पुरुषों के प्रमाणित माने जाते हैं अन्य सभी अप्रमाणित माने गये हैं। अतः व्यास को आप्त माना गया है इससे उनके वाक्य प्रमाणित हैं और स्वामी जी ने जो कुछ भी वर्णन किया है वह सब मिथ्या कल्पित है। इससे इनके वाक्य प्रमाणित नहीं माने जा सकते। (**आप्तस्तु यथार्थ वक्ता**)।

उक्त मूल चौ० को देखिये वहाँ इन्होंने यह कहा कि जब कृष्ण ने वसुदेव देवकी को लौह बन्धन से मुक्त किया और अपने गोप भेष को उतार कर स्नान किया स्नान के बाद जब राज ने वागे वस्त्र से अपना श्रृङ्गार किया उस समय वे बल पराक्रम से हीन थे। उक्त कथन में इन्होंने चौ० में राज शब्द का प्रयोग गलत किया है क्योंकि इनके मत के अनुसार जब वे गोप भेष उतार कर स्नान कर लेते हैं तब वे विष्णु के रूप हो जाते हैं अब राज महम्मद धणी कहाँ है। अतः यह इनकी रचना की भूल है। और विष्णु के लिये शास्त्रों में कहीं भी राज शब्द का प्रयोग नहीं हुआ है राज शब्द शास्त्र दृष्टि से ईश्वर बोधक नहीं है। और जो कृष्ण को बल पराक्रम से हीन होना बताया गया यह भी मिथ्या भाषण है वे कभी शक्ति हीन नहीं हुये इसी तरह कृष्ण के विष्णु रूप होने पर जो यह कहा गया कि वैकुण्ठ विष्णु से खाली हो गया यह भी मिथ्या है इन बातों का भी भागवतादि ग्रन्थों में प्रमाण नहीं है।

इति निजानन्द मीमांसायां उत्तरार्ध भागे प्रतिबिम्बवाद वर्णनं
नाम सप्तमोऽध्यायः ७

अभ्यासार्थक प्रश्न पुस्तक से छाँट कर लिखिये

१—तामसी सखियों के साथ प्रियतम ने अन्याय किया यह क्यों कहा गया।

२—स्वामी जी के कथनानुसार गोलोक धाम की नित्यता क्यों नहीं सिद्ध होती ।

३—यह सिद्ध कीजिये कि व्रज वधुयें किसी का प्रतिबिम्ब नहीं है ।

४—प्रतिबिम्ब का प्रतिबिम्ब पड़ता है इस विषय में अपने विचार व्यक्त कीजिये ।

५—पूर्व पक्षी ने प्रतिबिम्ब रूप सखियों को शरीर छोड़ना कहा क्या यह युक्ति सम्भव है ।

६—वेद ऋचाओं का रास खेलना क्यों नहीं सिद्ध होता ।

७—स्वामी जी ने कृष्ण में किस-किस प्रकार के भेद माने हैं ।

८—कृष्ण के सम्बन्ध में ग्रन्थकार का आशय स्पष्ट कीजिये ।

नोट :—अगले अध्यायों के समझने के लिये पिछले अध्यायों का विषय स्मरण रखना आवश्यक है ।

— :o: —

अथाष्टमोऽध्यायः ८

जागनी लीला

"प्रकाश प्र० ३९ मथुरा द्वारिका लीला कर, जाय पोहोंचे विष्णु वैकुन्ठ घर । अब मूल सखियां धाम की जेह, तिनफेर आयधरी इतदेह ॥५८॥ उमेदा तामसिया रही तिनवेर, सो देखन को हम आइयाँ इतफेर । इन ब्रह्मांड को येह कारन, सुनियो आतम के श्रवंन ॥५९॥

अर्थ :--जब विष्णु मथुरा द्वारिका की लीला कर वैकुन्ठ धाम चले गये उस समय धाम की जो मूल सखियां थी उन्होंने फिर से आकर शरीर धारण किया क्योंकि तामसी सखियों को संसारिक खेल देखने की इच्छा रह गयी थी इच्छा की पूर्ति न होने से हम सब सखी फिर से खेल देखने को आयी हैं। इस जागनी के ब्रह्मांड उत्पन्न होने का यही कारण है इन बातों को सखियां आत्मा के श्रवणों से सुने।"

मीमांसक:--स्वामी जी के कथनानुकूल जब कृष्ण वैकुंठ चले गये तब धाम की मूल सखियों ने फिर शरीर धारण किया यहाँ पाठको को यह ध्यान रखना आवश्यक है कि यहाँ सृष्टि रचना को स्वप्न से देखना नही बताते शरीर धारण करना बता रहे है जब कि इनके सम्पूर्ण ग्रंथ में रूहो के स्वप्न से सृष्टि की उत्पत्ति मान कर उसे देखना कहा गया है अत: शरीर धारण करना बतलाने से इनके मूल सिद्धान्तों पर प्रत्येक जगह विरोध होता है। दूसरा कृष्ण को गये हुये इस लोक से बहुत दिन हो गये क्योंकि भागवत के अनुसार द्वापर युग का अन्त हो रहा था और कलि के आगमन काल में कृष्ण वैकुंठ पधारे तो इतने दिनो तक आपकी सखियों का पता नही चला जब आप पन्ना में वि० सं० १७४० में आये तब सखियों का पता चला। रास खेलते समय एक ही रात्र में दो बार आई और तीसरी बार युगों का अन्तर पड़ गया। अत: इस कथानक में कोई क्रम बद्धता नही हैं और आप्त वाक्यों का कोई प्रमाण भी न होने से तीसरी बार का आना भी झूंठा है।

दूसरा यहाँ केवल तामसी सखियों के ही उत्पन्न होने को कहा गया राजसी, स्वातसी सखियाँ कहाँ चली गई है। क्योंकि आपके वाँणी में स्थल स्थल पर बारह हजार मोमिनो को उपदेश देने का बिधान है केवल तामसी सखियों के लिये नही है। और धाम की

कुल सखियों की संख्या १२०:० ही बतायीं गई है। इसमे तीनों प्रकार की सखी आ जाती है उक्त चौ० से ४००० ही सखियों का शरीर धारण करना पाया जाता है। अतः इन्होने अपनी रचनात्मक कला पर कोई ध्यान नही दिया कहीं कुछ कहीं कुछ बनावटी मन गढंत वर्णन होने से सब मिथ्या प्रतीत होने लगते हैं।

और स्वामी जी ने जो यह कहा कि खेल देखने से हम लोगों की इच्छा नहीं पूर्ति हुई इसलिये हम पुनः खेल देखने को आई हैं। यहाँ हम शब्द का प्रयोग स्वामी जी ने अपने लिये किया है जिससे स्पष्ट होता है कि आप भी रास खेलते समय थे उस समय रहने से आपने जागनी लीला कर कलमा कुरान का उपदेश क्यों नही दिया। उस समय यह उपदेश न होने से यह सिद्ध हो जाता है कि आप रास क्रीड़ा में नही थे। और आपने अपने को कुरान भी ले आने के लिये कहा है। क्यामत नामा प्र० ६ **(हो सैयाँ फुरमानल्याये हंम)** इस कथन के अनुसार यदि आप अरब में जन्म लेकर कुरान को ले आये हैं तो क्या कुरान में लाहूत से मोमिनो का व्रज में आना तथा महंमद रूप कृष्ण के साथ रास क्रीड़ा करना लिखा है इन विषयों को यदि मौलवी लोग प्रमाणित कर दें तब तो माना जा सकता है वर्ना आप कुरान को नहीं ले आये यह सिद्ध हो जाता है।

फिर जब सखियों को अपने ब्रह्म धामस्थ बताया तो इस भूमा में मुक्तात्मा ही निवास कर सकते हैं और वे मुक्तात्मा सर्वज्ञत्वादि गुणों से विशिष्ट होते है उनमे किसी प्रकार की ज्ञान की कमी नही होती उनमे दिव्य चक्षु होने से ब्रह्मधाम ही में बैठे हुये संसार को देख समझ सकती थी यहाँ जन्म मृत्यु के चक्कर में फसने की क्या आवश्यकता थी। तामसी सखियों का यह तीसरी बार आना बताया गया। मालूम नहीं वे कब तक आती जाती रहेंगी जब उन्हें बार बार आने पर संसार का अनुभव नही होता देखने की इच्छा बनी ही रहती है

यह उनकी कामना सदैव बनी ही रहेगी जब वे कृष्ण के पास रहती हुई नहीं मुक्त हो पाई तो वे इस जागनी के ब्रह्मांड में कलमा तारतंम से कैसे मुक्त हो सकती है। अस्तु जिनका मन संसार में आसक्त है उन्हे ब्रह्म धामस्थ बतलाना भी व्यर्थ है। प्रकास प्र० ३६।

रास खेलते उमेदा रहियांतित, सो हम देखन आइयाँइत। यामे सुरत श्यामाजी की सार, मत्तू मेहेता घर अवतार ॥६०॥ कुमर बाई माता को नाम, उत्तम कायस्थ उमर कोटगाम। आये श्री देवचन्द्र नौतन पुरी, सुख सबो को देने इत देह धरी ॥६१॥ घर मो नाम सुन्दर बाई, निजवतनी या घर। इतदया करी अति घनी, अंदर आयके बैठे धनी ॥६६॥

रास खेलते समय संसारिक खेल देखने की उमेद रह गई थी इसलिये हम सब सखियाँ फिर से मायिक खेल देखने के लिये आई। इस संसार में श्यामा जी की सुरत निश्चित रूप से आई। उस सुरत ने उमर कोट ग्राम उत्तम कायस्थ कुल में पिता मत्तू मेंहेता माता कुमर बाई से अवतार लिंया जिनका नाम देवचन्द्र है वे नौतन पुरी (जामनगर) में आये इन्होंने सबों को सुख देने के लिये शरीर धारण किया है घर (लाहूत) में इनका नाम सुन्दर बाई है यह सुन्दर बाई इस घर की अपनी सम्बन्धनी है। इस संसार में धणी जी ने बहुत बड़ी दया की है जो स्वत: हृदय के अंदर आकर बैठ गये हैं।"

मीमांसक:—उक्त चौ० में स्वामी जी ने अपने धाम की सम्बन्धिनी सुन्दर बाई को यहां आना बताया है। किन्तु सुन्दर बाई किस रूप से यहाँ अवतरित हुई उनका जोस सुरत अथवा आत्मा कौन सा तत्व आया इस विषय में कुछ नहीं लिखा गया। केवल श्यामा जी (धणी जी की पत्नी) के लिए कहा गया कि

उनकी सुरत सुन्दर बाई में प्रविष्ट हुई । सुरत को शास्त्रकारों ने तत्वों की गणना में नहीं लिया है। सुरत एक प्रकार मन की चेष्टा मानने से यह जीवात्मा को छोड़ अन्यत्र जाकर क्रियाशील नहीं हो सकता । मन जड़ पदार्थ है इस विषय में वेद वाक्य प्रमाण है (**यो मनसि तिष्ठन् यं मनसो न वेद यस्य मनः शरीरं यो मनसोऽन्तरो यमयति त आत्मान्तर्याम्य मृतः**) जो आत्मा मन के अन्दर स्थित है जिसको मन नहीं जानता जिसका मन शरीर है (घर है) जो मन के अन्दर स्थित होकर उसका नियमन करता है वह आत्मा अन्तर्यामी और अमृत स्वरूप है। इस श्रुति वचन से मन को नियमन करने वाला आत्मा ही है क्योंकि उसके अंदर वह स्थित आत्मा का शरीर है चेतन तत्व के बिना मन का कोई पृथक आस्तित्व नहीं उदाहरण रूप से देखिये आप की मानसिक चेष्टा देशान्तर में गई पूर्व ज्ञान के अनुभव से मन के द्वारा वहाँ की वस्तु प्राणियों का चिन्तन करते हैं किन्तु आप वहाँ उपस्थित न होने के कारण किसी को क्रियान्वित नहीं कर सकते ।

युक्ति प्रमाण से भी सिद्ध होता है कि मन का जीवात्मा से पृथक कोई आस्तित्व नहीं—क्योंकि मृत्यु के समय जीवात्मा के निकलने से शरीर की दशो इन्द्रियाँ तथा मन और प्राण में क्रिया शीलता नहीं पाई जाती (**स्पर्श रहितत्वे सति क्रियावत्वं मनसो लक्षणम्**) स्पर्श गुण से रहित होते हुये भी क्रियाशील होना यह मन का लक्षण है। किन्तु शव में मन की क्रिया शीलता नहीं पायी जाती क्योंकि जीवात्मा अपने मन चित बुद्धि आदि अन्त:करणों को लेकर चला गया। श्रुति का भी कथन इसी तरह है (**तस्मिन उत्क्रान्ते सर्व उत्क्रान्तं भवति**) उस जीवात्मा के निकलने पर सभी इन्द्रियां मन में विलीन होकर और मन प्राण

में विलीन हो शरीर से चला जाता है। यदि मन में स्वत: क्रिया शीलता मानी जाती है तो दूसरे व्यक्ति का मन मुर्दे को क्रियाशील कर सकता है किन्तु यह प्रत्यक्ष न होने से श्यामा जी की सुरत सुन्दर बाई में आई यह नही सिद्ध होता श्यामा जी का आना न सिद्ध होने से धणी जी के बैठने के लिये दूसरा स्थान ही कहाँ क्योंकि वे अल्लाह की रूह कही गई है। सुन्दर बाई में उक्त तत्वों का समावेश किस प्रमाण से माना गया यह प्रमाणीकरण न होने से संप्रदाय की मूल नीव ही नष्ट हो जाती है।

वही धाम की सुन्दर बाई संसार में देवचन्द्र नाम से प्रसिद्ध हुई जिन्होंने जाम नगर में आकर १४ वर्ष तक भागवत की कथा सुनी बाद में ४० वर्ष की अवस्था में महंमद साहेब ने दर्शन दिया बीतक प्र० ६ तहा से आये कच्छ देश में, बीच महंमदे दिया दीदार । पोहोंचाये भज को, किये खबरदार ॥४॥ लालदास लिखते हैं कि जब देवचन्द्र जाम नगर से कच्छ देश को प्रयाण किया बीच रास्ते में महंमद साहेब ने दीदार दर्शन) दिया। यहां यह सन्देह है कि देवचन्द्र ने १४ वर्ष तक नियमित रूप से भागवत की कथा सुना और उसका परिणाम क्या हुआ कि कृष्ण के बजाय महंमद ने दर्शन दिया कुछ नहीं ये लालदास की करामात है। दर्शन पाने पर देवचन्द्र ने जागनी[1] लीला का प्रचार किया स्वामी प्राणनाथ को दीक्षित कर जागनी लीला के लिये प्रेरित किया देवचन्द्र की स्वत: कोई रचना न होने से उनकी जागनी लीला के जो उपदेश बताये जाते हैं वे लालदास की व

१—जागनी लीला मुहम्मद साहब के मोमिन धाम से जो जीवात्मायें संसार में अवतरित हुई है वे सब मिलकर यहां मोमिन संप्रदाय का प्रचार प्रसार करें। यही जागनी लीला है।

स्वामी जी की रचना के आधार पर ही अवलम्बित है। इनके उपदेश का प्रारम्भिक चरण जिसे संप्रदाय का मूल आधार कह सकते हैं वह यह है। देवचन्द्र को दर्शन देने वाले खुदा ने कहा है कि बारह हजार सखियां (रूहे) लाहूत से माया का खेल देखने को आयी हैं इससे तुम देवचन्द्र सब सखियों को जागृत कर धाम में ले आओ और मैं तुम्हारे हृदय में बैठता हूँ इसी मूलाशय को लेकर निजानन्द सम्प्रदाय की स्थापना होती है। इनका दीक्षा मन्त्र निम्न है जिसे ये लोग तारतम भी कहते हैं। स्वामी जी ने अपने प्रत्येक ग्रन्थ के आरम्भ में सब से पहले इसी मन्त्र को लिखा है। **निजनाम श्री कृष्ण जी, अनादि अक्षरातीत। सो तो अब जाहेर भये, सब विध वतंन सहित ॥१॥**

अर्थ: — निज जनो (अर्थात् धाम की सखियों) के नाम जपने के लिये श्री कृष्ण जी हैं अनादि अक्षरातीत ये दो शब्द कृष्ण के विशेषण हैं वे कृष्ण अनादि पुरातन पुरुष हैं और अक्षर ब्रह्म से परे हैं वे परधाम की सब सामग्री सहित प्रगट हो चुके हैं। लोगों का कथन है कि उक्त मन्त्र केवल एक चौपाई को ही देवचन्द्र ने बनाया है बाकी पाँच चौपाइयों को स्वामी जी ने इसी मन्त्र में जोड़ दिया है जिससे वह मन्त्र छे चौ० द्वारा जपा जाता है।

अस्तु उक्त मन्त्र का अर्थ जो किया गया है वह देवचन्द्र के पक्ष से किया गया है। लालदास और प्राणनाथ के ग्रन्थों के देखने से इनके कोई भी विषय विचार शास्त्र की कसौटी में सत्य प्रमाणित नही पाये जाते इस कारण मन्त्र के विषय में भी विश्वास नही किया जा सकता कि देवचन्द्र ही ने इसकी रचना की है। दोनों ने देवचन्द्र की कोई रचना नही माना है।केवल मन्त्र की रचना करना बतलाने से यह भी झूठा हो सकता है। अतः उक्त

मन्त्र प्राणनाथ के प्रत्येक ग्रन्थ में पाये जाने से इन्हीं का बनाया हुआ सिद्ध हो जाता है। अस्तु प्राणनाथ के पक्ष से मन्त्र का अर्थ दूसरी प्रकार किया जाता है। निजनाम-अपना नाम कृष्ण है अर्थात् मैं प्राणनाथ कृष्ण हूँ और अनादि-सनातन अक्षर ब्रह्म से भी परे अक्षरातीत हूँ वह मैं अपनी धाम की सब सामग्रियों के सहित संसार में प्रगट हो चुका हूँ। उक्त मन्त्रार्थ की संगति प्राणनाथ की रचनानुकूल ठीक बैठती है क्योंकि इन्होंने ११ वर्ष ५२ दिन पर्यन्त कृष्ण कलेवर में धणी जी का जोस प्रवेश करने से ही उसे पूर्ण ब्रह्म अर्थात् महंमद रूप माना है रास खेलकर धणी जी का जोस चले जाने पर वह खुदा रूप न रह कर विष्णु का रूप हो जाता है। इसी तरह इन्होंने अपने को धाम की इन्द्रावती रूह बताते हुये अपने में धणी जी का जोश आना बताया है इस कथन से ये कृष्ण रूप बन जाते हैं। अत: मंत्रार्थ से इनके वाक्यों की संगति बैठ जाने से मंत्र की रचना इन्हीं की सिद्ध हो जाती है और उक्त मंत्र में इन्होंने अपनी ही उपासना करने की प्रेरणा दिया है।

प्रणामी धर्म में तीन महापुरुषों का नाम लिया जाता है सर्वप्रथम देवचन्द्र जो इसके आदि प्रवर्तक माने जाते हैं जिनके द्वारा लिखित कोई ग्रन्थ नहीं है बाद में प्राणनाथ और लालदास ने इनके धर्म का प्रचार किया और इन लोगों ने कई पुस्तकें भी लिखा है। हिन्दुओं को भ्रमित करने वाली जो मूल वस्तु है वह है इन तीनों का हिन्दी में हिन्दू नाम और सम्प्रदाय के मूल प्रवर्तक देवचन्द्र का आरम्भिक जीवन में वल्लभ सम्प्रदाय में दीक्षित होने की तथा कथित बात।

मीमांसक :—लेखक का मुख्य अभिप्राय यह सिद्ध करना नहीं है कि ये तीनों हिन्दू परिवार में जन्म लिये या मुस्लिम परिवार में

मीमांसक का मुख्य उद्देश्य यह है कि इन्होंने हिन्दू शास्त्रों के व्रज रास-लीला कृष्ण श्यामा श्याम अक्षर ब्रह्म अक्षरातीत और परमधाम आदि कतिपय शब्दों को चुराकर आरबी भाषा में हजारों पृष्ठ के ग्रन्थ लिख कर और मोमिन सम्प्रदाय बनाकर हिन्दुओं को धोखा दे करके उनमें कुरान महम्मद और इस्लाम धर्म के सिद्धान्तों,का समर्थन करते हुये पूरा प्रचार किया है।

जहाँ तक वल्लभ सम्प्रदाय में देवचन्द्र के दीक्षित होने की बात है लालदास ने स्वयं अपने ग्रन्थ में लिखा है कि वल्लभाचार्य के मठ में देवचन्द्र ने १४ वर्ष भागवत की कथा सुना किन्तु फलस्वरूप दर्शन महम्मद साहब के हुये भगवान श्री कृष्ण के नहीं। यदि यह बात मान भी ली जाय कि शुरू में देवचन्द्र ने वल्लभ सम्प्रदाय में दीक्षा लिया तो भी यह तो मानना ही पड़ेगा कि उस समय उन्हें समाज में कोई नहीं जानता था और न उन्हाने उस समय मोमिन सम्प्रदाय की स्थापना ही किया जब वे नवीन सम्प्रदाय के प्रवर्तक के रूप में सामाजिक क्षेत्र में उतरे तब उन्हें (बीच महम्मदे दिया दीदार) अर्थात् खुदा महम्मद ने दर्शन देकर तारतंम मंत्र दिया-निजनाम श्रीकृष्ण…) और कुरान की आयतों का आदेश प्राप्त हुआ। इनके ग्रन्थों के पढ़ने से स्पष्ट हो जाता है कि इनके कृष्ण और श्याम देवकी वसुदेव के पुत्र यशोदा नन्दन श्री कृष्ण नहीं हैं ये स्वयं अपने को ही कृष्ण मानते थे इसी से निज–अपना नाम कृष्ण लिखा है। इनकी रास लीला भी बिलकुल भिन्न है श्रीमद् भागवत में वर्णित वृन्दावन में घटित श्री कृष्ण और गोपिकाओं की रास लीला से इनका कोई सम्बन्ध नहीं है। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि इनके ग्रन्थों में आद्योपान्त इस्लाम धर्म के प्रचार की बात है। इन्होंने अपने को महम्मद कहा है महम्मद परमधाम में सब से ऊँचा स्थान माना है वेदों की निन्दा की गई है हिन्दुओं से जनेऊ और वेद का त्याग कराने के लिये

हम लोगों का जन्म हुआ है यह बात स्थल स्थल पर इनके ग्रन्थों में स्पष्ट लिखी हुई है। नारायण और विष्णु को नीचा दिखाने के लिये यह लिखा गया है कि मुहम्मद के परमधाम में जाने का प्रयास करने पर उनके पैर जलने लगते हैं। ये अपने को श्री कृष्ण से भी बड़ा मानते हैं और श्री कृष्ण को नीचा दिखाने के लिये अपने को उनमें जोश या तेज का संचारक मानते हैं। अतएव गलितार्थ निचोड़ यही निकला कि ये तीनों इस्लाम धर्म के प्रचारक थे परन्तु खूबी यह है कि मुस्लिम समाज इन्हें इस्लाम धर्म के प्रचारक के रूप में स्वीकार नहीं किया दुर्भाग्य वश अभागे हिन्दू ही इनके चक्कर में आये और अनेकों ब्राह्मण आदि हिन्दू मोमिन सम्प्रदाय में दीक्षा लेकर त्रिलोक पावनी गंगा और यमुना के संगम में स्नान करना छोड़ दिया.रामायण और उसके मूल पात्र भगवान श्री रामचन्द्र को नहीं मानते। उपनिषदों में यह स्पष्ट लिखा हुआ है कि चित्रकूट के ऋषि-मुनियों ने जब भगवान श्रीराम का आलिङ्गन करना चाहा तब भगवान ने कहा कि कृष्णावतार में तुम्हारी आकांक्षायें पूरी होगी। कृष्णोपनिषत् मंत्र— **हरिः ॐ महाविष्णुं सच्चिदानन्द लक्षणं रामचन्द्रं दृष्ट्वा सर्वाङ्ग सुन्दरं मुनयो वनवासिनो विस्मिता बभूवुः तं हो चुर्नोऽवद्यमवतारान्वै गण्यन्ते आलिङ्गामो भवन्तमिति। भवान्तरे कृष्णावतारे यूयंगोपिका भूत्वा मामालिङ्गथ अन्ये-येऽवतारास्तेहि गोपान्न स्त्रीश्चनोकुरु अन्योन्य विग्रहं धार्यं तवाङ्ग स्पर्श नादिः। शश्वत्स्पर्शादितास्माकं गृहणीमोऽवतारान्न वयं ।१। (रामः शस्त्र भृतामहम्)** अर्थात् मैं श्री कृष्ण शस्त्र धारियों में राम हूँ। इसलिये हिन्दू धर्म में राम और रामायण का पुजारी श्री कृष्ण और भागवत का तथा श्री कृष्ण और भागवत

का पुजारी राम और रामायण का विरोधी नहीं हो सकता। व्रज की कोई भी रास लीला यमुना के बिना निरस और असिद्ध हो जायगी। यदि इनके शास्त्रों में वर्णित लीला का सम्बन्ध व्रज की रासलीला से होता तो ये गंगा और यमुना के संगम में स्नान करना न छोड़ते। अतएव इसमें कोई सन्देह नहीं है कि इस सम्प्रदाय के आचार्यों ने अपना हिन्दू नाम रख करके हिन्दुओं में मुस्लिम धर्म का प्रचार किया है।

प्राणनाथ ने इस कृष्ण स्वरूप में ऐसी साम्प्रदायिकता जोड़ी है कि उनके मूल स्वरूप में भी भेद डाला है। लाहूत के रहने वाले खुदा—महम्मद ने व्रज रास लीला की है उसी को अक्षर ब्रह्म ने अपने हृदय में अखण्ड कर लिया है जिसे गो लोक धाम कहते हैं। किन्तु वल्लभाचार्य का यह मत नहीं कि व्रज रास अक्षर के हृदय में अखंड होने पर गो लोक धाम की स्थिति हुई। ये तो गो लोक धाम को नित्य मानते हैं अर्थात् यहाँ की व्रज रास लीला के पहले भी, गोलोक धाम नित्य रूप से था। अस्तु देवचन्द्र की कोई रचना न होने से प्राणनाथ ने उनके नाम से सम्प्रदाय की स्थापना कर अपना इस्लाम मत वैष्णवों के बीच घुसेड़ दिया। अब निम्न चौ० को देखिये।

वीतक प्र० ५१। **रास लीला खेल के, आये वराख श्याम। सो कागद कलाम अल्लाह का, ल्याया महंमद अलेह सलाम ॥७८॥**

अर्थ :—रास लीला खेल कर कृष्ण जी वराख (अरब देश) में चले आये और अल्लाह के कलाम (शब्द रूप) कागद (कुरान शरीफ) को भी ले आये। उक्त चौ० से स्पष्ट है कि कृष्ण महम्मद के रूप में अरब में जन्म लेकर कुरान शरीफ की रचना किया। यदि कोई इनसे पूछे कि आपने यह किस प्रमाण से कहा तो इनका यही

उत्तर है कि स्वामी जी हकी सूरत होने से साक्षात् खुदा रूप है अतः उनके वाक्य स्वतः प्रमाण रूप है। किन्तु ऐसी प्रमाण शून्य बातों को चाहे खुदा ही क्यों न कहता हो किन्तु वे माननीय नहीं हो सकती इन बातों को किसी भारतीय आर्य जाति ने अथवा किसी मौलवियों ने नहीं स्वीकार किया। अतः सर्व असम्मत सिद्धान्त मानने योग्य नहीं।

यदि कोई यह कहे कि इन्होंने एकत्व की भावना को लेकर कृष्ण महम्मद में अभेद बताकर साम्प्रदायिकता को खतम किया है। यह भी बातें नहीं दिखाई देती क्योंकि इतनी ज्ञान की चरम सीमा पर पहुंचने वाला इनका सिद्धान्त नहीं। इनमें भेद बुद्धि के अनेक उदाहरण हैं इनके तारतम्य वाणी का अर्थ ही होता है कि भेद प्रदर्शित करने वाले वाक्य। कृष्ण को इन्होंने महम्मद का रूप कहा, श्री कृष्ण तो विष्णु का ही अवतार है किन्तु अपनी इच्छानुसार जब चाहे कृष्ण में जोश का संचार करते हैं और जब इच्छा होती तब उसकी शक्ति को अपने में खीच लेते हैं मानो श्री कृष्ण इनके हाथ की कोई कठपुतली है। इन्होंने विष्णु को महम्मद रूप क्यों नहीं माना। विष्णु को महम्मद रूप न मानने से सिद्ध है कि इनका एकत्व का सिद्धान्त नहीं है।

आत्मवत सर्व भूतेषु यः पश्यति स पश्यति, जो अपने ही समान सब भूतों को देखता है वही वास्तव में देखता है जो अपने को सर्वोपरि और दूसरे को अल्प असत समझता है 'उसमें समत्व का व्यवहार कहाँ है। उदाहरण सिनगार प्र० १।

सत लोक मृत लोक दो कहे, और स्वर्ग कह्या अमृत।
जो नीके किताबे देखिये, तो ये सब उड़सी असत ॥८॥

अर्थ :—सत्य लोक, मृत्यु लोक ये दो कहे गये हैं और तीसरा स्वर्ग को अमृत कहा गया है यदि अच्छी तरह से पुस्तकें देखी जाय तो ये सब असत्य होने से उड़ (नष्ट) हो जायंगे। यहाँ हिन्दुओं के देवलोक ब्रह्मधाम और विष्णु को असत्य बताकर उसे बिनास शील बताया है। दूसरा उदाहरण दोजख प्रकर्ण से उद्धृत। सनंध प्र० २७।

ज्यों घायल साँप को चीटिया, लगियाँ बिना हिसाब। त्यों अगुओ को दुनिया मिल, कर देसी ताव ॥९॥ आग दुनी को एक है, अगुओ को आग दोय ॥१०॥

अर्थ :—क्यामत के समय में दुनियाँ के लिये दोजख की एक ही अग्नि है किन्तु ज्ञानी पथ प्रदर्शकों के लिये दो प्रकार की दोजख (नरक) की अग्नि है जिस तरह घायल सर्प को बिना हिसाब चीटी लग जाती है उसी तरह हिन्दुओं में ज्ञानी अगुओं को सब दुनियाँ मिल कर घायल सर्प को चीटी की भाँति परेसान करेगी। भाव यह कि अगुओं ने वास्तविक खुदा की पहचान नहीं कराया विष्णु आदि को खुदा बता कर राह गुम कर दिया इस कारण अगुओं को दो प्रकार की दोजख की अग्नि में जलना पड़ेगा। आखरी महम्मद प्राणनाथ क्यामत के समय में सब के कर्तव्य का इन्साफ करके सबों के लिये चौथे नम्बर की भिस्त (मोक्ष) प्रदान करेंगे। उक्त आशय की चौ० निम्न है। खुलासा प्र० ५ चौ० १५। **चौथी भिस्त जो होयसी, पावे खलक आम।** अर्थात् आखरी महम्मद प्राणनाथ के द्वारा सब संसार के लिये चौथे नम्बर का भिस्त (मोक्ष) कायम किया जायगा। इन्होंने विष्णु को भी मोक्ष प्रदान करने के लिये कहा है। प्रकाश प्र० ३१।

वैकुंठ जाय विष्णु को, सब देसी खबर। विष्णु को पार पोंहोचा वहीं, सब जन सचराचर ॥१८॥

अर्थ :—प्राणनाथ कहते हैं कि मैं वैकुंठ जाकर विष्णु से सब क्यामत की खबरों को कहूँगा और उन्हें मुक्त करके सब संसार को मुक्त करूँगा। अगुओं की गणना में ऋषि मुनि और राम कृष्ण भी आ जाते हैं। अस्तु इस तरह के उपदेशों से इनमें एकत्व की भावना नहीं पायी जाती बल्कि साम्प्रदायिक कट्टरता की जड़ अधिक मजबूत होती है।

इसी तरह इन्होंने वेदों को दो भेद (फूट) डालने वाला बताया है जबकि इसके विपरीत अग्रिम अध्यायों में सप्रमाण सिद्ध किया गया है कि वेद का सिद्धान्त अभेद ज्ञान का प्रतिपादक है वह भेद प्रतिपादन करने वालों की निन्दा करता है। स्वामी जी ने यह भी कहा है कि सबों ने ईश्वर के सम्बन्ध में जो कुछ वर्णन किया है वह सब अँटकल से वर्णन किया है किन्तु महम्मद साहेब ने खुदा को प्रत्यक्ष करके देखा है। यद्यपि इन विषयों का इनके पास कोई प्रमाण नहीं है केवल विश्वास है कि संसार में और किसी ने ईश्वर को प्रत्यक्ष नहीं किया केवल महम्मद ने प्रत्यक्ष किया। स्वामी जी को यदि ऐसा ही विश्वास है तो हमें इन वचनों से कोई विरोध नहीं ईश्वर किसी सम्प्रदाय के बंधन में नहीं है उसका तो शुद्ध हृदय में ही प्रकाश होता है यदि पवित्र अन्तःकरण से उसको स्मरण किया होगा तो प्रत्यक्ष होना भी सम्भव है। हमारा सिद्धान्त इस्लाम मत से द्वेष करना या उसकी आलोचना करना नहीं है। हमें तो खटकता यह है कि एक कृष्ण कलेवर में ही कुछ काल तक महम्मद रूप और कुछ काल बाद विष्णु रूप। भेद न करके यदि स्वामी जी कृष्ण को जन्म से लेकर मृत्यु

पर्यन्त महम्मद ही कहते तो कोई आपत्ति न थी क्योंकि जो जिस देश काल में स्थित है वह ईश्वर को उसी रूप में देखता है भाषा और नामकरण में रक्खा ही क्या है।

अस्तु पूर्वार्ध भाग में जो कह आये हैं कि देवचन्द्र के मंत्र में इस्लाम धर्म का उपदेश नहीं पाया जाता उसको दूसरी प्रकार से भी प्रमाणित किया जाता है। देवचन्द्र के मृत्यु के बाद उनके पुत्र बिहारी जी से और प्राणनाथ जी से काफी मतभेद हो चुका था इसका खास कारण था कि स्वामी जी इस्लाम मत का प्रचार कर मुसलमानों को तथा नीच कौम को दीक्षित करते थे। बिहारी जी जाम नगर से उक्त बातों का विरोध करते हुये स्वामी जी को पत्र लिखते हैं। बीतक प्र० २८ चौ० ६६।

उन लिख भेजी पाती को तुमारी राह भै और, और हमारी भी और है, भई जुदागी इन ठोर ॥६६॥ हम तुमकों चीन्हिया तुमारे मांहि कलाम[1], तुम नाही हमारे साथ में हम काढ़ें तुम्हें इस धाम ॥६७॥

बिहारी जी जाम नगर शहर से प्राणनाथ को सूरत में पत्र लिखते हैं कि मैं तुमको पहचान गया तुम इस्लाम धर्म के पोसक हो इसलिये तुम्हारा मार्ग और ही हो गया है और हमारा भी मार्ग और ही है इस समय हम से तुम अलग हो गये हो तुम अपने कों हमारे साथ में मत समझो तुम्हें अपनी निजानन्द सम्प्रदाय से अलग किये देता हूँ। इस तरह अपने पिता की दी हुई प्रधानाचार्य की गद्दी पर बैठे हुये बिहारी जी ने प्राणनाथ कों अपनी सम्प्रदाय से बहिष्कृत

---

१. कलाम शब्द का अर्थ होता है खुदा के शब्द वे शब्द कुरान में वर्णित है उसका उपदेश करने से प्राणनाथ को इस्लाम मत का उपदेशक कहा गया है।

कर दिया। इतिहासकार लालदास स्वामी प्राणनाथ जी का ही अनुगमन करते थे इससे इतना स्पष्ट हो गया कि बहुत कुछ बातों को स्पष्ट न लिखकर छिपाया है किन्तु सत्यता तो कहीं न कहीं से टपक ही पड़ती है। अतः प्राणनाथ के उपदेश में यदि इस्लाम धर्म का समावेश न होता तो उनके पुत्र अपने साथ से अलग क्यों करते। इन प्रमाणों से सिद्ध होता है कि प्राणनाथ इस्लाम धर्म के उपदेशक थे। बिहारी जी और उनके पिता देवचन्द्र का क्या धर्म था क्या मत था। क्यों प्राणनाथ के साथ मत भेद हुआ हम इस विवाद में नहीं पड़ना चाहते क्योंकि बिहारी जी की और देवचन्द्र जी की कोई भी साहित्यिक कृति प्राप्त नहीं है जिससे ये निर्णय किया जा सके कि उनके विचार और मत क्या थे। किन्तु उन्होंने अपनी ओर से कोई सम्प्रदाय नहीं बनाया तथा देवचन्द्र के नाम पर जो कुछ भी प्रचार प्रसार हुआ वह प्राणनाथ और लालदास ने ही किया। यहाँ पर जनता का ध्यान हम तो केवल इसी बात की ओर आकृष्ट करना चाहते हैं कि देवचन्द्र के पुत्र स्वयं बिहारी जी ने ही प्राणनाथ को लिखे गये अपने पत्र में स्पष्ट रूप से यह लिखा था कि तुम्हारा इस्लाम मत है। कोई विचारवान पुरुष बतावे कि लालदास और प्राणनाथ ने इस्लाम धर्म का ही प्रचार किये इसमें इससे अधिक अन्य प्रमाण की अब क्या आवश्यकता है।

इति निजानन्द मीमांसायां उत्तरार्ध भागे जागनी लीला वर्णनं

नाम अष्टमोऽध्यायः ८

अभ्यास के लिये प्रश्न

१—धाम की सखियों का तीसरी बार भी आना भूठा क्यों कहा गया।

२—मुक्तात्माओं का संसार में जन्म लेने की कामना उत्पन्न होना क्या सम्भव है अपने विचार व्यक्त कीजिये।

३—सिद्ध कीजिये कि मन का आत्मा से पृथक कोई अस्तित्व नहीं है।

४—कृष्ण रास क्रीड़ा कर अरब देश में जन्म लिया इस विषय में अपने विचार व्यक्त कीजिये।

५—स्वामी जी में एकता की भावना किस प्रकार नहीं पाई जाती।

६—कृष्ण को आजन्म पर्यन्त महम्मद कहने में कोई आपत्ति नहीं यह क्यों कहा गया।

७—किन किन प्रमाणों से प्राणनाथ के सिद्धान्त में इस्लाम धर्म पाया जाता है।

अथ नवमोऽध्यायः ९

जागनी लीला

"प्रकास प्र० ३६। **मोहोल मंदिर को नाही पार, श्री धाम लीला अति बड़ो विस्तार। इन लीला की काहूँ न खबर, आज लगे विना इन घर ॥७१॥ ब्रह्म सृष्टि विना न जाने कोय, ये सृष्टि ब्रह्म से न्यारो न होय। सो निध ब्रह्म सृष्टि ल्याई इत, न तो ये लीला दुनियाँ मे कित ॥७२॥ ये बानी मुख थें**

कहे, सो ये दुनियाँ क्यों कर लहे। गाँग जी भाई मिले इन अवसर, तिन ये वचंन लिये चित धर ॥७२॥ मैं श्री सुन्दर बाई के चरणो रहे, ये दया मुख थे किन विध कहो ॥६१॥ कह्यो ताको इन्द्रावती नाम, ब्रह्म सृष्टि मिने घर धाम। मो पर धनी हुये प्रसन्न, सोपे धाम के मूल वचंन ॥६२॥ आद के द्वार न खोले आज दिन, ऐसा हुआ न कोई खोले हम बिन। सो कुंजी दइ मेरे हाँथ, तू खोल कारण अपने साथ ॥८३॥

अर्थ :—स्वामी जी उपदेश देते हुये कह रहे हैं कि उस धाम में महल मन्दिरों का पारावार नहीं है वहाँ की लीला का विस्तार अत्यन्त बड़ा है और उस लीला को इस घर वालों के सिवा अन्य कोई नहीं जान सका। इसे ब्रह्म सृष्टि ही जान सकती है और ये ब्रह्म सृष्टि ब्रह्म से अलग नहीं हो सकती इस निधि को ब्रह्म सृष्टियों ने इस संसार में ले आया है। यदि वे न लाती तो यह लीला संसार में कहाँ थी मैं उस धाम सम्बन्धी समग्र लीलाओं का उपदेश अपने मुख से तो कर रहा हूँ किन्तु दुनियाँ हमारी इन बातों को कैसे मान सकती है। जागनी का उपदेश देते समय गाँग जी भाई मिले उन्होंने हमारे वचनों को हृदय में धारण किया। मैं गुरु देवचन्द्र के चरणों को नमन कर रहा हूँ उन्होंने हमारे ऊपर जो दया की है उसका वर्णन अपने मुख से किस प्रकार करूँ. उस धाम में रहने वाली ब्रह्म सृष्टियों के बीच मेरा नाम इन्द्रावती बताया है हमारे ऊपर धणी जी प्रसन्न होकर धाम के मूल वचनों को सौंपा है। सब से आदि धाम के दरवाजे को आज तक ऐसा कोई व्यक्ति नहीं हुआ जो हमारे बिना उस दरवाजे को खोल सके उस दरवाजे के खोलने की कुंजी गुरु ने मुझे दी है और कहा है कि तू अपने सुन्दर साथ के लिये धाम का दरवाजा खोल दे।६३।"

मीमांसक :—ईश्वर किसी देश विशेष में स्थित न होने से उसके रहने के स्थान महल मन्दिरों की कल्पना करना ही असंगत है। वहाँ अनेक लीलाओं का वर्णन होने से सब वस्तुयें प्राकृत हो जाती है प्रकृति से उत्पन्न वस्तु कभी नित्य नहीं हो सकती। और जो यह कहा गया कि उस लीला को इस घर वालों के सिवा अन्य कोई नहीं जान सका। जो वस्तु असत है उसे कोई जान ही कैसे सकता है प्रमाण शून्य मिथ्या कल्पित वादों का संसार को अवश्य ज्ञान नहीं है। वेदादि शास्त्रों में ब्रह्म के निर्विशेषत्व वर्णन से उक्त धाम की सभी लीलाओं का मिथ्यात्व सिद्ध हो जाता है। स्वामी जी ७२ चौ० में ब्रह्म सृष्टियों की ब्रह्म से पृथकता नहीं बताते और उसी चौपाई में ब्रह्म सृष्टियों को धाम की निधि ले आना बताते हैं इस तरह दोनों बातें परस्पर विरुद्ध होने से उनके वचनों द्वारा ही दोनों वाक्यों का मिथ्यात्व सिद्ध होना पाया जाता है। यदि ब्रह्म सृष्टि ब्रह्म से अलग नहीं हो सकती तो वे इस लीला रूपी निधि को धाम से संसार में कैसे ले आई यदि वे संसार में धाम की निधि ले आई है तो उनकी ब्रह्म से पृथकता भी सिद्ध है। पृथकता सिद्ध होने से उन्हें ब्रह्म और मुक्तात्मा कहना सर्वथा असंगत है। वस्तुत: यह सत्य तो है ही कि मुक्तात्मा ब्रह्म से पृथक हो कर संसार में नहीं आ सकते अत: उनका न आना सिद्ध होने से स्वामी जी के सम्प्रदाय का मूलाधार ही नष्ट हो जाता है।

फिर स्वामी जी कहते हैं कि यह धाम की लीला संसार में नहीं थी। तो जो वस्तु संसार में नहीं है उसकी नवीन उत्पत्ति होना भी असम्भव है क्योंकि अभाव से भावोत्पत्ति कहीं देखी नहीं जाती जिस तरह आकाश में पुष्प के अभाव से उसमें पुष्प रूप भावोत्पत्ति कभी सम्भव नहीं उसी तरह धाम लीला रूपी निधि का संसार में पूर्व से ही अभाव बतलाने से उसकी भावोत्पत्ति नहीं हो सकतीं।

अस्तु धाम की लीला पूर्व में नहीं थी इस तरह इनके कथन से ही ब्रह्म सृष्टियों का धाम से निधि ले आना नहीं सिद्ध पाया जाता ।

धाम में इन्द्रावती, सुन्दर बाई आदि सखियों का नाम बतलाना भी साम्प्रदायिक कल्पना का आधार बनाना है । क्योंकि मुक्तात्मा ब्रह्म में नाम और रूप को त्याग कर मुक्त होते हैं । श्रुति का भी यही उपदेश है । श्रुति—(**यथानद्यः स्यन्दमानाः समुद्रेऽस्तंगच्छन्ति नाम रूपं विहाय तथा विद्वान् नाम रूपाद् विमुक्तः परात्परं पुरुषमुपैतिदिव्यम्**) जिस तरह बहती हुई नदियाँ (गंगा, यमुना आदि) अपने धाम और रूप को त्याग कर समुद्र में विलीन हो जाती है उसी तरह विद्वान् अपने नाम और रूप को त्याग कर परात्पर दिव्य पुरुष को प्राप्त कर लेता है । इन वेद वचनों से भी सिद्ध है कि ब्रह्म धाम में मुक्तात्माओं का कोई नाम और रूप नहीं है वहाँ नाम रूप बतलाने से नाम रूपात्मक जगत का बोध होता है ब्रह्म धाम का बोध नहीं होता ।

६ः चौ० में दृष्टि डालिये—ईश्वर के दरवाजे को ऋषि, मुनि, लोग नहीं खोल सके केवल आप ही महम्मद के रूप में विक्रम सं० १७४० में खोले यह कौन मान सकता है । ऋषियों ने आदि के दरवाजे को किस प्रकार नहीं खोला उनके दार्शनिक ग्रन्थों में आपने कौन सी त्रुटियों को पाया उन त्रुटियों को सप्रमाण गलत कर यदि ग्रन्थ रचना करते तो मैं मान लेता उन लोगों ने ईश्वर के दरवाजे को नहीं खोला । किन्तु आपके ऐसा न करने से किसी ने ईश्वर के दरवाजे को नहीं खोला यह कथन गलत है । और आपके सिद्धान्तों तरफ यदि देखा जाय तो ऐसा प्रतीत होता है कि मानव के लिये वह दरवाजा और भी अवरुद्ध हो चुका है । क्योंकि वहाँ सब नाम रूपा-

त्मक जगत् का वर्णन होने से सांसारिक विषयोप भोग का ही दरवाजा खोला गया है। जिससे ब्रह्मत्व सिद्धी ही नहीं हो पाती। इन हेतुओं से सिद्ध होता है कि आपने उस दरवाजे को नहीं खोला। जगत् के दरवाजे को अवश्य खोला है इतिहासकार लालदास ने पन्ना में आपके विषयोप भोगता का जिस प्रकार वर्णन किया है उसी अनुकूल धाम की लीलाओं का वर्णन भी आपने ग्रन्थों में किया है। इससे वह वर्णन जगत् का ही सिद्ध होता है।

गुरु ने यदि ब्रह्म सृष्टियों के लिये ही धाम दरवाजा खोलने की कुंजी दिया है अन्य जीव सृष्टि और ईश्वरी सृष्टि के लिये दरवाजा खोलने की आज्ञा नहीं दिया तो धाम से अवतरित सखियों को आपने कैसे पहचाना कि ये धाम की वासना (सखी) हैं।

पूर्व पक्षी—उन रूहों के पहचान के लक्षण स्वामी जी ने निम्न चौ० से बताया है। कलस प्र० ११ पारवतंन जो सोहागनी ताकी नेक कहूँ पहचान जो कदी भूली वतंन तो भीं नजर तहाँ निदान १।

अर्थ :—धाम की जो बारह हजार रूहें हैं उनको अच्छी तरह से पहचानने के ये लक्षण हैं यदि वे कभी अपने धाम को भूल भी जाय तव पर भी उनका ध्यान धाम धणी पर ही रहता है।

मीमांसक :—यदि रूहो का ध्यान निरन्तर धणी ही पर रहता है तो स्वामी जी ने औरंगजेब को धाम की साकुमार बाई की वासना बताया है तो वह खुदा को बिलकुल क्यों भूल गई खुदा के अतीव श्रम करने पर भी वह जागृत न हुई बल्कि प्रवुद्ध करने वाले मोमिनो को बन्दी कर दिया इससे सिद्ध है कि स्वामी जी सखियों को पहचानते न थे। उनका कोई पहचान न होने से केवल धाम की सखियों के लिये ही वह दरवाजा खोला जाय यह गुरु उपदेश भी निरर्थक है। ईश्वर प्राप्ति का उपदेश सभी मानव के लिये सामान्य होना चाहिये। यदि जातीयता का भेदभाव है तो वह उपदेश ईश्वर प्राप्ति का साधन नहीं है। प्रकास प्र० ३६।

श्री धणी जी को जोस आतम दुलहिन, नूर हुकुम बुध मूल वतंन । ये पाँचो मिल भई महामत, वेद कते वो पोहोची सरत ॥९५॥ या कुरान या पुराण, ये दोऊ कागज प्रमाण । याके मगज मायने हम पास, अन्दर आय खोले श्री प्राणनाथ ॥९६। आप भी न खोले दरबार, सो मुझ से खोलाय कियो विस्तार । मोहे दई तारतम की करणवार, सो काहू न अँटक्यों निरधार ॥९७॥ सब जाते मिलि भई एक ठोर, कोई न कहे धणी मेरा और ॥१०९॥

अर्थ :—स्वामी जी यहाँ अपने को ईश्वर सिद्ध करते हुये कह रहे हैं कि हम में धणी जी का जोस १ आतम दुलहिन श्यामा जी की आत्मा २) खुदा के हुक्म का स्वरूप अर्थात् महम्मद साहेब ३ मूल वतंन अर्थात् राज जी की बुद्धि ४ और खुदा का नूर ५ इन पांचो वस्तुयें के एक में समावेश होने पर बड़ी बुद्धि वाला खुदा का रूप हुआ । कुरान और वेदों में भी इन बातों की सर्त प्रतिज्ञा वचन लिखे हुये हैं । अत: कुरान और पुराण ये दोनों कागज प्रमाण रूप है । उक्त ग्रन्थों के गुह्य अर्थ हमारे पास है हमारे हृदय में प्रियतम के आ जाने से सब अर्थों का प्रकास हो चुका है । गुरु देवचन्द्र जी ने भी गुह्य रहस्य को नहीं खोला किन्तु उन्होंने हमें तारतम की करणवार दिया है जिससे गुह्य अर्थों के खोलने में मुझे किसी प्रकार की रुकावट नहीं है । तारतम के उपदेश को पाकर सब जातियाँ वर्ण व्यवस्था का भेद भाव त्याग कर हमारे पास (पन्ना) में इकट्ठा हो गई है । अब कोई यह नहीं कहता कि हमारा स्वामी अन्य है ।"

मीमांसक :—वेदों में यह कहीं नहीं लिखा है कि धणी जी का जोस खुदा का नूर तेज, श्यामा जी की आत्मा, हुकुम स्वरूप महम्मद

और मूल धाम की बुद्धि, इन पाँचों के संयोग से ईश्वर का अवतार माना जाता है यदि वेदों पुराणों में ऐसा लेख स्वामी जी ने पाया था तो लिखा क्यों नहीं जिसे सब कोई पढ़ कर आपके ईश्वर होने में विश्वास करते। और कुरान में भी ऐसा ही विश्वास किया जाता है कि वहाँ भी इन बातों का वर्णन नहीं होगा यदि होता तो इस्लाम मत वाले भी आपको आखरी महम्मद स्वीकार कर लेते। इन्होंने वेद पुराणों के कोई वाक्य प्रमाण रूप से अपने ग्रन्थों में नहीं लिखा कुरान की आयतों का सनंध नामक पुस्तक में उल्लेख अवश्य किया है किन्तु वहाँ भी विश्वास किया जाता है कि इनके सिद्धान्तों की पुष्टि नहीं होती जब ये कहते हैं कि वेद पुराणों में हमारे मत का प्रतिपादन है और वह लवलेश मात्र कहीं पाया नहीं जाता। अतः एक प्रमाण असत सिद्ध हाने से कुरान में भी उक्त सिद्धान्तों का वर्णन नहीं होगा यह विश्वसनीय है। और जो यह कहा गया कि धणी जी हमारे अन्दर आकर गुह्य अर्थ को प्रकाशित कर दिया है यह भी गलत है क्योंकि जिन गुह्य अर्थों का आपके हृदय में प्रकाश हुआ है वे सभी गुह्य सिद्धान्त इस पुस्तक में आ चुके हैं उन गुह्य अर्थों की मीमांसा करने पर एक भी प्रमाणित नहीं सिद्ध हो पाये। यदि उन गुह्य सिद्धान्तों को प्रमाणित करना था तो उन वेद वचनों तथा कुरान की आयतों का उल्लेख करते हुये उनके छिपे अर्थों को स्पष्ट करना चाहिये था। ऐसा न करने से केवल कथन मात्र से किये सब बातें वेद कुरान में लिखी है ऐसी बातें कभी प्रमाणित नहीं मानी जाती। अंधविश्वासियों ने ही ऐसी प्रमाण हीन बातों पर विश्वास किया है।

६७ चौ० में आप लिखते हैं कि गुरु देवचन्द्र ने उन गुह्य अर्थों को नहीं खोला मुझसे खोलवा कर विस्तार किया है। प्राणनाथ के जैसा उन्हें गुह्य अर्थ खोलने में संकोच रहा होगा कि शायद अपने

गोपनीय ज्ञान को हिन्दुओं के समक्ष प्रकाशित करता हूँ तो किसी को सन्देह न हो जाय इसी से देवचन्द्र ने गुह्य अर्थ को नहीं खोला। प्राणनाथ ने कृष्ण, ब्रह्म सृष्टि, अक्षर अक्षरातीत, परमधाम आदि कतिपय शब्दों के अर्थ का प्रकाशन करने का साहस किया और ग्रन्थों की रचना कर डाला रचना करते हुये भी इनकी आत्मा ने शाक्षी नहीं दिया जिससे ग्रन्थ को छपा कर प्रकाशित नहीं किया पन्ना में महाराजा छत्रसाल से छिपाया[1]। इनके मृत्यु के बाद भी समाज के लोगों ने अभी तक छिपा रक्खा है। जो छिपाने योग्य वस्तु होती है वह हमेशा ही संसार के सामने छिपी रहेगी कदाचित कुछ अंश प्रकाशित भी किये गये तो वे उसी स्थान पर सीमित रहेंगे जिस सीमा पर आज स्थित है। उसका विकास कभी नहीं हो सकता उसे विकसित करने पर दुनिया में अनादर होगा।

और इस बात का क्या प्रमाण है कि देवचन्द्र ने मृत्यु के बाद आपके शरीर में प्रविष्ट होकर गुह्य अर्थों को खोलवाया है। उन्होंने जीवित दशा पर इस्लाम धर्म का प्रकाश नहीं किया मरने पर देवचन्द्र आपके अन्दर आकर इस्लाम मत का प्रकाशन किया। ऐसे मिथ्या वादों पर बुद्धिमान मनुष्य को विश्वास नहीं करना चाहिये। फिर इसी चौ० में कहते हैं कि गुरु ने हमें तारतम मंत्र का प्रकाश भी दिया है जिससे गुह्य अर्थों को सुलझाने में कहीं रुकावट नहीं होती। तारतम मंत्र के प्रकाश को प्राप्त कर आपने जिस तरह गुह्य अर्थ सुलझाया है उसे सबों के समक्ष में प्रस्तुत किया जाता है (निजनाम श्री कृष्ण जी) निज का नाम अर्थात् प्राणनाथ का नाम श्री कृष्ण जी हैं किन्तु मंत्र के प्रकाश से उस कृष्ण शब्द का गुह्य अर्थ सुलझाने पर उसका वास्तविक अर्थ महम्मद होता है। क्या देवचन्द्र ने उक्त मंत्र का अर्थ यही पढ़ाया था। यदि इसी तरह गुरु ने पढ़ाया था तो

१—छिपाया इसे पूर्वार्ध भाग अ० ७ में देखिये।

मंत्र में कृष्ण शब्द रक्खा ही क्यों गया मंत्र में कृष्ण शब्द रखने से और उसका सैद्धान्तिक अर्थ दूसरा करने से स्पष्ट है कि हिन्दुओं को मोमिन समाज में लेने के लिये कृष्ण नाम का जाल फैलाया गया है। प्राणनाथ ने जिस तरह कृष्ण के गुह्य अर्थ का प्रकाशन किया है उसके निम्न प्रमाण है। खुलासा प्र० १२।

श्री ठकुराणी जी रूह अल्ला, महंमद श्री कृष्ण जी श्याम। सखिया रूहे दरगाह की, सुरत अक्षर फिरस्ते नाम ॥५३॥

श्री राधिका जी अल्लाह की रूह (आत्मा) अर्थात् खुदा की पत्नी है और श्री कृष्ण जी महम्मद हैं अर्थात् अल्लाह है और कृष्ण के साथ में रहने वाली सखियाँ लाहूत धाम की रूह अर्थात् मोमिन है और अक्षर के सुरत से उत्पन्न होने वाली कुमारिका सखियों का नाम फिरस्ता है। दूसरा प्रमाण खुलासा प्र० १३।

श्री कृष्ण जी ए व्रज रास मे, पूरे ब्रह्म सृष्टि मन काम। सोई सरूप ल्याया फुरमान, तब रसूल के हेलाया श्याम ॥७५॥

अर्थ :—श्री कृष्ण जी ने व्रज और रास के बीच सखियों के सृष्टि रचना रूप खेल देखने के मनोरथ को पूर्ण करके तदुपरान्त ११ वर्ष ५२ दिन बाद धणी जी के जोश खींच लेने पर वह कृष्ण अरब में जन्म लेकर कुरान शरीफ को ले आया जिससे वे ही कृष्ण रसूल-महम्मद कहे गये। लालदास ने भी स्वामी जी के सिद्धान्तों का उसी तरह अनुमोदन किया है जिस तरह श्रुतियों के अर्थ के अनुकूल उसके पीछे पीछे स्मृतियाँ चलती हैं। वे लिखते हैं। बीतक प्र० १० चौ० ८२। **तहाँ रास लीला करके, आये बराख श्याम।** अर्थात् वृन्दावन में रास क्रीड़ा खेल के कृष्ण अरब देश चले आये। अतः इन प्रमाणों से सिद्ध होता है कि प्राणनाथ ने इसी तरह गुह्य

ज्ञान का प्रकाशन करते हुये राधिका जी को खुदा की पत्नी और श्री कृष्ण को महम्मद अल्लाह का ही वास्तविक रूप माना है इनकी वास्तविकता हिन्दुओं के राधा कृष्ण से नहीं है। यदि इनकी वास्तविकता हिन्दुओं के राधा कृष्ण से होती तो श्री कृष्ण विष्णु का अवतार होने से विष्णु को सुन्नी मुसल्मानों की चरण रज की वंदना करने को न लिखते इसी प्रकार विष्णु को मोक्ष प्रदान करना न लिखते। अतः यह निभ्रन्ति सिद्ध है कि इनका हिन्दुओं के कृष्ण से कोई सम्बन्ध नहीं है जो सम्बन्ध जोड़ा भी गया है वह केवल स्वार्थ सिद्धि के लिये ही है। इसलिये जो हमारे भारतीय आर्य इस संप्रदाय में दीक्षित हों वे सतर्क हो जाँय और अपने स्वधर्म का पालन करें। क्योंकि भगवान श्री कृष्ण का ही यह कथन है (**स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः**) अपने धर्म के लिये मर जाना भी श्रेयस्कर है किन्तु पराये का धर्म भय को देने वाला है। उन्होंने गीता में पद-पद पर वैदिक धर्म की प्रतिष्ठा की है वह वेद ही उनका स्वधर्म है। स्वामी जी ने तो वेद धर्म छीनने के लिये अपना जन्म बताया है। ऐसे कटु शब्दों को सुन कर जिन व्यक्तियों के हृदय में आघात नहीं पहुँचता उन्हें भारतीय आर्य कहने में भी मुझे संकोच है। अतः यदि हम में अपने देश और जातीयता पर गौरव है तो अपने भारतीय आर्यों को सद् मार्ग का प्रदर्शन करते हुये असत मार्ग का उन्मूलन करें।

अस्तु पूर्वोक्त प्रमाणों से यदि यह भी स्वीकार कर लिया जाय कि श्री कृष्ण भी महम्मद हैं और धणी जी का जोश स्वामी जी में आने से वे कृष्ण रूप भी हैं और कृष्ण में महम्मद का रूप मानने से स्वामी जी भी महम्मद रूप हैं तो कृष्ण, महम्मद, प्राणनाथ इन तीनों के उपदेश में भिन्नता क्यों दिखाई देती है जब भगवान कृष्ण इस लोक में रहे तब उन्होंने कुरान के कलमा और तारतम का उप-

देश किसी को क्यों नहीं दिया बल्कि कुरान से विपरीत वेद सम्मत गीता शास्त्र का उपदेश दिया है। और न कृष्ण ने यही कहा कि लाहूत धाम से बारह हजार रूहे स्वप्न रूप सृष्टि देखने को आई हैं मैं उन्हें जागृत करने के लिये आया हूँ तथा यह भी नहीं कहा कि मैं आखर जमाने में खुदा का पैगाम लेकर वि० संवत् १६७५ में महंमद नाम से प्रगट होऊँगा। भागवत में भी उक्त बातों का उल्लेख नहीं है। तब ये इस प्रकार अनर्गल बातें कहने वाले कौन होते हैं। इन अनेक उक्तियों से सिद्ध होता है कि गोकुल में जन्म लेने वाला कृष्ण न महम्मद रूप है और न प्राणनाथ रूप ही है। पुनश्च कृष्ण के वैदिक सिद्धान्तों से आपके सिद्धान्त में महदन्तर दिखाई देता है जो कि इस ग्रन्थ के व स्वामी जी के ग्रन्थों के देखने से स्पष्ट हो जाता है इस प्रमाण से भी आपका कृष्ण होना नहीं पाया जाता।

इसी तरह इस्लाम मत से भी इनका महम्मद होना नहीं सिद्ध पाया जाता। क्योंकि प्रथम अरब वाले महम्मद ने कुरान में इन बातों का वर्णन नहीं किया कि रूहे अरस अजीम से स्वप्न रूप खेल देखने को आई है। मैं उन्हें जागृत करने के लिये आया हूँ। दूसरा यह कि खुदा देश विशेष लाहूत में सावयव रूप से स्थित सब सामग्रियों से युक्त है। तीसरा चन्दन माला पूजा आरती भोग तथा राज श्यामा नाम का जप करने का भी कुरान में विधान नहीं है। इन प्रमाणों से सिद्ध है कि ये महम्मद भी नहीं है। इन्होंने जो माला चन्दन पूजा आरती भोग आदि का आश्रय लिया है वह केवल हिन्दुओं को अपने मत में दीक्षित करने के लिये किया है। जब कि हिन्दुओं को अपने धर्म का चिह्न माला गुदड़ी करवा जनेऊ और वर्णाश्रम धर्म छोड़ने के लिये इन्होंने कहा है। जिसका प्रमाण निम्न है क्यामत नामा बड़ा प्र० ८।

तसबी गोदड़ी करवा, छोड़ो जनेऊ हिरस हवा ॥१७॥

प्राणनाथ ने कृष्ण कलेवर में जो अपने को महम्मद रूप से स्थित होना बताया है वह उक्त १७ चौ० से वैदिक मर्यादा के नष्ट करने के उपदेश से इनका कृष्ण कलेवर में होना नहीं पाया जाता। यदि ये कृष्ण में महम्मद रूप से होते तो व्रज में सखियों को १८ हजार इलंम लुदंनी का उपदेश देना क्यों भूल गये। और जब अरब में आप ही महम्मद रूप से थे तो कुरान में मोमिनो को तारतम मंत्र के आधार से जागनी लीला करना क्यों भूल गये। जब तीसरी बार जन्म लेकर पन्ना में आये तब पूर्व दो जन्मों की भूलों को सुधारा ऐसी भूले खुदा से होना सम्भव नहीं।

स्वामी जी का जो यह कथन कि तारतंम मंत्र के आधार से हम सब अर्थों का प्रकाशन कर रहे हैं। यह सर्वथा गलत है। क्योंकि हक के वेसक इलंम से आपने इस मंत्र का अर्थ महम्मद अल्लाह किया है जिससे सबों को उलझा दिया है मूल मंत्र में उलझने से उसकी अर्थ रूप प्रत्येक शाखाओं में उलझना स्वाभाविक है। इनमें एक और नवीनता देखी जाती है वह यह कि देवचन्द्र के मंत्र के अलावा अपना नाम जप करने का विधान बताया है।

इन्होंने समाज को अपना नाम जप करने के लिये परमधाम से सम्बन्ध जोड़ा है इसका कारण यह कि यदि खुदा का नाम राज नहीं बताया जायगा केवल अपने लिये कहा जायगा तो कोई विश्वास न करता। अतः वे अपनी चौ० में लिखते हैं। परिकर्मा प्र०३चौ० १३४।

हुओ संझा को अवसर, राज श्यामा जी बैठे सिनगार कर। मिनोमिने सिनगार करावे, येक दूजी क आगे धावे। उछरंगतियाँ आवे आगे, श्री राज श्यामा जी के पाउँ लागे॥

अर्थ :—परमधाम के बीच जब संध्या का समय होता है उस समय श्री राज श्यामा जी वस्त्राभूषणों से सिनगार कर बैठ जाते हैं

वहाँ आपस में मिलकर सब सखियाँ उनका शृङ्गार कराती हैं उत्साह से छलांगे मारती हुई राज श्यामा जी के आगे आकर उनके चरणों का नमन करती हैं। इस तरह खुदा के स्थान पर राज श्यामा जी के नमन करने का स्पष्ट प्रमाण है। राज शब्द संस्कृत है। व्याकरण में में राजृ दीप्तौ आत्मने पदीधातु से राजते यह रूप बनता है जिसका अर्थ राजते-शोभते-प्रकाशते वा ऐसा अर्थ सर्वत्र ग्रहण किया गया है। और सुबन्त में इसका रूप राजा बनता है जिसका प्रयोग क्षत्रिय अर्थ में हुआ है शब्द कोषों से भी ऐसा ही पाया जाता है। **(मूर्धाभिषिक्तो राजन्यो बाहुजः क्षत्रियो विराट)** इत्यमरः शास्त्रो में यह शब्द ईश्वर बोधक नहीं पाया जाया और इस्लाम मत में भी खुदा बोधक शब्द नहीं है। लोक में भी प्रजा के पालनकर्त्ता को राजा कहा जाना प्रसिद्ध ही है।

अस्तु इन्होंने राज शब्द खुदा का नाम बताकर राज श्यामा को अपने अन्दर प्रविष्ट होना बताया है। इसी दृष्टिकोण को लेकर समाज को अपना ही नाम जप करने का उपदेश दिया है। इतिहास के लेखक लालदास ने इन्हीं के लिये कई जगह राज शब्द का प्रयोग किया है। पन्ना में जब इनकी सेवा पूजा आरती की जाती थी उस समय का वृत्तान्त वे लिखते हैं। बीतक आठ पहर की वृत्ति प्र० २।

उठत पिउ पलंग से, बखत अरु न उदे। सब हजूरी हाजर रहे, सेवा करे एह ॥१६॥ अगीठी इन समे, ल्यावे हरीदास, तपावे श्री राज इन समे, ए सेवा हे खास ॥१७॥ ले रूमाल रतन बाई, भिजाय ताते जल। श्री राज नेत्र पोछत, ये सेवे दिल निरमल ॥१८॥ बी० वृत्त प्र० ४।

मंग जुथ सैयंन के, घेर चले साथ। गावे बानी श्रीराज की, जाके राजे पकड़े हाँथ ॥६१॥ सैयां राज रिझावत, वचन

मीठे बोल । श्री राज रिझावै सैयंन को, कोई नाहीं न ये सुख तोल ॥६२॥ सुख देत सनेह सों, कै भाँतो कर हेत । अति मीठी रसना बोलत, धाम धणी सुख देत ॥६६॥

अर्थ :—लालदास लिखते हैं प्रियतम (स्वामी जी) सूर्योदय के समय जब पलंग से उठते हैं उस समय सभी सेवा करने वाली उपस्थित रहती हैं उनकी निम्न सेवायें हैं। हरीदास अंगीठी में आग जलाकर श्री राज को तपाते हैं यही इनकी प्रत्येक दिन की सेवा है और रतन बाई रूमाल का गरम जल में भिगो कर श्री राज जी के नेत्रों को पोछती हैं इस सेवा का ये अपने पवित्र हृदय से करती हैं। और सखियों का झुण्ड राज को घेरकर चलता है राज जी को प्रसन्न करने के लिये उन्हीं के गुणों का गान करती है प्रसन्न होकर राज क्रमशः जिस किसी सखियों का प्रेम से हाँथ भी पकड़ लेते हैं अर्थात् भक्त सखियों को अपनी शरण में ले लेते हैं। सभी सखियाँ मधुर बचनों के द्वारा राज को प्रेम से रिझाती हैं। इसी तरह श्री राज भी सखियों को प्रसन्न करते हैं परस्पर हास विलास से जो सुख प्राप्त हो रहा है। उसकी संसार में कोई तुलना नहीं है। धाम धणी (स्वामी जी) अत्यन्त मधुर वचन बोलते हुये तथा दया का भाव दिखाते हुये स्नेह से कई प्रकार का सुख दे रहे हैं।

अस्तु इन प्रमाणों से सिद्ध है कि प्राणनाथ स्वामी के ही लिये धाम धणी और राज शब्द का प्रयोग किया गया है। और उनकी पत्नी बाई जू राज के लिये श्यामा शब्द का प्रयोग किया गया है। अतः समाज अधिकतर राज श्यामा नाम का ही जप करता है। जो लोक और वेद दोनों से विरुद्ध पाया जाता है। स्वामी जी की वाणी व ऐतिहासिक गतिविधियों के अध्ययन से स्पष्ट हो जाता है कि इन्होंने वास्तविक कृष्णोपासना की भावना को परिवर्तित कर भारतियों के मष्तिस्क में एक नवीन सुन्नी समाज की भावना को स्थापित

किया है। उपर्युक्त प्रमाणों से स्पष्ट है कि प्राणनाथ जी ने स्वयं अपने को और अपने स्त्री को राधा कृष्ण बताकर समाज में पुजवाया है।

इति निजानन्द मीमांसायां उत्तरार्ध भागे जागनी लीला वर्णनं नाम नवमोऽध्यायः ६।

अभ्यास के लिये प्रश्न

१—धाम की लीलाओं का मिथ्यात्व होना कैसे सिद्ध पाया जाता है।

२—स्वामी जी के वचनों द्वारा ही सम्प्रदाय का मूलाधार नष्ट होना क्यों बताया गया।

३—ब्रह्म सृष्टियों का धाम से निधि ले आना क्यों नहीं सिद्ध पाया जाता।

४—मुक्तात्माओं के नाम रूप के विषय में अपने विचार व्यक्त कीजिये।

५—८४ चौ० के कथन पर अपने विचार लिखिये।

६—स्वामी जी धाम की सखियों को नहीं पहचानते थे यह किस प्रमाण से कहा गया।

७—स्वामी जी अपने को ईश्वर बताते हुये किस प्रकार गुह्य अर्थों का प्रकाशन किया है।

८—सातवें प्रश्न के आधार से ग्रन्थकार का आशय प्रकट कीजिये।

६—राज श्यामा शब्द की समीक्षा कीजिये।

१०—यदि हो सके तो समाज कल्याण के लिये निबन्धों का संकलन कर प्रकाशित कीजिये।

अथ दशमोऽध्यायः १०

स्वप्न सृष्टि

इस अध्याय में स्वप्न सृष्टि पर विचार किया जायगा। स्वामी जी के बनाये हुये ग्रन्थों में ज्ञान की कोई मौलिकता नहीं पाई जाती। इनके मत में तत्व निरूपण जगत, जीव, ईश्वर और अन्य पदार्थों पर कोई विचार नहीं पाया जाता। किन्तु यह अवश्य उल्लेखनीय है कि आप जगत, जीव, ईश्वर को अनित्य विनाशील अवश्य मानते हैं। "सिनगार प्र० १ चौ० ८।

सत लोक मृत लोक दो कहे, और स्वर्ग कह्या अमृत। जो नीके किताबे देखिये, तो ये सब उड़ती असत ॥८॥

कलस प्र० २४।

वास्ना उत्पन्न अंग थे, जीव नीद की उत्पत्ति। कोई न छोड़े घर अपना, या विध सत असत ॥२६॥

अर्थ :—सत लोक मृत्यु लोक ये दो कहे गये हैं और तीसरा स्वर्ग को अमृत कहा गया है। यदि अच्छी तरह से पुस्तकें देखी जाय तो ये सब असत होने से नष्ट हो जांयगे।८। मोमिन (ब्रह्म सृष्टि) की उत्पत्ति खुदा के अंग से है और संसार के जीवों की उत्पत्ति निद्रावस्था से है इस कारण जीवात्मा निद्रा के घर को और वास्ना (मोमिन) खुदा के घर को नहीं छोड़ सकते। इस तरह जीवात्मा असत और वास्ना सत है ।२६।" उक्त चौपाइयों से जगत, जीव, ईश्वर इन तीनों को असत विनासशील कहा गया है। इन तीनों को

अनित्य मानने का कारण यही हो सकता है कि इन्होंने जगत् की उत्पत्ति रूहो, व अक्षर ब्रह्म के स्वप्न से मानी है स्वप्न से उत्पन्न वस्तु स्वतः विनास शील होते हैं। यदि तीनों को नित्य मानते हैं तो जीवात्मा जगत की उत्पत्ति स्वप्न से हुई यह नहीं कह सकते यह न कहने से जिस मूलाधार स्वाप्निक सृष्टि को लेकर इनके सम्प्रदाय की नीव तैयार होती है वह न तैयार हो पावेगी। इसके अलावा नवीन सम्प्रदाय की कल्पना का कोई आधार ही नहीं बन पाता। इसी कारण इन्होंने खुदा के घर में बारह हजार रूहों को स्वप्न रूप से जगत देखने के लिये कहा है। "खिलवत प्र० ५।

कहे हुकुम किया वतंन से, सो उपजत अंग असल। जैसा देखत सुपंन में, ये जो बरतत इत नकल ॥३७॥ खिलवत प्र० ४ असल हमारी अरस में, ताय ख्वाव देखावत तुम। जैसा उत ओ देखत, तैसा करत इत हम ॥४२॥ खिलवत प्र० १ जोर कर जुदागी कर दई, और जोर कर जगावत तुम। केहेनी सुननी मेरी कछू न रही तो क्यों बोलूँ मे खपंम ॥२६॥

अर्थ :—हक (खुदा) अपने वतंन (घर अथवा धाम) से जैसा हुक्म करते हैं वैसा ही रूहो के असल शरीर या अन्तष्करण में उत्पन्न होता है तदनुकूल जैसा वे स्वप्न देख रही है वैसा ही यह सृष्टि रूप नकल बरत रहा है।३७। स्वामी जी कहते हैं कि हम लोगों का असली शरीर खुदा के घर में है उस हमारे असली शरीर को खुदा स्वप्न दिखा रहा है जैसा अपने मूल शरीर में रूहे स्वप्न देख रही हैं वैसा ही हम सब रूहें यहाँ इस संसार में कर रही हैं।४२। खुदा ने इस स्वप्न रूप संसार को दिखा कर बड़े जोरों से जुदागी कर दिया है और खुदा खुद इस स्वप्न रूप संसार में आकर हम मोमिनो को

इलंम लुदंनी द्वारा बड़ी जोरो से जागृत कर रहा है रूहे कहती हैं कि सर्वस्व आपके आधीनस्थ होने से मेरा कहना सुनना कुछ शेष नहीं है। अतः अय खषंम अब मैं कुछ नहीं बोलना चाहती ३६।"

मीमांसक :—स्वामी जी ने इस जगत को रूहों का स्वप्न माना है और उक्त चौ० में उस स्वप्न सृष्टि का प्रेरक खुदा को बताया गया है। प्रश्न यह उठता है कि खुदा इस तरह की प्रेरणा क्यों करता है। इसका उत्तर स्वामी जी ने यह दिया है कि रूहें धाम में विशेष अज्ञान दशा पर थीं ❀ उन्हें खुदा व धाम की अपार बड़ाइयों का ज्ञान न था। अतः सत वस्तु खुदा का व असत वस्तु संसार का जिससे इन्हें सम्यक ज्ञान हो जाय इसलिये खुदा ने धाम के बीच इनके असल शरीर में स्वप्न सृष्टि रचना की प्रेरणा है की।.........

अस्तु यदि कुछ काल के लिये यह भी मान लिया जाय कि खुदा ही इनके हृदय में स्वप्न सृष्टि का प्रेरक है और यह समग्र जगत रूहों का स्वप्न है तो खुदा उनके स्वप्न रूप ब्रह्मांड में आकर जागृत क्यों करता है। यदि रूहों को स्वप्न से उसे जागृत करना अभीष्ट है तो वह खुदा धाम ही में जहाँ उनका असल शरीर है वहाँ ही इलंम लुदंनी कलमा तारतम द्वारा उपदेश देकर जगा देता। यदि इन उपदेशों से वे जागृत न होती तो प्रत्येक रूहों का हाँथ पकड़ कर उठा देते जिससे उनकी स्वाप्निक निद्रा दूर हो जागृत हो जाती। सोते हुए व्यक्ति को जागृत करने का केवल यही तरीका हो सकता है कि उस सोये हुये व्यक्ति को उसी स्थान का निवासी जगा सकता है। रूहों को स्वप्न परमधाम में हो रहा है और स्वामी जी खुदा के रूप में लोक लोकान्तरों का भेदन कर इस मृत्यु लोक में उन्हें जागृत करने का उपदेश देते हैं। ऐसी असम्भव बातें कभी सम्भव नहीं हो सकती।

❀ रूहे धाम में अज्ञान दशा पर थी इस कथानक को उत्तरार्ध भाग अ० १ में देखिये।

किन्तु खेद तो उन व्यक्तियों पर है जो इन तथ्य हीन बातों पर विश्वास किये बैठे हैं। कोई कोई ऐसा भी कहा करते हैं कि ईश्वर सर्व समर्थ होने से सब कुछ कर सकता है। इस प्रकार का कथन वही करते हैं जिनके पास अपनी कल्पना का कोई दूसरा उत्तर नहीं है। क्या सत वस्तु ईश्वर कभी असत हो सकता है या असत वस्तु (आकाश पुष्प, वंझा पूत, शशक शृङ्ग) क्या कभी सत हो सकते हैं उक्त वस्तुयें यदि अपने रूप को कभी भी नहीं त्यागतीं तो खुदा भी स्वप्न के विकार में प्रवेश कर जागृत करने नहीं आ सकता। सोते हुये व्यक्ति के स्वप्न में कोई दूसरा व्यक्ति प्रवेश कर जागृत करे यह व्यवहार लोक में भी नहीं देखा जाता। यह ज्ञान तो साधारण मनुष्य को भी है कि सोने वाले व्यक्ति को जगाया जाता है स्वप्न के विकार को कोई जगाने नहीं जाता। स्वप्न तो अन्त:करण में हो रहा है वहाँ इतर व्यक्ति पहुच ही कैसे सकता है। खुदा के रूप में अवतरित हो स्वामी जी को इतनी परेसानी उठाना पड़ा कि रूहों को जागृत करने ने लिये प्रत्येक के दरवाजे जा जाकर (**उठो मोमिनो क्यामत आई**) का नारा लगाना पड़ा।

स्वामी जी ने रूहों की गणना बारह हजार बताया है इससे प्रत्येक रूह को भिन्न भिन्न स्वप्न होना चाहिये क्योंकि जब स्वप्न द्रष्टा अनेक है तो स्वप्न सृष्टि भी अनेक होना चाहिये। अर्थात् बारह हजार रूहों के लिये बारह हजार लोकों की सृष्टि होना चाहिये। किन्तु बारह हजार लोकों के रचना के बारे में स्वामी जी ने कुछ नहीं लिखा इस सम्बन्ध में प्राचीन गणना के अनुसार चौदह लोक ही कह कर रह गये एक ही समान सब रूहों को स्वप्न हो यह भी अनुभव से नहीं सिद्ध होता। यदि समस्त विश्व रूहो का स्वप्न इन्होंने माना है तो यह भी नहीं लिखा कि मैं प्रत्येक लोक में खुदा

का अवतार लेकर कलमा तारतम से रूहों को जगा रहा हूँ। मृत्यु लोक में केवल भरत खण्ड में यत्र तत्र जहाँ प्रणामी सम्प्रदाय के लोग हैं वहाँ ही रूहे स्वप्न देख रही यह कैसे सम्भव हो सकता है क्योंकि समस्त विश्व उनके स्वप्न से उत्पन्न होने के कारण उनका सर्वत्र देखना सिद्ध होता है और सभी प्राणी रूह मोमिन कहे जा सकते हैं उनमें जीवात्मा का भेद ब्रह्म सृष्टि, ईश्वरी सृष्टि, जीव सृष्टि जो भेद माना गया है वह कल्पित हो जाता है। जीवात्मा में भेद करने से इनका उपदेश एक देशीय हो जाता है। स्वामी जी को तो यह कहना चाहिये था कि हमारे धाम की सब रूहें स्वप्न रूप से अवतरित हुई है और मैं पाताल लोक से वैकुण्ठ लोक पर्यन्त नूर महंमदी झण्डा कायम कर प्रत्येक रूह को जागृत कर रहा हूँ किन्तु ऐसा आपके ग्रन्थों में कहीं नहीं पाया जाता। केवल मृत्यु लोक के भारत वर्ष देश ही भर में उपदेश देना चीन, जापान, रूस, अमेरिका, इंगलैंड आदि विभिन्न देशों में उपदेश न होने से इनका यह उपदेश एक देशीय हो जाता है। अस्तु सर्वत्र उपदेश न होने से भी रूहों के स्वप्न से सृष्टि रचना मानना युक्ति संगत नहीं है। और ४२ चौ० में जो कहा कि स्वप्न को दिखाने वाला खुदा है तो खुदा ज्ञानवान होने के कारण ऐसी मिथ्या बातों का प्रेरक नहीं हो सकता। इससे उक्त चौपाइयों की रचना गलत सिद्ध हो जाती है। ये सब मिथ्या कल्पनायें सम्प्रदाय प्रवर्तक की ही प्रतीति होती है। "खिलवत प्र० ७।

सकन आये खेल देखने, ये जो रूहे आइयाँ विछुड़।
॥२६॥

अर्थ :—ये जो रूहे खुदा से वियोग प्राप्त कर संसार रूप खेल देखने को आई है इस विषय में कोई विषय में कोई सन्देह नहीं है।२६।"

मीमांसक :—स्वामी जी रूहों के स्वप्न रूप संसार को देखने के लिये बारबार पुष्टि करते हुये कहते हैं कि इस विषय में किसी को सम्भव नहीं करना चाहिये। इस कथन से इन्हें अपनी कल्पना का भय है कि कोई इन बातों को झूंठा न मान जाय यदि किसी को इस विषय में सन्देह हुआ तो हमारे मतवाद का मूलाधार नष्ट होने से उसकी सभी शाखायें नष्ट प्राय हो जायगी। जबकि रूहे संसार को स्वप्नावस्था में देख रही है तो स्वप्न देखी सुनी अनुभव की हुई वस्तुओं का ही होता है इससे मालूम होता है कि परमधाम में भी सुख, दुख, जन्म, मृत्यु, उत्तम, मध्यम, योनि आदि का अनुभव पूर्वावस्था अर्थात् जागृत अवस्था में रूहो को रहा होगा तब तो वे उसी तदनुरूप स्वप्न देख रही है क्योंकि जैसा उनके मूल सरूप में हो रहा है उसी अनुकूल यह स्वप्न रूप नकल बरत रहा है। अत: पहली हमारी युक्ति से और दूसरी स्वामी जी के इसी आशय की ३७ और ४२ चौ० के कथन से यह सिद्ध हो जाता है कि परमधाम में भी जन्म मृत्यु सुख दुखादि भौतिक धर्म है। यहाँ इन धर्मों के पाये जाने से मृत्यु लोक और परमधाम में अन्तर ही क्या रह गया।

स्वामी जी ने रूहों को परमधाम में स्त्री रूप माना है इस लोक में भी अपने शिष्यों को सखी के रूप से उपासना करने का विधान बताया है (**सखी भाव भरिये भरतार**) यदि रूहें वहाँ सखी रूप है तो वे अपने को स्वप्नावस्था में पुरुष रूप से देखे यह भी अनुभव शून्य है। इन्होंने धाम की कुछ सखियों के नाम गिनाया भी है जैसा कि अपने को इन्द्रावती अपने गुरु देवचन्द्र को सुन्दरबाई औरंगजेब को साकुमारबाई छत्रसाल को साकुण्डलबाई आदि यद्यपि इन्हें बारह हज़ार सखियों का नाम लिख कर सबों का परिचय देना चाहिये था ऐसा न करने से सन्देहात्मक ज्ञान प्रतीत होता है। यदि निश्चयात्मक ज्ञान होता तो दो चार के बताने से सबों का नाम बताया जा

सकता था। धाम की रूहे स्त्री रूप होते हुये यहाँ पुरुष रूप से अपने को स्वप्न में कैसे देखने लगी लोक के स्वप्न में ऐसी विपरीतता नहीं देखी जाती।

जो मनुष्य सोते हुये स्वप्न देखता है वह स्वत: अपनी स्वप्नावस्था का उपभोग कर जागृत हो जायगा। खुदा को उसके स्वप्न में प्रवेश कर जागृत करने की कौन सी आवश्यकता है। यह तो प्राकृतिक नियम है प्राणी की जागृत स्वप्न सुषुप्ति ये अवस्थायें क्रम से आती और जाती है। रूहों का स्वप्न भंग होने पर वे स्वत: जागृत अवस्था मे आ जाती आपको इतना प्रयास करने की क्या आवश्यकता थी। संसार में प्रयास उसी वस्तु के लिये किया जाता है जिस वस्तु के प्रयास से परिणाम में कुछ सार्थकता हो। संसार में निरर्थक श्रम करते हुये कोई व्यक्ति नहीं पाया जाता किन्तु आपका जागनी उपदेश रूप श्रम निरर्थक प्रतीत होता है। "खिलवत प्र० १२।

जब याद तुम्हें जाऊँगा, तब ही बैठोगे जाग। गये आये कहूँ नहीं, सब रूहे बैठी अंग लाग ॥३७॥

अर्थ :—परमधाम से रूहे कहीं भी न गयी हैं और न उन्हें कहीं से आना ही है वे तो सभी सखियाँ एक दूसरे का अंग स्पर्श (पकड़) कर बैठी है जब उन्हें खुदा की याद आयेगी उसी समय स्वप्न से जागृत हो धाम में बैठ जाँयगी।"

मीमांसक :—उक्त कथन से स्वामी जी का सम्प्रदाय प्रवर्तन करना १—रूहों को प्रबुद्ध करने के लिये अठारह हजार वाणी का उपदेश देना २—पूजा राज श्यामा नाम का जप करना ३—पन्ना नौतन पुरी आदि स्थानों को तीर्थ भूमि मान कर वहाँ जाना ४—इत्यादि सभी धार्मिक कार्य व्यर्थ हो जाते हैं। क्योंकि उक्त चौ० के अनुसार जब रूहों को खुदा की याद आयेगी उसी समय वे स्वप्नावस्था से जागृत हो धाम में बैठ जायगी वे तो परमधाम से

कहीं गयी आई नहीं जब कहीं अन्यत्र गयी नहीं तो उन्हें तारतम द्वारा जागृत कर धाम में ले आने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता यदि कोई धाम से आता तो उसे उपदेश भी दिया जा सकता था। अस्तु स्वामी जी ने अपने वचनों द्वारा ही अपनी साम्प्रदायिक लीला खतम कर दिया। जबकि आपका यह कथन है कि हम लोग धाम से कहीं गये आये नहीं हैं। तो बुद्ध रूप से अपने को नौतन पुरी में प्रगट होना क्यों लिखते हैं। तथा धाम लीला को प्रगट करने की प्रतिज्ञा क्यों करते हैं। क्या आप धाम की इन्द्रावती सखी नहीं हैं। यदि हैं तो यह क्यों लिखते हैं कि हम लोग कहीं गये आये नहीं हैं। यदि सखी नहीं हैं तो यह अपनी रचना में क्यों लिखा कि मुझ इन्द्रवती सखी में धणी जी का जोश आया। तथा धाम में रूहों की स्वाप्निक कथायें कौन कह रहा है। इस तरह स्वामी जी की रचनाओं में सर्वत्र परस्पर चौपाइयों से विरोध पाया जाता है। तथा वक्तव्य विषयों में कोई तथ्य न पाये जाने से सभी विषय अप्रमाणित सिद्ध हो जाते हैं।

सृष्टि रूप पंच महाभूतों की रचना किसी के स्वप्न द्वारा हुई यह किसी शास्त्र का सिद्धान्त नहीं है। यद्यपि इन्होंने भारतीयों को अपने सम्प्रदाय में मिलाने के लिये यह कहा है कि आप लोग यह न समझे कि हमारे सिद्धान्तों का शास्त्रों में उल्लेख नहीं है जो मैं कह रहा हूँ उन सब विषयों का शास्त्रों में वर्णन है किन्तु उसे मोमिन के सिवा अन्य जीव सृष्टि जिनकी बुद्धि अत्यन्त तुच्छ है वे कैसे जान सकते हैं। उक्त आशय की चौ० निम्न है। किरतन प्र० ७३। चौ० २६।

जिन जानों शास्त्रों में है नहीं, शास्त्रो में सब कुछ।
परजीव सृष्टि क्या जानही, जिनकी अकल है तुच्छ॥

इस चौपाई के कथनानुकूल स्वामी जी के कोई भी सिद्धान्तों का शास्त्रों में वर्णन नहीं पाया जाता। अशिक्षितों को धोखा देकर अपने सम्प्रदाय में दीक्षित करने के लिये केवल कथन मात्र के लिये कह दिया करते हैं कि हमारे इन विषयों का शास्त्रों में भी वर्णन है। किन्तु अपने सिद्धान्तों की पुष्टि के लिये शास्त्रों के एक वाक्य भी प्रमाण रूप से नहीं लिखा। और जो इनका यह कथन है कि जीव सृष्टि उन शास्त्रों के अर्थ को क्या जाने। यहाँ पाठकों को यह ध्यान रखना आवश्यक है कि इन्होंने जीव सृष्टि यह नाम किसका रक्खा है इनके मत के अनुकूल यह नाम आर्य भारतीयों का रक्खा गया है ऐसा मानने पर यदि आर्यों की बुद्धि तुच्छ है शास्त्रों के अर्थ को नहीं समझ पाती तो मोमिनो ने उनके अर्थों का प्रकाशन क्यों नहीं किया। **(मोमिन उतरे नूर विलंद से)** इस चौ० के अनुसार वे तो परमधाम से अवतरित हुये हैं वे ही शास्त्र के अर्थों का प्रकाशन कर देते अथवा प्रकाश नामक ग्रन्थ की ८५ वी चौ० में में स्वामी जी ने अपने को (महामति) सब से बड़ी बुद्धि वाला खुदा का रूप बताया है। जिससे आप ही प्रत्येक शास्त्रों की टीका कर अपने सम्प्रदाय के सिद्धान्तों को प्रगट कर देते। इस प्रकार न कर आर्य लोग तुच्छ बुद्धि के हैं शास्त्र के अर्थ को नहीं जानते यह स्वामी जी का कथन निरर्थक है।

दूसरा यह भी कि आपका जन्म विक्रमाब्द १६७५ में हुआ और शास्त्र बहुत प्राचीन है इनकी रचना काल से लेकर आज तक किसी आर्य जाति ने शास्त्र के अर्थ को नहीं जाना केवल मोमिन ही उसके अर्थ को जानते हैं। इस प्रकार के कथन को कौन मान सकता है।

"पूर्व पक्षी :—यहाँ जो यह कहा गया कि स्वामीजी के सिद्धांतों का शास्त्रों में कहीं भी प्रतिपादन नहीं है यह गलत है। क्योंकि प्रकास नामक ग्रन्थ के ३६ प्रकरण में कृष्ण उपासना का ही प्रति-

पादन है तो क्या कृष्ण उपासना का शास्त्र समर्थन नहीं करता।"

उत्तर पक्षी :—कृष्णोपासना तो शास्त्र सम्मत है ही। किन्तु इनकी उपासना शास्त्रानुकूल नहीं है क्योंकि इन्होंने व्रज वाले कृष्ण को महम्मद ही कहा है उसी कृष्ण के मथुरा, द्वारिका जाने पर उसे महम्मद न कह कर विष्णु रूप कहा है और व्रज वाले कृष्ण को विष्णु नहीं कहा। जिस स्थल पर उन्होंने कृष्ण कलेवर में धणी जी का जोश प्रवेश होना कहा है उसे महम्मद ही कहा गया है। और (**महंमद नूर हक का**) इस चौ० के अनुसार धणी जी (अल्लाह) में महम्मद से एक रूपता सिद्ध की गई है। व्रज वाले कृष्ण से जो यह सम्बन्ध जोड़ा गया है वह भ्रामक है। आर्य जाति के रुचि के अनुकूल होने के कारण उनकी स्वाभाविक प्रवृत्ति को दूसरी दिशा पर मोड़ कर अपने मत में दीक्षित करने का एक तरीका अपनाया है। कृष्ण में इनकी वास्तविकता अल्लाह, महम्मद पर ही निर्भर करती हुई दृष्टिगोचर होती है। अस्तु इसी कारण से कहा गया है कि स्वामी जी के सिद्धान्त शास्त्रों में कोई भी नहीं पाये जाते। इन विषयों को भली भाँति समझने के लिये पूरा ग्रन्थ अध्ययन अपेक्षित है।

इति निजानन्द मीमांसायां उत्तरार्ध भागे [स्वप्न सृष्टि वर्णनं
नाम दशमोऽध्यायः १०

अभ्यासार्थक प्रश्न

१—स्वामी जी जगत, जीव, ईश्वर, इन तीनों को अनित्य क्यों माना है।

२—धाम में स्वप्न देखने वाली रूहो को जागृत करने के लिये खुदा का आना क्यों सम्भव नहीं।

३—बारह हजार रूहो को एक ही प्रकार स्वप्न होना क्यों संभव नहीं।

४—स्वप्न देखने से मृत्यु लोक और परम धाम में कोई अन्तर नहीं यह क्यों कहा गया।

५—सिद्ध कीजिये कि स्वामी जी के वचनों द्वारा ही उनकी साम्प्रदायिक लीला खतम हो जाती है।

६—शास्त्रों के अर्थ को जीव सृष्टि नहीं जानते इस विषय में अपने विचार व्यक्त कीजिये।

—:०:—

अथ एकादशोऽध्यायः ११

स्वप्न सृष्टि

स्वामी जी के हर एक ग्रन्थों में स्वप्न सृष्टि का वर्णन मिलता है। किन्तु अनुभवादि प्रमाणों द्वारा इसमें कोई सत्यता नहीं पाई जाती। यदि पंच महाभूतों व समस्त विश्व की उत्पत्ति रूहों के स्वप्न से मानी जाती है तो यहाँ स्वप्न न होना चाहिये। स्वप्न को भी स्वप्न हो यह अनुभव शून्य है संसार में मनुष्य को स्वप्न होता है इसलिये यह समस्त विश्व किसी का स्वप्न नहीं हो सकता। संसार की उत्पत्ति स्वप्न से मानने पर वेद वाक्यों से भी विरोध होता है। (श्रुति एतस्मादात्मन आकाशः शंभूतः आकाशाद्वायुः)

वायोरग्निः अग्नेरापः अद्भयः पृथ्वी । इन वेद वचनों के अनुसार पंच महाभूतों की उत्पत्ति ईश्वर से मानी गई है। अतः यह किन्हीं प्रमाणों द्वारा नहीं सिद्ध किया जा सकता कि यह संसार किसी का स्वप्न है। "खिलवत[1] प्र० ११।

हक के दिल में उपज्या, मैं देखाऊँ अपना ईस्क। और देखाऊँ साहेबी, रूहे जानत नही मुतलक ॥८॥

अर्थ :—स्वामी जी कहते हैं कि खुदा के दिल में ये बातें उत्पन्न हुई कि मैं अपना ईस्क (प्रेम) और साहेबी रूहो को दिखाऊँ क्योंकि ये रूहें निश्चय ही कुछ नहीं जानती।"

मीमांसक :—खुदारागादि विकारों से रहित होने के कारण उसका किसी वस्तु या प्राणी पर प्रेम नहीं हो सकता इसी प्रकार अभिमान रहित होने के कारण दूसरे का अपना बड़प्पन दिखाने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता। फिर स्वामी जी स्वाप्निक सृष्टि रूप मृत्यु लोक में उत्पन्न होकर खुदा के दिल की बातों को कैसे जान गये स्वप्न का ज्ञान स्वतः मिथ्या होता है मिथ्या ज्ञान से सत्य स्वरूप खुदा की दिल कीं बातों का ज्ञान होना भी मिथ्या ही है। ईश्वर अतीन्द्रिय वस्तु होने से तुम्हारे मन, बुद्धि का विषय नहीं हो सकता आप अपने ही जैसा मायिक गुणों का आरोप शुद्ध ब्रह्म में कर रहे हैं साहेबी छोटा बड़ा आदि व्यवहार मानवीय लीला है। उसके अद्वितीय होने से तथा उससे भिन्न किसी वस्तु की वास्तविकता न होने से उसमें छोटे बड़े का कोई प्रश्न ही नहीं उठता। छोटे बड़े उस स्थान पर हो सकते हैं जहाँ एक से भिन्न वस्तु हो जहाँ भिन्नत्व धर्म होगा वह मायिक होगा जैसे आपके मत में हक रूहे श्यामा

१—खिलवत प्राणनाथ के चौदह ग्रन्थों में से एक है जिसका अक्षरार्थ होता है परलोक में इनके बैठने का सजा सजाया कमरा।

आदि विभिन्न धर्मों के वर्णन से सब मायिक पदार्थ हो जाते हैं। ईश्वर की सिद्धि तो उसे अद्वितीय मानने से ही होगी। और जो चौ० के चौथे चरण में कहा गया कि रूहे निश्चय ही कुछ नहीं जानती इस कथन से रूहों का अज्ञानपना सिद्ध होता है। उनमें अज्ञानता के प्रतिपादन करने से वे ब्रह्म धामस्थ मुक्तात्मा नहीं कही जा सकती। "खिलवत प्र० ११।

तिन वास्ते हके पैदा किया, दई दूर जुदागी जोर। और नजीक बैठाये सेहेरग से, यो दखाया खेल मरोर ॥५३॥

इसी अज्ञानता के कारण हक (खुदा) ने इस स्वाप्निक सृष्टि की रचना की और अत्यन्त दूर करके हम लोगों को अलग कर दिया यद्यपि सेहेरग (विचार करने) से हम सब खुदा के समीप ही बैठी हैं तो भी यह मायावी खेल का ऐसा मरोड़ (चक्कर) है कि मानो खुदा से बहुत दूर हो गई हूँ।"

मीमांसक :—यदि खुदा ने रूहों के अज्ञानता के कारण धाम से अलग कर दिया तो जिस तरह संसार के जीव अपनी अज्ञानता के कारण ईश्वर से दूर है उसी तरह आपके धाम की रुहें भी हुई। संसारी जीव और मुक्तात्मा में अन्तर ही क्या रह गया। और ज्ञान वानो के लिये ईश्वर इस लोक में भी प्रत्येक प्राणियों के हृदय में स्थिति है उसी तरह अज्ञानियों के लिये शरीर में स्थित होने पर भी अत्यन्त दूर है। श्रुति का भी यही कथन है कि ईश्वर प्रत्येक प्राणी के हृदय में स्थित है। **(यो आत्मनितिष्ठन यं आत्मनो न वेद यस्यात्मा शरीरं यो आत्मन्यन्तरोयम यत्येषत आत्मान्त-र्याम्यमृतः)** जो जीवात्मा में स्थित है जिसको जीवात्मा नहीं जानता जो जीवात्मा उसका शरीर (रहने का घर) है जो जीवात्मा के

अन्दर स्थित होकर उसका नियम न करता है वह परमात्मा तेरा अन्तर्यामी और अमृत स्वरूप है। इसी तरह गीता में भगवान के वाक्य भी हैं (**देहेस्मिन पुरुषः परः**) इस देह में वह पर पुरुष (परमात्मा) स्थित है। इत्यादि वचनों से ज्ञानवानो के लिये वह खुदा यहाँ भी अत्यन्त समीपस्थ है। और अज्ञानियों के शरीर स्थित होने पर भी अत्यन्त दूर है। श्रुति (**दूरात्सुदूरे तदि हान्तिके च पश्यत्स्विहैव निहितंगुहायां**) वह शरीर इस हृदय रूपी गुहा में स्थित होने के कारण अत्यन्त समीप में है और ज्ञान हीन मनुष्यों के लिये अत्यन्त दूर भी है। अस्तु स्वामी जी ने रूहों के विषय में लौकिक व्यवहार के समान ही , सब कुछ वर्णन किया है उनमें मुक्तात्मा के कोई लक्षण न पाये जाने से वे संसारी जीवों के सदृश ही है। "खिलवत प्र० ११।

मिनोमिने करे होसियारियाँ, हक खेल देखावे जुदागी।
एक कहे दूजे को मुख थे, रहिये लपटाय अंग लागी ॥३६॥

अर्थ :—परमधाम में स्वाप्निक खेल देखने की तैयारी में रूहे एक दूसरे को सावधान करती हुई कह रही हैं कि हक हम सबों को जुदागी का खेल दिखा रहा है इसलिये हम सब कोई एक दूसरे के अंगों से चिपक जाय।"

मीमांसक :—स्वामी जी यदि स्वप्न रूप से रूहों का सांसारिक खेल देखना मानते हैं तो स्वप्न के देखने से उनका धाम से अलग होना नहीं पाया जाता। क्योंकि अपने घर में सोते हुये व्यक्ति कोई भी घर से अलग होना नहीं कह सकता। यदि उन्हें धाम से जुदा होना मानते हो तो उनका जन्म होना पाया जाता है। और उनके जन्म होने से ही आपके इलंम लुदन्नी अठारह हजार वाणी के उपदेश की

सार्थकता है। स्वप्न का देखना मानने से आपकी उपदेश विधि लागू नहीं होती। क्योंकि रूहों को स्वप्न परधाम में हो रहा है और उन्हें जागृत करने के लिये आप मृत्यु लोक में आवें यह किसी प्रकार सम्भव नहीं हो सकता। सोते हुए व्यक्ति को उसी स्थान पर जगाया जा सकता है जहाँ वह व्यक्ति सोया हुआ हो उसके स्वप्न में प्रवेश कर जागृत करना यह सर्वथा अनुभव शून्य होने से अप्रमाणित है।

दूसरा यदि उनका जन्म होना स्वीकार किया जाता है तो ब्रह्म धामस्थ मुक्तात्माओं का जन्म होना नहीं सिद्ध पाया जाता उनके जन्म न सिद्ध होने से आपका सांप्रदायिक गठन व उसके अनुकूल उपदेश सभी निरर्थक हो जाते हैं। अतः किसी भी पक्ष के स्वीकार करने पर आपकी सांप्रदायिकता नहीं सिद्ध होती। और जो रूहों को जुदागी से बचने के लिये कहा गया यह स्वामी जी का बालकों जैसा खेल है यदि खुदा उन्हें धाम से अलग ही कर देना चाहता है तो वे परस्पर चिपकने से अपनी रक्षा कैसे कर सकेंगी। "खिलवत प्र० १२ चौ० ८७।८८।

जागत होके नीद में, विचारत होके फरामोस। सीधी वात जाग करत हो, तुम हो होस मे के वेहोस ॥८७॥ विचार नीद मे तो न होय, जागे नीद रहे क्यों कर। विचार देखो तो अचरज, देखो फरामोसी हाँसी दिल धर ॥८८॥

अर्थ :—स्वामी जी इह लोक में रूहो को जगाते हुये कह रहे हैं कि तुम लोग जागृत अवस्था में हो अथवा निद्रावस्था में हो हृदय में कुछ ज्ञान है व अज्ञान भरा हुआ है। क्या जागृत हो सीधी बातें करती हो तुम लोग होस में हो अथवा बेहोस हो।८७। निद्रावस्था में तो किसी को विचार नहीं होता और जागने पर निद्रा नहीं रह सकती दिल से यदि विचार करके देखा जाय तो बड़ा ही आश्चर्य मालूम

होता है। इस फरामोसी (अज्ञानता) की खुदा के घर में बड़ी ही हँसी होगी। ८८।"

मीमांसक :—स्वामी जी जब पहले कह चुके कि रूहें निद्रावस्था में स्वप्न देख रही हैं तो जानी हुई बातों को पूछने की क्या आवश्यकता है कि आप लोग जागती हैं अथवा सोती हैं इसी तरह दूसरा यह भी पूछा जा रहा है कि तुम्हारे हृदय में कुछ ज्ञान है अथवा फरामोस (अज्ञान) भरा हुआ है। यदि उन्हें किसी प्रकार का ज्ञान ही होता तो खुदा निद्रित कर स्वप्न ही क्यों दिखाता यह ज्ञानहीनता का ही तो फल भोगना पड़ रहा है। स्वप्न रूप संसार देखने का मूल कारण तो धाम में उनकी अज्ञानावस्था ही है इसी से तो खुदा ने इस प्रायश्चित को दूर करने के लिये पुनः पुनः जन्म मृत्यु के चक्कर में फसा दिया है। इस तरह का स्वामी जी का पूछना एक तरह उनको चिढ़ाना सा प्रतीत होता है। क्योंकि यदि कोई महासुख की अवस्था से पतित हो नर्क में गिर कर महा दुखों का अनुभव कर रहा है उससे पूँछा जाय कि अब तो आनन्द है न, तो क्या उसे यह चिढ़ाना न होगा। अथवा ये भी हो सकता है कि खुदा का रूहों से बड़ा प्रेम था उनका वियोग असह्य होने के कारण खुदा भी स्वामी जी का रूप धारण कर उनसे मजाक कर रहा है किन्तु यह मानव जाति का भी कर्तव्य नहीं कि किसी को दुखी देख उससे मजाक करे। इससे स्वामी जी का पूछना व्यर्थ है कि तुम्हें ज्ञान है अथवा अज्ञान ही भरा हुआ है।

और जो रूहों को जगा कर सीधी बातें करने के लिये कहा गया यह भी असंगत है। क्योंकि जब वे जगेगी तो धाम ही में जगेगी। क्योंकि उनका मूल शरीर धाम ही में है। और रूहों के जगने पर शायद ही आप इस लोक में रहे क्योंकि आपने लिखा है (**जागे पीछे सब फोक**) अर्थात् रूहों के जगने पर चौदह लोक

प्रकृति मण्डल तक महाप्रलय हो जायगी इसलिये अपने जीवन की रक्षा हेतु उन्हें स्वप्न देखने देना ही कल्याण कारक होगा। और धाम में जगने पर ही वे सीधी बातें कर सकती हैं फरामोस अवस्था में नहीं। इसी तरह पूछा जाता है कि तुम होश में हो अथवा बेहोश। इस विषय का भी प्रत्येक प्राणी को अनुभव है कि निद्रावस्था में सभी बेहोश के समान ही रहते हैं ये बातें भी जब उन्हें धाम में होश आ जायगा तब आप जाकर वही पूछ लीजियेगा कि आप लोग अब किस दशा पर हैं जगने पर वे सीधा जबाब भी दे सकेगी। अतएव यहाँ पूछना व्यर्थ है। यद्यपि रूहे जगने पर भी अपनी स्वाभाविक पूर्वावस्था पर ही रहेगी स्वप्न देखने से अज्ञान की निवृत्ति नहीं हो सकती कीचड़ के धोने से कीचड़ की निवृत्ति नहीं हो सकती अज्ञान का विरोधी ज्ञान ही है उसी के द्वारा सम्भव हो सकता है।

और आपके द्विविधात्मक ज्ञान को देख कर रूहे असमंजस में पड़ गई हैं कि जिस हमारे प्रियतम से वियोग हो चुका है वह हमारा प्रियतम कृष्ण है अथवा महम्मद इस तरह सन्देहात्मक विवाद में पड़ कर उनका धाम में जागृत होना भी कठिन है भगवान ने भी कहा है **(शंसयात्मा विनश्यति)** इस कारण वे अपने प्रियतम के पहचान के लिये कुछ काल पर्यन्त ज्ञानमय तप करे। जिनमें उनका विश्वास ह चाहे कुरान की आयतों द्वारा तप करे अथवा वैदिक ज्ञान के द्वारा तप करे तभी उनकी धामस्थ अज्ञान की निवृत्ति हो सकती है। यदि स्वामी जी के कथनानुसार दोनों नावों में पैर रक्खा जायगा तो पतित होने का भय अवश्य ही है। इस लोकोक्ति का कथन भी ठीक ही है (द्विविधा में दोनों गये माया मिले न राम) इससे प्रत्येक को यह पहचान लेना होगा कि मैं नूर बिलंद से उतरे हुये कुरान के वारसी एक तन सुनत जमात मोमिन है अथवा अजन्मा नित्य शाश्वत जीवात्मा हूँ। स्वामी जी ने अपनी समाज से यह पूँछा है कि

(वैकुंठ जासी के धाम) ठीक ही है धाम में जाने वाले सुन्नी समाज के लिये कुरान निर्देशित मार्ग ही श्रेयस्कर होगा। यदि दोनों मार्गों का अवलम्बन करते हैं और गन्तव्य स्थान भिन्न भिन्न दिशा पर स्थित होने से सुन्नी समाज की रूहों के दो खण्ड नहीं हो सकते इसी तरह आर्यो की जीवात्मा के दो खण्ड नहीं हो सकते। इस कारण किसी स्थान पर नहीं पहुंच सकते। यदि कोई कहे कि गन्तव्य स्थान एक ही है एक ही दिशा पर स्थिति है किसी मार्ग के द्वारा जाया जा सकता है। ठीक है प्राप्तव्य स्थान को विभिन्न दिशाओं से भी जाकर पहुंचा जा सकता है। किन्तु एक ही व्यक्ति दो मार्गों का अवलम्बन नहीं कर सकता क्योंकि साधक में यह क्षमता नहीं कि वह रूह आत्मा को दो भागों में विभक्त कर सके। इन हेतुओं से एक ही मार्ग का अवलम्बन श्रेयस्कर होगा।

उक्त ८८वीं चौ० में जो कहा गया कि निद्रावस्था में किसी व्यक्ति को किसी प्रकार का ज्ञान (विचार) नहीं रहता। तो स्वामी जी निद्रित अवस्था में रूहों को कलमा तारतंम का उपदेश ही क्यों देते हैं। इस अवस्था में आपका उपदेश देना भी आप ही के कथन से ज्ञान हीन सिद्ध हो जाता है उपदेश भ्रान्त मय होने से रूहें मुक्त नहीं हो सकती। धाम में अपनी स्वाभाविक गति के अनुसार जिस समय वे जगेगी उसी समय आप भी वहाँ पर जाकर खुदा के पहचान के लिये इलंम लुदंनी का उपदेश दे दीजियेगा इस लोक में आपका उपदेश देना हीव्यर्थ है। इस बात को तो आप ही ने प्रमाणित कर दिया कि निद्रा में किसी मनुष्य को विचार नहीं रहता। अतः जिस वस्तु को आप प्रमाणित भी करते जाते हैं उस पर कायम न रह कर उससे विपरीत कार्य प्रदर्शन भी करते जाते हैं।

दूसरा यदि आपके दिल से विचार करने पर उक्त बातों का बड़ा ही आश्चर्य होता है तो क्या इन विषयों को विचार कर नहीं लिखा

जब अपनी रचना पर आप ही को आश्चर्य हो रहा है तो संसार को कैसे विश्वास हो कि रूहे धाम से स्वप्न रूप खेल देखने को आई है। तीसरा इन रूहों की अज्ञानता की खुदा के घर हँसी होना तो दूर है इस प्रकार कथानक के अज्ञानता की हँसी यहीं हो रही है कि उपदेशक स्वप्न शरीर ही में जागृत अवस्था की बातें करता है। प्राणी की ये अवस्थायें उसी प्रकार विरुद्ध धर्माश्रयी है जैसे दिन और रात्रि। अब आगे परिकर्मा नामक ग्रन्थ में भी यही सम्वाद पाया जाता है। "परिकर्मा प्र० १८।

हम तो इत आये नही, अरस एकदम छोड़्या न जाय।
जागे पाछे दूलहा, हम देख्या खेल बनाय ॥२३।

अर्थ :—स्वामी जी कहते हैं कि हम रूहे इस जगत में आई ही नहीं क्योंकि हम रूहों से परमधाम एक क्षण के लिये भी नहीं छोड़ा जा सकता। और जब स्वप्न से जाग उठेंगे तब अपने खुदा से कहेंगे कि हम लोगों ने संसार रूपी खेल को अच्छी तरह से देख लिया।"

मीमांसक :—स्वामी जी जब लिखते हैं कि हम लोग संसार में आये ही नहीं। तो इस संसार में अठारह हजार वाणी कलमा तारतम का उपदेश नूर महम्मदी झंडा हिन्दुओं के बीच खड़ा करना उठो मोमिनो क्यामत आई का नारा लगाना इत्यादि साम्प्रदायिक कार्य को किसने किया। इसका उत्तर आपके पास क्या हो सकता है। केवल यही कहेंगे कि हम सब रूहे स्वप्न से खेल देख रही है। इस कारण हम लोगों का यहाँ आना नहीं कहा जा सकता। किन्तु इसके सम्बन्ध में अनेक युक्तियों द्वारा सिद्ध किया जा चुका है कि स्वप्न के विकार में कोई क्रिया शीलता नहीं हो सकती वह तो स्वप्न द्रष्टा से क्रिया शील है स्वप्न का विकार दूसरे को उपदेश भी नहीं दे सकता उसी तरह स्वप्न का विकार उपदेश को सुन भी नहीं

सकता। अस्तु चाहे आप खुदा के घर से न भी आये हो किन्तु सृष्टि चक्र के अनुसार जन्म लेना सिद्ध ही है। अन्य चौपाइयों में आपने कहा है कि मैं आखरी महंमद खुदा का पेगाम लेकर रूहों को जागृत करने के लिये आया हूँ उक्त २३ चौ० में कहते हैं कि हम कोई यहाँ आये नहीं इस तरह दो प्रकार के कथन से आपका कोई निश्चयात्मक ज्ञान न होंने से सभी बातें झूठी प्रतीत होंती है। "परिकर्मा प्र० २६।

ये ख्वाब देखाया तिनवास्ते, करने अरस पेहेचान ॥३०॥

अर्थ :—रूहों को यह संसार रूप स्वप्न इसी कारण दिखाया गया है कि जिससे उन्हें अरस (खुदा के धाम) का ज्ञान हो जाय।"

मीमांसक :—ख्वाब के देखने से खुदा का व उसके धाम का ज्ञान नहीं हो सकता क्योंकि स्वप्न स्वत: मिथ्या होता है। मिथ्या वस्तु के ज्ञान से सत्य स्वरूप खुदा का ज्ञान नहीं; हो सकता। रूहों को यदि खुदा की व उसके धाम की पहचान नहीं है उनके हृदय में अज्ञान भरा हुआ है तो उस अज्ञान की निवृत्ति के लिये उन्हें ज्ञान मय तप करने की आवश्यकता हैं जिससे हृदयरूपी अज्ञान की ग्रन्थि नष्ट होकर ज्ञान का प्रकाश हो जाय तव उन्हें खुदा का पहचान हो सकेगा अन्यथा कीचड़ के धोने से कीचड़ की निवृत्ति नहीं हो सकती यदि यह कहा जाय कि उन्हें जप तप करने की आवश्यकता नहीं है वे ब्रह्म धाम में मुक्त ही है। तो मुक्तात्मा में अज्ञान का कथन करना भी मिथ्या है। यदि उक्त ३० चौ० के अनुसार रूहो में अज्ञान मानते हो तो वह खुदा का धाम नहीं है आपके कल्पना का धाम है। अब आगे सागर नामक ग्रन्थ में भी इन्हीं विषयों का वर्णन पाया जाता है। "सागर प्र० ४।

न तो ये कबहुँ नही, जो हक रूहे देखे सुपंन। एक जरा अरस का, उड़ावे चौदे भवंन ॥२७॥

अर्थ :—प्रकर्ण से सम्बन्ध चला आ रहा है नहीं तो ऐसा कभी भी नहीं हो सकता था कि हक (खुदा) को और रूहो को यह स्वप्न देखना पड़े धाम की एक छोटी सी भी वस्तु चौदह लोको को उड़ा सकती है।"

मीमांसक :—इस चौ० में स्वामी जी खुदा के लिये भी स्वप्न देखना कह रहे हैं। जो खुदा के लिये असम्भव है क्योंकि जागृत स्वप्न सुषुप्ति ये अवस्थायें प्राणी की हुआ करती है और चौथी तुर्या अवस्था योगी की होती है खुदा इन चारों अवस्थाओं से परे है उसमें स्वप्न की कल्पना करना अपनी अज्ञता का परिचय देना है। हो भी सकता है कि स्वामी जी का खुदा भी संसारिक प्राणियों की तरह ही हो। नेत्र में हरा एनक लगाने से सूर्य का प्रकाश भी हरा दीखता है उसी तरह इनकी अठारह हजार वाणी का जिस तरह इल्म है तदनुकूल खुदा को भी देखते है। सारांश यह कि पात्र के अनुकूल ही वस्तु का विकास होता है। और जो यह कहा गया कि धाम की एक छोटी सी भी वस्तु सब लोकों को उड़ा सकती है तो आपने खुद लिखा है कि मुझमें खुदा का जोस आया है खुदा के इस लोक में आने पर भी कोई लोक नहीं नष्ट हुये ज्यों के त्यों बने हैं फिर धाम की छोटी वस्तु की क्या गणना की जाय जब कि खुदा के साक्षात आने पर भी सारा भारत इस्लाम में परिवर्तित नहीं हुआ इस कार्य में खुदा असफल ही रहा। इसी आशय की एक चौ० और है। (**अरस भोमकी कंकरी, उड़ावे चौदे तवक।**)

अर्थ :—धाम का एक कंकड़ पत्थर भी चौदहो लोकों को उड़ा सकता है। जिस तरह बालक अपनी अज्ञतावस अभिमान से युक्त

बातें करते है। उसी तरह स्वामी जी का ज्ञान है। आप दिल्ली में औरंगजेब बादशाह को धाम की साकुमार बाई रूह बता कर उसे शिष्य बनाने के लिये अथक परिश्रम किया तो पर भी सफलता नहीं मिली उल्टा मोमिनो को जेल भोगना पड़ा। जब खुदा के स्वरूप स्वामी जी एक मनुष्य को अपने आधीनस्थ नहीं कर सके तो चौदह लोकों को उड़ा देना यह कथन वाणी को श्रम देना ,मात्र है। इसी तरह आगे सिनगार नामक ग्रन्थ को भी देखे। "सिनगार प्र० २।

जो सुध नहीं नूर जागृत, नूर जमाल का वतून। सो बेसक सुध मोहें हके दई, सो मे पाई वजूद सुपंन ॥६१॥

अर्थ :—जिस खुदा के गुह्य रहस्य का ज्ञान अत्तर ब्रह्म को नहीं है उस बेसक (संसय रहित इल्म ज्ञान को) खुदा ने मुझ प्राणनाथ को स्वप्न के शरीर में दे दिया है।६१।"

मीमांसक :—उक्त चौ० में नूर जम्माल का अर्थ राज जी खुदा अत्तरातीत आदि माना गया है। और नूर जागृत का अर्थ अक्षर ब्रह्म माना गया है। स्वामी जी ने खुदा से सृष्टि की उत्पत्ति नहीं मानी है रूहों के स्वप्न से सृष्टि का होना विशेष कर बताया है। यद्यपि इन्होंने कहीं कहीं अत्तर ब्रह्म से भी सृष्टि का उत्पन्न होना लिखा है किन्तु यह मान्यता इनकी गौण प्रतीत होती है यह इन्होंने उपनिषदों के सिद्धान्त को लत्त करके कहा है। इनके मत से रूहों के स्वप्न से ही सृष्टि की उत्पत्ति है। प्रकाश प्र० ३६।

इत अत्तर को विलस्योमन, पाँच तत्व चौदे भवंन ॥१८॥

केवल इस चौपाई में अत्तर ब्रह्म से सृष्टि की रचना माना है नूर जम्माल (खुदा) से सृष्टि रचना नहीं माना है। खुदा से सृष्टि रचना न मानने पर उसकी ईश्वरत्व सिद्धि नहीं होती। शास्त्रकारों ने उसी को ब्रह्म कहा है जिससे जगत की उत्पत्ति स्थिति लय आदि

कार्य होते हैं। व्यास जी ब्रह्म सूत्र में ब्रह्म का लक्षण बताते हुये ग्रन्थ के आरम्भ ही में लिखते हैं। अ० १ पाद १ सूत्र १ (जन्माद्यस्ययतः) जिसमें जगत की उत्पत्ति, स्थिति, लय, ये तीनों लक्षण पाये जाते हों वही ब्रह्म है। इसी विषय का श्रुति भी अनुमोदन करती है।

(यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते येन जातानि जीवन्ति यत्प्रयन्त्यभिशंविशन्ति तद् विजिज्ञा सस्वतद् ब्रह्म इति)

अर्थ :—जिससे सम्पूर्ण जगत् उत्पन्न होता है और जिससे उत्पन्न होकर उसी में जीवित (स्थित) रहता है और जिससे लय होकर उसी में प्रवेश कर जाता है उसी को ब्रह्म जानो। तथा दूसरी श्रुति **(तथाक्षरात् शंभवतीह विश्वम्)** उस अक्षर ब्रह्म से यह विश्व उत्पन्न होता है। इत्यादि वेदों और आप्त पुरुषों द्वारा अक्षर तत्व को ही ब्रह्म माना गया है। अक्षर से भिन्न ब्रह्म तत्व मानने पर शास्त्रीय मर्यादा भङ्ग होती है और अनवस्थित दोष उत्पन्न होता है कोई व्यवस्था न होने से तीसरा चौथा भी ब्रह्म तत्व कहा जा सकता है।

उक्त १८ वीं चौ० में जब आपने भी सृष्टि की उत्पत्ति अक्षर ब्रह्म से मान लिया तो दूसरे ब्रह्म लक्षणहीन अवास्तविक तत्व नूर जम्माल (अक्षरातीत) को ब्रह्म क्यों कहा। और जो यह कहा गया कि अक्षर ब्रह्म को नूर जम्माल के गुह्य ज्ञान का पता नहीं तो नूर जम्माल इस अवास्तविक तत्व का अक्षर ब्रह्म को ज्ञान न होना स्वाभाविक है। क्योंकि असत वस्तु की उपलब्धि होना ही असम्भव है। जिस तरह आकाश में पुष्प खिलना अत्यन्तासत है उसी तरह अक्षर ब्रह्म से भिन्न नूर जम्माल (खुदा) का होना भी अत्यष्तासत है। श्रुति का कथन है **(न तत्समश्चाभ्यधिकश्चदृश्यते)** उस परम अक्षर

ब्रह्म के न कोई समान है और न कोई उससे अधिक ही है। अस्तु उसके अद्वितीय होने से उससे भिन्न ब्रह्म तत्त्व की कल्पना करना वेद विरुद्ध मत का प्रदर्शन करना है।

फिर स्वामी जी ने यह कहा (**सो मे पाई वजूद सुपंन**) जिस हमारे खुदा नूर जम्माल का ज्ञान अक्षर ब्रह्म को नहीं है उस ज्ञान को खुदा ने हमें स्वप्न के (वजूद) शरीर में दिया है। यह कथन इनका ठीक ही है जिस तरह स्वाप्निक शरीर तथा उसका ज्ञान मिथ्या भ्रान्तिमय होता है उसी तरह अपने को स्वाप्निक शरीर धारण करना बतलाने से नूर जम्माल के गुह्य ज्ञान का होना भी मिथ्या भ्रान्तिमय ज्ञान हो सकता है। क्योंकि स्वाप्निक ज्ञान कभी यथार्थ नहीं हो सकता। स्वाप्निक ज्ञान यथार्थ न होने से तथा अपने को स्वाप्निक शरीर धारण करना बतलाने से आपके चौपाई द्वारा ही सिद्ध हो जाता है कि अक्षरातीत को ब्रह्म मानना यह मिथ्या भ्रान्तिमय ज्ञान है।

पाठक गण स्वामी जी के विचार धाराओं को देखें कि जिस अक्षर ब्रह्म को वेद सत्य ज्ञान और अनन्त मानते हैं उसी को ये कह रहे हैं कि हमारे नूर जम्माल का ज्ञान उसे नहीं है और मैं उस ज्ञान को स्वप्न शरीर में पा गया मतलब यह कि ये अक्षर ब्रह्म से भी बढ़ कर ब्रह्म हो गये अस्तु ऐसे मिथ्या वादों पर विश्वास करना उचित नहीं।

उक्त ६१ चौ० से यह स्पष्ट है कि प्राणनाथ जी ने हिन्दुओं के अक्षर ब्रह्म से भी बड़ा अपने को और अपने खुदा को माना है शास्त्रोक्त वर्णित ईश्वर तत्त्व को इन्होंने अपनी तारतंम वाणी में पद पद पर नीचा दिखाया है। जिससे निर्भ्रान्त सिद्ध है कि ये इस्लाम के कट्टर पक्ष पाती है। क्योंकि मुस्लिम के अलावा अन्य वेद निर्दे-शित अक्षर ब्रह्म को नीचा नहीं बता सकता। इसी प्रकार का उपदेश देकर अशिक्षितों को वर्गलाया है। "सिनगार प्र० २०।

ताथें दई नेक फरामोसी, रूहों को माहे अरस । हाँसी करने ईस्क की, देखे कौन कम 'कौन सरस ॥१४४॥

अर्थ :—मोमिनो को लाहूत के बीच में खुदा ने फरामोसी अर्थात् अज्ञान रूपी मूर्च्छा से अच्छी तरह ढक दिया है यह रूहों के ईस्क (प्रेम) की हँसी के लिये किया है कि देखें किस रूह में प्रेम कम है किसमें विशेष है ।"

मीमांसक :—खुदा ने रूहों के साथ बहुत बड़ा अन्याय किया है जो रूहों को अज्ञान रूपी मूर्छा से ढक कर धाम के अखंड ऐश्वर्य के उपभोग से वंचित कर इस जन्म मृत्यु के चक्कर में फंसा दिया है पता नहीं सखियों ने कौन सा इतना बड़ा गुनाह किया था जिसका दन्ड भोगने के लिये धाम से बहिष्कृत कर अनेकों लोकों को पार करते हुये अत्यन्त दूर देशमृत्यु लोक में भेज दिया है। इतना कठोर दन्ड इस लोक की राज्य सरकारें भी नहीं दिया करती देश निकाला भी किया जाता है तो किसी एक दो व्यक्ति को ऐसा नहीं होता कि पूरे देश को राज्य सरकार निकाल दें। रूहों को प्राणनाथ से यहाँ पूछना चाहिये था कि आप हमें धाम की निवासनी तो बता रहे हैं और वहाँ जाने के लिये नाना प्रकार के प्रलोभन भी दे रहे हैं किन्तु हम सबों को यह तो बताइये कि हम लोगों ने धाम में कौन सा अपराध किया था जिसके फलस्वरूप इतना कठोर दन्ड दिया गया है। यद्यपि हम रूहों को पूर्वावस्था का ख्याल तो नहीं रह गया है किन्तु आपके १४४ मी चौ० के कथन से तो यही सिद्ध होता है कि खुदा ने ही हम सबों को अज्ञानता से ढक दिया है। इस प्रकार के कर्तव्य का फल खुदा को न मिल कर हम सब रूहों को मिले यह हमारी समझ में नहीं आता कि कर्तव्य कोई और करें और फल दूसरे को भोगना पड़े। और जो यह कहा गया कि खुदा ने प्रेम का हास्य

करने के लिये किया है तो ऐसा हास्य किस काम का जिसके परिणाम स्वरूप पंच भौतिक जगत में बार-बार मरना पचना पड़े। लोक में कहावत भी है कि (उस वेसर से क्या जिससे नाक छिन जाय)। और जो प्रेम की न्यूनाधिकता देखना चाहते थे तो वे खुदा होने ने कारण अन्तर्यामी थे सब सखियों के प्रेम को पहचान सकते थे किसमें कम है या किसमें विशेष। और प्रेम की परीक्षा में उत्तीर्ण होकर ही तो हम सब वहाँ गई थी यदि प्रेम की कमी होती तो खुदा के समीप पहुंच ही कैसे सकती थी। मालूम तो ऐसा होता है कि खुदा ने सब सखियों के प्रेम में कमी देखा था विशेषता किसी में नहीं पाई जाती क्योंकि यदि किसी रूह में प्रेम की विशेषता होती तो उसे अज्ञान से आवृत न किया जाता बारह हजार सखियों के अवतरित होने से सबों में न्यूनता पाई जाती है यदि खुदा मोमिनो के प्रेम की वृद्धि करना चाहता था तो वह धाम ही में अनेक मनोरंजनों के द्वारा खुश कर लेता खुश होने पर वे प्रियतम से अधिक स्नेह करने लगती। अस्तु इन सरल तरीकों को न अपना कर जो यह टेढ़ा मार्ग अपनाया गया है इसमें खुदा का हाथ नहीं है यह कार्य किसी साधक स्वार्थी का है। क्योंकि एक खुदा गीता में इससे विपरीत बोलता है। (**न दत्ते कस्यचित्पापं न चैव सुकृतं विभुः अज्ञानेना वृतं ज्ञानं तेन मुह्यन्ति जन्तवः**) वह ईश्वर किसी को पाप कर्म में नियोजित नहीं करता उसी प्रकार शुभ कर्मों में भी नहीं प्रेरित करता किन्तु मनुष्य अपने अज्ञान के द्वारा ज्ञान को ढक कर मोह को प्राप्त हो रहा है। इन वचनों से खुदा अन्याय के दोष से बच जाता है। खुदा मायिक द्वन्दों से रहित होने के कारण किसी से हँसी मजाक नहीं कर सकता। यहाँ तो स्वामी जी ने इस चौ० की रचना कर खुद खुदा की हँसी उड़ाया है। "सिनगार प्र० २३ चौ० ११२।

ख्वाब पैदा वका जिमी से, पर देखे न वका को। एक जरा
बका जो आवे ख्वाब में, तो सब ख्वाब उड़े तिनसो ॥११२॥

अर्थ--परमधाम की भूमि से स्वप्न की उत्पत्ति हुई है वे स्वप्न के प्राणी परमधाम को नहीं देख सकते यदि एक जरा सी भी वस्तु परमधाम की स्वप्न संसार में आ जाय तो यह सभी संसार उड़ सकता है।"

मीमांसक:—स्वामी जी बका (धाम) की जिमी से जो ख्वाब की उत्पति बता रहे हैं यह सर्वथा गलत है क्यों कि भूमि जड़ होने से चाहे बका की होवे चाहे किसी स्थान विशेष की हो उससे स्वप्न की उत्पत्ति नही हो सकती अत: इस चौ० की रचना गलत है इन्हे तो यह लिखना चाहिये था कि बका भूमि स्थित रूहो से ख्वाब की उत्पत्ति है। चैतन्य प्राणी के बिना इतर वस्तुओं से ख्वाब की उत्पत्ति बतलाना प्रमाण शून्य है। और खुदा के धाम में भूमि आदि प्राकृत तत्वों के वर्णन से वह ब्रह्म धाम नही कहा जा सकता।

और जो यह लिखा है कि ख्वाब परमधाम को नही देख सकता यह भी गलत है क्यों कि ख्वाब धाम ही भर को नही किसी भी वस्तु को नही देख सकता, ख्वाब "स्वप्न द्रष्टा का स्वत: विषय है" अत: विषय किसी वस्तु का विषय नही कर सकता स्वप्न में जो चैतन्य क्रियायें प्रतिभाषित होती है वे सब स्वप्न द्रष्टा का ही रूपान्तर है स्वप्न का कोई पृथक अस्तित्व नही। अत: स्वप्न धाम ही भर को नही किसी भी वस्तु का ज्ञान नही प्राप्त करा सकता। जैसे संसार में यह जीवात्मा सभी वस्तुओं का भोक्ता है किन्तु कोई भोक्तव्य पदार्थ जीवात्मा के उपभोक्ता नही हो सकते क्यों कि वे सभी जड़ वस्तु है।

अस्तु जब हम इस निष्कर्ष पर पहुंचाते है कि स्वप्न की वस्तुयें किसी भी वस्तु के प्रत्यक्ष करने में समर्थ नही है तो स्वामी जी ने इस

स्वप्न सृष्टि में आकर परम धाम को कैसे देख लिया अतः परिक्रमा नामक ग्रंथ में नव भूमि दशमी आकाशी यमुना नदी ताल पाल मूल मिलावा आदि का जो परमधाम में वर्णन किया वह असत सिद्ध हो जाता है। उक्त चौपाई के अनुसार यदि स्वप्न के लोग धाम को नही देख सकते तो आपकी सम्पूर्ण सांप्रदायिक कल्पना व परिकर्मा ग्रन्थ में जो धाम लीला का वर्णन किया हुआ है वह सब आप ही के वचनों से झूठा सिद्ध हो जाता है। यदि कोई कहे कि स्वामी जी खुदा है वे परमधाम को देख सकते है यह बिलकुल मिथ्या है ऐसी बातों को अन्धविश्वासियों ने स्वीकार किया है जब स्वामी जी खुद लिखते हैं कि स्वप्न धाम को (खुदा) को नहीं देख सकता तो आप भी स्वाप्निक शरीर धारण करने से खुदा को प्रत्यक्ष कैसे कर सकते हैं। नियम सबों के लिये एक समान है जिस देश विशेष में जो नियम लागू होंगे वह सबों के लिये सामान्य होंगे। जैसे राम, कृष्ण आदि को अवतार मानने पर भी वे यहाँ के नियमों से आबद्ध थे।

उक्त चौ० में जो यह कहा गया कि धाम की जरा सी भी वस्तु स्वप्न में आ जाने से सभी संसार उड़ सकता है इस सिद्धांत के अनुसार तो स्वामी जी धाम से जब इस लोक में आये तो यहाँ की सब वस्तुयें उड़ जानी चाहिये। स्वप्न पूर्व के संस्कार से होते हैं। धाम की रूहों का यदि यह संसार स्वप्न है तो जागृत अवस्था धाम में रूहों को सुख दुख, जन्म मृत्यु आदि का अनुभव होना सिद्ध पाया जाता है तभी तो वे धाम के पूर्व संस्कारों के अनुरूप इस मृत्यु लोक को स्वप्न में अनुभव कर रही है। अतः जो कुछ भी यहाँ दृष्टिगोचर होता है वह सब आपके धाम ही का तो है। इस तरह धाम की ही सब सामग्रियों के आने पर भी यह संसार ज्यों का त्यों बना है उड़ा नहीं दूसरा यह भी कि रूहों के स्वप्न में धाम की इतर वस्तु प्रवेश ही कैसे हो सकती है क्योंकि सोते हुये व्यक्ति के स्वप्न में (अन्तः

करण में) इतर पदार्थ कोई प्रवेश ही नहीं कर सकता। प्रवेश न हो सकने के कारण स्वप्न रूप संसार उड़ने का कोई प्रश्न नहीं उठता। "सिनगार प्र० २५ चौ० १३।

बाते सबे सुपंन की, करे जागे पीछे सब कोय । पर जागे की बातें सबे, सुपने में क्यं न होय ।।१३।।

अर्थ :—देखे हुये स्वप्न की सब बातें सभी मनुष्य जगने पर करते हैं परन्तु जागृत अवस्था की बातें स्वप्न में कैसे हो सकती है।"

मीमांसक :—यह बात स्वामी जी ठीक ही कह रहे हैं किन्तु आप तो स्वप्नावस्था में ही परमधाम की सब बातें जागृत अवस्था की कर रहे हैं आपके कथन का दोष आप ही पर लागू होता है। परमधाम की जागृत अवस्था का वर्णन तो आप परमधाम में जागृत होने पर ही कर सकते थे। यहाँ स्वप्न संसार में धाम की जागृत अवस्था का वर्णन होने से आपकी परमधाम सम्बन्धी साम्प्रदायिक लीला आपके चौपाई द्वारा ही असत्य हो जाती है क्योंकि स्वाप्निक शरीर स्वत: मिथ्या होता है फिर उस स्वाप्निक शरीर से उत्पन्न हुआ ज्ञान कैसे सत्य हो सकता। अत: असत से सत वस्तु की उपलब्धि-वत लाना सर्वथा असम्भव है। इसी तरह इनके बनाये हुये किरंतन आदि ग्रन्थों में भी स्वप्न सृष्टि का वर्णन मिलता है। "किरं-तन प्र० ८६।

ये भी फेर विचारिया, साँच आगे न रहे अनित, ये बल हुकुंम के, देह सुपंन रही इत ।।११।।

अर्थ :—स्वामी जी कहते हैं इस बात का भी विचार करता हूँ कि मुझ सत्य स्वरूप खुदा व रूहों के सामने यह अनित्य संसार कैसे स्थित है ये सब खुदा के हुकुम से ही स्वप्न का शरीर रह रहा है।"

मीमांसक :—यदि सत्य स्वरूप खुदा के सामने यह अनित्य

संसार ज्यों का त्यों बना है सो यह निश्चय मान लेना चाहिये कि वह खुदा सत्य नहीं है बना हुआ है क्योंकि स्वामी जी के वचनानुसार सत्य वस्तु के आगे अनित्य वस्तु ठहर ही नहीं सकती। यदि स्वामी जी खुदा के रूप होते तो यह अनित्य संसार किसी हालत पर स्थित नहीं रह सकता था क्योंकि धाम की एक जरा सी भी वस्तु जब चौदहों लोकों को उड़ा देने में शक्ति रखती है तो साक्षात् खुदा के रहने पर यह संसार कैसे स्थित रह सकता है। स्वामी जी अपने को खुदा होने का दावा तो करते हैं किन्तु उन्हीं के वचनों से यह सिद्ध हो जाता है कि आप खुदा के रूप नहीं है। और जो यह कहा गया कि खुदा के हुकुम के आधार पर यह स्वप्न शरीर रह रहा है यह भी कथन गलत है क्योंकि खुदा ऐसा हुक्म नहीं दे सकता कि सूर्य के सामने अंधेरा बना रहे। यह केवल खुदा का आधार लेकर अपने दूषित पक्ष को सबल बनाने का तरीका मात्र है।

अब शास्त्र दृष्टि से विचार करने पर यह प्रतीत होता है कि ईश्वर जगत् का विरोधी तत्व नहीं। श्रुति का कथन है **(तत्सृष्ट्वात देवानुप्राविशत्)** ईश्वर सृष्टि रचना कर उसी में प्रवेश कर गया यदि वह जगत का विरोधी होता तो उसकी रचना कर उसमें प्रवेश क्यों करता और संसार कायम नहीं रह सकता था। संसार की प्रत्यक्ष स्थिति देखने से वह जगत का विरोधी तत्व नहीं पाया जाता। जैसे जल से उत्पन्न मछली का जल से कोई विरोध नहीं उसी तरह जगत ईश्वर से उत्पन्न होने के कारण वह जगत का विरोधी नहीं। 'स्वतः की रचना की हुई वस्तु का 'स्वतः से विरोध हो यह सम्भव नहीं यदि ऐसा होता तो इस प्रकार की रचना ही क्यों करता।

उक्त चौपाई में जोजगत के लिये अनित्य कहा गया यह भी समुचित नहीं। शास्त्रों में जो इसे अनित्य कहा गया है वह केवल इसकी

परिवर्तन शीलता की दृष्टि से व मुमुक्षु के संसार त्याग (वैराग्य) प्राप्ति के लिये कहा गया है वस्तुतः परिवर्तित होकर यदि उसका उपलब्धि न होती तो हम उसे अनित्य कह सकते थे किन्तु अभाव देखते हुये भी पुनः भावोत्पत्ति देखी जाती है। सूर्य के पश्चिम दिशा में अस्त होने पर भी पूर्व दिशा में पुनः उसकी उपलब्धि होती है। उसी प्रकार जगत ब्रह्म में विलीन हो पुनः उसकी उत्पत्ति होने से वह अनित्य नहीं कहा जा सकता। भगवान ने गीता में ऐसे सिद्धान्त वादियों का आसुरी स्वभाव वाला कहा है। गीता अ० १६ श्लोक ८ (**असत्यम प्रतिष्ठं ते जगदाहुरनीश्वरम्**) वे आसुरी स्वभाव वाले मनुष्य इस जगत के बिना ईश्वर से उत्पन्न हुआ आश्रय रहित स्थित और असत्य कहा करते हैं। इसे सत भी नहीं कहा जा सकता क्योंकि सत् वस्तु का अभाव होना असम्भव है अभाव न होने से मोक्ष विधि व्यर्थ हो जाती है। अतः दार्शनिक दृष्टि से अनिर्वचनीय तत्व सिद्ध हो जाता है।

अध्याय की समाप्ति मे यह अवश्य उल्लेखनीय होगा कि इनके विभिन्न ग्रंथो मे स्थल पर हक, हादी, रूहे, अक्षर ब्रह्म के स्वप्न के सृष्टि की उत्पत्ति मानी गई है। सम्प्रदाय का मूल इन्ही विषयों पर आधारित है। यदि शास्त्रीय पथ का अनुसरण कर ईश्वर को जगत का कारण मानते है तो इनकी सांप्रदायिकता ही नही बन पाती। रूहों के स्वप्न से सृष्टि उत्पन्न होने के विषय मे इनके पास अन्य कोई प्रमाण नही केवल इनकी १८ हजार वाणी ही प्रमाण रूप है जिसे अब पाँचवां वेद स्वशं वेद भी कहा जाता है। इसके अतिरिक्त कुरान की आयतो का प्रमाण अपने ग्रंथो मे प्रस्तुत किया है और वेदों को प्रमाण रूप न मानने के विषय मे निम्न युक्ति पेश करते हैं कि जब नारायणादि [illegible] रूहों

के स्वप्न से उत्पन्न है तो उस नारायण के स्वस् प्रस्वास् रूप वेद कैसे प्रमाणित माने जा सकते है ।

इतिनिजानन्द मीमांसायां उत्तरार्धभागे
स्वप्न सृष्टि वर्णनं नाम एकादशोऽध्यायः । ११

अभ्यासार्थक प्रश्न ।

१-स्वप्न से सृष्टि मानने मे जो जो दोष बताये गये हो उन्हे दोनो अध्यायो से छाँट कर नोट तैयार कीजिये ।

२-अपने विचारों द्वारा सिद्ध कीजिये कि ईश्वर रागदि धर्मों से रहित है ।

३-रूहो मे और संसार के मनुष्यों मे जो अंतर दिखाई पड़ता हो उसे स्पष्ट कीजिये ।

४- यह सिद्ध कीजिये कि रूहो को जागृति का उपदेश देना निरर्थक है ।

५- रूहों को असमंजस मे पड़ने के लिये क्यों कहा गया ।

६- २३ और ३० चौपाई के कथन की समीक्षा कीजिये ।

७- अक्षरातीत को ब्रह्म मानना भ्रान्ति मय ज्ञान क्यों कहा गया ।

८- खुदा ने रूहो के साथ कौन सा अन्याय किया है और क्यों ।

९- ख्याव वका को नही देख सकता इस कथन पर लेखक के विचार को व्यक्त कीजिये ।

१०- स्वामी जी की ११३ चौ० द्वारा उनकी सांप्रदायिक लीला किस प्रकार असत्य हो जाती है ।

११- यह प्रमाणित कीजिये कि स्वामी जी के वचनों द्वारा ही उनका खुदा होना नही सिद्ध पाया जाता ।

अथ द्वादशोऽध्याय १२

परम धाम वर्णन

स्वामी जी के बनाये हुये परिकर्मा नामक ग्रंथ मे खुदा के धाम का विस्तृत वर्णन पाया जाता है।

वहाँ अनेक महन्त मंदिर, नदियाँ, पहाड़, अनेक पशु पक्षियो से समन्वित वन हक रूहों के क्रीड़ा स्थल आदि का वर्णन व उनके स्वरूप का वर्णन पाया जाता है। इस ग्रंथ के आद्योपान्त अध्ययन से सब प्राकृत सामग्रियों का वर्णन मिलता है।

"स्वामी जी किरंतन नामक ग्रन्थ में लिखते हैं। प्र० ११२

सरूप सुन्दर सानुकूल सकोमल, रूह देख नयना खोल नूर जमाल ॥१॥ लाल अधर मुख हँसत हरवटी, नासिका तिलक निलवट भोहें केश। श्रवण मुख दंत मीठी रसना, ये देख दरसन आवे जोस आवेस ॥३॥ वाहे चूड़ी झूमक कानो कड़ी, हस्त कमल की मुदरी नख का नूर चीर चढ्या आसमान में, ज्यो हक चल मन करे सब अगुरी ॥४॥ रोसनी पटुके करी अवकास में, चरण भूषण जामे जार झाँई ॥५॥ जामा जड़ाव अंग जुगते, चार हार अंबर करी झलकार। जगमगे पाग ज्योत जवेर ज्यों, मीठे मुख नयना पर जाउँ वलिहार ॥२॥ कहे श्री महामत मोमिन रूह दिल को मासूक खेंचे तोहे अरस माहे ॥५॥

अर्थ :—श्री महामति (स्वामी) जी हक के स्वरूप का वर्णन करते हुये कहते हैं कि उनका स्वरूप अत्यन्त सुन्दर और मोमिनो के मन के अनुकूल है अय सुन्नत जमात वाले मोमिन तुम अपनी रूह की नेत्रों को खोल कर नूर जम्माल को देखो और उनके मुख और ओष्ठ अत्यन्त लाल है और उनके कपोल हँसते हुये से प्रतीत होते है नासिका से लेकर ललाट पर्यन्त तिलक सुशोभित है उनके भौंहें केश श्रवण मुख दाँत तथा मीठी रसना भी है जिसका दर्शन पाने से जोस आवेश आ जाता है। भुजाओं में चूड़ी, वाजूवन्द, फूमक, और कान में कड़ी आदि आभूषण धारण किये हुये हैं। तथा हाथ की अंगु-लियों में अंगूठी पहने हैं जब हक अपनी अंगुलियों को इधर उधर फेरते हैं तब उनके नख की कान्ति आकाश को चीरती हुई चढ़ जाती है। इसी तरह पटुके (वस्त्र विशेष) की रोसनी आकाश तक फैल रही है। जामे चरण के भूषणों का प्रतिविम्ब पड़ता है। अंग में वड़ी युक्ति से जड़ावदार जामा पहने हुये हैं। और हृदय में धारण किये हुये चारों हारों की ज्योति आकाश में झलक रही है। और सिरो भाग पर धारण की हुई पगड़ी की ज्योति जवाहरातों की जैसी चमक रही है। ऐसे खुदा के मीठे मुख नेत्रों पर वलिहारी जाता हूँ। वह मासूक (खुदा) मोमिनो की आत्माओं को अरस (लाहूत) में खींचता है।"

मीमांसक :—कुछ लोगों का कथन है कि स्वामी जी के किरंतन ग्रन्थ में इस्लाम मत नहीं है यह उनका कथन गलत है जो उन विषयों को नहीं समझ पाते वे ही ऐसा कहा करते हैं। इनके प्रत्येक ग्रन्थ में इस्लाम मत ही का प्रतिपादन है। किरंतन ग्रन्थ की उक्त चौपाइयों को ही देखिये इसे मोमिनो को ध्यान करने के लिये लिखा है। यहाँ नूर जमाल, हक, इत्यादि शब्द अल्लाह के पर्यायवाची है उसी

को ध्यान करने की प्रेरणा की है कृष्ण का ध्यान करने का उपदेश नहीं दिया गया।

यद्यपि ये लोग प्रणामी सम्प्रदाय से भिन्न मनुष्य को देख कर किरंतन ग्रन्थ का उपदेश देते हैं जैसे पन्ना में शरद पूर्णिमा के अवसर पर प्राय: इतर मनुष्य भी पहुंच जाया करते हैं किन्तु उस समय सनंध, खुलासा, मारफत सागर, क्यामत नामा, आदि ग्रन्थों का उपदेश नहीं देते इन पुस्तकों को छिपाने का कारण यही है कि इनके सुनने मात्र से निश्चय हो जायगा कि ये लोग पक्के सुन्नी समाज के हैं। पक्षपात रहित इनके चौदहों ग्रन्थों के अध्ययन से यही निष्कर्ष निकलता है कि स्वामी जी ने आर्य हिन्दुओं के स्वमत में दीक्षित करने के लिये कृष्ण का आ ट लेकर सारे भारत को इस्लाम धर्म में परिवर्तन करने का अथक परिश्रम किया है।

पूर्व पक्षी :—आप किस प्रमाण से कह रहे हैं कि सारे देश को इस्लाम में परिवर्तित करना चाहते थे। उत्तर पक्षी रास, प्रकाश, खटरुती, कलस, किरंतन आदि ग्रन्थ आर्यों के मिलाने के लिये वाक् चाल है। उक्त ग्रन्थों में जो अपने लिये कृष्ण बुद्ध कलंकी, धणी अक्षरातीत ब्रह्म सृष्टि आदि शब्दों का प्रयोग किया है वह वाक् छल है। क्योंकि जब इन शब्दों के वास्तविकता पर विचार किया जाता है तो इनका अर्थ अल्लाह महम्मद सुन्नत जमात ही सिद्ध होता है। पूर्व पक्षी—ऐसा भी हो सकता है कि मुसलमानों को हिन्दू समाज में मिलाने के लिये अल्लाह आदि शब्दों का प्रयोग कर उन्हीं से वाक् छल किया हो। उत्तर पक्षी—स्वामी जी के किसी ग्रन्थ में वेद, शास्त्र आर्य भारतीयों पर आस्था नहीं दिखाई देती उसे पद-पद प ठुकराया गया है। जिसके प्रमाण निम्न है सनंध प्र० १७।

अब कहूँ को हेडा वेद का, जाकी मिही गूथी जाल।
याकी भी नेक के हेके, देऊँ सो आकड़ी टाल ॥३॥

अर्थ :—स्वामी जी कहते हैं कि अब मैं वेद के कोहेड़ा—अर्थात् अंधकार रूप अज्ञान का वर्णन करता हूँ इसने अपनी बारीक जालों से अर्थात् (कर्म कांड रूप जालों से) संसार को उलझा दिया है इसका भी अच्छी तरह वर्णन करके इसकी उलझनों को हटाये देता हूँ। खुलासा प्र० १३

मेटन लड़ाई बंदन की, और जादे पेगंवर। धनी आये वेद छुड़वाने, ये तीन बातें चित धर ॥६३॥

अर्थ—धणी अर्थात् प्राणनाथ जी तीन बातों को ध्यान में रख कर इस लोक में आये हैं एक तो जादे पेगम्बरों की लड़ाई हटाने के लिये दूसरे सांप्रदायिक भक्तों की लड़ाई हटाने के लिये तीसरा आर्यों से वेद छीनने के लिये। कलस प्र० २।

जैसे बालक बावरा, खिन में, हस्तारोय। ऐसे साधू शास्त्र में, द्रढ न शब्दा कोय ॥३०॥

अर्थ—जिस तरह ज्ञान हीन बालक एक क्षण में कहीं हँसता है और कहीं रोने लगता है उसी तरह अय साधुओं शास्त्र में कोई निश्चयात्मक ज्ञान नहीं है। उक्त ३० मी चौ० कलस ग्रंथ की है जहां इन्होंने कृष्ण बुद्ध अपने को घोषित किया है वहां भी शास्त्रों वेदों को ठुकराया ही है।

और कुरान को अपना बताते हुये उसका प्रत्येक जगह प्रतिष्ठा की है। क्यामत नामा प्र० ६।

होसैयाँ फुरमान ल्याये हंम, आये वतंन से वास्ते तुम। इनमे खबर है तुमारी, हकीकत देखो हमारी ॥१॥

अर्थ—अय सखियों कुरान को मैं ले आया हूँ और तुमारे ही लिये धाम से आया हूँ इससे तुमारी हमारी सब हकीकतों का वर्णन है अतः तुम इसे पढ़ो देखो। मारफत सागर प्र० ६।

कुरान वारस मोमिन कहे, पढ़ाया उमी होंय । विन अरस रूहे हक न्यामत, दूजा ले न सके कोय ॥७१॥

अर्थ—कुरान के वारस (हकदार) मोमिन कहे गये हैं उस कुरान को खुदा के वेसक इल्म के द्वारा गुरु रूप से प्राणनाथ ने पढ़ाया है ऐसे कुरान रूपी खुदा के धन को लाहूत निवासी रूहों के अलावा अन्य कोई ले नहीं सकता ।७१ ।

उक्त चौ० में स्वामी जी ने वेदों को कर्मकांड के द्वारा संसार को उलझाने के लिए तथा भारतीयों से वेद छीनने के लिये मै आया हूँ शास्त्रों में कोई निश्चयात्मक ज्ञान नहीं है । इन वचनो से स्पष्ट है कि इनकी आन्तरिक आस्था वैदिक धर्म में नहीं है ।

इस्लाम पक्ष में कह रहे हैं कि मैं कुरान को ले आया हुं उसे ब्रह्मसृष्टियों के लिये अध्ययन करने की प्रेरणा देते हैं । व उन्हीं को वारिस बताते हुये मौलवी गुरु के रूप पर अपने को पढ़ाया हुआ बताते हैं । अस्तु कुरान में इनकी आन्तरिक श्रद्धा प्रत्यक्ष दिखाई देने से प्रमाणित हो जाता है कि इन्होंने भारतीयों को इस्लाम धर्म में परिवर्तित करने का ही प्रयत्न किया है । इनमें ज्ञान की कोई मौलिकता नही पाई जाती । मनमानी कल्पना कर संस्कृत शब्दों का अनर्थ किया है । जैसे कृष्ण को शब्द कोष के अनुसार विष्णु न मानकर महंमद विष्णु को अजाजील ब्रहसृष्टि को मोमिन अक्षर ब्रह्म को नूरजल्लाल इत्यादि अर्थ माना है यही इनके वाक् छल हैं ऐसे अनेक शब्द है जिनका विपरीत अर्थ वताकर साधारण मनुष्यों से छल किया गया है । अब आगे लाहूत का वर्णन देखिये जिसे परमधाम की संज्ञा दी गई है । परिकर्मा प्र० २८

पार नही जमीन को, पार नही आसमान । पार नही जड़ चेतन पार न ईस्क रेहेमान ॥२०॥ खावंद के दीदर को

पशू और जानवर। आवत हें गुन गावते, अपने अपने समय पर ॥४॥ किस्सा इनोके ईस्क का, किन मुख कह्यो न जाय। दीदार न होय बखत पर, तो जानो अरवा देवे उड़ाय ॥५॥ अर वा इनो की न छूटे, पर ऊपर होय बेहोस। अंग अरवा क्यो छूट ही, अंदर धनी को जोस ॥६॥ धनी इनो के कारने, सरूप धरे कै करोर। ले दिल चाह्या दरसन, ऐसे आशिक हक के जोर ॥८॥ पिंड के पेहेचान बिना, कछुये न जाने कोय।

अर्थ—खुदा के अरस में जिमी का पारावार नहीं है उसी तरह आसमान जड़ पदार्थ चेतन जीवों का भी पारावार नहीं है और खुदा के प्रति उनका प्रेम का भी पारावार नहीं है।२०। खुदा के दर्शन के लिये पशू और जानवर उनका गुणगान करते हुये अपने अपने समय पर आया जाया करते हैं।४। इनो के प्रेम का किस्सा मुख से वर्णन नहीं किया जाता यदि इन्हें समय पर दर्शन न होवे तो मानो ये अपनी आत्मा को उड़ा देते हैं।५।इनकी अरवा (आत्मा) तो नहीं छूटती किन्तु ऊपर से वे होस हो जाते हैं इनके शरीर से प्राण इसलिये नहीं निकलते कि इनके हृदय में खुदा का जोस भरा हुआ है।६।ये पशु और जानवर खूदा के इतने प्रेमी हैं कि खुदा इनके कारण कई करोड़ों शरीर धारण करता है जिससे वे मन माना दर्शन ले सकते।८। ये प्रीतम के पहचान के अलावा अन्य कुछ नहीं जानते। परिकर्मा प्र० ७।

जित वोहो तक रेती पतले, गड़त घूँटन लो पाय। इत सवे मिल सखिया, रद्द गुलाटे खाँय ॥४१॥

अर्थ :—अरस में यमुना नदी के तट पर छोटे छोटे कण वाली रेतीली भूमि है वहाँ सब सखियाँ गुलाटी मारती हुई विहार करती हैं। परिकर्मा प्र० ७।

लोखरी कूकरी जंबुक, लड़त हे मेढ़े। खरगोस बिल्ली मूस्क, लड़े छिकारे गेड़े ॥१६॥

अर्थ :—स्पष्ट है। स्वामी जी के धाम में सभी जानवरों का वर्णन पाया जाता है। परिकर्मा प्र० ३४।

बड़ा वन ऊँचे हिंडोले, तले हाथी जात आवत ॥८३॥ बाघ केशरी चीते खेल ही, और मुरग बादर। हर जाते जात के जिनसे, कहूँ कहाँ लग खेल जानवर ॥८४॥

अर्थ :—वहाँ बड़े बड़े विस्तृत वन है जहाँ मोमिनो के झूलने के लिये हिंडोले लगे हुये हैं। उन हिंडोलो के निचले भाग से हाथी आया जाया करते हैं उन विस्तृत वनों में बाघ, सिंह, चित्ते, मोर, मुर्ग, बन्दर आदि अनेक जाति वाले जानवर खेला करते हैं।

इसी तरह फलों का भी वर्णन देखिये। परिकर्मा प्र० ७।

कै मीठे मीठे मीठरड़े, कै फरसे फरसे मुख पर। कै तीखे तीखे तीखरड़े, कै खट्टे खट्टे खट्टूवर ॥२२॥

अर्थ :—वहाँ बहुत से मीठे मीठे फल हैं और कितने ही कसाय स्वाद वाले फल भी है उसी तरह खट्टे और तीखे भी अनेक फल है। २२ परिक्रर्मा प्र० ३१।

भोम पाचमी मध्य की, इत पोढत हे रात। स्याम स्यामा जी साथ सब, जो लो होय प्रभात ॥१०१॥

अर्थ :—जिस मध्य की पाचमी भोम में रात्रि के समय खुदा

और खुदा की पत्नी तथा बारह हजार रूहें लेट कर सोती हैं और जब तक प्रातःकाल नहीं होता तब तक शयन करती रहती हैं। इन्होंने अरस को नौ भोम दशमी आकाशी पर्यन्त वर्णन किया है इसी समय मध्य की भोम पाचमी में शयन करने को कहा है वहाँ अन्य मानव जाति का वर्णन नहीं किया। परिकर्मा प्र० ३७।

शीत काले सुख धूप को, पेहेले पोहोचत झरोखो आय।
इत आराम घड़ी दोय तीन का, प्रभात समे सुख दाय ॥७२॥

अर्थ :—शीत कालीन ऋतुओं में धूप का सुख लेने के लिये सबसे पहले खिड़कियों में सूर्य की किरणें आ जाती हैं यहाँ दो तीन घड़ी तक प्रातःकालीन धूप बड़ा ही 'आनन्द देने वाला होता है। ७२।"

मीमांसक :—उक्त चौ० में शीतकालीन दुख की निवृत्ति धूप से बताई जाकर सुख की प्राप्ति होना बताया गया है जिससे इनके परम धाम में भी भौतिक धर्मों का होना पाया जाता है तथा शीत ऋतु का वर्णन होने से अन्य षड् ऋतुओं का भी अध्याहार हो जाता है और काल को विभाजित करने का साधन सूर्य ही है वहाँ सूर्य का वर्णन होने से दिन रात्रि घड़ी, पल, पक्ष, मास, वत्सर आदि का विभाजन स्वतः हो जाता है। अतः स्वामी जी ने जिन वस्तुओं का वर्णन नहीं किया और जो वस्तुयें इस लोक में पाई जाती हैं उन सबों का होना वहाँ सम्भव है। वेदों में उस ब्रह्म धाम को देश काल से अपरिच्छिन्न बताया है। यद्यपि इन्होंने भी प्रकृति से परे ही खुदा को बताया है किन्तु परिकर्मा नामक ग्रन्थ के देखने से स्पष्ट हो जाता है कि इन्होंने कहीं से यह सुन लिया है कि ईश्वर प्रकृति से परे है कोई तात्विक ज्ञान इनमें नहीं पाया जाता यदि होता तो ऐसा वर्णन कभी न करते। वेदों में (**अक्षरात्परत परः**) प्रकृतस्थ अक्षर

से उसे पर बताया है। वहाँ सूर्यादिकों का भी होंना नहीं बताया गया है। श्रुति—**न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्र तारकं नेमा विद्युतो भान्ति कुतोऽयमग्निः तमेव भान्त मनुभाति सर्वं तस्यैव भाषा सर्व मिदं विभाति।** उस ब्रह्म धाम में सूर्य, चन्द्र, तारागण, विद्युत, अग्नि आदि नहीं प्रकाशित करते उसके ही प्रकाश से वहाँ सब प्रकाशित हैं और उसके ही प्रकाश से यह सर्व जगत प्रकाशित हो रहा है। "परिकर्मा प्र० ३६। चौ० ४८।

क्यों न होंय प्रेम इनको, जो पोढ़त इन पिउ संग।
अरस परस दोऊ हीचत, अंग लगाय कै अंग ॥४८॥

अर्थ :—धाम में इन सखियों को प्रेम क्यों न हों क्योंकि ये अपने प्रियतम (खुदा) के साथ शयन करती है और शयन करने वाले हिंडोलों को कहीं सखियाँ और कहीं प्रियतम अपने अंग (हाथों) से उसे खींचते हैं। परिकर्मा प्र० ३८।

क्यों न होय प्रेम इनको, जो लेत इनकी सुखवोय।
सिनगार कर सेज्या पर, केल करे संग दोय ॥४६॥

अर्थ :—इन सखियों को प्रेम क्यों न हो ये तो अपने प्रियतम की खुशबोय लेने वाली हैं ये वस्त्राभूषण से अपना शृङ्गार सज कर प्रियतम की शय्या पर दोनों क्रीड़ा विलास करते हैं। ४६।"

मीमांसक :—इस प्रकार के वर्णन से सांसारिक स्त्री पुरुषों के काम क्रीड़ा की स्पष्ट झलक पाई जाती है। अध्याय के आदि में जो स्वामी जी के चौ० द्वारा खुदा का वर्णन हुआ है वह सब प्राकृति वर्णन है। क्योंकि हस्त पादादि श्रोत्र त्वक् चक्षु रसना आदि इंद्रियों का वर्णन सब भौतिक ही तो है। कोई कोई यह कहा करते हैं कि खुदा का शरीर होते हुये भी वह दिव्य सच्चिदानन्द मय है परन्तु

इनका यह कथन इन्हीं के वचनों के अनुसार सिद्धान्त की कसौटी में खरा नहीं उतरता। अवयव की जहाँ भी कल्पना होगी वहाँ मायिक पदार्थ हो ही जायगा अवयव सत्य नहीं हो सकता यदि अवयव सत्य होता तो प्रत्येक प्राणी का भी सत्य हो सकता था। किन्तु यह प्रत्यक्ष प्रमाण है कि किसी प्राणी का शरीर सत्य नहीं पाया जाता। श्रुतियाँ उसे अवयव रहित ही बताती हैं। श्रुति—**यद् द्रेष्यमग्राह्यम गोत्रम वर्णम् चक्षु श्रोत्रं तद पाणि पादं नित्यं विभुं सर्वगतं शुसूक्ष्मं यत्भूत योनिम् परि पश्यन्ति धीराः।**

अर्थ :—जो दृष्टि का विषय नहीं है जो किसी के द्वारा ग्रहण नहीं किया जा सकता जिसका कोई गोत्र या वर्ण नहीं है जो चक्षु श्रोत्र से रहित है, जिसके हस्त पादादि कोई अंग नहीं है। जो नित्य व्यापक सर्वत्र ओत-प्रोत है, जो अत्यन्त सूक्ष्म है, जो जगत का कारण है, जिसको विवेकी हृदय रूप गुहा में देखते हैं। दूसरी श्रुति-

न तस्य प्रतिमा अस्ति यस्य नाम महद्यसः।

अर्थ :—उस ईश्वर की कोई प्रतिमा (मूर्ति) नहीं है उसका नाम ही महान यश रूप है। तीसरी श्रुति—**दिव्योह्य मूर्तः पुरुषः स वाह्याभ्यन्तरोह्यजः अप्राणोह्यमनसाः शुभ्रोऽक्षरात्परतः परः।**

अर्थ :—यह ब्रह्म दिव्य और अमूर्त है वह बाहर भीतर गमनादि क्रियाओं से रहित होने के कारण अज (निष्क्रिय) है तथा प्राण मनादि इन्द्रियों से रहित है वह अव्यक्त 'अक्षर से' श्रेष्ठ है। इत्यादि ऐसे अनेकस: श्रुति वाक्य है जो ईश्वर को 'अवयव रहित ही प्रतिपादन करते हैं।

पूर्व पक्षी :—तो क्या वेदों मे सगुण ब्रह्म का प्रति पादन नहीं है उत्तर पक्षी — वेदो मे सगुण ब्रह्म का प्रति पादन है किन्तु स्वामी

जी ने जिस तरह वर्णन किया है उस तरह नही है। स्वामी जी का वर्णन वेद विरुद्ध है वह यह कि आपने खुदा को जगत का कारण नही माना है उसे कारण न मानने से उसमें ब्रह्म के लक्षण नही पाये जाते इन्होंने परिकर्मा नामक ग्रन्थ में धाम में नानात्व विषयों का वर्णन किया है जिससे वह सब मायिक पदार्थ होने से अनित्य हो जाता है। अनित्यत्व दोष हो जाने से ईश्वर की सिद्धि नहीं होती। वेदों में सविशेष और निर्विशेष दोनों वर्णन है। श्रुति—(**द्वावेव ब्रह्मणों मूर्ते मूर्तश्चामूर्तश्चेति**) ब्रह्म के दोनों रूप हैं एक मूर्तिमान दूसरा अमूर्तमान। श्रुति में ईक्षण शब्द का प्रयोग है। श्रुति-(**तदैक्षत बहुस्यां प्रजायेय**) उस निर्गुण अव्यक्त अक्षर ब्रह्म ने अपनी सतरज तमोगुणात्मक परा प्रकृति का अवलम्बन कर इच्छा किया कि मैं बहुत से रूपों में होकर भाषित होऊँ अतएव वह निर्गुण ब्रह्म ही सृष्टि काल में सगुण ब्रह्म होकर सृष्टि रचना करता है। त्रिगुणात्मिका अपनी पराशक्ति का अवलम्बन करने से उसके तीन रूप हो जाते हैं रजोगुण का अवलम्बन करने से वह ब्रह्मा रूप से भाषित होता है। सत्व गुण का अवलम्बन करने से विष्णु रूप भाषित होता है इसी तरह तमोगुण का अवलम्बन करने से रुद्र रूप भाषित होता है। (**ब्रह्मत्वे सृजते लोकान् विष्णुत्वे पालयत्यपि रुद्रत्वे संहरत्येवतिस्रोऽवस्था स्वयं भुवा**)।

अर्थ :—स्वय भुवा :—स्वयं उत्पन्न होने वाला वह निर्गुण अव्यक्त अक्षर ब्रह्म ही ब्रह्मा रूप मे लोको का सृजन करता है विष्णु रूप से पालन करता है और रुद्र रूप से जगत का संहार करता है इस तरह उसकी ये तीन अवस्थायें हैं। अर्थात् सगुण और निर्गुण नाम के दो पृथक ब्रह्म नही हैं ब्रह्म एक ही है।

सृष्टि के अभाव काल में वह कार्य ब्रह्म अपने कारण रूप निर्गुणावस्था में स्थित हो जाता है। गोस्वामी जी ने भी कहा है **(निर्गुण ब्रह्म सगुण भये कैसे जल हिम उपल बिलग नहि जैसे)** यहाँ गोस्वामी जी ने जल और बर्फ का उदाहरण देकर निर्गुण और सगुण ब्रह्म में अभेदता का प्रतिपादन किया है। वेदों में भी सगुण ब्रह्म के उपासना का प्रतिपादन है। मुक्तात्मा सगुण ब्रह्म को प्राप्त कर वहाँ दिव्य विभूतियों का अनुभव करता है और परान्तकाल में सगुण ब्रह्म के साथ निर्गुण ब्रह्म में लीन हो मुक्त हो जाता है। वहाँ किसी प्रकार के भोग भोगने को नहीं मिलते। श्रुति भी इसी बात का समर्थन करती है। श्रुति—(**ते ब्रह्म लोकेषु परान्तकाले परामृताः परिमुच्यन्ति सर्वे**)

अर्थ :—वे मुक्तात्मा ब्रह्म लोक में परान्तकाल तक निवास कर अन्त में परम अमृतत्व को प्राप्त हो मुक्त हो जाते हैं।

पूर्व पक्षी :—आपने जो सगुण ब्रह्म की उपासना वेदोक्त बताया उसमें ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, इन तीनों को सगुण ब्रह्म बताने से किसकी उपासना की जाय।

उत्तर पक्षी :—सगुण निर्गुण ब्रह्म एक ही है ब्रह्मा, रुद्र यह अवस्थान्तर मात्र है। श्रुति ने जिस विष्णु तत्व से ईक्षण शब्द का प्रयोग किया है वह अव्यक्त अक्षर आद्य पुरुष नारायण ही तो ब्रह्मा रुद्र रूप में विभक्त हुआ है। अतः तीनों में अभेद है। पुराणों में जो नारायण (विष्णु) के नाभि से कमल, कमल से ब्रह्मा, ब्रह्मा से रुद्र की उत्पत्ति बताया है। इस दृष्टि कोण से सगुण ब्रह्म विष्णु ही उपास्य हो सकता है क्योंकि वह आद्य पुरुष है (भिन्न भिन्न रुचिर्हि लोकः) इस युक्ति के अनुसार अपनी रुचि के अनुकूल ब्रह्मा रुद्र की भी उपासना शास्त्र संमत है किन्तु इन तीनों में भेद युक्त उपासना करना अज्ञान जनित उपासना है।

तात्पर्य यह है कि अभेद ज्ञान द्वारा ही मोक्ष प्राप्त हो सकता है। जो भेद पूर्वक ज्ञान है वह ज्ञान नहीं है अज्ञान है। अस्तु सगुण निर्गुण इन दोनों का प्रतिपादन वेदों में पाया जाता है किन्तु स्वामी जी का सगुण ब्रह्म का प्रतिपादन वेद विरुद्ध है।

"स्वामी जी ने निम्न चौ० से सगुण ब्रह्म को असत भी कहा है सिनगार प्र० १।

सत लोक मृत लोक दो कहे, स्वर्ग कह्या अमृत। जो नीके किताबे देखिये, तो ये सब उड़सी अत ॥८॥

अर्थ:— सत लोक मृत्यु लोक ये दो कहे गये हैं तीसरा स्वर्ग को अमृत भी कहा गया है यदि अच्छी तरह से पुस्तकें देखी जाय तो ये ब्रह्म लोक आदि सब असत होने से नष्ट हो जायंगे।"

मीमांसक :—स्वामी जी शास्त्रोक्त ब्रह्म लोक को असत बताते हैं तो उन्होंने जो अपने लाहूत धाम में नानात्व विषयों का वर्णन किया है वह कैसे सत हो सकता है। ब्रह्म लोक असत है लाहुत सत है इस विषय को प्रमाणित करने के लिये आपके पास क्या प्रमाण है इस सम्बन्ध में इन्होंने केवल यही प्रमाण पेश किया है कि हमारा लाहूत दिव्य सच्चिदानन्द मय है किन्तु यह कोई प्रमाण नहीं है यदि कोई वस्तु केवल कथन मात्र से सत हो सकती है तो कोई भी अपनी वस्तु को सत कह सकता है। किन्तु कथन मात्र से वस्तु की सत्य प्रामाणिकता नहीं सिद्ध होती। युक्ति प्रमाण से आपके धाम की नित्यता नहीं सिद्ध होती। जब आप यह कह रहे हैं कि यह एक मिट्टी का बना हुआ घट असत है तो दूसरा मिट्टी का बना हुआ घट असत क्यों नहीं। इस युक्ति प्रमाण से आपके कथन ही द्वारा आपका लाहूत धाम असत और काल्पनिक हो जाता है। और स्वामी जी के धाम का वर्णन में यह भी विशेषता है कि वहाँ अत्यधिक विषय भोगों का वर्णन हुआ है इस कारण से भी वह सत्य नहीं हो सकता।

यदि स्वामी जी ने शास्त्र दृष्टि से सगुण ब्रह्म को असत कहा यह इनका विचार गलत है। क्योंकि सगुण ब्रह्म सृष्टि के अभाव काल में जब निर्गुणावस्था में आता है तो वह असत नहीं कहा जा सकता। मान लीजिये किसी एक व्यक्ति का मकान इलाहाबाद में बना हुआ है और दूसरा कलकत्ते में बना हुआ है वह नियमित समय में दोनों जगह आया जाया करता है तो जिस समय एक स्थान को छोड़ कर दूसरी जगह चला गया तो क्या उस समय उसे असत कह सकते है। इसी तरह उस ब्रह्म का सगुणावस्था से निर्गुणावस्था और निर्गुणावस्था से सगुणावस्था रूप क्रम चलता ही रहता है। इन हेतुओं से वह असत नहीं कहा जा सकता।

यदि सृष्टि के अभाव काल में वह असत हो जाता तो उसकी पुनः उत्पत्ति होना सम्भव नहीं क्योंकि असत से सत वस्तु की उत्पत्ति नहीं हो सकती। और वेदों में सृष्टि की उत्पत्ति पूर्व सृष्टि के अनुकूल ही बताया (**सूर्याचन्द्र मसौधाता यथा पूर्व मकल्पयत**) ईश्वर ने सूर्य चन्द्रादि रूप सृष्टि की रचना पूर्ववत ही किया। इन वेद वचनों से सृष्टि का प्रवाह रूप से होना पाया जाता है। यदि सृष्टि के अभाव काल में सगुण ब्रह्म असत हो जाता है तो सृष्टि की रचना ही कैसे हो सकती थी। वेद मंत्र में सृष्टि की उत्पत्ति पूर्व बतलाने से यह सिद्ध हो जाता है कि सगुग ब्रह्म अपने कारण रूप में नित्य शाश्वत है। असत तो अविद्यमानता का प्रतिपक्षी है। इन हेतुओं से प्रकृति को भी असत नहीं कहा जा सकता क्योंकि उक्त मंत्र में धाता (ईश्वर) से सृष्टि रचना का कथन है यदि सृष्टि का अत्यन्ताभाव होता तो सृष्टि रचना ही कैसे हो सकती थी जिस प्रकार कुम्भकार मिट्टी के अभाव में घटोत्पत्ति नहीं कर सकता उसी तरह प्रकृति के सर्वथा अभाव से ईश्वर भी सृष्टि रचना में समर्थ नहीं हो सकता। इसी से तो वेदों का कथन है (**सदेव शौम्येदमग्रमाशीत् एकमेवा**

द्वितीयम्) हे शौम्य यह संसार सृष्टि के पूर्व एक अद्वितीय रूप से सत ब्रह्म ही था। इस कथन से सृष्टि ब्रह्म में अद्वितीय रूप से सत पाई जाती है। यदि कोई यह कहे कि माया के सत्य होने से ब्रह्म मे द्वैतापत्ति होती है। ऐसा नही द्वैतापत्ति का दोष तब हो सकता था जब वेद वाक्य में अद्वितीय शब्द का अभाव होता प्रकृति ब्रह्म में अभिन्न रूप सत होने के कथन से ब्रह्म में द्वैतापत्ति का दोष नहीं आता युक्तिवाद से भी यही सिद्ध होता है। देवदत्त के पुत्र न होने से देवदत्त को पुत्रवान कोई नहीं कह सकता उसी तरह ब्रह्म की अनिर्वाच्य परा प्रकृति उसमें बिलय हो जाने से उसे माया युक्त नहीं कहा जा सकता। अत: प्रकृति भी अपने कारण रूप में नित्य है। ऐसा मानने से ही वेद वाक्यों की सार्थकता हो सकती है।

अस्तु इस अध्याय में वर्णित स्वामी जी की जितनी चौपाइयाँ हैं उन सबों में खुदा के धाम में मायिक विषयों का ही वर्णन हुआ है। पाँचसी भोम में रात्रि के समय हक, हादी, रूहों का शयनादि वर्णन शीतकाल में धूप आदि का सेवन और सखियों का शृङ्गार करके खुदा की शय्या पर क्रीड़ा विहार आदि का वर्णन ये सब मायिक विषय जन्य व्यवहार है। उक्त प्रकार के वर्णन से वह ब्रह्म धाम नहीं कहा जा सकता क्योंकि (**यत्रास्ति मोक्षो न च तत्र भोगः यत्रास्ति भोगो न च तत्र मोक्षः**) जहाँ पर मोक्ष है वहाँ पर भोग विषय नहीं हो सकते और जहाँ पर भोग विषय है वहाँ मोक्ष नहीं हो सकता। मोक्ष और भोग ये दोनों एक जगह नहीं हो सकते ये परस्पर विरुद्ध धर्माश्रयी है। सांसारिक विषय भोगों से मन का उपरत हो जाना ही तो मोक्ष है और जब मन नाना विषयों में आसक्त है तभी तो बन्धन का हेतु है।

ब्रह्म धाम मे नाना विषयों का वर्णन होने से उसके अनित्यपने

का भी दोष होता है । श्रुति का कथन है । **यत्रहिद्वैत मिव भवति तदितर इतरं जिघ्रति तदितरं इतरं पश्यति तदितर इतरं शृणोति यदल्पम् तन्मर्त्यम्**) जहाँ द्वैत (मायिक) धर्म होता है वहाँ अन्य अन्य वस्तु के गन्ध को ग्रहण करता है अन्य अन्य को देखता है और अन्य अन्य की बातों को सुनता है वह अल्प है और मर्त्य (विनाशी) है । श्रुति—**यत्रनान्यत्पश्यति नान्यत शृणोति नान्यत विजानाति स भूमाथ** जहाँ पर अन्य को नहीं देखा जाता न अन्य को सुना जाता है और न अन्य को जाना ही जाता वह भूमा (ब्रह्म धाम) है । श्रुति – **यत्रत्वस्य सर्वात्मैवाभूत् तत्रकेनकं पश्येत् केनकं विजानीयात् ये नेदं सर्वं विजानातितं केन विजानीयात्**) जहाँ ब्रह्म तत्व से भिन्न अन्य कुछ है ही नही वहाँ कौन किसको देखे कौन किसको पहचाने जिससे सब कुछ जाना जाता है उसको किससे जाना जाय । उदाहरण जैसे चक्षु सभी पदार्थों को देखता है किन्तु चक्षु को किसके द्वारा देखा जाय । अस्तु इन श्रुति वचनों से ब्रह्म में अन्य वस्तुओं का न होना पाये जाने से स्वामी जी का वर्णन किया हुआ धाम खुदा का धाम नहीं सिद्ध होता ।

इसी अध्याय में वर्णित स्वामी जी ने २० चौ० में लिखा है कि धाम में पृथ्वी, आकाश, जड़, चेतन, प्राणियों को पारावार नहीं है तथा निम्न चौ० में आप लिखते हैं परिकर्मा—**साक बांदर जो ल्यावत, सखियाँ सबे सभारत** धाम के अन्दर भोजन के लिये बंदर जाति साक भाजी ले आते हैं उसे सखियाँ सुधारती हैं । इस तरह का वर्णन सब प्राकृत वर्णन है । न्याय शास्त्र का सिद्धान्त है **(यद्यत् स विशेषं तत्तद् घट पटादि वद्विनाशि)** जहाँ भी सविशेष

पदार्थ होगा वह घट और पट के समान अनित्य होगा। इन्होंने ब्रह्म में सभी सविशेष पदार्थों का वर्णन किया है इससे घट और पट के समान अनित्य हो जाता है। इन्होंने धाम में अनेक महल मन्दिरों की भी कल्पना किया है जिससे यह प्रश्न उठता है कि वे मकान किन वस्तुओं से बने हैं यदि ईटा, पत्थर, मिट्टी से बने हुये हैं तो सब प्राकृत ही है कब बने किसने बनाया ऋतुओं के वर्णन से वर्षा ऋतु में चूते भी होंगे जिससे मरम्मत भी होती होगी। उनके पतित होने का भी भय है अतएव स्वामी जी ने खुदा को भी माया के जाल में बाँध दिया है। अस्तु इस तरह के वर्णन से पद पद पर आपत्तियाँ आती हैं। इन्हीं विवादों को श्रुति ने निपटारा कर दिया है। **(स भगवः कस्मिन्प्रतिष्ठतीति स्वमहिम्नि)** अर्थ वह ब्रह्म किसमें प्रतिष्ठित (स्थित) है वह अपनी महिमा में ही स्थित है। वह किसी देश विशेष अथवा कोई लोक में ईटा, पत्थर से निर्मित भवनों में स्थित नहीं है।

स्वामी जी ने यह भी कहा है कि **(खिरे न पं खीका पर)** लाहूत में पक्षियों के पखने तक नहीं गिरते। ऐसा हो ही नहीं सकता कि किसी का अवयव सत्य हो अंग कहने ही से प्राकृत नियम लागू हो जाता है इसी तरह रूहों और खुदा के अंग बतलाने से वे नित्य नहीं हो सकते।

पूर्व पक्षी—इस प्रकार के कथन से सगुण ब्रह्म के अवयव भी नित्य नहीं कहे जा सकते। उत्तर पक्षी—कार्य के नष्ट होने पर कारण के विद्यमान रहने से वह असत नहीं कहा जा सकता क्योंकि उसकी पुनः उत्पत्ति होना सम्भव है अतः प्रवाह रूप से सगुण ब्रह्म नित्य सिद्ध है। जिस तरह घट के अभाव में उपादान कारण रूप मिट्टी नही नष्ट होती सत रूप में उसकी विद्यमानता पाई जाने से पुनः घटोत्पत्ति हो जाती है। इसी तरह सगुण ब्रह्म अपने

कारण रूप में मिलकर सृष्टि काल में पुनः अपने रूप में स्थित हो जाने से वह प्रवाह रूप से नित्य है । कार्य किसी का सत्य नहीं होता क्योंकि वह माया से सृष्ट है इसी कारण वह अनित्य है। किन्तु स्वामी जी ने शरीर धारी खुदा का कारण अशरीरी तत्व नहीं माना है कार्य रूप शरीर बिना कारण के नहीं हो सकता यदि शरीर धारी है तो उसका कारण अवश्य ही होगा शरीर धारी का कारण सिद्ध होने से नूर जम्माल (अक्षरातीत) से भी पर अन्य खुदा का होना सिद्ध होता है। दूसरा यह भी दोष आता है कि कार्य रूप शरीर के अभाव होने से खुदा नूर जम्माल का भी अभाव हो जाना पाया जाता है क्योंकि उसका दूसरा अशरीरी कारण न मानने से उसकी पुनः उत्पत्ति भी नहीं हो सकती जिससे वह प्रवाह रूप से भी नित्य नहीं सिद्ध होता। अतः इन्होंने लाहूत धाम में जो शरीरी खुदा का वर्णन किया है उसमें कोई ज्ञान की मौलिकता नहीं पायी जाती । यद्यपि इन्होंने कहा है कि सृष्टि के आरम्भ काल से आज तक किसी व्यक्ति ने खुदा के अखंड दरवाज़े को नहीं खोला जिस किसी ने ईश्वर के सम्बन्ध में जो कुछ वर्णन किया है वह सब नाशवान् वस्तु का ही वर्णन किया है खुदा को किसी ने प्राप्त नहीं किया। उक्त आशय की चौ० निम्न है। सिनगार प्र० १ **किन कायम द्वार न खोलिया अव्वल से आज दिन । जो कोई बोल्या सो फना मिने, किन पाया न वका वतंन** ।।४।। ये हिन्दुओं के राम कृष्ण विष्णु अक्षर ब्रह्म आदि से भी अपने को बड़ा मानते हैं। अस्तु मीमांसक का पाठकों से अनुरोध है कि संसार में कोई कितना ही महान् क्यों न बनता हो हमें अंधे होकर उसके पीछे न चलना चाहिये। आत्मोद्धार के लिये धर्म पथ का अनुसरण विवेक पूर्ण होना

अनिवार्य है। इन्होंने परिकर्मा नामक ग्रन्थ में धाम के हक, हादी, रूहो के विभिन्न ऐश्वर्योपभोगो का वर्णन किया है तथा उसी को प्राप्त करने के लिये मुमुक्षुओं को प्रेरित किया है। इन प्रलोभन वचनो से साधक के अन्तःकरण मे कामनाओ की वृद्धि होने से संसार की ही वृद्धि होती है रागादिकों की निवृत्ति नहीं होती मन यदि विषयों मे आसक्त है तो मोक्ष होना कदापि शंभव नहीं अतः मोक्ष को चाहने वाले साधक को चाहिये कि वह इनके प्रलोभन वचनो से मोहित न होकर संसार से पूर्ण रूपेण वैराग्य प्राप्त कर निष्काम भाव से केवल ईश्वर प्रीत्यर्थ उपासना करता हुआ निश्चल चित्त हो जाय।

इति निजानन्द मीमांसायां उत्तरार्धभागे
धाम वर्णनं नाम द्वादशोऽध्यायः १२

अभ्यासार्थक प्रश्न

१—यह सिद्ध कीजिये कि स्वामी जी ने सारे भारत को इस्लाम धर्म मे परिवर्तित करने का प्रयत्न किया है।

२—लाहूतधाम में किन-किन वस्तुओं का वर्णन हुआ है।

३—सावयव खुदा के सम्बन्ध में लेखक के विचार व्यक्त कीजिये।

४—सगुण निर्गुण ब्रह्म में अभेदता का प्रतिपादन कीजिये।

५—सगुण ब्रह्म के नित्य अनित्य होने के विषय मे क्या कहा गया है।

६—धाम में जिन-जिन वस्तुओं का वर्णन हुआ है क्या वे प्रकृति से भिन्न तत्व है।

७—यह स्पष्ट कीजिये कि कार्य बिना कारण के नहीं होता।

अथ त्रयोदशोऽध्यायः १३

जीवात्मा-विचार

स्वामी जी के सिद्धान्तानुसार जगत् जीव ईश्वर ये तीनों अनित्य माने गये है। इन्हें अनित्य मानने का खास कारण यही है कि ये हक हादी रूहे नूर जल्लाल के स्वप्न से सृष्टि की उत्पत्ति मानते है जब ये जागृत अवस्था में आयेगे तो स्वप्न की सृष्टि का अभाव होना स्वाभाविक है अतः स्वप्न से उत्पन्न उक्त तीनों तत्व स्वतः नष्ट हो जायगे। जीवो के अनित्य सम्बन्ध की चौ० निम्न है।

"कलस प्र० २४ चौ० १७ **उत्पन्न देखी ईंड की, अंतराय नहीं रती रेख। सत वासना असत जीव, सब विध कही विवेक ॥१७॥**

अर्थ—स्वामी जी का कहना है कि हर एक प्रकार के विवेक द्वारा हमने संसार की उत्पत्ति के विषय में देखा कि वास्ना (रूहे) सत्य है और जीवात्मा असत वस्तु है इसमें रत्ती मात्र अंतर नहीं है।"

मीमांसक :—पाठको—जीव के अनित्य सम्बन्ध में न प्राचीन षट् दर्शनो न स्मृति धर्म शास्त्रों और न वेदो में ही जीव को अनित्य कहा गया। और मध्य युग में भारत में अनेक संप्रदाय प्रवाहित हुये किन्तु ऐसा वेढंगा सिद्धान्त किसी संप्रदाय प्रवर्तक ने नहीं माना पता नहीं यह सूझ स्वामी जी को कहाँ से आई। और कोई कारण नहीं इन्हें तो वेद धर्म से विरुद्ध अपने सिद्धान्तों को दिखाना है। किन्तु यह निश्चित है कि किसी भी प्रमाण द्वारा जीवात्मा

अनित्य नहीं हो सकता। प्रथम युक्ति वाद—यदि आप जीवात्मा को अनित्य मानते है तो आपकी अठारह हजार श्री मुख वाणी का मोक्ष (भिस्त) के लिये उपदेश देना व्यर्थ है। क्योंकि जो वस्तु भविष्य में स्वतः असत होने वाली है वह किसी काल में सत नहीं हो सकती जिस तरह प्रत्येक प्राणी का पार्थिव शरीर विनाशशील है उसे किसी भी उपाय द्वारा अविनाशी नहीं बनाया जा सकता। उसी तरह जीवात्मा को मोक्ष का उपदेश देकर उसे अमरत्व नहीं प्रदान कर सकते।

यद्यपि इन्होंने जीवात्मा को असत मान कर उसे सत्य कर देने को भी कहा है।

"कलस प्र० २३ **असत सब होसी सत, बुद्ध नूर के प्रकाश ॥८७॥ अनेक आगे होयसी, इन वाणी का विस्तार। ये नेक कह्या में करने अखंड ये संसार ॥८५॥ चौथी भिस्त जो होयसी पावेखलक आम ॥**

अर्थ—स्वामी जी कहते है कि मुझ निष्कलंक बुद्धावतार के प्रकाश से सभी असत वस्तु सत हो जायगी। इस हमारी वाणी का विस्तार आगे चल कर अनेक प्रकार से होगा इस संसार को अखंड करने ही के लिये मैं इस अठारह हजार वाणी को कहा है और हमारे द्वारा जो चौथा भिस्त (मोक्ष) कायम होगा उसे सब संसार के जीव प्राप्त करेंगे।"

मीमांसक :—उक्त चौ० द्वारा जो आप सब संसार के असत जीवों को सत करने की प्रतिज्ञा कर रहे हैं यह सर्वथा गलत है क्योंकि असंभव बातें कभी भी संभव नहीं हो सकती जैसे आकाश में पुष्प का खिलना, शशक के शृङ्ग होना ये असंभव बातें कभी संभव नहीं हो सकती उसी तरह यदि जीवात्मा असत है तो वह

आपके द्वारा किसी काल में सत नहीं किया जा सकता। भगवान ने गीता में इन विषयों को अच्छी तरह समझाया है।

गीता अ० २ **नासतो विद्यते भावो ना भावो विद्यते सतः, उभयोरपिदृष्टोऽन्तस्त्वनयो स्तत्व दर्शभिः ।१६ ।**

अर्थ—अय अर्जुन असत वस्तु का तो कोई अस्त्वित्व ही नहीं है और सत का अभाव भी नहीं है इस प्रकार इन दोनों का ही तत्व, ज्ञानी पुरुषों द्वारा देखा गया है। अतएव स्वामी जी जो असत वस्तु को मोक्षाधिकार (अमरत्व) प्रदान कर देना बताते है यह गीता शास्त्र से सर्वथा विरुद्ध है क्योंकि भगवान स्वतः कह रहे है कि असत वस्तु का तो कोई अस्त्वित्व ही नहीं है इस सत असत के तत्व को ज्ञानी पुरुषो द्वारा भी विचार किये जाने को बताया है। अस्तु जिस प्रकार बालक खेलते समय चक्कर मारते हुये कहते है कि ये सब घर घूम रहे है उसी प्रकार इनका भ्रान्तिमय ज्ञान है। और आगे चल कर ऐसी वाणी के उपदेश का विकाश होना भी असंभव है क्योंकि वे जिज्ञासू खुद समझ जाँयगे, कि यदि मैं असत हूँ तो मुझे सत कौन कर सकता है। ईश्वर अंश जीव अविनाशी। ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः।

हिन्दू धर्म में जीवात्मा नित्य है यह युक्ति प्रमाण से भी सिद्ध किया जा रहा है। जीवात्मा नित्य है क्योंकि उसके पुनर्जन्म लेने से अनेक संचित ज्ञान का विकास देखा जाता है। बालक जन्म लेते ही माता के स्तनों को चूसने लगता है इस क्रिया को प्रेरणा देने वाला कोई अन्य नहीं उसके पूर्व संस्कार होने से ही स्वतः मुख से दूध चूसता है क्रमसः पलंग में पड़े हुये आनन्द धर्म पूर्व से ही विद्यमान होने के कारण हँसता है और हाथ पैर चलाकर खेलता भी है। कुछ दिन बाद बोलने की शक्ति प्राप्त करता है। इस तरह उसके ज्ञान का

विकसित होना तभी संभव है जब बालक के हृदय रूप अन्त:करण में पूर्व जन्म के संचित संस्कार होंगे। बालक को कोई छत से फेकने का, पानी में डुबाने का नाटक करें] तो बालक भय से चिल्ला उठता है इससे पूर्व संस्कारों की सिद्धि होती है। भक्त प्रह्लाद राक्षस कुल में जन्म लेने पर भी पूर्व दैवी संस्कार होने के कारण पिता हिरण्यकश्यप के अनेक यातनाओं को सहन करते हुये और आचार्य द्वारा उपदेश प्राप्त करते हुये भी अपने स्वभाव से विचलित नही हुये उनमें गुरु की सिखाई हुई विद्या का प्रभाव नहीं पड़ा इससे यही सिद्ध होता है कि उनमें राक्षसी स्वभाव के संस्कार नहीं थे। दूसरा यह भी प्रत्यक्ष देखा जाता है कि कोई अल्प आयास में ही विद्या धन गौरव प्राप्त कर लेते है और किसी को अथक परिश्रम करने पर भी सफलता नहीं प्राप्त होती। इसी प्रकार प्रत्येक प्राणी कला कौशल में दक्ष नहीं होते। इन सब बातों के पूर्व जन्म के संस्कार ही कारण है। और संचित संस्कार जीवात्मा ' के नित्य माने बिना बन नहीं सकते। इन हेतुओं से जीवात्मा की नित्यता पाई जाती है।

यदि कोई कहे कि बिना पूर्व जन्म के संस्कार से ही हम बालक को विकसित माने लेते है तो ऐसा नही हो सकता क्योंकि जो वस्तु जिस देश विशेष में पूर्व से स्थित नही है उसे हम हस्तगत नही कर सकते जैसे पृथ्वी खोदने से अन्ततोगत्वा जल प्राप्त होता है क्योंकि पृथ्वी के तल भाग में पूर्व से ही जल विद्यमान था यदि न होता तो लाखो प्रयत्न करने पर भी नही प्राप्त हो सकता था। मान लीजिये जिस घट में पूर्व से ही जल का अभाव है उससे जल प्राप्ति के लिये लाखों उपाय करने पर भी हम जल नहीं प्राप्त कर सकते क्योंकि वह घट पूर्व से ही जल के विद्यमानता का प्रतिपक्षी था इससे भी सिद्ध है कि बालक के हृदय में पूर्व जन्म के संस्कार अवश्य थे

जिससे वह क्रमशः विकसित होता जा रहा है। इसी तरह यदि जीवात्मा (रूह) न होता (असत उसका अभाव होता) तो वर्तमान में उसकी उत्पत्ति उपलब्धि भी नही हो सकती थी क्योंकि अभाव से भाव रूप उत्पत्ति नही देखी जाती। जैसे मिट्टी के अभाव में घटोत्पत्ति असंभव है वैसे ही जीवात्मा (रूह) के अभाव असत बतलाने से उसकी उत्पत्ति भी असंभव है। किन्तु मैं शब्द से वाच्य जीवात्मा कहता है कि यह मेरा शरीर है यह मेरा घर है संसार के नाना विषयों का भोक्ता मैं ही हूँ इससे उसके होने का भाव स्पष्ट है। इन हेतुओ से वह नित्य भी है।

स्वामी जी ने जीवात्मा को अनित्य माना है इसमें किसी प्रकार का संदेह नहीं है। अब उन्हीं की वाणी द्वारा. जीवात्मा की नित्यता सिद्ध की जाती है।

परिकर्मा प्र० ३ चौ० १८० **पर इत सुख पायो जो पर आतमा सो तो कबहूँ न काहूँ जनम ॥१८०॥**

अर्थ—स्वामी जी कहते हैं। परन्तु हमारी पर आतमा ने जो यहाँ वर्तमान काल में सुख पाया है वह सुख कभी भी किसी जन्म में नहीं पाया। उक्त कथन ठीक ही है आप पन्ना में उच्च सिंहासना शीन हो छत्र चामरादि से युक्त आठ पहर की आरती पूजा विविध व्यंजनादि से सत्कृत होकर नृत्य वाद्यादि विषयों का सेवन करते थे तो ऐसा सुख आपको किसी जन्म में भी अवश्य ही न मिला होगा। यद्यपि उक्त चौ० की रचना करते समय इन्होंने विवेक नहीं रक्खा यदि मैं अपना पुनर्जन्म लिखता हूँ तो जीवात्मा कैसे अनित्य सिद्ध हो पायेगा। फिर इनके सिद्धान्त में एक महान दोष यह उपस्थित होता कि चौ० में अपना अनेक जन्म बतलाने से संसार के जीवात्माओं के समान ही आपका होना पाया जाता है। मैं धाम की

इन्द्रावती सखी हूँ आखरी महंमद के रूप में खुदा का पेगाम लेकर रूहों को जागृत करने के लिये आया हूँ। ये सब बाते अथवा संपूर्ण १८ हजार वाणी झूठी हो जाती है। और इस कथन से धाम की सखियों का तथा अपना संसार में आना केवल तीन बार १ व्रज में २ अरब में ३ जागनी में जो बताया गया है वह भी झूठा हो जाता है। अस्तु स्वामी जी के सम्पूर्ण ग्रन्थो में केवल उपरियुक्त १०८ मी चौपाई ही ऐसी है जो सत्य प्रमाणित हो जाती है क्योंकि पुनर्जन्म की वास्तविकता तो कहीं न कहीं से टपक ही पड़ती है सत्य वस्तु छिपाई नही जा सकती। इस प्रकार स्वामी जी के वचनो में परस्पर विरोध स्पष्ट है। वे जीव को असत कहते हैं और फिर अपना तथा सखियों का पुनर्जन्म भी बताते हैं।

फिर स्वामी जी लिखते हैं **(एक लुगा झूंठ न हो वही जो कहे अल्ला कलाम)**

अर्थ—जो अल्लाह (स्वामी) जी ने कलाम (शब्द १८ हजार वाणी) कहा है उसका एक लुगा (शब्द) भी झूठा नहीं हो सकता। इनकी सत्य वादिता पाठक बन्धु अवलोकन करें जब आप लिखते हैं कि किसी जन्म में ऐसा सुख नहीं पाया, तो आप अपने ही कथन से अपना अनेक जन्म होना स्वीकार कर लिया फिर जीवात्मा को अनित्य क्यों कहा यदि जीवात्मा अनित्य होता तो आप का पुनर्जन्म कैसे होता। पुनर्जन्म के कथन से आत्मा नित्य सिद्ध हो जाता है और उसे अनित्य कहना यह झूठा हो जाता है। इससे सत्य प्रतिज्ञा वाली उक्त चौ० भी झूठी सिद्ध होती है। जीवात्मा के नित्यता के सम्बन्ध में शब्द प्रमाण आगे दिये जांयगे।

"कलस प्र० २४ **जो जीव हो सी सुपंन के, सो क्यों उलंघे**

सुन । वास्ना सुन्य उलंघ के, जाय पोहोचे अच्चर वतंन ॥२१॥

अर्थ—जो रूहो के स्वप्न से उत्पन्न हुये जीव हैं वे शून्य मंडल को कैसे अतिक्रमण कर सकते हैं अर्थात् नहीं पार कर सकते किन्तु रूहें शून्य मंडल को भेद न करती हुई नूर जल्लाल के घर पहुंच जाती हैं।"

मीमांसक—यहाँ स्वामी जी ने वास्ना शब्द का अर्थ धाम की सखियों (मोमिनो) के लिये जो प्रयोग किया है वह गलत है। क्योंकि वास्ना शब्द संस्कृत है वस् निवासे धातु से वास्ना शब्द बना हुआ है **(यः आत्मनि वसति)** जो जीवात्मा के हृदय रूप अन्त: करण में जन्म जन्मान्तर के संस्कार निवास करते हैं उसका नाम है वास्ना। यदि धाम की सखियों के लिये यह शब्द प्रयोग किया गया है तो उनके हृदय में जन्म जन्मान्तर को वासनायें स्थित होने से सखियों के अनेक जन्म और मृत्यु भी होना सिद्ध हो जाता है। दूसरा खुदा, हादी, मोमिन, को जो स्वप्न होना वताया गया है इससे और भी दृढ़ हो जाता है कि इन सबों में जन्म जन्मान्तर के संस्कार अवश्य ही थे तभी तो उसी अनुरूप स्वप्न हो रहा है। अत: वास्ना शब्द का प्रयोग जो सखी अर्थ में किया गया इससे इन्हीं के पक्ष की हानि हुई। फिर चौ० में जो यह कहा गया कि वास्ना शून्य को उलंघन कर अक्षर धाम में पहुंच जाती है यह आप ही के सिद्धान्तानुकूल गलत है क्योंकि सखियाँ उस धाम की हैं ही नहीं हैं। वे दूसरी जगह पहुंचने का अधिकार कैसे प्राप्त कर लेंगी वहाँ तो ईश्वरी सृष्टि (कुमारिका) सखियों का ही जाने का अधिकार है। अपने सिद्धान्तानुकूल लाहूत जाना न कह कर अच्चर धाम में जाना वताने से रचना में परस्पर वाक्यों का विरोध है।

"कलस प्र० २४ **ये सबे तुम समझियो, वास्ना जीव विगत।**

झूंठा जीव नींद न उलंघे, नींद उलंघे वास्ना सत ॥२२॥

अर्थ—प्यारे सुन्दर साथ जी इस तरह 'वास्ना और जीव की गतिविधियों को समझिये ये झूठा (असत) जीवात्मा मोह रूपी निद्रा को नहीं पार कर सकता इसे सत वास्नाये (मोमिन) ही पार कर सकते हैं २२।"

मीमांसक—उक्त चौ० में जो नींद शब्द का प्रयोग हुआ है उसके पर्यायवाची शब्द निम्न चौ० द्वारा बताया गया है।

कलस प्र० २४ **मोह अज्ञान भर मना, काल करम और सुन। ये नाम सारे नीद के, निराकार निरगुन ॥१६॥**

अर्थ—१ मोह २ अज्ञान ३ काल ४ कर्म ५ सुन ६ निराकार ७ निरगुण ८ भरम ये आठो नाम निद्रा के हैं। उक्त शब्दों में मोह अज्ञान भ्रम इन शब्दो का चाहे निद्रा अर्थ में प्रयाग किया ही जाय किन्तु सभी शब्द निद्रा के पर्यायवाची नहीं हो सकते। खेद इस विषय का है कि इन्होंने संस्कृत शब्दो का मनमानी कल्पना कर अनर्थ किया है। निराकार निर्गुण शब्द में निर उपसर्ग निषेधार्थक है जो आकार का और प्राकृतिक गुणो का ब्रह्म में निषेध करता है इससे ये शब्द ब्रह्म बोधक है निद्रा के बोधक नहीं है। इसी तरह काल कर्म शून्य को भी देखिये—**(अतीत्यादि व्यवहार हेतुः कालः)** भूत, भविष्य, वर्तमान, के व्यवहार का जो कारण द्रव्य है उसी को काल कहते हैं वह नित्य भी है क्योंकि अनेक बार भी सृष्टि की उत्पत्ति प्रलय होने पर भी काल (समय) बना ही रहता है। **(उत्क्षेपणाऽपक्षेपणाऽऽकुंचन प्रसारण गमनानि पंच कर्माणि)** ऊपर को ओर फेकना नीचे की ओर फेकना एकत्र करना फैलाना और गमन करना इस तरह पांच प्रकार के कर्म है। लोक में भी

प्रसिद्ध है कि कर्ता के द्वारा किये जाने वाले कार्य को ही कर्म कहा जाता है। और शब्द कोष से शून्य नाम आकाश का है इसे भी साधारण मनुष्य जानते हैं। अत: ये शब्द निद्रा के पर्यायवाची नहीं हो सकते इनके शब्द कोष भी संसार से भिन्न सब जगह दिखाई देते हैं।

उक्त चौ० २२ मी में जो वास्ना शब्द का प्रयोग हुआ है उसका पर्यायवाची शब्द इन्होंने मोमिन माना है आरबी भाषा के अनुसार इसका अर्थ होता है मुसलमानों में जो भक्त होते हैं उन्हे मोमिन कहा जाता है। उन्हीं मोमिनो को निद्रा रूपी माया का उलंघन कर मोक्ष का अधिकारी बताया गया। अन्य हिन्दू जीवों को मोक्ष का अनाधिकारी बताकर असत कहा गया। यदि मोमिनो के अलावा अन्य जीव असत हैं तो आपको उन्हे उपदेश ही न देना चाहिये था अरब देश में मोमिनो की संख्या अधिक थी वहां **(कुरान वारसी मोमिन कहे)** इस उपदेश को देना चाहिये था। किन्तु आप वहां प्रणामी संप्रदाय का उपदेश न कर सके और न वहां के कोई भी मोमिन आपके संप्रदाय में है। भारत में आर्यो के सामने यह कथन करने से मानो उन्हें आप चिढ़ा रहे हैं। और इस विषय का आपके पास क्या प्रमाण है कि मोमिन ही माया को पार कर मोक्ष के अधिकारी है अन्य हिन्दू जीव सब असत् है। इससे स्पष्ट है कि हिन्दुओं को इनका धर्म स्वीकार नहीं करना चाहिये और इन्हें हिन्दुओं को अपने धर्म का उपदेश भी नहीं देना चाहिये। क्योंकि इनके कथनानुसार हिन्दू इनके मोमिन धाम को कभी प्राप्त नहीं कर सकता। इसी तरह आगे और भी देखिये।

"कलस प्र० २४ चौ० २६ **वास्ना उत्पन्न अंग थे, जीव**

नींद की उतपत। कोई न छोड़े घर अपना, या विधसत असत ॥२६॥

अर्थ—वासना रूहे मोमिन खुदा के अंग से उत्पन्न हैं और ये जो हिन्दू जीव हैं इनकी उत्पत्ति निद्रा से है इसलिये ये दोनों ही, मोमिन परमधाम को और जीव निद्रा रूपी स्वप्न के घर को नहीं छोड़ सकते इस तरह वास्ना सत वस्तु है और जीवात्मा असत् वस्तु है। २६। कलस प्र० २३ चौ० ६१ **वासना जीव का वेवरा-एता, ज्यों सूरज द्रष्टेरात। जीव का अंग सुपंन का, वास्ना अङ्ग साख्यात ॥६१॥**

अर्थ—स्वामी जी वास्ना और जीवात्मा का विवरण करते हुये कह रहे हैं जिस तरह सूर्य की दृष्टि में रात्रि का अत्यन्त अभाव दिखाई देता है उसी तरह वासना रूपी सूर्य से जीव रूप रात्रि का अभाव है। तात्पर्य यह कि ये दोनों दिन रात्रि के समान विरुद्ध स्वभाव वाले हैं। वासना साक्षात खुदा का अङ्ग है और जीवात्मा स्वप्न का अङ्ग है।६१।"

मीमांसक—इस सम्प्रदाय के लोग प्राणनाथ को खुदा का रूप मानते हैं और इन्होंने भी कहा है कि धणी जी हमारे हृदय में आकर तारतम ज्ञान का प्रकाश कर दिया है। जिससे किसी वस्तु के निर्णय में अटक नहीं सकते। सब को सुलझा सकते हैं। प्रस्तुत चौ० में जिस तरह इनके हृदय मे इल्मलुन्दनी का प्रकाश हुआ है उसे अवलोकन कीजिये। वासना रूहो की उत्पत्ति हक हादी के अङ्ग से बता रहे हैं खुदा के धाम में मुक्तात्माओं की उत्पत्ति खुदा के अङ्ग से बताना क्या सम्भव हो सकता है इसी तरह खुदा ने ज्ञान का प्रकाश दिया है यदि वहाँ खुदा के अङ्ग से मोमिनो की उत्पत्ति

होती है तो यहाँ मृत्यु लोक में भी मनुष्य से मनुष्य की उत्पत्ति होती है। वहाँ धाम में कौन सी विशेषता है जिसे ब्रह्म धाम माना जाय। जिस तरह यहाँ मनुष्य उत्पन्न होकर मृत्यु को प्राप्त होते हैं। उसी तरह वासनायें भी उत्पन्न होने से मृत्यु को प्राप्त हो सकती हैं। और जो वासनाओं को सत कहा गया वह आप के वर्णन किये हुये तारतंम ज्ञान के द्वारा ही असत सिद्ध हो जाता है। जब यहाँ के सदृश ही धाम का वर्णन किया गया तो यहाँ यह प्रत्यक्ष देखा जाता है कि जो प्राणी उत्पन्न होते हैं वे समय पाकर विनष्ट अवश्य होते हैं। भगवान ने गीता में कहा है। **(जातस्य हि ध्रुवोमृत्यु ध्रुवं जन्म मृतस्य च)** अर्थ—उत्पन्न होने वाले की मृत्यु ध्रुव है। और जिसकी मृत्यु है उसका जन्म लेना भी ध्रुव है। और जीवात्मा की उत्पत्ति जो निद्रा स्वप्न से बताई गयी यह अपनी अयोग्यता का परिचय देना है इसे खुदा के ज्ञान का प्रकाश होना नहीं कहा जा सकता। इस विषय को स्वप्न सृष्टि के अध्याय में देखा जाय।

और ६१ मी चौ० में वासनाओं की सूर्य से उपमा देकर उनकी विशेषता और जीवात्मा की रात्रि से उपमा देकर उनकी जो न्यूनता बताई गई है तो वे वासनायें धाम से यहाँ मोमिन रूप में अवतरित होने से वे आज भी संसार में है अतः इनमें कौन सी विशेषता और हिन्दू जीवों में कौन सी न्यूनता देखी जाती है। और सूर्य रूप मोमिनों के रहते हुये जीवात्मा रूप रात्रि का अभाव कहाँ देखा जाता है। इसी प्रकार के ज्ञान को वेसक इल्म (शंसय रहित ज्ञान) कहा गया है। जिन्होंने यह मान रक्खा है कि इनके धार्मिक सिद्धान्त हिन्दू धर्मानुकूल हैं वे भूल में हैं। इनके कोई भी धार्मिक सिद्धान्त वेद मूलक नहीं है! जिन्होंने इनके ग्रन्थों को कभी भी उलटा कर देखा ही नहीं केवल कान फुका कर दीक्षित हो गये हैं वे ही अंधविश्वास के

कारण इसे हिन्दू धर्म के अनुकूल मानते हैं। और जिन लोगों ने इनके ग्रन्थों को देखा है उनके हृदय में परम्परागत अंध विश्वास का संस्कार दृढ़ हो चुका है इससे देखते हुये भी नेत्रों में नहीं दिखाई देता। जिस तरह हरा ऐनक आँख में लगाने से सूर्य की रोशनी भी हरी दिखाई देती है। उसी तरह अंधविश्वास का ऐनक हृदय रूप नेत्रों में लगने से वेद मूलक ही दिखाई देता है। यदि दोनों की आँख से विवेक पूर्ण देखा जाय तो उस वस्तु का निर्णय हो सकता है। इससे स्पष्ट है कि इन्होंने हिन्दू जीवों को नीचा दिखाया है और उन्हें असत्य माना है। तथा अपने सखियों वास्ना रूहों को सत्य माना है।

अब निम्न चौपाई द्वारा देखिये स्वामी जी खुद कह रहे हैं कि हमारे और शास्त्र के सिद्धान्त में फर्क है। "कलस प्र० १६।

पाँच तत्व छठी आतमा, शास्त्र सबो ये मत। ये निरवाण बाँध के, ले सुपने किया सत ॥२५॥ (शास्त्रों जीव अमर कह्या, और प्रलय कह्या चौदे लोक।)

अर्थ---पंचमहाभूत और छठमी आत्मा सत्य है यह सभी शास्त्रकारों का सिद्धान्त है इन शास्त्रकारों ने यह निश्चय कर रूहों की स्वाप्निक सृष्टि को भी सत्य मान लिया हैं। शास्त्रों में जीवात्मा को नित्य कहा गया है और चौदह लोकों को प्रलय होना कहा है। किन्तु यह हमारा सिद्धान्त नहीं है यह शास्त्रों का सिद्धान्त है। इसी तरह किरंतन नामक पुस्तक में भी लिखते हैं [**असत आपे सो क्यों सत को पेखे**] अर्थ :—ये जो स्वतः असत जीव हैं सत स्वरूप खुदा को कैसे देख सकते हैं।"

अस्तु इन्होंने अपने प्रत्येक ग्रन्थ में जीवात्मा को असत बताया

है। और शास्त्रों के सिद्धान्त को जानते हुये भी उसे नहीं माना। इन प्रमाणों से भी सिद्ध होता है कि इनके धार्मिक सिद्धान्त वेद मूलक नहीं । इन्होंने जिस स्थल पर हिन्दुओं को स्वमत में लेने का प्रयत्न किया है वहाँ कृष्ण का ओट ले बड़ी ही कूटनीति से काम लिया है। वह नैतिकता साधारणतया पकड़ में नहीं आती पूर्वा पर इनके वाक्यों का जब गहराई से अवलोकन किया जाता है तभी वह पकड़ में आता है। केवल कृष्ण का नाम सुन लेने मात्र से जिन्होंने इनके सिद्धान्तों को वेद मूलक माना है वे भ्रम में है कोई मनुष्य यदि अपने पुत्र का नाम कृष्णदेव रख लेता है तो क्या उसे वसुदेव पुत्र भगवान कह सकते है। इससे इनके सिद्धान्तों में कोई संगति नहीं पाई जाती। ये स्वत: भ्रान्त है और अवसरवादिता से काम लेकर इन्होंने हिन्दुओं को बहकाने में कोई कोर कसर उठा नहीं रक्खा इनका कोई स्थिर मत ही नहीं है जिसे माना जाय।

अब आगे शब्द प्रमाण के द्वारा जीवात्मा की नित्यता बताई जायगी। यद्यपि स्वामी जी ने हिन्दू शास्त्रों को प्रमाण नहीं माना है उनके मत का अनुगमन करने वालों के लिये युक्ति प्रमाण द्वारा जीवात्मा की नित्यता कह चुके हैं जो शास्त्रों में आस्था रखते हैं उनके लिये शब्द प्रमाण दिया जाता है। ईश्वर आत्मा एक अदृष्ट तत्व है ऐसे अप्रत्यक्ष वस्तु में मानव की नाना कल्पनायें होना कुछ स्वाभाविक सी हो जाती है। भारत धर्म प्रधान देश है यहाँ अनादिकाल से अध्यात्मवाद प्रवाहित होता रहा। इतिहास के अवलोकन से मध्य युग में विभिन्न मतों का प्रादुर्भाव हुआ जिससे धर्म तत्व की वास्तविकता साधारण जन समाज से कुछ छिप सी गई। अब हमें यह देखना है कि हमारे प्राचीन शास्त्रकारों ने इस विषय में क्या कहा है। यद्यपि जीवात्मा के सम्बन्ध में स्वतंत्र अध्ययन आपेक्षित है यहाँ केवल

सिद्धान्त की पुष्टि के लिये दो चार वाक्य लिखे जायंगे। मनु जी लिखते हैं [**धर्म जिज्ञा समानानां प्रमाणं परमं श्रुतिः**) जिसे धार्मिक जिज्ञासा (धर्म तत्व जानने की इच्छा हो) उसके लिये परम प्रमाण श्रुति ही है। व्यास जी ब्रह्म सूत्र में कहते हैं (**श्रुतेस्त शब्द मूलत्वात्**) शब्द प्रमाणों में वेद मूल प्रमाण है। वेद जीवात्मा को नित्य कहता है [**सव एष महानज आत्माजरोऽमरोऽमृतोऽभयो ब्रह्माभयं हिवै ब्रह्म भवति य एवं वेद**] यह महान् अजन्मा आत्मा जरा मरण धर्म से रहित और अमृत स्वरूप अभय है निश्चय ही यह ब्रह्म रूप अभय है जो इस प्रकार जानता है वह ब्रह्म रूप हो जाता है। गीता अ० २ में श्लोक १८ से ३० तक जीवात्मा के नित्यता के सम्बन्ध में अच्छी तरह से समझाया है। गीता अ० २ श्लोक २० (**न जायते म्रियतेवा कदाचिन् नायं भूत्वा भविता वा न भूयः अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्य माने शरीरे २०**)

अर्थ : यह आत्मा किसी काल में भी न जन्मता है और न मरता है अथवा न यह आत्मा हो करके फिर होने वाला है क्योंकि यह अजन्मा नित्य शाश्वत और पुरातन है शरीर के नाश होने पर भी इसका नाश नहीं होता।

वेदान्त के भारतियों ने मुख्य तीन अंग माने हैं वे निम्न हैं १ उपनिषद् २ गीता ३ ब्रह्मसूत्र इन तीनों में जीव को अनित्य नहीं कहा गया बल्कि उसकी नित्यता का प्रतिपादन करते हुये जीव ब्रह्म में अभेद बताया गया है श्रुति (**यदात्म तत्वं सतु ब्रह्म तत्वं**) जो आत्मा तत्व है वही ब्रह्म तत्व है। गोस्वामी जी ने भी लिखा है।

(ईश्वर अंश जीव अविनाशी चेतन अमल सहज सुख रासी) जीव ईश्वर का ही अंश है जो विनाश धर्म से रहित है तथा चेतन स्वरूप सविकारो से रहित स्वाभाविक आनन्द का स्वरूप है। यहाँ गोस्वामी जी ने जो जीव को ईश्वर का अंश कहा है वह उपाधिगत भेद से कहा है। यदि उपाधिगत भेद उन्हें अभीष्ट न होता तो वे रामायण मे यह चौपाई न लिखते (**ईश्वर जीवहि नहि कछु) भेदा बारि बीच जिमि गावहि वेदा)** ईश्वर और जीव मे किन्चित मात्र भेद नहीं है जिस तरह जल और लहर कथन मात्र के लिये है वस्तुत: वे दोनों एक ही है ऐसा वेदो में भी कहा गया है। गोस्वामी जी ने उक्त चौ० में जो यह कहा कि ईश्वर जीव की अभेदता वेदों ने भी वर्णन किया है। हमें यह देखना है कि जीव और ईश्वर के अभेद प्रतिपादन करने वाले वाक्य वेदो में कौन से हैं। वे वेद वाक्य ऋग, यजु, साम, के निम्न है। **(अयमात्मा ब्रह्म)** यह आत्मा ब्रह्म है। **(अहं ब्रह्मास्मि)** मैं ब्रह्म हूँ। **(तत्वमसि** वह ब्रह्म तू है। अस्तु गोस्वामी जी ने जीव और ईश्वर की अभेदता का जो प्रतिपादन किया वह वेदो के महा वाक्यों द्वारा भी सिद्ध है। पूज्यपाद भगवान शङ्कराचार्य जी ने भी कहा है (**श्लोकार्धेन प्रवचामि यदुक्तं ग्रन्थ कोटिभिः ब्रह्म सत्यं जगत् मिथ्या जीवो ब्रह्मैव नापरः)** करोड़ो ग्रन्थों का सिद्धान्त आधे श्लोक के द्वारा कहता हूँ कि ब्रह्म सत है और जगत मिथ्या है जीवात्मा ब्रह्म ही है अन्य नहीं है।

जहाँ कहीं शास्त्रों में जीव और ईश्वर में भेद का वर्णन हुआ है वहां जीव में अविद्या (माया) की उपाधि से भेद दिखाया गया

है । जैसे न्याय शास्त्र में (ज्ञानाधिकरणमात्मा सद्विविधः-जीवात्मा परमात्मा चेति । तत्रेश्वरः सर्वज्ञः परमात्मा एक एव । जीवस्तु प्रति शरीरं भिन्नो विभुर्नित्यश्च]

अर्थः - जिस द्रव्य में समवाय (नित्य) सम्बन्ध से ज्ञान रहता हो वही आत्मा है । ज्ञान का अधिकरण आत्मा है क्योंकि आत्मा में ज्ञान समवाय सम्बन्ध से रहता है वह आत्मा दो प्रकार का है-जीवात्मा और परमात्मा (परमात्मा-ईश्वर सर्वज्ञ है और एक ही है । जीवात्मा प्रत्येक शरीर में उपाधिगत भेद से भिन्न भिन्न है । वह जीवात्मा व्यापक और नित्य है । अस्तु शब्द प्रमाणों द्वारा भी यह सिद्ध कर दिया गया कि जीवात्मा नित्य विभु पदार्थ है । जीव और ब्रह्म में उपाधिगत भेद है जो अविद्या के कारण मिथ्या है । वस्तुतः दोनों में अभेद है । इस तरह आप्त पुरुषों के सिद्धान्तों का और प्राणनाथ के सिद्धान्तों की तुलना करने पर महदन्तर पाया जाता है (हमारे आर्य भारतीयों ने जीवात्मा को अनित्य किसी ने नहीं माना । केवल चार्वाक एक ऐसा मत था जो जीवात्मा का पुनर्जन्म नहीं मानता था । उनका कहना था [रिणं कृत्वा घृतं पिबेत् भस्मी भूतस्य देहस्य पुनराजननं कुतः] रिण करके घी पीना चाहिये जल कर खाक हो जाने वाले शरीरी का दुबारा जन्म कहां है । जन्म न होना मानना ही जीवात्मा के अनित्यता का सूचक है । इसी तरह स्वामी प्राणनाथ जी ने भी जीवात्मा को नित्य नहीं माना । इनके जीवात्मा के अनित्य मानने का खास कारण यही हो सकता है कि यदि हम जीवात्मा को नित्य मानेंगे तो सम्प्रदाय कायम करने का जो मूलाधार रूहों की स्वाप्निक सृष्टि है वह कैसे सिद्ध होगी । क्योंकि स्वप्न तो प्रत्यक्ष अनित्य

होता है। जीवो की उत्पत्ति रूहों के स्वप्न से उत्पन्न होने के कारण ही इन्होंने जीवात्मा को असत कहा होगा।.

स्वामी जी ने भारतीय अध्यात्मवाद को देखा ही नही यदि देखते तो ऐसी अनर्गल वेतुकी बाते कभी न लिखते। अब शास्त्रों में ब्रह्म के लक्षण जो सच्चिदानन्द बताये गये हैं वे लक्षण जीवात्मा में पाये जाते हैं यह युक्ति प्रमाण से भी सिद्ध किया जाता है। पहला इसमें जो सत लक्षण पाये जाते हैं वह पुनर्जन्म आदि युक्ति प्रमाण से सिद्ध किया जा चुका है कि जीवात्मा सत वस्तु है अब दूसरा यह चित रूप भी है। क्योंकि अपने ज्ञान से संसार के सभी पदार्थों को जानता है, सब प्रकार के कार्यों का कर्ता है तथा सभी विषयों का उपभोक्ता भी है। सब कार्यों के करने व सब वस्तुओं के ग्रहण करने में समर्थ होने के कारण व चेतन तत्व के अलावा जड़ प्रकृति में नाना विषयों के ग्रहण करने में असमथे होने के कारण जीवात्मा में ही चेतन धर्म का होना पाया जाता है इन हेतुओं से सिद्ध है कि जीवात्मा चित् स्वरूप भी है।

जीवात्मा आनन्द धर्म से युक्त है क्योंकि उसमें आनन्द धर्म के लक्षण पाये जाते हैं। जब किसी परिचित व्यक्ति से संयोग होता है तो हम उससे पूछते हैं कि आप आनन्द से रहे न वह कहता है मैं आनन्द पूर्वक था आप अपने आनन्द का समाचार कहिये, मैं भी आप की दया से आनन्द ही में था। चाहे कोई उस समय दुख की ही अवस्था में रह रहा हो किन्तु पहले कहेगा यही कि मैं आनन्द में ही हूँ दुखद समय में भी आनन्दित बताने का कारण यही है कि प्रश्नकर्ता स्वाभाविक गुण के अनुसार कुशल प्रश्न पूंछ रहा है इससे उत्तर दाता को दुखद समाचार बताने में संकोच है। यदि उसमे आनन्द धर्म स्वाभाविक न होता तो लोक में ऐसा पूछा ही

न जाता मिलाप होने पर यह तो कोई नहीं कहता कि आप दुख से रहे न तात्पर्य यह कि जीवात्मा को दुख अस्वाभाविक गुण है और आनन्द स्वाभाविक गुण है। बाद में अपने दुखद समाचार को भी बताता है। यह दुख की अवस्था अल्प कालीन होने से औपचारिक है। क्योंकि प्रायः मनुष्य अल्पकाल ही के लिए रोग या किसी शोक से दुख का अनुभव करता है। थोड़े ही समय में रोग से मुक्त हो आनन्द का अनुभव करने लगता है। इसी तरह शोक वाला भी दुख थोड़े समय में भूल जाता है। इस तरह आये हुये दुख की अवस्था अल्पकालीन और आनन्द की अवस्था जीवन पर्यन्त होने से जीवात्मा में आनन्द धर्म होना स्वाभाविक गुण है। बालकों की रुचि हमेशा खेलने हसने से रहती है यह क्यों, उनका आनन्द मनाना यह स्वाभाविक गुण है यदि उन्हें माता पिता खेलने से रोकते हुये मार भी देते हैं। वे रोकर उस मारने के दुख को तुरन्त भूल जाते हैं और पुनः अपने स्वभाव में आकर आनन्द का अनुभव करने लगते हैं। क्यों कि मारे जाने का यह दुख स्वाभाविक नही कारण वसात् आगन्तुक है।

जल के उदाहरण से अधिक स्पष्ट हो जाता। (**शीतस्पर्शवत्य आपः**) जिसका स्पर्श शीतल (ठण्डा) हो वह जल कहलाता है। इस तरह जल का स्वाभाविक गुण ठण्डा है। किन्तु उसे अग्नि के द्वारा गरम करने पर उसमें उष्णत्व धर्म आ जाता है। अग्नि से अलग कर देने पर पुनः अपनी पूर्वावस्था शीतलत्व धर्म में आ जाता है। अतः शीतलत्व गुण स्वाभाविक हैं अग्नि के द्वारा उष्णत्व धर्म आना यह औपचारिक है जो अल्प काल के लिये था। इसी तरह आनन्द स्वरूप जीवात्मा में आये हुये दुःख की निवृत्ति शीघ्र देने से यह उसका औपचारिक धर्म है जो किसी कारण वसात् अल्प

समय के लिए था और आनन्द धर्म उसका स्वाभाविक गुण है जो जीवात्मा से किसी काल में भी विच्छिन्न नहीं हो सकता। जैसे जल का शीतलत्व धर्म जल से कभी विच्छिन्न नहीं हो सकता वैसे ही जीवात्मा से आनन्द धर्म विच्छिन्न नहीं हो सकता क्योंकि यह उसका स्वाभाविक गुण है। श्रुति का भी इसी तरह कथन है। (**यद्येष आकाश आनन्दो न स्यात् तर्हि कोह्येवानन्दयति**) यदि आकाश रूप आत्मा में आनन्द धर्म न होता तो कौन इसे आनन्दित कर सकता है। अस्तु ब्रह्म के लक्षण जो सत् चित् आनन्द शास्त्रों में बताये गये हैं वे जीवात्मा में भी पाये जाते हैं।

पूर्व पक्षी :—निम्न वेद मन्त्र में जीव और ईश्वर में भेद दिखाया गया है, इससे जीव ब्रह्म नहीं है। (**द्वासुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिसष्व जाते तयोरन्यः पिप्पलं स्वादत्यनश्नन्नन्योऽभिचाकशीति**) दो पक्षी एक साथ मित्र रूप से समान वृक्ष में बैठे हैं उन दोनों में से एक पीपल के स्वाद को ग्रहण करता है दूसरा उसे न उपभोग करता हुआ केवल प्रकाशित हो रहा है।

मीमांसक :—यहाँ पक्षी का रूपक देकर जो जीवात्मा का शरीर रूप वृक्ष में विषयों का सेवन करना बताया और उसी शरीर में स्थित परमात्मा को केवल प्रकाशित होना बताया गया इससे उसमें भेद नहीं सिद्ध होता। यहां उसी एक तत्व को अवस्थान्तर भेद बता कर समझाया गया है कि ईश्वर निर्गुण होने के कारण माया के गुणो का भोक्ता नहीं है और वही तत्व जो अविद्या की उपाधि से युक्त जीवात्मा है वह माया के गुणो का उपभोक्ता है। उदाहरण जैसे एक ही महाकाश को गृह के आवरण में आ जाने से उसे गृहा-

काश कहा जाता है और वही घट के आवरण में आने से घटाकाश कहा जाता है। महाकाश एक ही है किन्तु उपाधि गत भेद से गृहाकाश, घटाकाश इस भिन्न-भिन्न संज्ञा को प्राप्त हुआ। उसी तरह महाकाश रूप परमात्मा माया की उपाधि से रहित होने के कारण उसके गुणों का उपभोक्ता न होते हुये केवल साक्षी रूप से प्रकाशित है और जो अविद्या की उपाधि से युक्त जीवात्मा है वह माया के गुणों का भोक्ता है। इससे जीव और ईश्वर में भेद नहीं सिद्ध होता। उपाधिगत भेद है जो मिथ्या है। क्योंकि जिस तरह गृह और घट के नष्ट होने पर महाकाश नित्य रूप से स्थित है उसी तरह जीवात्मा की अविद्या रूप उपाधि ज्ञान के द्वारा नष्ट होने पर वह ब्रह्म रूप ही है। यदि वास्तविक भेद मान लिया जाता है तो ईश्वर की अखंडता नष्ट होती है व अद्वैत बोधक वेद वाक्यो से विरोध होता है। अतः हमें वेद वाक्यों का उसी तरह अर्थ ग्रहण करना चाहिये। जिस तरह व्यास आदि मुनियों ने ब्रह्म सूत्र में उसका निर्णय दिया है। ब्रह्म, जीव, प्रकृति, के सम्बन्ध के विषय भी दुरूह है। हमारे इस स्वल्प कथन से साधारण मनुष्य को अनेक शंकाये हो सकती है। अस्तु जिज्ञासुओं को सम्यक बोध के लिये वेदान्त ग्रन्थो का स्वतंत्र अध्ययन अपेक्षित है। हिन्दू शास्त्रों में जीव को नित्य कहा है स्वामी प्राण नाथ का मुख्य तात्पर्य हिन्दू शास्त्रो का खंडन करना है इसलिये इन्होंने जीव अर्थात हिन्दू जीव को असत बताकर उसे नीचा दिखाया है अपने लिये और अपने मुस्लिम भक्त मोमिनो के लिये जीव शब्द का प्रयोग नहीं किया है।

इतिनिजानन्द मीमांसायामुत्तरार्धे—
भागे जीवात्मा विचार वर्णनं नाम त्रयोदशोऽध्यायः १३

अभ्यासार्थक प्रश्न :—

१—जीवात्मा को अनित्य मानने से इनके सिद्धान्त में कौन सा दोष उत्पन्न होता है।

२—क्या असत् वस्तु कभी सत की जा सकती है अपने विचार व्यक्त कीजिये।

३—युक्ति प्रमाणों से सिद्ध कीजिये कि जीवात्मा नित्य है।

४—स्वामी जी के ही वचनो द्वारा जीवात्मा किस प्रकार नित्य सिद्ध हो जाता है।

५—स्वामी जी ने किन-किन चौ० में जीवात्मा को अनित्य कहा और क्यों कहा।

६—वास्ना और नींद शब्द पर प्रकाश डालते हुये उसका उचित अर्थ निर्धारण कीजिये।

७—खुदा के अंग से रूहों की उत्पत्ति मानने में कौन-कौन से दोष उत्पन्न होते हैं।

८—जीव के सम्बन्ध में स्वामी जी के और शास्त्रों के सिद्धान्तों का तुलनात्मक वर्णन कीजिये।

९—जीव, ब्रह्म में जो अभेद बताया गया है उस पर अपने विचार व्यक्त कीजिये,।

१०—युक्ति प्रमाण से सिद्ध कीजिये कि ब्रह्म के समान ही जीव में लक्षण पाये जाते हैं।

अथ चतुर्दशोऽध्यायः १४

इस्लाम मत

इस अध्याय में स्वामी जी के सिद्धान्त इस्लाम धर्म से आधारित है यह बताया जायगा।

मध्य युग में इस्लाम धर्म के अन्तर्गत एक नवीन संप्रदाय का प्रादुर्भाव हुआ जिसे सूफी मत कहते हैं। इस मत के प्रवर्तक औलिया फकीर खुदा के प्रेम संदेश को घूम-घूम कर प्रचार करते थे। उसी तरह स्वामी प्राण नाथ ने भी घूम-घूम कर खुदा के धाम में रूहों के ईस्क संवाद का उपदेश दिया है। इन्होंने यह भी बताया है कि तुम रूहें स्वर्गीय पूर्व प्रेम को इस स्वप्न रूप संसार में भूल गई हो, अतः याद दिला कर तुम्हें धाम में ले जाने के लिये मैं आखरी महंमद के रूप में आया हूँ। इस तरह इन दोनों के मत में प्रेम संवाद की एकता से प्रतीत होता है कि प्राण नाथ ने सूफी मत का भी अनुकरण किया है।

"सनंध प्र० २५ चौ० ३६ **रसूल हक हुकुंम बिना, और न काढ़े बोल। करम द्रढाय निगमे दिये, हिन्दुओ सिर डमडोल ॥**

अर्थ :—स्वामी जी कहते हैं कि मोहम्मद रसूल साहेब खुदा की हुकुंम बिना एक शब्द भी नहीं बोल सकते (अर्थात् कुरान में एक शब्द भी नहीं कहा) किन्तु वेदों ने तो कर्मकांड को द्रढ़ कर दिया है। इसी से हिन्दुओं की धार्मिक स्थिति खतरे में है।३६"

मीमांसक—वास्तव में कहा जाय तो इस्लाम धर्म भी कर्मकांड के सिवाय और क्या है। पांच बार नमाज पढ़ना इस्लाम का कर्म कांड नहीं तो और क्या है यदि इस्लाम धर्म से पांच बार निवाज पढ़ने का दण्ड बैठक निकाल दिया जाय तो उसमें कौन सी आध्यात्मिक दार्शनिकता शेष रह जाती है। इसलिये वैदिक कर्मकांड की निन्दा करना और इस्लामी कर्म कांड की प्रशंसा करना किसी महा पुरुष के लिये शोभा नहीं देता। कर्म कांड की नीव पर ही वैदिक अध्यात्मवाद अवस्थित है। मैं यह नहीं कहना चाहता कि महंमद साहब ने जो कुरान का उपदेश दिया है वह खुदा की आज्ञा

नहीं है आप भले ही उनकी प्रशंसा करते रहे कोई आपत्ति नहीं। किन्तु वेदोक्त कर्म कांड ईश्वर की आज्ञा नहीं है जिससे कि हिन्दू समाज खतरे में है। इस कथन से क्या प्रयोजन है। इस कथन से तो यही सिद्ध होता है कि इन्होंने अशिक्षित व्यक्तियों के सामने वेदों की निन्दा कर और प्रशंसा कर स्वमत में दीक्षित करने का प्रयत्न किया गया है। यदि वेदों का कर्म कांड गलत है तो उसे आपको सप्रमाण सिद्ध करना चाहिये था। सप्रमाण न सिद्ध कर सकने से वैदिक कर्म कांड में कोई दोष नहीं है। अतः उक्त चौ० की रचना सर्वथा गलत है। और उसे हिन्दू धर्म का उपदेशक नहीं कहा जा सकता। जो इस तरह वेदो की निन्दा करते हुये हिन्दुओं को खतरे में बताता है, वह आर्य नहीं अनार्य है जो लोग इनके सिद्धान्तों को हिन्दू धर्म मूलक मानते हैं वे इन अध्यायों में वर्णित की हुई प्रत्येक चौपाइयों को अच्छी तरह से अवलोकन करें। अब आगे, वैदिक कर्म में कोई दोष नहीं यह बताया जायगा।

संसार कर्म प्रधान है। कोई भी मनुष्य एक क्षण के लिये निष्कर्म नहीं देखा जाता। प्रायः मनुष्य ऐहिक सुख प्राप्ति के लिये नाना प्रकार के कर्मों में तत्पर है उसी के अनुकूल वह फल उपभोग करता है (कर्म प्रधान विश्वरचि राखा जो जस करहि सो तस फल चाखा) यदि किसी प्रकार कर्म न किया जाय तो मानव की जीवन रूपी गाड़ी चल नहीं सकती इन हेतुओं से मानव जाति का कर्म से नित्य सम्बन्ध है। वेदों में ऐहिक व पारलौकिक फल प्राप्ति के लिये कर्मों का विधान बताया है शुभ कर्मों के द्वारा देवताओं का भजन पूजन करने से अन्तः करण शुद्ध हो जाता है। अन्तः करण शुद्ध होने पर हृदय में ज्ञान का प्रकाश होता है जिसे प्राप्त कर जीवात्मा कर्म बन्धनों से मुक्त हो परमगति को प्राप्त होता है। यदि कोई वेद को

सप्रमाण दोष युक्त ठहराता है उसे मैं निन्दा न मानकर मानने को तैयार हूँ। केवल कथन मात्र से उसमें दोष बतलाना यह निन्दा है। इस ग्रन्थ में इस्लाम मत में दोष नहीं दिखाया गया है केवल सप्रमाण स्वामी जी की रचना को बताकर यह बताया गया है कि यह इस्लाम धर्म का सिद्धान्त है। यह वैदिक मत नहीं। और जहां कहीं स्वामी जी के सिद्धान्त में दोष बताया गया है। वहां इनके शास्त्रो के आधार लेने पर यह सिद्ध किया गया है कि यह शास्त्र का सिद्धान्त नहीं है। उदाहरण जैसे ब्रज रास लीलाओं में कृष्ण चरित्र को भागवत धर्म अनुकूल न बताकर उसे जो महंमद रूप बताया गया है वहां इनके मत में दोष दिखाया गया है। इसी तरह परम धाम सम्बन्धी संप्रदाय के मूलाधारों पर सप्रमाण दोष दिखाया गया है।

अस्तु आगे हमें यह देखना है कि भगवान कृष्ण ने कर्म के सम्बन्ध में क्या कहा है। गीता शास्त्र पर दृष्टि डालने पर उसके प्रत्येक स्थल पर कर्म के महत्व का प्रतिपादन है। अतः उस ग्रन्थ को ही देखा जाय। जहाँ उन्होंने कर्म त्यागने का निषेध किया है वह एक श्लोक प्रमाण रूप से दिया जाता है।

गीता अ० १८ श्लोक ५ **यज्ञदान तपः कर्म न त्याज्यं कार्यमेवतत् यज्ञोदानंतपश्चैव पावनानिमनीषिणाम् ५।**

अर्थ :—यज्ञ, दान, तप, रूप, कर्म त्यागने के योग्य नहीं है। वे कर्म निःसन्देह करने योग्य है। क्योंकि यज्ञ दान और तप ये तीनों ही बुद्धिमान पुरुषों को पवित्र करने वाले हैं। इसी तरह गीता अ० ३ श्लोक ५ को देखिये वहाँ जनकादि ज्ञानी महापुरुषों को भी कर्म के द्वारा ही परम सिद्धि को प्राप्त होना बताया है। कर्मणैव हि संसिद्धिः मास्थिता जनकादयः। भगवान का तो यहाँ तक कथन

है कि देहधारी किसी काल में निष्कर्म नहीं हो सकता। इसलिये सत कर्म करने के लिये उन्होंने प्रेरित किया है।

स्वामी जी ने खुद पन्ना में अपनी अष्ट प्रहर की सेवा पूजा आरती करवाया है। इसी तरह रोजा निवाज मजलिस करना कलमा तारतंम का जप पाठ करना ये सब कर्म ही तो है। आपके बताये हुये लाहूत धाम में भी नाना कर्मों का वर्णन पाया जाता है। रूहें वस्त्राभूषणों से खुदा का शृंगार कर नमन करती हैं यह भी कर्म ही है।

"सिनगार प्र० २० चौ १४४ **ईस्क न पाइये बिना जुदागी, ताथे दई नेक फरामोसी। रूहो को माहे अरस, हाँसी करने ईस्क की दखे कौन कम कौन सरस ॥१४४॥**

अर्थ :—बिना वियाग के प्रेम नहीं प्राप्त हो सकता इसलिये खुदा ने रूहों को अरस में अच्छी तरह से अज्ञान का पर्दा डाल दिया। यह ईस्क की हँसी करने के लिये खुदा ने किया कि देखे किस मोमिन का प्रेम कम है किसका अधिक।" यहां स्वामी जी ने जो यह कहा कि बिना वियोग प्रेम नहीं हो सकता। अत: आपने धाम में रूहों का वियोग और संयोग रूप कर्म स्वीकार कर लिया क्योंकि वियोग रूप कर्म से ईश्क प्राप्त होना बताया। ईश्क प्राप्ति से खुदा से संयोग रूप कर्म की सिद्धि होती है। अत: रूहों का खुदा से वियोग और संयोग होना यह कर्म ही है। **(संयोग नाशको गुणो विभागः)** परस्पर मिले हुये पदार्थों के विभाग अलग-अलग होने से जो संयोग नष्ट हो जाता है उसी कर्म को विभाग (वियोग) कहते है। अस्तु आपके धाम में भी वियोग और संयोग रूप कर्म की

उपलब्धि देखी जाती है। अत: वेदोक्त कर्म हिन्दुओं को खतरा देने वाला है यह आपका कथन निरर्थक है।

"सनंध प्र० २५ **हुये जो ज्ञानी अगुये, जिन लिये मायने वेद। सो ज्ञान हिन्दुओ आड़ा पड़ा, हुआ बड़ा छल भेद ॥३७॥**

अर्थ :—स्वामी जी कहते है कि जो बड़े-बड़े ज्ञानी ऋषि मुनि आचार्य हिन्दुओं में अगुआ हो चुके हैं। जिन्होंने वैदिक सिद्धान्त को अपनाया है वह वेद का ज्ञान हिन्दुओं की सद् गति को अवरूद्ध करने वाला तथा छल (धोखा) और फूट डालने वाला हुआ ३७।"

मीमांसक :—स्वामी जी उक्त चौ० मे बतला रहे हैं कि हिन्दुओं में अग्रगण्य जो ऋषि मुनि ज्ञानी पुरुषों ने वेद मत को अपनाया है वह दोष पूर्ण होंने से हिन्दुओं के सद्गति का अवरोधक है। सबसे पहले इन्हें वेद के प्रत्येक सिद्धान्तों का उल्लेख करते हुये यह सप्रमाण सिद्ध कर देना चाहिये था कि वेदों में ये ये दोष पाये जाते हैं। और हमारा इस्लाम सिद्धान्त सप्रमाण दोष रहित है ऐसा सिद्ध कर देते तो आप के ही सिद्धान्त को अपना लिया जाता। किन्तु वेद के किसी भी एक सिद्धान्त को सप्रमाण गलत न सिद्ध कर सकने से उसे दोष पूर्ण बताना मिथ्या दोषारोपण है। और आपके प्रत्येक सिद्धान्त को सप्रमाण दोष युक्त सिद्ध कर दिया गया है। जिससे वे ही मानव के सद्गति के अवरोधक सिद्ध हो जाते हैं। आपके द्वारा वेद में सप्रमाण कोई दोष न सिद्ध कर सकने से वह हिन्दुओं के सद् गति का अवरोधक न होकर उनके सद् गति का प्रकाशक है। वेद तो स्वत: कहता है **(असतो मा सद् गमय) [तमसो मा ज्योतिर्गमय]**

अय मानवो तुम असत् की ओर न जाकर सत की ओर चलो इसी तरह अंधकार की ओर न जाकर प्रकाश की ओर चलो।

उक्त चौ० में यह भी कहा गया है कि वैदिक ज्ञान छल करके मानवो में फूट डाल दिया है। इस तरह छल के द्वारा आपस में फूट डालने वाले वेदों के वाक्य भी इन्हे लिखना चाहिये था। ऐसा न करने से यह भी मिथ्या दोषारोपण है। वेदों में मिथ्या दोष लगाने से सांप्रदायिकता रूप स्वार्थ की सिद्धि नहीं हो सकती क्योंकि आपका मत निराधार प्रमाण शून्य है। अब आगे यह बताया जाता है कि स्वामी जी के ही कार्य व्यवहार तथा उपदेश छल पूर्ण हैं और मानव में फूट डालने वाले हैं। तथा वेदो में छल के व्यवहार व फूट डालने वाले कोई उपदेश नही हैं। वेद के सिद्धान्त को आप जानते ही नहीं हैं। उसका सिद्धान्त सार्वभौम है एक देशीय नहीं उसमें सांप्रदायिकता की भी भावना नहीं वह तो अखिल विश्व को ईश्वर रूप मानने का उपदेश देता है। **ऋग्वेद (पादोयस्यविश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि)** वेद कहता है कि उस ईश्वर के एक पाद से समस्त विश्व है और तीन पाद मरण शून्य दिव्य धाम में है। इस तरह समस्त विश्व उसी ईश्वर का अंग होने से वह किससे छल करके फूट डाले। जब वह अपने से भिन्न कोई दूसरी सत्ता माने तब तो अन्य से छल कर सकता है। संसार में अपने आप को हनन करने की चेष्टा कोई नहीं करता। वेद तो ईश्वर को सर्व प्राणियों का अन्तरात्मा बतलाता है।

एकोदेवः सर्वभूतेषुगूढः सर्वव्यापीसर्व (भूतान्तरात्मा कर्माध्यक्षः सर्वभूताधिवासः साक्षीचेताः केवलोनिर्गुणश्च)

अर्थ :—वह एक ही देव सर्वप्राणियों में छिपा हुआ सब

व्यापक सर्व प्राणियों का अन्तरात्मा है और कर्मों का अध्यक्ष है। सर्वभूत में निवास करता हुआ सब का साक्षी चेतन और निर्गुण रूप है। इस वेद वचन से भी बताया गया है कि ईश्वर सर्व प्राणियों का अन्तरात्मा है। जब वेद भेद ज्ञान का प्रतिपादन ही नहीं करता तो उसके छल और फूट डालने का प्रश्न ही नहीं उठता। किन्ही भी वेद वाक्यों द्वारा यह नही सिद्ध किया जा सकता कि हिन्दुओं का आत्मा अथवा किसी प्राणी का आत्मा भिन्न-भिन्न है वह हिन्दू यवन क्रिश्चियन सभी देह धारियों में ईश्वर की ही अन्तरात्मा को बतलाता है। भेद करने वालों की तो वेद निन्दा करता है (**मृत्योः स मृत्यु माप्नोति यऽइहनानेव पश्यति**) जो इस जीवात्मा को नाना रूपों से देखता है वह मृत्यु से मृत्यु को प्राप्त होता है। अस्तु वेद जगत, जीव, को भी जब ईश्वर से भिन्न नहीं मानता तो उसका छल करके मानव जाति में फूट डालना नहीं सिद्ध होना। इतने ऊँचे आदर्श सिद्धान्तों में भी स्वामी जी ने मिथ्या दोष लगाया है। अतः इन्हें हिन्दू नहीं कहा जा सकता और न इनको हिन्दू धर्म का उपदेशक ही कहा जा सकता। इनकी रचना को देखकर प्रायः मनुष्य जब संदेह प्रगट करने लगते हैं तब इनके सांप्रदायिकों का यह उत्तर है कि स्वामी जी ने आरबी भाषा का प्रयोग केवल समझाने के लिये किया है जो जिस भाषा से समझता था उसे उसी भाषा से समझाया गया है।

जिस तरह स्वामी जी ने छल पूर्ण व्यवहार से संप्रदाय की स्थापना की है उसी छल नीति को समाज ने भी अपनाया है। तुम अपनी वास्तविकता को छिपाते क्यों हो उसे संसार में प्रकाशित करो किन्तु प्रकाशित करने में तुम्हें भय है कि हमारे सिद्धान्तों की गोपनीयता भंग होने से हमें हिन्दू नहीं कहा जा सकता। ये

इस्लाम सिद्धान्त को अपनाकर हिन्दू समाज में छिपना चाहते हैं। इसका कारण यह है कि स्वामी जी के बाद इन्हीं के नीति को अपनाकर लोगों ने प्रायः हिन्दू समाज को ही दीक्षित किया। अतः इन्हें अपने मत को इस्लाम से सम्बन्धित कहने में संकोच है। इस तरह भाषा का बहाना कर जो दूसरे से अपने मत को छिपाते हैं वे खुद छल का कार्य करते हैं यदि तुमारे सिद्धान्त सत्य हैं तो उसे छिपाने की क्या आवश्यकता है। सत वस्तु कभी छिपाई नहीं जाती। तुमारे छिपाने से ही सिद्ध हो जाता है कि तुमारा मत दूषित पक्षों को अपनाये हैं। मैं इस्लाम मत को दूषित नहीं कहता उसे तुम स्वतः दूषित करार दे रहे हो।

क्या हिन्दू समाज को देव भाषा या हिन्दी भाषा से नहीं समझाया जा सकता था। किन्तु स्वामी जी ने कहीं भी विष्णु नारायणादि शब्दों का उपदेश नहीं किया बल्कि इन ब्रह्म बोधक शब्दों के लिये अश्लील शब्दों का प्रयोग किया है। जिसके निम्न प्रमाण है।

"मारफत सागर प्र० ८ चौ० २१

कह्यादज्जाल अस्वार गधे पर, काँना आँख न एक।
हक को न देखे आँख जाहेरी, रूह नजर न वातून नेक ॥२१॥
अजाजील काँना तो रानिया, जो वातून नजर करीरद।
देख्या ऊपली आँख सों, 'आदमवजूद गलद ॥२२॥

अर्थ :—स्वामी जी के शब्द कोष के आधार पर अजाजील नाम विष्णु का है उसी के सम्बन्ध में वे कह रहे हैं कि वह विष्णु-दज्जाल-बिना ईमान वाला गधे—अधर्म रूपी गदहे पर सवार है वह एक आँख का काँना है अर्थात् उसके हृदय के नेत्र नहीं है। वह

खुदा को वाह्य नेत्रों से नहीं देख सकता निश्चय ही उसमें आत्मा के नेत्र नहीं हैं ।१। अजाजील विष्णु तो रानिया—निश्चय ही काँना तो है ही हैं किन्तु उसने अपनी आन्तरिक नेत्रों को रद कर दिया है और वाह्य की आँखो से देखा है । इस आदम (आदमी) का वजूद (शरीर) गलद (नाशवान) है ।"

उपर्युक्त चौपाइयों से स्पष्ट है कि स्वामी जी ने हिन्दुओं के विष्णु और अपने इष्ट इस्लाम खुदा को अलग-अलग माना है । विष्णु को वेईमान काना और अन्तर्दृष्टि विहीन वताया गया है । तथा वह विष्णु इनके खुदा को देखने की भी सामर्थ्य और पात्रता नहीं रखता । प्राणनाथ जी ने अजाजील और जवराईल इनका अर्थ विष्णु ही किया है जिसका प्रमाण निम्न है ।

"खुलासा प्र० १२ **विष्णु अजाजील फिरस्ता, ब्रह्मा मेकाइल । जवराईल जोसधनीय का, रुद्र तामस अजराईल ।४५। वेदे नारद कह्यो मन विष्णु को, जाको सराप्यो प्रजापति । राह ब्रह्म की भान के, सबो विष्णु वतावत ॥४७॥**

अर्थ :—अजाजील फिरस्ता ही विष्णु है और जवराईल भी नाम विष्णु का ही है । यह धणी जी का जोस है ब्रह्मा को मैकाइल और रुद्र को अजराईल कहा गया है । ४५ वेद में विष्णु के मन को नारद कहा गया है जिसे प्रजापति ने श्राप दिया था वह नारद रूपी मन ब्रह्म के मार्ग को नष्ट करके सबो के लिये विष्णु को वताया करता है । इन्होंने विष्णु को भी मोक्ष प्रदान करने को कहा है ।

प्रकाश प्र० ३१ **वैकुण्ठ जाय विष्णु को, सब देसी खवर । विष्णु को पार पोहोचावही, सब जन सचराचर ॥१८॥**

अर्थ :—मैं प्राण नाथ बैकुण्ठ जाकर विष्णु को सब खबर दूँगा और विष्णु को भव सागर से मुक्त करके सब संसार को मुक्त करूँगा १८"

उक्त प्रमाणों से इन्होंने अजाजील नाम विष्णु का ही रक्खा है। तथा विष्णु के मन को नारद कहा है। वह नारद रूपी मन प्रत्येक हिन्दुओं में व्यापक होकर खुदा के मार्ग को न बताकर सबों को विष्णु की उपाशना करने को बताता है। इस कथन से विष्णु की तथा विष्णु रूप कृष्ण की उपाशना करने का स्पष्ट निषेध करते हुये हिन्दू शास्त्र विरुद्ध उपाशना करने का निर्देश है। तथा—**तद विष्णोः परमं पदम्**। जिस परम तत्व विष्णु को शास्त्रों में परम पद कहा गया है उसी को स्वामी जी मोक्ष देने के लिये कह रहे हैं। मानो इनके विचार से संसारी विषयी जीवों के सदृश ही परात्पर विष्णु भी है। अतः जो लोग यह युक्ति पेश करते हैं कि स्वामी जी की रचना में भाषा का प्रयोग केवल समझाने के लिये हुआ है यह सर्वथा प्रमाण हीन होने से निर्मूल है। भारतीय आर्यों की भाषा तो संस्कृत और हिन्दी ही है इस भाषा वाले ईश्वर बोधक शब्दों का अनादर करने से तथा अरबी भाषा वाले खुदा बोधक शब्दों का उपदेश देने से प्रत्यक्ष सिद्ध है कि प्राण नाथ ने इस्लाम मत का प्रचार हिन्दुओं में किया है।

अस्तु इन्होंने हिन्दू समाज में भी विष्णु आदि किसी वैदिक शब्दों का उपदेश नहीं दिया उक्त चौ० में विष्णु के लिये जिन अश्लील शब्दों का प्रयोग करते हुये अनित्य कहा गया है वह प्रस्तुत ही है। इसी अध्याय में ३६ मीं। ३७ चौपाई को देखिये क्या इस तरह वेद और ऋषि मुनियों को और उनके आर्य वंशजो

कहा जा सकता है ३६ चौ० में स्पष्ट रूप से कुरान और उसके बनाने वाले महंमद की प्रशंसा की गई है। और उसी चौ० में वेद को ठुकराया गया है। इसी तरह स्वामी जी ने आरबी भाषा का प्रयोग केवल समझाने के लिये किया है। खेद है कि समग्र वेद जिस परम तत्व विष्णु को नेति-नेति अव्यक्त अक्षर परात्पर पुरुष निर्गुण ब्रह्म कह कर सामादि मंत्रो द्वारा हमेशा स्तुति करते हैं उसी को स्वामी जी ने अनित्य कह दिया वह शरीर धारी विष्णु नही हैं। विष्णु का अर्थ व्यापक होता है और व्यापक निर्विशेष तत्व निर्गुण ही हो सकता वह किसी महान् तार्किक के द्वारा पकड़ा नहीं जा सकता वह विष्णु तत्व एक ऐसा अजेय गढ़ है जहां से मन सहित वाणी लौट आती है चारों वेदो में उसी अव्यक्त अक्षर विष्णु को अनन्त नामो से गान किया है। उसी ब्रह्म तत्व को ये लिखते है कि मैं वैकुण्ठ जाकर उन्हे मुक्त करेगे पूर्व पक्षी—हमारे परम हंश महराज ने लिखा है। **[निर्गुण सगुण से भिन्न अखंड सनातन हो]** इन दोनों से भिन्न कोई अन्य तत्व है। उत्तर पक्षी—तुम्हारे महाराज स्वामी जी को संप्रदाय में ही दीक्षित होने से ऐसा लिखते हैं। सगुण निर्गुण से भिन्न कोई दूसरा तत्व हो ही नहीं सकता। सगुण निर्गुण से भी ब्रह्म भिन्न है। इस प्रकार का कथन केवल वाणी को श्रम देना मात्र है तुम्हारे परम हंस जी का अभिप्राय यह है कि उनका खुदा हिन्दुओं के सगुण और निर्गुण ब्रह्म से सर्वथा भिन्न है। जिस लाहूत धाम में खुदा के स्वरूप सहित नाना वस्तुओं का वर्णन स्वामी जी ने किया है। उसीकी उपासना इन्होने की है इसका बारहवे अध्याय में अनेक तार्किक युक्तियो से व शब्दादि प्रमाणों द्वारा खण्डन हो चुका है इन्होंने जैसा वर्णन किया है वह शास्त्र दृष्टि से सगुण वाद भी नहीं सिद्ध होता। वहाँ तो केवल

भौतिक तत्वों का वर्णन हुआ है। अस्तु निगुण सगुण से भिन्न ब्रह्म तत्व को कहना विद्या हीनता का परिचय देना है।

इनके चारित्रिक जीवन को ही पूर्वाध भाग में देखिये। जब जैसा मौका देखते थे उस समय उसी अनुरूप भेष भूषा बदल देते थे। हिन्दू समाज में साधु भेष तिलक माला यवनो के बीच फकीर (मोमिन) का भेष धारण कर लेते थे। उदयपुर औरंगाबाद आदि स्थानों की जनता इनके चारित्रिक जीवन का किस प्रकार परिचय दे रही है। ये तिलक माला धारण करते हुये भी 'कुरान को पढ़ते थे तथा उसी का उपदेश देते थे। इन अनेक प्रमाणों से सिद्ध हो जाता है कि इन्होंने अरबी भाषा में अल्लाह महंमद आदि शब्दों का जो प्रयोग अपनी रचना में किया है वह केवल समझाने के लिये नहीं है। यह इनका सैद्धान्तिक मत है। बल्कि कृष्ण आदि नामों का प्रयोग केवल समझाने और स्वमत में दीक्षित करने के लिये हुआ है। अस्तु स्वामी जी ने संप्रदाय प्रवर्तन के लिये जो जो भी कार्य किये हैं वे सब छल नीति को अपना कर किये हैं।

इन्होंने वैदिक ज्ञान को आपस में फूट डालने' वाला भी बताया है। किन्तु यह दोष आप ही पर प्रमाणित कर सिद्ध किया जाता है। इनकी अठारह हजार वाणी में उग्र घोषणा है कि बिना मोमिन के धाम में कोई नहीं जा सकता। अन्य जीवों की तो गति ही नहीं जिस लाहूत धाम में जाने की कोशिश करने पर भी जबराइल (विष्णु) के पैर जलने लगते है।

सागर प्र० १ चौ० २७ **ये नूर मकान कह्या रसूले, आगू जाय न सके क्यों ये कर। तिन लाहूत में क्यों पोहोचही, जित जले जबराइल पर ॥**

अर्थ :—स्वामी जी कहते हैं कि कुरान में महंमद साहेब ने कहा है कि इस नूर मकान (अक्षर ब्रह्म) के आगे कोई भी नहीं जा सकता। उस लाहूत में अन्य कोई कैसे पहुंच सकता है, जिस लाहूत में जाने की कोशिश करने पर भी विष्णु के पैर जलने लगते है। इनके शब्द कोष के आधार पर जबराईल विष्णु का ही नाम हैं। जब विष्णु ही को वहाँ जाने का अधिकार नहीं है तो अन्य हिन्दू जीव वहाँ कैसे पहुंच सकते हैं। इस कथन से इन्होंने स्वतः हिन्दुओं में भेद डालकर फूट पैदा किया है दूसरी भेद प्रतिपादन करने वाली चौपाइयां निम्न है।

सागर प्र० १५ **पूरी मेहेर जित हक की, तित और कहा चाहियत। हक मेहेर तित होत है, जित असल है निसबत ॥३॥**

अर्थ :—जिसके ऊपर खुदा की पूरी दया है उसके लिये अन्य की दया की क्या आवश्यकता है। खुदा की दया उसी पर होती है जिससे उसका वास्तविक सम्बन्ध होता है। यहाँ स्वामी जी ने खुदा को ही पक्षपाती बताकर भेद करने वाला बताया है। क्योंकि खुदा अपने निसबती मोमिन ही भर के ऊपर दया करता है अन्य जीवात्मायें उसके निसबती न होने के कारण दया के पात्र नहीं हैं। इस कथन से भी इन्हीं के भेद और फूट डालने वाले वाक्य पाये जाते है। वेद में ऐसे कोई वाक्य नहीं जिसमें भेद और सांप्रदायिकता की भावना हो उसका तो कथन है **[एतदात्ममिदंसर्वम्]** यह सब कुछ आत्मा ही है।

इसी तरह और भी देखिये। खुलासा प्र० ४

ये खेल हुआ वास्ते महंमद, महंमद आया वास्ते रूहंन १७॥

अर्थ :—यह सृष्टि रचना रूप खेल महंमद साहेब के लिये ही हुआ है और इस संसार में महंमद साहेब केवल ब्रह्म सृष्टियों (सुन्दर साथ ही) भर के लिए आये हैं। अन्य जीवों के लिये नहीं।

खुलासा प्र० ३ **रूह अल्ला इलंमल्याये इनपे, ये सब हुआ वास्ते मोमिन १७ ॥**

अर्थ :—रूह अल्ला शब्द का अर्थ तीन प्रकार से किया जाता है। प्रथम अरब वाले महंमद, द्वितीय निजानन्द स्वामी देवचन्द्र, तृतीय आखरी महंमद प्राणनाथ इन तीनों ने क्रमशः कुरान शरीफ, २- तारतम ज्ञान, ३- इलंम लुदंनी अर्थात अठारह हजार वाणी का ज्ञान इन मोमिनों के कारण ही इस संसार में ले आये हैं ये जो कुछ भी सृष्टि रचना रूप खेल हुआ है वह सब मोमिनो (मुसलमानों) के निमित्त ही हुआ है। यदि उक्त सभी चीजें मोमिन ही भर के लिये हैं तो हिन्दुओं को संप्रदाय में दीक्षित करना ही व्यर्थ है। और खुदा इस प्रकार का पक्षपात और भेद नहीं कर सकता। मानव जाति में इस प्रकार भेद और फूट डालने से इलंम लुदंनी को ले आने वाला खुदा नहीं है।

अपनी जातीयता में स्वामी जी किस प्रकार एकता का प्रतिपादन करते है। यह निम्न चौ० से देखिये। खुलासा प्र० १७ चौ० ४

महंमद नूर हक का, रूहे महंमद का नूर। ये हमेशा वकामिने, एकै जात जहूर ॥४॥

अर्थ :—अव्वल महंमद अरब वाले और आखरी महंमद स्वामी जी ये खुदा का तेज हैं और बारह हजार रूहें महंमद का तेज हैं अतएव ये हमेशा लाहूत धाम में एक ही जाति का प्रकाश है। उक्त

चौ० में इन्होंने अपने को और महंमद को खुदा का तेज बताया और रूहों (सुन्दर साथ[१]) को महंमद का तेज बताकर धाम से एकता का प्रतिपादन किया है। किन्तु हिन्दुओं के किसी भी देवताओं या जीवात्माओं से अपने धाम में एकता का वर्णन नहीं किया। अतएव यह पक्षपात खुदा के धाम के लिये अशोभनीय है। इसका तात्पर्य तो यह हुआ कि इन्होंने हिन्दुओं को अलग करके खुदा का भी बटवारा कर दिया। अतः भेद और फूट डालने वाले उपदेश स्वामी जी के ही हैं। वेदों ने आपस में फूट पैदा कर दिया है। यह इनका कथन निरर्थक है। और उक्त चौ० से यह भी स्पष्ट होता है कि ये इस्लाम मत के कट्टर पक्षपाती हैं। इनके जीवन चरित्र के लेखक ने जो इन्हे हिन्दू बताया यह विश्वास के योग्य नहीं।

इनके प्रत्येक ग्रन्थों में भेद का प्रतिपादन और वैदिक ईश्वर तत्व को असत बताया गया है।

"सिनगार प्र० १ चौ० ४ **किन कायम द्वार न खोलिया, अव्वल से आज दिन। जो कोई बोल्या सो फनमिने, किन पाया न बका वतंन ॥४॥**

अर्थ—सृष्टि के प्रारंभ से लेकर आज तक किसी ने अखंड धाम के दरवाजे को नहीं खोला जिन किसी ऋषि मुनियों तथा वेदों ने ब्रह्म के सम्बन्ध में जो कुछ कहा है वह सब फना (नास) होने वाली असत वस्तु का ही वर्णन किया है।" मीमांसक ४ इनके मत के अनुकूल कि नहीं ऋषि मुनियों ने व वेदों ने ईश्वर तत्व को पाया ही नहीं केवल मैं ही उसे प्राप्त किया हूँ वेदादि शास्त्रों में ईश्वर के

१ सुन्दर साथ प्राण नाथ के शिष्य गण।

सम्बन्ध में जो वर्णन हुआ है वह सब असत नाशवान वस्तुओं का ही वर्णन हुआ है। इन बातो से स्पष्ट है कि आप वेद विरोधी हैं। जो लोग मानते हैं कि इनका हिन्दू धर्म है वे सर्वथा भूल में है।

अब निम्न चौ० में इन्हाने महंमद की प्रशंसा करते हुये हिन्दुओं को पतित डूबने वाला बताया है। जिससे सिद्ध होता है कि हिन्दू और मुसलमानों में भेद और फूट डालने वाले वाक्य आप ही के है।

"सनंध प्र० २५ **जिन सुध ख्वाब न पार की, सों क्यो समझे ये बात। और सबों को अटकल, रसूले देखी हक जात ॥३८॥ सोसत शब्द के मायने ले न सक्या कोय। डूबे हिन्दू स्यानपे, सो गये प्यारी उमर खोय ॥३९॥**

अर्थ :—जिन हिन्दुओं को स्वाप्निक सृष्टि तथा लाहूत का ज्ञान नहीं है वे कलमा और कुरान की आयतों को कैसे समझते हैं। हिन्दुओं में जो अग्रगण्य विद्वान हुये हैं, उन्होंने अटकल से ब्रह्म तत्व का निरूपण किया है। किन्तु महंमद साहेब ने खुदा और उसकी जाति १२ हजार रूहों को प्रत्यक्ष देखा है। जिन हिन्दुओं ने वैदिक मत को अपनाया है वे कुरान में वर्णित सत शब्द के मायने को नहीं ग्रहण कर सके। इसलिये इनमें जो सयाने हिन्दू (ऋषि, आचार्य, अवतारादिक) हैं वे सब अपनी प्रिय उम्र को नष्ट कर डूब गये। ३९।"

मीमांसक :—उक्त चौ० में स्वामी जी बता रहे हैं कि हिन्दुओं में सयाने लोगों को ईश्वर तत्व का ज्ञान नहीं है, शास्त्रों ने तो अटकल से ईश्वर तत्व को बताया है। किन्तु मैं महंमद ने खुदा को प्रत्यक्ष देखा है कुरान में वर्णन किये हुये सत अर्थ के न ग्रहण कर सकने से ये सब हिन्दू डूब गये। यदि इनकी दोनों दीनों में एकत्व की

भावना होती तो सयाने हिन्दुओं को डूबने के लिये न कहते। भाषा में रखा ही क्या था चाहे आरबी भाषा से अपने उपास्य देव को अल्लाह शब्द से ही सम्बोधित करते तो ।(ईश्वर अल्ला एकै नाम) इस गांधी वाद के अनुसार एकता हो जाने में कोई आपत्ति न थी। वैदिक सिद्धान्त का विरोध कर उसे हेय बताने से और अपने मत को सर्वोपरि आदर्श रूप मानने से यह सिद्ध हो जाता है कि भेद भाव तथा आपस में फूट डालने वाली रचना आपके ही हैं। वेदों की नहीं। भाषा के कारण मुझे अल्लाह शब्द से द्वेश नहीं। यह अल्लाह शब्द उतना ही प्रिय है जितना विष्णु शब्द प्रिय है। अप्रियता केवल आपके पक्षपात पूर्ण रचना से है। यदि विष्णु और अल्लाह शब्द का समन्वय आपकी रचना में होता तो आपका सिद्धान्त भी संसार में उच्च आदर्श रूप होता। ऐसा न होने से आप में सांप्रदायिकता की भावना स्पष्ट है। अब नीचे की चौपाइयों से देखिये कि ये किस तरह धार्मिक विरोधो को दूर कर रहे हैं।

"परिकर्मा—प्र० २ चौ० १० **पेगम्बर या तिथंकर, कै हुये अवतार। किने व्रोध न मेट्या विश्व का, किये नहीं निरबिकार ॥**

अर्थ :—स्वामी जी कहते हैं कि मुसलमानों में कितने ही पेगम्बर और जैनियों में तिथंकर और अन्य कितने ही अवतार हो चुके हैं। किन्तु किसी ने विश्व के सांप्रदायिक विरोध दूर नहीं किया केवल हमी ने विरोधों को दूर किया है।

खुलासा प्र० १३ चौ० ३२ **सो वुध जी सुर असुरनपे, लेसी वेद कतेव छीन। कहे असुराई मेट के, देसी सवो यकीन ॥३२॥**

अर्थ :—धार्मिक विरोधों को दूर करने के लिये वुद्ध (स्वामी)

जी सुरो और असुरो से वेद कुरान छीन लेंगे और दोनों की असुरता को हटाकर सबों को धार्मिक विश्वास दिलायेंगे ३२।"

उक्त चौ० के अनुकूल यदि विश्व में किसी ने धार्मिक विरोधों को नहीं हटाया तो क्या स्वामी जी का धार्मिक विरोध हटाना पाया जाता है। जब आप कह रहे हैं कि हम दोनों से वेद और कुरान छीन लेंगे। हिन्दुओं का धर्म वेद है मुसलमानों का धर्म कुरान है। इन दोनों धर्मों के छीनने से आप कौन धार्मिक विश्वास लोगों में स्थापित करेंगे। दोनों के धर्म के छीनने से ही विश्व में शान्ति होगी इस नये बुद्धावतार प्राणनाथ ने अच्छा तरीका अपनाया है। इसी ज्ञान शक्ति को लेकर महंमद बनाना चाहते हैं। संघर्ष करने से संघर्ष बढ़ता ही है विश्व में शान्ति नहीं होती।

उक्त चौ० में हिन्दू मुसलमान इन दोनों से भिन्न एक नवीन सांप्रदायिकता की झलक दिखाई देती है। जिसके लिये इन्होंने कहा है कि मैं सब को धार्मिक विश्वास दिलाऊँगा। वह क्या है—इलंम-लुदंनी १८ हजार वाणी किन्तु इसे पढ़ने से न हिन्दुओं को ही धार्मिक विश्वास है और न मुसलमानो को ही। इस ग्रंथ में स्वामी जी के मुख्य-मुख्य सभी सिद्धान्त आ चुके हैं। उनमें ज्ञान की कोई वरिष्ठता नहीं पाई जाती। स्वामी जी ने कई जगह वेदों को छीनने के लिये कहा है।

"खुलासा प्र० १३ चौ० ६० **ब्रोध सुर असुरो का, दूजे जादे और पेगम्बर। वेद कतेब छुड़ावने, धनी आये इन ठोर ॥६०॥**

अर्थ :—सुर और असुरों के दूसरे जादे और पेगम्बरों के विरोध को हटाने के लिये और वेद कतेब छीनने के लिये धणी (स्वामी) जी इस लोक में आये हुये हैं ६०।"

स्वामी जी का जन्म विक्रम संवत् १६७ में हुआ। उस मध्य युग

में अनेक मत मतान्तरों का धार्मिक आन्दोलन चल रहा था उसी को लक्ष करके उक्त चौ० में सबों के विरोध को हटाने के लिये कह रहे हैं। किन्तु वेद कुरान के छीने जाने से विरोध शान्त होना संभव नहीं। वह तो गांधीवाद का अनुकरण करने पर ही शान्त हो सकता है। इसी तरह और भी देखिये।

"खुलासा प्र० १३ चौ० ६३ **मेटन लड़ाई बन्दन की, और जादे पेगम्बर। धनी आये वेद छुड़ावने, ये तीन बाते चित धर ॥६३॥**

अर्थ :—ईश्वर की वंदना करने वाले (भक्तों) की लड़ाई दूसरा जादे और पेगम्बरो की लड़ाई मिटाने के लिये तीसरा वेदो को छीनने के लिये। इन तीनों बातों को चित में रख कर धणी जी प्राण नाथ इस लोक में जन्म लिये हैं। ६३।"

स्वामी जी के मस्तिष्क में यह एक सनक सी सवार हो गई है पता नहीं हिन्दुओं ने इनका क्या बिगाड़ा था। आप वेद छीनने के लिये ही तो लाहूत से अवतरित हुये है। किन्तु भारतीयों की धार्मिक परम्परा वेद पर ही आधारित है (**वेदोऽखिलं धर्ममूलम्**) वेद ही सब धर्मों का मूल है (**वेदात्धर्मोनिर्भवौ**) वेदों से ही सब धर्मों की उत्पत्ति हुई है। धर्म की मूल जड़ वेद को नष्ट करने के लिये इन्होंने प्रयास अवश्य किया। यह इनके जीवन परिचय पूर्वार्ध-भाग से भी स्पष्ट है। किन्तु इस प्रयास से इन्हें सफलता नहीं मिली। दीन हीन अशिक्षित व्यक्तियों पर कुछ प्रभाव अवश्य पड़ा। उन्हें कलमा और तारतंम देकर इस्लाम धर्म में दीक्षित किया। वर्तमान में हिन्दुओं की संख्या के विशेषता के कारण यह समाज वाह्य व्यवहारों में पूर्ण रूपेण अपनी हिन्दू संस्कृति को पूर्णरुपेण त्याग न सका।

किन्तु आन्तरिक धार्मिक भावनायें इस्लाम की ओर अवश्य मुड़ गई। जिससे वस्तुत: यह नहीं कहा जा सकता कि ये हिन्दू हैं अथवा मुसलमान। स्वामी जी के समय में हिन्दू और मुसलमान ये दोनों मिल कर यह समाज बनी। बाद में इसके प्रचारकों ने हिन्दुओं को ही दीक्षित किया जिससे यह समाज अपने को हिन्दू कहता है। अपनी प्राचीन संस्कृति को छोड़ने में इसे लोक का भी भय है। अत: लोक में अपनी आन्तरिक भावनाओं को व्यक्त भी नहीं कर सकते। वर्तमान में इनके समाज में स्वामी जी के सिद्धान्तों को जानने वाले अधिक से अधिक १० प्रतिशत मनुष्य होंगे। ९० प्रतिशत केवल काँन फुकाने वाले होगें। ये स्वामी जी के सिद्धान्तों से सर्वथा अनभिज्ञ है।

संभव हो सकता है कि इस समाज को सुधारने का प्रयास करने वाले भारतीय युवक यदि इस विषय में अपना कदम बढ़ावें तो समाज का सुधार हो सकता है। स्वामी जी के ऐसे कटु शब्द सुनने का अपराध शिक्षित भारतीयों पर है। वेद माता का अह्वान है कि हमारे इस ऋण से मुक्त होने के लिये जागरूक हो समाज का सुधार करें तभी इसका प्रायश्चित हो सकता है। (सत्य मेव जयति) सत्य ही की विजय होती है। यदि वेद सत्य है तो उसका हनन कोई नहीं कर सकता। इतिहासों के देखने से पता चलता है कि बहुतो ने इसे नष्ट करने का प्रयत्न किया किन्तु वह सत्य होने से पूर्ववत अपने स्थान पर अडिग है। वेद ज्ञान के समूह को कहते हैं वह ज्ञान अनन्त है उसका किसी द्वारा अन्त नहीं किया जा सकता शास्त्र प्रमाण है (**अनन्ताः वै वेदाः**) निश्चय ही वेद अनन्त है और अनन्त ब्रह्म है इसलिये वेद ही ब्रह्म है श्रुति का कथन है (**सत्यं ज्ञान मनन्तं ब्रह्म**) ब्रह्म सत्य ज्ञान स्वरूप और

अनन्त है अत: दोनों में अभेद है। गोस्वामी जी ने भी ब्रह्म और वेद में अभेद प्रतिपादन किया है। (**विभुं व्यापकं ब्रह्म वेद स्वरूपम्**) भगवान की तो यह प्रतिज्ञा है।

गीता अ० **यदा यदाहि धर्मस्यग्लानिर्भवति भारत अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानंसृजाम्यहम्।**

अर्थ :—अय अर्जुन जब-जब वैदिक धर्म की हानि होती है और अधर्म की वृद्धि होती है तब-तब मैं अवतार लेता हूँ।

प्रणामी मतानुयायी स्वामी जी के वचनों में विश्वास कर इन्हें कृष्ण रूप भी मानते हैं। यदि वास्तव में ये कृष्ण रूप होते तो गीता के वचनों से और इनके वचनों में विरोध न होता। एक कृष्ण कहता है कि वेद धर्म की रक्षा के लिये मैं जन्म लेता हूँ और दूसरा कृष्ण इससे विपरीत हिन्दुओं से वेद धर्म छीनने के लिये मैं आया हूँ। इस तरह दोनों के ग्रन्थों में विरुद्ध धर्मों का प्रतिपादन होंने से स्वामी जी कृष्ण के रूप नहीं हैं। वेद छीनने के कथन से आप इस्लाम मत के पक्षपाती हैं; क्योंकि उस मध्य युग में इस्लाम मत के अलावा अन्य कोई वेद धर्म छीनने को नहीं कह सकता।

भारत से बाहर भी इस समय विश्व में जितने अधुनिक विश्व विद्यालय हैं उनके आर्टस कालेजों में जितने अनुसंधान कार्य स्नातकों के द्वारा किये जा रहे हैं उनमें ८० प्रतिशत अनुसंधान और पी० एच० डी० वैदिक साहित्य में ही हो रहे हैं। अतएव आज के नास्तिक युग में भी विश्व के विद्वानों की दृष्टि में भी वेदों का सम्मान बढ़ा है आधुनिक विद्वानों ने ऋग वेद को विश्व का सर्व प्रथम ग्रन्थ माना है। ऋग वेद के पूर्व की कोई लिपि भाषा और साहित्य की खोज करने पर आधुनिक विद्वानों को नहीं मिला। इसलिये वेद पृथ्वी के सर्व संमत माननीय आदि ग्रन्थ हैं। ऐसे वेदों की स्पष्ट

निन्दा करके स्वामी प्राण नाथ जी ने विद्वानों की दृष्टि में अपने को गिराया है ऊँचा नहीं उठाया। हिन्दुओं को तो बिलकुल सावधान हो जाना चाहिये और इनके धोखे में नहीं आना चाहिये जो वेद विरोधी हैं वे केवल हिन्दू विरोधी ही नहीं अपितु पूरे भारत राष्ट्र एवं भारतीय संस्कृति और सभ्यता का घोर द्रोही है।

इति निजानन्द मीमासायांमुत्तरार्ध भागे इस्लाम

मतवर्णनंनामचतुर्दशोऽध्याय: १४

अभ्यासार्थक प्रश्न

१—यह सिद्ध कीजिये कि वेद विधि से किये हुये कर्म मनुष्य को सद् गति देने वाले है।

२—स्वामी जी के मत में भी कर्म का विधान पाया जाता है, इसकी पुष्टि कीजिये।

३—वेद अभेद ज्ञान का उपदेशक है। उसमें छल और फूट डालने वाले कोई वाक्य नहीं हैं।

४—सगुण निर्गुण से भी ब्रह्म भिन्न है·इस विषय में अपना विचार व्यक्त कीजिये।

५—इन्होंने धार्मिक विरोधों को किस प्रकार हटाया है।

६—वेद छीनने के विषय में अपने विचार व्यक्त कीजिये।

७—लेखक ने समाज को क्या प्रेरणा दी है।

८—इस अध्याय में किन-किन प्रमाणों द्वारा बताया गया कि स्वामी जी का मत इस्लाम धर्म से सम्बन्धित है।

अथ पञ्चदशोऽध्यायः १५

इस्लाम मत :—

"सनन्ध प्र० ३४ चौ० १७ **जो कोई मुस्लिम सो सब, हम सब मुस्लिम एक है। असल एक ठोर हमारा, हे खषंम एक हमारा, बिनामुस्लिम कोई नही दूजा १७"**

अर्थ—स्पष्ट है इन स्वामी जी के चौपाइयों से क्या ध्वनि निकलती है। बुद्धिमान स्वतः विचार कर सकते हैं। उक्त चौ० में अपने को और अन्य सब मुसल्मानों को एक ही बता रहे हैं। इससे इनके वाक्यों द्वारा ही सिद्ध हो जाता है कि ये अवश्य ही मुसल्मान हैं। इन्होंने अपने को हिन्दू होना कहीं भी नहीं लिखा पूर्वार्ध भाग में इतिहास कार लालदास के द्वारा इन्हें ठाकुर जाति बताया गया है। ठाकुर जाति में भी विभिन्न जातियां है किन्तु लेखक इस बात को नहीं प्रगट करता। इनके जीवन चरित्र तथा धार्मिक सिद्धान्तों का अवलोकन करने से विश्वास नहीं किया जा सकता कि ये हिन्दू जाति के थे। प्राणनाथ जी कहते हैं कि संसार में जितने मुसलमान हैं वे सब हमारे हैं अतः इन्होंने हिन्दी भाषा में जो अपना नाम प्राण नाथ रख लिया है यह हिन्दुओं को धोखा देने और धर्म में दीक्षित करने के लिये एक प्रकार का षड्यन्त्र है। जिस प्रकार कि बादशाह अकबर हिन्दुओं को छलने के लिये कभी-कभी माला और चंदन धारण कर लेता था।

ये औरंगजेब के पास अपने शिष्यों द्वारा अपना पेगांम भेजते थे। जिसका आशय यह था कि कुरान में जो क्यामत का समय लिखा

है वह आ पहुंचा है मैं आखरी महंमद प्रगट हो चुका हूँ। अतः बादशाह हमारी इमामत को स्वीकार करे। ये खुद बादशाह से नहीं मिले लालदास भी इनका मिलाप नहीं लिखते। अस्तु हो सकता है कि इतिहासकार ने इनकी जातीयता को छिपाया हो। कुछ भी हो हमें तो इनके बनाये हुये ग्रन्थों पर विचार करना है।

"सिनगार प्र० २५ चौ० ४६ **चौदे तवक को पीठ दे वही, ये कलमा कह्यातिन। कलांम अल्लायों के हे वही, ये केहेनी है मोमिन ॥४६॥**

अर्थ—स्वामी जी कहते हैं कि जो चौदहो लोको से विरक्त होगा उसके लिये कलमा (कुरान की आयते अथवा तारतम १८ हजार वाणी) कही गई है। कुरान शरीफ में अल्लाह ने अपने शब्दों में कहा है कि ये बाते (अर्थात् १८ हजार वाणी का उपदेश) मोमिनों से कहना है। ४६। वह वाणी का क्या उपदेश है जिसे मोमिनो से कहना है वह निम्न चौ० से देखिये।

सिनगार प्र० २५ चौ० ५१ **नूर के पार नूरतजल्ला, रसूल अल्ला पोहोचे इत। मोमिन उतरे नूर विलंद से, सो याही कलमें पोहोचे वाहे दत्त ॥५१॥**

अर्थ—नूर के पार (अक्षर ब्रह्म के आगे) नूरतजल्ला—(खुदा व खुदा का धाम) है उस आखरी स्थान तक महंमद साहेब पहुंचे हुये हैं और मोमिन उस खुदा के घर से उतरे हुये हैं। अतः वे इसी कलमे—(कुरान की आयतो द्वारा व वाणी द्वारा) उस अद्वितीय स्थान पर पहुंच सकते हैं। ५१।"

मीमांसक :—जब कुरान में अल्लाह ने ये कलमा (१८ हजार

वाणी) मोमिनो से कहने के लिये कहा तब आप इस कलमा का उपदेश हिन्दुओं को क्यों देते हैं। हिन्दुओं को यह उपदेश देने से आपने अल्लाह के आदेश का उल्लंघन किया। ५१ चौ० में स्वामी जी यह बताते हैं कि हिन्दुओं की मान्यता अनुसार जो अक्षर ब्रह्म है उससे भी आगे नूर तजल्ला है जहाँ पर रसूल अल्ला (स्वामी) जी पहुँचे हैं। अर्थात् हिन्दुओं की मान्यता से आगे बढ़कर अधिक सर्वोच्च स्थान खुदा के समीप पहुँचे हैं। नीचे से ऊपर इस प्रकार का क्रम ईश्वर के विषय में हिन्दुओं ने नहीं माना है। उनके मत के अनुसार उस अक्षर ब्रह्म के अनन्त होने से जहां भी मन बुद्धि आदि की गति है वहां भी पूर्ण रूपेण उपस्थित है। और अनन्त होने से उसका कहीं भी अन्त नहीं होता।

श्रुति का भी यही कथन है (**पुरस्तात् ब्रह्म पश्चात् ब्रह्म दक्षिणश्चोत्तरेण अधश्चोर्ध्वं प्रसृतं ब्रह्म वेदं विश्वमिदं वरिष्ठम्**)

अर्थ—वह अक्षर ब्रह्म आगे भी है पीछे भी है दक्षिण और उत्तर में भी है इसी तरह नीचे और ऊपर भी है उसके सर्वत्र व्याप्त होने से यह सम्पूर्ण विश्व वरिष्ठ ब्रह्म ही है।

उक्त चौ० के अनुसार नूर के समीप नूरतजल्ला की उपस्थिति न होने से उसका अन्त हो जाता है जिससे खुदा की सिद्धि नहीं होती। क्योंकि वह नूरतजल्ला अल्प देश में स्थित है जो अल्प है वह मर्त्य (विनाश शील) है। अतः खुदा की सीमा निर्देश करना यह इनकी अज्ञता है। और मोमिन नूर विलंद (खुदा के घर) से उतरने के लिये जो कहा गया यह भी समुचित नहीं। यदि मोमिनो का खुदा के घर से सदेह अवतरित होना व कलमा को प्राप्तकर खुदा के घर सदेह जाना ऐसा मानते हो तो इन बातों का कोई प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं है। संसार में सभी जीवोंकी एक ही विधि से आना जाना देखा

जाता है। इससे मोमिनो का भी जन्म लेना कहना ही सार्थक है। खुदाने केवल मोमिन ही को जन्म दिया अन्य किसी प्राणियों का जन्म दाता न बतलाने से भी वह नूरतउल्ला खुदा नहीं कहा जा सकता। जो समस्त विश्व की रचना करने में समर्थ है वही खुदा कहा जा सकता है। हिन्दू जीवों का जन्म दाता अन्य मोमिनो का जन्म दाता अन्य यह कौन सी ज्ञान की मौलिकता है। इन दोनों में किसी प्रकार की विषमता न देखे जाने से दोनों का जन्म दाता एक ही ईश्वर सिद्ध होता है। अस्तु केवल मोमिन नूर बिलंद से उतरे हैं। यह इनकी रचना पक्षपात पूर्ण होने से गलत सिद्ध हो जाती है।

"सिनगार प्र० २३ चौ० ४७ **कहे महंमद अरसरूहे, तुम मछली होजकोसर। जो जीव दुनी मुरदार के, सो रहे ना तीन विगर ॥४७॥**

अर्थ:— महंमद साहब (प्राणनाथजी) कहते हैं कि अय अरस (खुदा के धाम) की रूहो (मोमिनों) तुम धाम के होज कोसर नामक तालाब की मछली हो ये दुनिया के जीव जो हिन्दू हैं वे मुर्दार हैं अर्थात मृतक हैं वे दुनिया को छोड़ कर अन्यत्र नही जा सकते ४७।,'

मीमांसक:—स्वामी जी ने उक्त चौ० में अपने को महंमद घोषित किया है व रूहो को एक विशिष्ठ स्थान में रहते हुये उनकी प्रशंसा किया है और दुनिया के हिन्दू जीवों को मुर्दा कह कर उन्हें हेय और मोमिन मछलियों का आहार बताया है। इन्होंने अध्यात्म क्षेत्र में भी हिन्दू और मोमिनों में भेद सिद्ध किया है। और दोष वेदो का देते हैं कि वैदिक ज्ञान भेद और फूट डालने वाला है।

अपने धाम मे रूहों को होज कोसर नामक तालाब की मछलियाँ बताया है तो क्या वे मछलियाँ ही रूहों सखियों का भेष धारण कर खुदा के साथ नाना प्रकार के क्रीड़ा विहारादि करती हैं। और मछली

होकर जल में प्रवेश कर जाती हैं। उन रूहो का अरस में जल जीव होना ठीक नहीं उनके लिये यह मृत्यु लोक ही अच्छा है। स्वामी जी इलंमलुदंनी की गाथा गाते गाते अपने बचनों द्वारा ही धाम में सखियों का एक कलेवर त्याग कर दूसरे योनि में जाना सिद्ध कर दिया और उत्तरार्ध भाग अध्याय १ में वर्णन आ चुका है कि धाम में रूहे विशेष अज्ञान दशा पर थी। उन्हे सत असत' ज्ञान प्राप्ति के लिये खुदा ने इस लोक में भेज दिया। जब स्वामी जी के खुदा ने ही इस मृत्यलोक को सत ज्ञान प्राप्ति का साधन मान लिया तो मोमिनों को इस लोक को छोड़ कर उस अज्ञान मय धाम में जाने का प्रयत्न करना ब्यर्थ है। क्यों कि यहाँ यह भी शंभव हो सकता है कि किसी जन्म में मनुष्य ज्ञान प्राप्त कर मोक्ष का अधिकारी हो सकता है।

और आपने अपने लिये भी तो लिखा है कि मैं धाम की इन्द्रावती नामक रूह हूँ। तो आप भी उस तालाव में मछली रहे होंगे यहाँ आने से आप का भी जन्म कृतार्थ हो गया। दुनियाँ के मुर्दार जीवों को वहाँ जाने का भले ही सौभाग्य नहीं प्राप्त हुआ नहीं तो उन्हें भी वहाँ जाकर मछली होना पड़ता। जब वहाँ खुदा अपने अंग से उत्पन्न होने वाली रूहो का हितैषी नहीं उन्हे ही अज्ञान रूपी मूर्च्छा से ढक देता है तो दुनिया के मुर्दार जीवों के वहाँ जाने से कैसे भलाई हो सकती है।

प्रणामी लोग स्वामी जी की इन रचनाओं को ग़लत माने। यदि गलत नहीं स्वीकार करते तो कहीं मछलियों का रूह होना और कही रूहो का मछली होना बताने से एक शरीर त्याग कर दूसरे शरीर में जाने से अनित्यपने का दोष आप के धाम में आता है जो मृत्यु लोक के सदृश ही है। प्राकृतिक नियमों के अनुकूल वहाँ सब व्यवहार पाये जाने से वह ब्रह्म धाम नही कहा जा सकता।

और उक्त चौ० में जो यह कहा गया कि दुनियाँ के मुर्दार जीव

दुनियाँ को छोड़ कर अन्यत्र नही रह सकते तो जो वस्तु अन्य प्रकार की नही हो सकती अर्थात दुनिया के जीव अपनी स्वाभाविक गति को नहीं छोड़ सकते उसके सम्बन्ध में आप का गाथा गाना व्यर्थ है। इसके सम्बन्ध में आप वाणी में कई जगह कह चुके हैं कि बिना निसवती खुदा के धाम में कोई नही प्रवेश कर सकता वहां जाने का अधिकार केवल मोमिनों को ही है। इस आशय की एक चौ० और देखिये। सागर प्र० १४ चौ० १८ **ये निसवत जो सागर, जामे निसवती मोमिन। कहूँ थाह न भेहेर सागर, कोई पवे न निसवती विन ॥१८॥**

अर्थ—यह जो खुदा का निसवत[1] रूपी सागर है उसके निसवती (सम्बन्धी) मोमिन ही है। वह दया का सागर रूप खुदा मोमिनों के ऊपर जिस प्रकार दया करता है उसका कोई थाह (पारावार) नहीं है। उस खुदा को प्राप्त करने वाले केवल निसवती (मोमिन) ही है अन्य दुनियाँ के जीव खुदा के दया के पात्र नहीं हैं ।१८। यदि स्वामी जी के खुदा में इतना बड़ा पक्षपात है कि निसवतियों के सिवा अन्य जीवों पर उसकी दया नही होती तो इन्हे इलंमलुदंनी का उपदेश केवल मोमिन ही को देना चाहिये था आपने लिखा भी है **(सुरो पर आया वेद, असुरो पर आया कुरान।)** इन वचनों के अनुसार यदि देवताओं के।निसवती हिन्दुओं के लिये वेद आया है और कुरान मोमिनों के लिये आया है तो कुरान का उपदेश हिन्दुओं को क्यों देते हैं। ऐसा करने से आप अपने ही वाक्यों की अवहेलना करते हैं। इन सब कारणों से स्पष्ट है कि इनकी १८ हजार वाणी में कोई तथ्यता नहीं है। वेद का उपदेश किसी

१—निसवत अर्थात खुदा के सम्बन्धी

देश जाति विशेष के लिये नही है। समस्त विश्व में कल्याण की भावनी निहित होने से उसके उपदेश सबों के लिए सामान्य है।

सर्वे सुखिनः सन्तु ।

"खुलासा प्र० २ चौ० २१ **ओरवासी गिरो महंमद, आये दो वार माहे जहूदन *। गिरोवचाई काफर डुवाये, ये काम होय न महंमद विन ॥२१॥**

अर्थः—ओ शब्द से पूर्व वर्णित बारा हजार सखियाँ हैं वे खासल खास महंमद साहब की गिरोह (जमात) है। वे महंमद साहब बिना ईमान वाले हिन्दुओं के पास दो बार आये प्रथम बार कुरान ले कर अरब में आये दूसरी बार इलंमलुदंनी लेकर भारत में आये इस तरह दो बार आकर महंमदीय गिरोह की रक्षा किया और काफिरो विना ईमान वाले हिन्दुओं को डुबा दिया ये काम महंमद के विना अन्य से नहीं हो सकता। इस चौ०के प्रथम चरण का अर्थ ये लोग इस प्रकार भी करते है।(सोरवासी खष मंदिल) इस स्वामी जी के चौ० के अनुसार खासी शब्द का अर्थ अल्लाह की पत्नी मानते हैं। उस पक्ष से अय बारह हजार सखियों आप सब खुदा के पत्नी का जमात हैं तुम्हारे रक्षा हेतु महंमद साहेब दो बार हिन्दुओं के बीच आये ।२१।

मीमांसकः—जो अपने गिरोह की रक्षा कर अन्य को नष्ट करने की चेष्टा करता है वह खुदा नहीं कहा जा सकता। स्वामी जी अपने को खुदा होने का दावा करते हैं वह इनके वचनों से ही मिथ्या पाया जाता है। खुदा न्यायी है वह ऐसा पक्ष पात पूर्ण व्यवहार नहीं कर

---

* जहूदन शब्द से यहूदी जाति विशेष का भी बोध होता है किन्तु स्वामी जी ने इस शब्द का प्रयोग हिन्दुओं के लिए किया है।

सकता। उसके लिये समस्त जगह एक समान है। चाहे हिन्दु हो या मुसल्मान सब तो उसी के हैं। यदि महंमद साहब (स्वामी जी) अपने गिरोह की रक्षा करते हैं और दूसरों को डुबा देते हैं तो वे खुदा व खुदा के दूत नहीं कहे जा सकते। इस प्रकार ज्ञान हीन बेढंगी रचना कर इन्होंने इस्लाम मत के प्रवर्तक महंमद को भी दोषी बनाया है जब लोक में मानव जाति के लिये ऐसे व्यवहार निन्दा-स्पद है तो खुदा में ऐसे व्यवहारों का होना अशंभव है। निम्न चौ० से इन्होंने अपने को तीन बार भी आना बताया है।

खुलासा प्र० २ चौ० ३४ **देखो तीन वेर गिरो वास्ते, हक हुये मेहेरबान। राख लई गिरोह पनाह मे, डुबाय दई सब जहांन ॥३४॥**

अर्थः—गिरो (मोमिनों) के लिये खुदा ने तीन बार मेहेर (दया) की है प्रथम दया अरब में आकर द्वितीय दया अरब से भारत में आकर तृतीय दया प्राणनाथ के रूप में जामनगर पन्ना आदि स्थानों में आकर। वह दया किस प्रकार की है कि अपने गिरोह की रक्षा कर सब संसार को डुबा दिया है। कोई कोई इनके तीन बार आने के विषय में ऐसा भी अर्थ करते हैं कि प्रथम बार व्रज में ११ वर्ष ५२ दिन तक खुदा का जोस रहने से द्वितीय, ११ वर्ष ५२ दिन बाद खुदा का जोस अरब में आ जाने से, तृतीय प्राणनाथ में खुदा का जोस आने से आखरी महंमद कहे गये सारांस यह कि कृष्ण, महंमद, प्राणनाथ, इन तीनों में धणी जी का जोस प्रविष्ट होने से ये तीनों महंमद रूप माने जाते हैं।,,

मीमांसक—उक्त चौ० में महंमद को तीन बार आना बताया गया है और मोमिनों के ऊपर दया कर उनकी रक्षा करना बताया गया तथा हिन्दुओं को काफिर बताकर सब को डुबा देने को कहा

गया है। किन्तु इस प्रकार खुदा की दया नहीं कही जा सकती। यह दया स्वामी प्राणनाथ की ही है। जब ये खुदा अपने बयानों द्वारा कह रहे हैं कि मैं ही महंमद के रूप में तीनों बार आया तो अन्य कौन कह सकता है कि ये इस्लाम मत के समर्थक नहीं हैं। इनकी रचना में कहीं भी देखिये सर्वत्र इस्लाम मत के अलावा अन्य कुछ भी नहीं है। हिन्दू समाज में जहाँ इन्होंने कृष्ण उपासना की झलक बताई है वहाँ बड़े ही नैतिकता के साथ वर्णन किया है। अपढ़ लोग उसे नहीं समझ पाते। प्रकास ग्रंथ के ३६ में प्र० की इस छल विद्या को पढ़े लिखे हुये मनुष्य ही समझ पायेंगे यदि यह बहाना नहीं किया जाता तो हिन्दुओं को इस्लाम में दीक्षित होना अशंभव था।

दीन हीन अशिक्षित हिन्दुओं का इनके मत में दीक्षित होने का कारण यह भी दिखाई देता है कि उस मध्य युग में हमारे देश वासियों में छुआ छूत का भी•भूत सवार था। नीच कौम को धार्मिक व्यवहारों में समान अधिकार प्राप्त नहीं थे। ये घृणित दृष्टि से देखे जाकर अपमानित किये जाते थे। समाज के द्वारा अपमान किये हुये मनुष्य का हृदय दुखी होना स्वाभाविक है जिस समाज में उसे सम्मान और समानाधिकार प्राप्त होगा वहाँ वह जाकर अवश्य ही मिलने की कोशिस करेगा। इन कारणो से भी हिन्दु समाज विभिन्न समाजों में बटा हुआ दिखाई देता है। विचार करने पर वही परिस्थिति यहाँ भी दृष्टि गोचर होती है। क्यों कि इन्होंने दीन हीन अशिक्षित व्यक्तियों को स्वमत मे दीक्षित किया है। इसका प्रमाण विहारी जी का पत्र है। बीतक प्र० २८ चौ० ६६ **उन लिख भेज पाती को, तुमारी राह भै और। और हमारी भी और है, भई जुदागी इन ठोर ॥६६॥ हम जिन साथ को कादत,**

तिनको क्यो लिया वीच दीन । तो इत तुमको हमारा, छूट गया आकिन ॥६८॥ प्राणनाथ जिन अन्त्यज जातियों को दीक्षित करते थे उन्हे बिहारी जी समाज से अलग कर देते थे । उन अलग किये हुये मनुष्यों को स्वामी जी समाज में मिला लेते थे । इस कारण दोनों में मतभेद होने से दोनों के मार्ग भिन्न भिन्न हो गये । प्राणनाथ ने गुरु पुत्र के आज्ञा का उलङ्घन कर स्वतंत्र हो स्वमत में अन्त्यज जाति को दीक्षित कर उनका सम्मान किया जिससे गुरु की अपेक्षा इनके शिष्य अधिक संख्या में हुये । लोगों का कथन है कि गुरु ने केवल ३०० शिष्यों को दीक्षित किया इन्होंने लगभग २००० शिष्यों को कलमा तारतम दिया ।

अब हमें देखना है कि क्या इनका वास्तव में महंमद रूप होना पाया जाता है । इन्होंने उक्त चौपाइयों में अपने को महंमद के रूप में अरब देश से भारत आना बताया है । उस समय आपने कुरान में क्या निर्जानन्द संप्रदाय के सिद्धान्तों का उल्लेख किया है । यदि आपके निम्न १५ सिद्धान्तों का कुरान में वर्णन नहीं है तो आप अरब वाले महंमद नहीं हैं । यदि कुरान के आरफ निम्न १५ सिद्धान्तों को कुरान से प्रमाणित कर दे तो विश्वास किया जा सकता है कि आप जाम नगर पन्ना में आने वाले भी महंमद ही हैं । स्वामी जी के १५ धार्मिक सिद्धान्त निम्न हैं ।

१—खुदा के धाम में रूहे अज्ञान दशा पर थी हक पहचान के लिये उन्हें संसार रूप झूठा नमूना दिखाया गया ।

२—हक, हादी, रूहे, नूरजल्लाल, के स्वप्न से सृष्टि की उत्पत्ति है ।

३—धाम में नूरजम्माल का दर्शन करने के लिये नूरजल्लाल नित्य आता है ।

४—खुदा के धाम में जमुना नदी, मानिक पहाड़, नाना प्रकार के पशु पक्षियों से समन्वित वन मूल मिलावा नौ भोम दशमी आकाशी

पर्यन्त महलो में खुदा साकार रूप से निवास करता है।

५—गोकुल व्रज में रास करने वाला कृष्ण महंमद ही है। विष्णु महंमद नहीं है।

६—कुरान में क्या कृष्ण उपासना बताई गई है।

७—जीवात्मा अनित्य है मोमिन सत्य है।

८—जीवात्मा में तीन भेद है। १ ब्रह्म सृष्टि २ ईश्वरी सृष्टि ३ जीव सृष्टि।

९—बसरी, मलकी, हकी, इन खुदा की तीन सूरतों में क्या प्राण नाथ को हक्की सूरत कहा गया है।

१०—खुदा के धाम में औरंगजेब का नाम साकुमार वाई छत्र साल का नाम साकुंडल वाई देवचन्द्र का नाम सुन्दर वाई था क्या इन सबों के नाम कुरान में लिखे हैं।

११—मक्मा, मदीना की सम्पूर्ण बरकत पन्ना जामनगर में आ जायगी जिससे ये हज (तीर्थ) कहे जायँगे।

१२—अरब वाले महंमद को इस लोक से गये हुये ९९० वर्ष और ९ माह जब व्यतीत हो जायँगे तब वही महंमद जामनगर में पिता कैशो ठाकुर माता धन बाई से वि० सं० १६७५ में जन्म लेंगे।

१३—खुदा के धाम में निसवती (सम्बन्धी) ही पहुंच सकते है अन्य जीव नहीं।

१४—तिलक, माला, पूजा आरती राज श्यामा जप का विधान क्या कुरान में है।

१५—बारह हजार मोमिन खुदा के धाम से अवतरित हुये।

यदि स्वामी जी के उक्त १५ धार्मिक सिद्धान्तों का मौलवी लोग कुरान से प्रमाणित नहीं करते तो आप न अरब वाले महंमद और न आखरी महंमद ही कहे जा सकते। क्या पूर्व में रचना किये हुये

कुरान की भूलों को अब कुलजमसरूप में सुधारा गया है। महंमद हक का नूर होने से उससे भूल होना संभव नहीं। अतः ये सब आपकी नवीन रचना कुरान और वेदों से अप्रमाणित होने के कारण मिथ्या है। ये १५ बातें कुरान में न होने के कारण कोई भी मौलवी इनको मुहम्मद साहब का अवतार स्वीकार नहीं करता और वेदों में भी इनकी १५ बातें न होने के कारण कोई भी हिन्दू प्राणनाथ जी को श्रीकृष्ण का अवतार या जोस नहीं मान सकता। भगवान श्री कृष्ण ने गीता में अपने को अक्षर ब्रह्म परमं कहा है जबकि प्राणनाथ जी ने अक्षर ब्रह्म रूप कृष्ण को नीचा दिखाने के लिये यह लिखा है कि नूरजल्लाल अर्थात अक्षर ब्रह्म नूर जम्माल अर्थात खुदा के दर्शन के लिये नित्य जाया करता है। इस प्रकार इन्होंने इस्लाम धर्म के खुदा का गौरव बढ़ाने और विशेषता बताने के लिये लिखा है। हिन्दू धर्म में श्री कृष्ण को भगवान विष्णु का अवतार माना गया है और इन्होंने पहले लिखा है कि विष्णु खुदा के यहां जा ही नहीं सकता, जाने पर पैर जलने लगते हैं। इस प्रकार इनकी बातों में स्थल-स्थल पर सनातन वैदिक मत से विरोध पाया जाता है। ये जो खुदा के यहाँ जमुना नदी की बातें करते हैं। यह केवल हिन्दुओं को धोखा देकर अपने धर्म में आकृष्ट करने के लिये है क्योंकि जहाँ यमुना और गोकुल है वहीं श्रीकृष्ण हैं और वहीं विष्णु हैं केवल जमुना श्रीकृष्ण और ब्रज रास के शब्दों को अपना लेने मात्र से इनको हिन्दू धर्म का पोसक नहीं माना जा सकता। यह तो इनकी चालबाजी थी कि यमुना आदि कुछ शब्दों को अपनाकर इन्होंने मूर्ख हिन्दुओं को अपने संप्रदाय की ओर खींचने का प्रयास किया है। इसका तो प्रत्यक्ष प्रमाण है कि प्रणामी मतानुयायी यमुना गंगा आदि को पवित्र न मानकर उसमें कभी स्नान नहीं कर सकते। फिर यमुना नदी खुदा के यहाँ कैसे बह सकती है। कुरान

ग्रन्थ में जहां खुदा का वर्णन है वहाँ भी खुदा के साथ यमुना नदी के होने की चर्चा नहीं की गई अतः इनकी सारी बातें मिथ्या सिद्ध होने से छल कपट से पूर्ण है।

यद्यपि इन्होंने अपने प्रत्येक ग्रन्थ के प्रत्येक प्रकरण में खुदा के धाम से सुन्नी मुसल्मानों का सम्बन्ध स्थापित कर उनकी बार-बार प्रशंसा किया है। किन्तु कुरान से उक्त १५ सिद्धान्तों का प्रमाणी करण न होने से उनकी प्रशंसा करना व्यर्थ हो जाता है। खुदा के सम्बन्धी केवल मोमिन ही हैं। अन्य जीव वहाँ नहीं जा सकते ऐसा कुरानमें खुदा का एक देशीय उपदेश नहीं हो सकता। सुन्नियों की प्रशंसा करने का कारण यह भी दिखाई देता है कि सम्राट औरंगजेब इनके मोमिनो को कई बार गिरफ्तार कर चुका था। स्वामी जी के छिपने के कारण इनके लिये हमेशा गिरफ्तारी का वारंट जारी रहता था। कदाचित मुड़भेड़ पड़ने पर सुन्नी समाज की प्रशंसा करने पर छोड़ दिये जाते थे। परिस्थिति के अनुकूल इनके वेष भूषा बदलने के कारण जाँच पड़ताल के लिये हमेशा गुप्तचर इनका पीछा करते रहते थे। ये गुप्तचर तब तक पीछा करते रहे जब तक पन्ना की जंगल एरिया का शरण नहीं लिया। इन विषयों को पूर्वार्ध भाग में देखिये।

इन्होंने सुन्नी समाज के अनेक नाम रक्खे हैं। जिससे इनकी चातुर्य का साधारणतया पता नहीं चलता वह तो ग्रन्थ के आद्योपान्त हृदयङ्गम करने से स्पष्ट हो जाता है। जैसे ब्रह्म सृष्टि, सखी, वास्ना, रूह, मोमिन, सुन्दर साथ उमत अरवाहे, गिरो, नाजी, सुन्नत जमात, ये सभी शब्द एकार्थक नहीं हो सकते किन्तु इनके शब्द कोषानुसार सभी एक ही अर्थ के बोधक हैं। अस्तु ब्रह्म सृष्टि आदि शब्दों से जिन लोगों ने ब्रज की सखी अर्थ मान रखखा है वह उनकी भूल है। इन्ही शब्दों के द्वारा इन्होने वाक् छल किया है। सभी मनुष्य इनकी वास्तविकता को नहीं पहचान पाते। इनके मतानुकूल ब्रह्म सृष्टि

शब्द का प्रयोग मोमिन सुन्नत जमात ही के लिये किया गया है। अन्त्यज जातियों को इन्होंने ब्रह्म धामस्थ ब्रह्म सृष्टि की उपाधि से सन्मानित कर इनकी भोजन वस्त्रादिको से भी अच्छी व्यवस्था कर रक्खा था। इन प्रलोभनो से भी समाज की वृद्धि देखी जाती है।

स्वामी जी ने लिखा है (**लूला पगला जो साथ, ताको इन्द्रावती न छोड़े हाथ**) हमारे समाज में आने वाले लूले पगले जो भी सुन्दर साथ हैं उनके हाँथो को मैं नहीं छोड़ सकता। अतएव विभिन्न जातियों का समुदाय अपनी पूर्व जातीयता को त्याग कर धामी नाम से भी लोक में अपने को बतलाने लगे। स्वामी जी ने इस विषय में भी लिखा है (**सब जाते मिलि भई एक ठोर कोई न कहे धणी मेरा और**)।

इति निजानन्द मीमांसायामुत्तरार्ध भागे इस्लाम मत वर्णनं नाम पंचदशोऽध्यायः १५।

अभ्यासार्थक प्रश्न

१—स्वामी जी के जातीयता के सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त कीजिये।

२—५१ चौ० की रचना को गलत किस प्रकार कहा गया।

३—धाम में रूहो का मछली होना बताने से कौन-कौन से दोष उत्पन्न होते हैं।

४—खुदा अपने सम्बन्धियों पर ही दया करता है इस विषय में स्वतंत्र विचार व्यक्त कीजिये।

५—२१ और ३४ चौ० पर अपने आलोचनात्मक विचार व्यक्त कीजिये।

६—इस समाज में अन्त्यज जातियों को दीक्षित होने के क्या कारण हैं।

७—यह प्रमाणित कीजिये कि स्वामी जी महंमद रूप नहीं हैं।
८—ब्रह्म सृष्टि शब्द का प्रयोग इन्होंने किसके लिये किया है।

अथ षोडशोऽध्यायः १६।

इस्लाम मत।

स्वामी जी अपने मतावलम्बियों को जिस धाम में स्थित खुदा की उपासना करने का उपदेश दिया है उसी खुदा से महंमद, रूहों की एकता का प्रतिपादन निम्न चौ० द्वारा किया है।

"खुलासा प्र० १७ चौ० ४ **महंमद नूर हक का, रूहे महंमद का नूर। ये हमेशा वकामिने, एकै जात जहूर ॥४॥**

अर्थ :—महंमद साहब हक (खुदा) का नूर (तेज) है और रूहें महंमद का तेज है ये हमेशा खुदा के घर में एक ही जाति का प्रकाश है।"

मीमांसक :—उक्त चौ० में स्वामी जी ने अपने को ही महंमद कहा है और महंमद रूप अपने को ही खुदा का तेज बताया है और रूहों (ब्रह्म सृष्टियों को) अपना महंमद का तेज बताया है। इन तीनों को धाम में एक ही जाति का प्रकाश बताकर अभेद दर्शाया है। इन कथनो से यह नहीं कहा जा सकता कि स्वामी जी इस्लाम मत के पक्षपाती नहीं है। आप महंमद बनते तो जरूर हैं किन्तु बनते बना नहीं। क्योंकि पिछले अध्याय में वर्णित आपके १५ सिद्धान्तों का कुरान से विरोध होता है। इससे आपका महंमद होना नहीं सिद्ध पाया जाता। फिर अरब देश के व भारत के कोई भी कुरान के आरफ या मौलवी आपको जानते ही नहीं महंमद मानने की तो बात ही दूर है। जब इन्होंने डर के कारण ग्रन्थ को प्रकाशित ही नहीं किया उसे अब तक छिपा रक्खा है तो संसार में कोई किस तरह जाने कि आप आखरी महमद हैं। इन बातों से

यह भी सिद्ध होता है कि आपने हीन अशिक्षित व्यक्तियों को ही इस गोपनीय ज्ञान का उपदेश दिया है।

पूर्व पक्षी :—स्वामी जी इस्लाम मत के पक्षपाती नहीं हैं। उन्होंने इस विषय का संदेह निम्न चौ० से दूर किया है (भेष भाषा जिन रचो रचियो मायने मूल) अय धाम की सम्बन्धियों तुम हमारी भेष भूषा तथा भाषा को देख कर मत भूलो मूल अर्थो पर विचार कर देखो।

उत्तर पक्षी—(**कृतापराधः स्वयमेव शंक्यते**) इस युक्ति के अनुसार स्वामी जी को स्वतः संदेह हो जाता है कि हमारे कुरान सम्बन्धी उपदेशों से किसी को संदेह न हो जाय। उनके मूल अर्थो पर उत्तरार्ध भाग के पिछले अध्यायों में अच्छी प्रकार विचार किया जा चुका है। वहाँ उनके मूल सिद्धान्तों से सांप्रदायिकता की कोई बुनियाद ही नहीं बन पाती बुनियाद न बनने का प्रधान कारण रूहों का धाम में अज्ञान मय होना है और उसी अज्ञानता के कारण उन्हें संसार में अवतरित होना बताया गया है। जिससे वे ब्रह्म धामस्थ नहीं पाये जाते। लौकिक लक्षणों के पाये जाने से उनकी सब काल्पनिक लीलायें निरस्त हो जाती हैं। अब आगे उनकी प्रत्येक चौ० से सिद्ध किया जा रहा है कि ये इस्लाम मत के पक्ष पाती हैं।

"खुलासा प्र० ६ चौ० १२ **लिखा है फुरमान मे, खुदा एक महंमद वर हक। तिनको काफर जानियो, जो इनमें ल्यावेसक ॥१२॥**

अर्थ :—स्वामी जी कहते हैं कि कुरान में लिखा है कि खुदा एक महंमद वर हक ही है अन्य नहीं। उनको काफिर बिना ईमान के समझना चाहिये जो इस विषय में संदेह करता है।१२।

खुलासा प्र० ६ चौ० १३ **येक खुदा हक महंमद, अरस बका होज जोय[1] । उतरी अरवाहे अरस की, चीन्होगिरो सोय ।१३।**

बार-बार कुरान के सिद्धान्त को द्रढ़ करते हुये स्वामी जी कह रहे हैं।

अर्थ :—खुदा एक महंमद के रूप में हक ही हैं जिस असल अरस (धाम) में होजकोसर नामक तालाब है और धाम के उत्तर दिशा में जोय (जमुना नदी) है वहीं से अरवाहे (मोमिन) अवतरित हुये हैं। अय रूहों तुम लोग खुदा के घर का व खुदा रूप महंमद का पहचान करो भूलो मत १३।

खुलासा प्र० ७ चौ० १० **जो इन पर यकीन ल्याइया, ताय भिस्त होसी बेसक। जो इन बातां सुनकर, ताय होसी आ खर दोजख ॥१०॥**

अर्थ :—जो मनुष्य इन महंमद साहब को खुदा मानकर विश्वास करेगा उसको अवश्य ही भिस्त (मोक्ष) होगा। और जो इन उपदेशों पर ध्यान नहीं देंगे उन्हें क्यामत के समय में दोजख अर्थात् नरक की अग्नि में जलना पड़ेगा १०।"

मीमांसक :—स्वामी जी की उक्त चौ० खुलासा ग्रन्थ से उद्धृत है इस ग्रन्थ में इन्होंने अपने वास्तविक गोपनीय ज्ञान को प्रकाशित किया है। खुलासा शब्द का अर्थ ही होता है स्पष्टी करण प्रगट कर देना। अस्तु इनके जो परमलक्ष धार्मिक सिद्धान्त है वे इस ग्रन्थ के द्वारा खुलासा किये गये है। उक्त चौपाइयों में अपने मौलिक सिद्धान्त का उपदेश करते हुये व कुरान की साक्षी देते हुये कह रहे है कि खुदा महंमद वर हक ही है जो इस महंमद को खुदा होने में

---

१ जोय शब्द से इनके संप्रदाय के लोग यमुना नदी का अर्थ लेते है किन्तु निश्चित रूप से यह नहीं कहा जा सकता कि जोय शब्द का अर्थ यमुना नदी ही होता है। कदाचित हो भी तो यह हिन्दुओं को मोह और भ्रम में डालकर अपने ओर आकृष्ट करने के लिए है।

संदेह करता है उसे बेईमान समझना चाहिये। इन्होंने इसप्रकाश ग्रंथ के ३६ में प्रकरण में हिन्दुओं के समझाने के लिये जो लिखा है कि धणी जी का जोस दो भुजा वाले कृष्ण में आया और उसी धणी जी के धाम की सखियां ब्रज में अवतरित हुई इन विषयों की वास्तविकता को ऊपर युक्त चौपाइयों द्वारा प्रगट कर रहे है कि वे धणी जी—खुदा महंमद वर हक ही है वही महंमद कृष्ण कलेवर में ११ वर्ष ५२ दिन पर्यन्त निवास कर अरब देश चला गया और यहाँ कृष्ण विष्णु रूप हो गये। जिस खुदा के धाम में होजकोसर तालाब है और जमुना नदी है वहीं से अरवाहे (मोमिन) जो अवतरित हुये है वे ही ब्रज की सखियां हैं कृष्ण कलेवर से महंमद के जाने पर वे सखियां (मोमिन) भी चले गये अब यहाँ प्रतिबिंब रूप सखियां रह गई। अस्तु उन्होंने सिद्धांत पक्ष में कृष्ण को महंमद रूप और सखियों को मोमिन रूप माना है उसी खुदा महंमद वर हक को पहचानने (उपासना) करने का उपदेश दे रहे है जो इस महंमद पर खुदा होने का विश्वास करेगा उसे निश्चय ही मोक्ष प्राप्त होगा। और जो इन पर विश्वास नहीं करेगा उसे दोजख (नरक) की अग्नि में जलना पड़ेगा। अतः इनके सैद्धान्तिक दृष्टि कोणो के अवलोकन करने से स्पष्ट हो जाता है कि हिन्दुओं के लिये इनका कृष्ण का उपदेश केवल औपचारिक और विडम्बना मात्र हैं। जो स्वथं सिद्धि के लक्ष से किया गया है। दशमी चौ० में रोचक, भयानक शब्दों का प्रयोग हुआ है। महंमद पर विश्वास करने वालों को मोक्ष—यह रोचक शब्द है उस पर विश्वास न करने वालो को दोखज—यह भयानक शब्द है। जो इस्लाम मत में दीक्षित करने का एक तरीका मात्र है।

"खुलासा प्र० ५ **आखर भिस्तो का वेवरा, ये जो नया होसी चार। सो होंसी वखत क्यामत के, तिनको कहूँ**

वेवरा ॥१३॥ अव्वल भिस्त रूहो अकस, ये जो होसी भिस्त नई। भिस्त होसी दूजी फिरस्तो, जो गिरो जबरूत की कही ॥१४॥ पेगम्बरो भिस्त तीसरी, जिन दिये हक पेगांम। चौथी भिस्त जो होयसी, पावे खलक आम ॥१५॥

अर्थ :—आखर (क्यामत) के समय में चार नवीन (भिस्त) (मोक्ष) आखरी महंमद द्वारा कायम किये जायँगे उनका विवरण इस प्रकार है पहला नवीन भिस्त (मोक्ष) रूहों के अक्स (प्रतिबिम्ब) का होगा जो अक्षर की गिरोह कही जाती है उन फिरस्तों के लिये दूसरा भिस्त होगा। और जिन्होंने खुदा के पेगांम (संदेश) को पहुंचाया है। उन पेगम्बरों के लिये तीसरा भिस्त होगा चौथा भिस्त सब संसार के प्राणियों के लिये निर्माण किया जायगा।"

मीमांसक :—स्वामी जी जो चार प्रकार की नवीन मुक्ति का निर्माण अपने द्वारा बताते हैं तो क्या कुरान में यह लिखा है कि आखरी महंमद प्राणनाथ चार प्रकार की नवीन मुक्ति की व्यवस्था करेंगे। यदि लिखा है तो आपको कुरान की टीका लिखना चाहिये था जिससे सब मौलवी लोग भी आप पर विश्वास कर लेते। केवल आपके कथन से यह कौन मान सकता है कि विक्रम संवत १७४० में ही नवीन मुक्ति का दरवाजा खोला गया। फिर यह भी ध्रुव है कि जिस वस्तु का नवीन निर्माण होता है वह सनातनी न होने से विनाश शील होता है। अत:मुक्तात्माओं के पतित होने का भय है जिससे वह मोक्ष नहीं कहा जा सकता। पहला रूहों के प्रतिबिम्ब का जो मोक्ष होना बताया गया यह सर्वथा असंभव है। क्योंकि प्रतिबिम्ब जिस प्राणी वस्तु का होता है वह उसी के साथ रहता है वह अपने बिम्ब रूप आधार से आधेय रूप प्रतिबिम्ब पृथक नहीं हो सकता और न प्रतिबिम्ब का कोई पृथक अस्तित्व ही है। फिर प्रतिबिम्ब जड़ भी

होता है। जड़ वस्तु को मोक्षाधिकार बतलाना नितान्त अज्ञता है। है। दूसरा जो जबरूत की गिरोह (फिरस्तो) के लिये मुक्त करना कहा गया यह भी संभव नहीं क्योंकि उन फिरस्तो को आपने अक्षर ब्रह्म की कुमारिका सखी प्रकाश ग्रंथ में बताया है और उस अक्षर ब्रह्म को धाम के सहित नित्य भी माना है। अपने ही वचनो द्वारा नित्य माने हुये अक्षर धामस्थ कुमारिका सखियों को नवीन मुक्ति की व्यवस्था करना यह भी अज्ञता का परिचय देना है। तीसरा— पेगम्बर खुदा के पेगांम देने वाले महंमद और प्राणनाथ भी है ये दोनों हक (खुदा) का तेज होने से क्या ये भी मुक्त नहीं थे। यदि ये मुक्त नहीं थे तो खुदा का पेगाम कैसे पहुंचाया। खुदा के समीप में तो मुक्तात्मा ही पहुंच सकते हैं। जिस तरह सूर्य का तेज सूर्य से भिन्न नहीं हो सकता उसी तरह महंमद खुदा का तेज होने से उससे भिन्न नहीं हो सकता। दोनों में अभेद होना पाया जाता है। अस्तु इन्हीं के कथनो से इनका मुक्त होना नहीं सिद्ध पाया जाता तो. दूसरो के लिये नवीन मुक्ति का निर्माण कैसे कर सकते हैं। चौथा भिस्त (मोक्ष) जो सब संसार के लिये देना कहा गया यह भी गलत है क्या संसार के जीवो के लिये आज तक कोई मुक्ति की व्यवस्था न थी। यदि नहीं थी तो आज नवीन मुक्ति की व्यवस्था होना यह किसी प्रकार संभव नहीं है। अस्तु स्वामी जी क्यामत करते समय जो चार प्रकार की नवीन मुक्ति का विधान बनाये हैं वे इन्हीं के वचनो द्वारा चारो मुक्तियाँ निरस्त हो जाती है। कयामत के सम्बन्ध में इनके सम्प्रदाय में मत भेद है कोई यह कहा करते हैं कि अभी कबर से मुर्दे नहीं उठे जिससे क्यामत होना बाकी है। और कोई यह भी कहते हैं आखरी महंमद (स्वामी जी) क्यामत कर सबो को भिस्त देकर चले गये।

"सनंध प्र० १ **अल्ला मोहब्बा मासूक, सो खासी खसंम**

दिल। नाम धराया रसूले, आशिक अपना असल ॥१॥ आशिक कह्या अल्लाह कों, मासूक कह्या महंमद। न जाय खोले मायने, विना ईमाम एक सबद ॥२॥ आप रसूले यो कह्या, काजी आवेगा खुद सोय। पर फुरमान यो केहे वही, जिनके हेवे कोई दोय ॥३॥

अर्थ :—प्यारा अल्लाह सबका मासूक (पति) है और खासी (अल्लाह की पत्नी) खपंम (पति) का हृदय ही है। इसी से तो रसूल साहब (प्राणनाथ) ने अपना नाम आशिक धरा रखा है। किन्तु कहीं-कहीं प्रेम के विवशता के कारण अल्लाह ही आशिक (प्रेमी) बन जाते हैं। और माशूक (पति) महंमद बन जाते हैं। लेकिन इन गुह्य रहस्य के मायने को ईमाम (प्राणनाथ) के बिना अन्य कोई एक शब्द के अर्थ को भी नहीं खोल सकता। रसूल साहब ने कुरान में कहा है कि आखर जमाने में काजी कजा (न्याय) करने खुद आयेगा और उसके साथों साथ कुरान यह भी कहता है कि कोई भी व्यक्ति अरब वाले महंमद को और कजा करने वाले आखरी महंमद प्राणनाथ को भिन्न-भिन्न न कहे अर्थात वे दोनों एक ही है।"

मीमांसक :—स्वामी जी ने खुदा को प्राकृत गुणों से युक्त माना है। जब अल्लाह सबका मासूक पति है तब वह आशिक कैसे बन जाता है और आशिक रूप प्राणनाथ मासूक कैसे बन जाते हैं। क्या इन दोनों की प्रेम की विवशता प्राकृतिक नियमों का भी अतिक्रमण कर जाती है। इस रहस्य को यदि प्राणनाथ के अलावा अन्य कोई नहीं खाल सकता तो क्या इन्होंने अपनी रचना में कहीं भी इस रहस्य को खोला है।आपके द्वारा इस रहस्य के कहीं भी न खोले जाने से उक्त चौ० की रचना व्यर्थ हो जाती है। तीसरी चौ० में इन्होंने स्पष्ट रूप से अपने को महंमद बताया है और कुरान की साक्षी

देकर उसी को पुष्ट भी किया है कि आखर के समय में कजा करने वाले काजी प्राण नाथ को और अव्वल महंमद अरब देश वाले को भिन्न-भिन्न न कहना चाहिये। जब वे खुद अपने को महंमद बताते हुये इस्लाम धर्म के प्रवर्तक मानते हैं तो अन्य की बातें कैसे प्रमाणित मानी जा सकती है कि स्वामी जी इस्लाम धर्म के उपदेशक नहीं हैं। (इनके अनुयायी प्राय: यह कहा करते हैं कि आरबी भाषा को प्रयोग केवल समझाने के लिये हुआ है स्वामी जी अपने भ्रमण काल में जो मनुष्य जिस भाषा को जानता था उसको उसी भाषा से समझाया है। इससे इनकी रचना में हिन्दी, आरबी, गुजराती, सिन्धी इन चार भाषाओं का प्रयोग हुआ है।)

उत्तर पक्षी:—यदि ऐसी बात है कि मुसल्मानों को अरबी भाषा से कुरान वर्णित खुदा एक महंमद बर हक का उपदेश दिया है तो हिन्दुओं के लिये शास्त्रोक्त विष्णु नारायणादि ईश्वर बोधक शब्दों से उपदेश क्यों नही दिया। क्या अरबी के अलावा दूसरी भाषा मे भारतीयों को नही समझाया जा सकता था। अरबी तो किसी भारतीय की भाषा भी नही हैं। विष्णु तत्व का उपदेश देने वाली स्वामी जी की रचना में कोई चौ० न होने से तथा सनातन वैदिक धर्म की उपेक्षा करने से भाषा का प्रयोग केवल समझाने के लिये हुआ। यह कथन सर्वथा असत्य है। उक्त चारों भाषा में से केवल आरबी भाषा ऐसी है जो ईश्वर के विषय में अल्लाह शब्द का प्रयोग करती है। बाकी तीनों भाषाओं में ईश्वर बोधक शब्दों में कोई भेद नहीं देखा जाता। क्या गुजराती सिन्धी भाषा में हिन्दी संस्कृत भाषा से भिन्न ईश्वर बोधक शब्दों का प्रयोग किया गया है। यदि भिन्न होता है तो स्वामी जी ने गुजराती और सिन्धी भाषियों को भिन्न ईश्वर बोधक शब्दों का कहाँ प्रयोग किया है, भिन्न नामो का अपनी रचना में प्रयोग न करने से ही सिद्ध है कि हिन्दी; गुजराती

सिन्धी भाषा में ईश्वर के लिये एक ही शब्दो का प्रयोग हुआ है। इन तीनों भाषाओं में ईश्वर के भिन्न नाम न कहे जाने से नारायणादि शब्दो का उपदेश क्यों नहीं दिया। तीनों भाषाओं से विरुद्ध राज श्यामा यह शब्द अपना नाम जपने के लिये उपदेश क्यों दिया क्यों कि राज श्यामा यह शब्द हिन्दी या संस्कृत में ईश्वर बोधक नहीं है। उक्त शब्द का प्रयोग इन्होंने शास्त्रोक्त पद्धति से भिन्न किया है। शास्त्रकारों ने ईश्वर सम्बन्धी जिस परम तत्व का उपदेश दिया है। उसे इन्होंने असत बिनाश शील बताकर उपेक्षा किया है। इनके मत के अनुसार खुदा केवल राज श्यामा (अल्लाह) ही है। हिन्दी गुजराती सिन्धी भाषा वाले ईश्वर बोधक शब्दों से अपने राज श्यामा और अल्लाह शब्द की कहीं भी एकता का प्रतिपादन नही किया और आरबी भाषा वाले हक, हादी, नूरजन्माल महंमद अल्लाह आदि शब्दो का अपने नाम राज श्यामा शब्द से स्थल स्थल पर अभेद दर्शाया है।

अस्तु पूर्व पक्षी का जो कथन है कि जो जिस भाषा को जानता था उसको उसी भाषा से समझाया गया है यह केवल साधारण जन से वस्तु तत्व को छिपा कर धोखा दिया गया है। यदि इनका सिद्धान्त भाषा के प्रयोग मात्र से होता तो जिस तरह इस्लाम धर्म से अपने सिद्धान्तों का अभेदत्व दिखलाया है उसी तरह वैदिक सनातन धर्म से भी अभेदत्व दिखलाते तो भाषा का प्रयोग केवल समझाने के लिये मान लिया जाता। किन्तु अपने भारतीय आर्यों के वस्तु तत्व से आपका वस्तु तत्व भिन्न बताया है जिससे सिद्ध है कि आप इस्लाम मत के पक्षपाती है। अब निम्न चौपाइयों के देखने से स्पष्ट हो जाता है कि आप वैदिक सिद्धान्त के सर्वथा विरोधी हैं।

"सनंध प्र० १७ **अब कहूँ कोहेड़ा वेद का, जाकी मीही गूथी जाल। याकी भी नेक केहे के, देऊँ सो आकड़ी टाल ॥३॥**

वैराट आकार ख्वाव का, ब्रह्मा सो तिनकी बुध । मन नारद फिर दशो दिश, वेदे बाँध किये बेसुध ॥४॥

अर्थ:—स्वामी जी कहते हैं कि अब मैं वेद के अज्ञान रूप अंधकार का वर्णन करता हूँ इसने अपनी बारीक जालो से अर्थात् कर्म कांड रूप जालो से संसार को उलझा दिया है। इसका भी वर्णन करके उसकी उलझनों को हटाये देता हूँ ।३। हिन्दुओं के विराट भगवान का आकार चौदह लोक यह स्वप्नवत झूंठे हैं। ब्रह्मा उसकी बुद्धि है और दशो दिशाओं में भ्रमण करने वाले नारद ही उसके मन है इस तरह वेदो ने ससार को बंधन में डाल कर वेसुध कर दिया है।"

मीमांसक:—यहाँ पर स्वामी जी वेद वाणी को शूक्ष्म जाल बताकर उसकी उलझनों को हटाते हुये कहते हैं कि यह वैराट (विश्व) तो रूहो का स्वप्न है जो मिथ्या है अत: कर्म कांड रूप जाल भी स्वप्नान्तरगत होने से मिथ्या है इस तरह वेदो ने मिथ्या कर्म कांड रूप जाल में संसार को फसा कर वेसुध कर दिया है। यदि स्वामी जी का सिद्धान्त भाषा का प्रयोग केवल समझाने के लिये होता तो वेदो को जाल में फसाना न कहते वेदो को जाल बताने से स्पष्ट हो जाता है कि आप इस्लाम मत के पक्षपाती हैं।

पूर्व पक्षी:—हिन्दुओं के लिये कृष्ण का उपदेश भी तो दिया है। उत्तर पक्षी:—कृष्ण का केवल नाम रख कर जो इन्होंने उपदेश दिया है वह हिन्दुओं से छल किया गया है। इन्होंने जहाँ कहीं भी कृष्ण शब्द का प्रयोग किया है उससे इनका तात्पर्य स्वयं अपने आप से है न कि भगवान श्री कृष्ण से दूसरे शब्दों में स्वामी प्राणनाथ ही कृष्ण हैं। किसी का नाम राम कृष्ण रख देने मात्र से उसे ईश्वर नहीं कहा जा सकता। लोक में बहुतों का नाम राम कृष्ण रक्खा जाता है तो क्या वे ईश्वर कहे जा सकते हैं इन्होंने तो अपने महंमद को ही कृष्ण बताया

है। ११ वर्ष ५२ दिन बाद उसे महंमद मानकर विष्णु का रूप बतला कर भेद सिद्ध किया है। उस विष्णु को खुदा या राज जी नहीं कहा गया। विष्णु रूप कृष्ण को महंमद न कहने से इनका सिद्धान्त कृष्ण उपासना नहीं है। यदि विष्णु रूप कृष्ण को महंमद कहते तो भाषा का प्रयोग उपदेश मात्र के लिये हो सकता था और कृष्ण उपासक भी कहे जा सकते थे। किन्तु कृष्ण कलेवर में विभिन्न आत्माओं का पुनः पुनः प्रवेश बतलाने से स्वामी जी कृष्ण उपासना के उपदेशक नहीं हैं। यदि इसका उपदेश कृष्ण उपासना के लिये होता तो वेद के लिये संसार को जाल में बाँधना न कहते इन्होंने श्री कृष्ण को अपने तेज से प्रकाशित बताकर अपने को स्पष्ट ही श्री कृष्ण से बड़ा माना है क्यों कि प्रकाशक प्रकाश्य से निश्चय ही उत्कृष्ट होता है। कृष्ण ने वेदोक्त कर्म कांड की प्रतिष्ठा की है। गीता अध्याय ३ श्लोक ८ से १३ तक वेदोक्त कर्म करने के लिये आज्ञा दी है। सब श्लोक वहीं देखे जाँय ज्यादा लिखना पृष्ट पेषण होगा **नियतं कुरू कर्मत्वं कर्म ज्यायो ह्यकर्मणः शरीर यात्रा पी च तेन प्रसिद्धयेद कर्मणः ८।** अर्थ हे अर्जुन तू वेद विधि से नियत किये हुये स्वधर्म रूप कर्म को कर, क्योंकि कर्म न करने की अपेक्षा कर्म करना ही श्रेष्ठ है तथा कर्म न करने से तेरा शरीर निर्वाह भी नहीं सिद्ध होगा।८। निषेधक वाक्य शास्त्रों में बलवान माने जाते हैं। भगवान ने अपने निषेध मुख से गीता अ० १८ श्लोक ५ में कहा है (**यज्ञ दान तपः कर्म न त्याज्यं कार्य मेव तत् यज्ञो दानं तपश्चैव पावनानि मनीषिणाम्** । अर्थः—यज्ञ दान तप रूप कर्म त्यागने के योग्य नहीं है किन्तु वह निःसदेह करना कर्तव्य है क्यों कि यज्ञ दान तप ये तीनों बुद्धिमान पुरुषों को पवित्र करने वाले हैं।

वेद की भगवान कृष्ण ने कितनी ऊँची प्रतिष्ठा की है यह अध्याय

३ श्लोक १५ में देखिये (**कर्म ब्रह्मोद्भवं विद्धि ब्रह्माक्षर समुद्भवम् तस्मात् सर्वगतं ब्रह्मनित्यं यज्ञे प्रतिष्ठितम्** । अन्वयार्थ कर्म ब्रह्मोद्भवं विद्धि = हे अर्जुन कर्म को तू वेद से उत्पन्न हुआ जान ब्रह्माक्षर समुद्भवम् = और वेद को अक्षर (अविनाशी परमात्मा) से उत्पन्न हुआ जान तस्मात् सर्वगतं ब्रह्म = इससे सर्वव्यापी परम अक्षर परमात्मा नित्यं यज्ञे प्रतिष्ठितम् = सदा ही यज्ञ रूप कर्म में प्रतिष्ठित हैं ।

जो लोग स्वामी जी को कृष्ण उपासना का उपदेशक मानते हैं वे स्वामी जी की चौ० को अध्याय १४ में देखें वहाँ वेदों की कितनी कटु आलोचना की गई है और यहाँ ३।४। चौ० में भी वेदों ने संसार को कर्म कांड रूप जाल में फसा दिया है यह बताया गया है। और भगवान कृष्ण ने वेद को अविनाशी परमात्मा से उत्पन्न हुआ बताकर उसे वैदिक कर्मों में नित्य स्थित बताया है । अतः दोनों के वाक्यों में कितना विरोध है यदि प्राणनाथ श्री कृष्ण होते तो गीता शास्त्र से उनके उपदेशों का भेद न होता कहाँ तो स्वामी जी की कुरान सम्मत तारतम वाणी और कहाँ वेद वेदान्त सम्मत भगवान् श्रीकृष्ण की गीता दोनों में रात्रि दिन के समान अंतर प्रत्यक्ष दिखाई देता है । यह पाठक स्वतः विचार कर सकता है । इन्हें कृष्ण उपाशक कैसे कहा जा सकता है । इसी तरह शास्त्रों के सम्बन्ध में भी स्वामी जी की अनेक चौपाइयों को देखिये ।

"सनंध प्र० १७ **लगाये सवो रवदे, व्याकरण वाद अंधकार । याविध वेसुध हुये, विवेक खाली विचार ।५। वंधवाधे या विध, हर वस्त के वारे नाम । सो वानी ले वड़ी करी, ये सब छल के कांम ।।६।। लुगे लुगे के जुदे मायने, द्वादश कै प्रकार । उरझाये मूल मायने, वाँधे अँट कले अपार ।।७।। अरथ को**

टालने, उलटा अनेक तरफो ताने। मूढ़ो को समझावने, रेहेस वीच में आने ॥८॥ ऐसी आकड़िया अनेक मिने, वोले वारे तरफ। रेहेस रंचक धरे वीच में, समझाय न किने हरफ ॥९॥ वारे तरफों वोलते, एक अत्तर एक मात्र। ऐसे वांधे वत्तीस श्लोक में बड़ा छल किया है शास्त्र ॥१०॥ अरथ आड़े कै छल किये, तिन अरथों में कै छल। अत्तर अरथ भी न हो वही, करे भावा अरथ अँटकल ॥१२॥ जाको नामै संस्कृत, सो तो संसै की कृत। सो हरफ द्रढ क्यों हो वही, जो एती तरफ फिरत ॥१३॥ ये छल पंडित पढ़े, ताय मान देवे मूढ। वड़े होय खोंये मायने, ये चली छल रूढ़॥१७॥

अर्थ-स्वामी जी व्याकरण शास्त्रों के विषय में कह रहे हैं कि इसने शास्त्रार्थ के द्वारा सबों को धक्का लगाया है जिससे संस्कृत व्याकरण बाद विवाद अंधकार मय है जिस अज्ञानता से वेसुध होकर मनुष्य विवेक और विचार से शून्य हो जाता है इसने ऐसे बंधनों से बाँध दिया है कि हर एक वस्तु के बारह प्रकार के नामों को रख दिया है। इसी व्याकरण वाणी को लोगों ने बहुत बड़ा मान रक्खा है किन्तु ये सब छल के कार्य हैं। इसमें शब्द शब्द के भिन्न भिन्न अर्थ बारह प्रकारों से किये गये है। वास्तविक अर्थ में उभला कर अँटकल से अनेक अर्थ किये गये हैं। मूल अर्थ को टालने के लिये विपरीत अर्थ कर अनेक तरफों तानते हैं। मूर्खों को समझाने के लिये उनके बीच में अपना रहस (प्रभुत्व) जमाते हैं। इस तरह अनेक प्रकार की शास्त्रों की जालियों में पंडित लोग बारह तरफों बोला करते हैं और समाज में अपना रहस रंचक स्थापित करते हैं किन्तु किसी को एक अच्चर भी

समझ में नहीं आता । एक अक्षर और एक मात्रा का बारह प्रकार का अर्थ करते हैं इसी तरह भागवत् के बत्तीस श्लोक में शास्त्रकारों ने अर्थ करने में बड़ा ही छल किया है । अर्थ की ओट से कितने ही छल किये गये हैं किन्तु उन अर्थों में भी कई प्रकार का छल किया गया है । एक अक्षर तक का अर्थ तो हो नहीं सकता किन्तु अंदाज से भावार्थ किया करते है जिसका नाम ही संस्कृत है वह तो संसै (संदेह) को उत्पन्न करने वाली भाषा है इसलिये उसके अक्षर निश्चयात्मक कैसे हो सकते हैं जो एक शब्द के अनेक प्रकार अर्थ कर घुमाये फिराये जाते हैं । इन छल पूर्ण शास्त्रों को पंडित लोग पढ़ा करते हैं । ऐसी छल विद्या पढ़ने वाले पंडितों का जो मान करता है वह मूर्ख है । ये पंडित लोग बड़े कहला कर अर्थों का अनर्थ करते हैं इन लोगों ने तो इस प्रकार छल की रूढ़ ही चला रक्खी है ।१७। इसी तरह कलस ग्रंथ की निम्न चौ० में भी देखिये ।

कलस प्र० २ **जैसे बालक बावरा, खिन में हस्ता रोय । ऐसे साधू शास्त्र में, द्रढ़ नहि शब्दा कोय ॥३०॥ शब्द जो सींधे प्रेम के, शास्त्र तो स्यानप छल । या विध कोई न बूझही, बात पड़ी है वल ॥४६॥ ये जो साधू शास्त्र पुकारहीं, सो तो सुनता है संसार । पर मूल मायने गुह्य है, सोई शब्द है पार ॥४७॥ सब कोई देखे शास्त्र को, शास्त्र तो गोरखधंध । मूल कड़ी पाये विना, तो लो देखी ताही अंध ॥४८॥**

अर्थ–जिस तरह पागल (ज्ञानहीन बालक) एक क्षण में हँसता है और एक क्षण में रोने लगता है । अय साधुओं उसी प्रकार शास्त्रों में कोई निश्चयात्मक शब्द नहीं है ।४५। हमारे सीधे साधे प्रेम के शब्द

है उनको तुम ग्रहण करो और शास्त्र तो सयानों (ऋषि मुनियों) की छल विद्या है इसे कोई समझ ही नहीं पाता। यह मनुष्यों के लिए एक बलवती समस्या है।४६। अय साधुओं ये जो शास्त्र अपने अपने सिद्धान्तों का पुकार करते हैं उसे सभी संसार के मनुष्य सुनते हैं। किन्तु मूल अर्थ तो छिपे हुये है और जो मूल अर्थ छिपे हुये हैं वे ही शब्द पार के हैं अर्थात चौथे आसमान लाहूत के है।४७। शास्त्रों को तो सब कोई देखा करते हैं किन्तु शास्त्र तो एक प्रकार का गोरख धंधा है मूल अर्थ के बिना प्राप्त किये उन शास्त्रों को देखते हुये भी मनुष्य अंधे के समान हैं।४८।"

मीमांसक:—स्वामी जी की मुड़ भेड़ व्याकरणियों से हुई होगी जिसने रद्दे लगाकर पराजित किया होगा आपने हिन्दू समाज में कहा होगा कि नूर के पार नूरतजल्ला है याने अक्षर से भी परे अक्षरातीत है उसने अक्षर शब्द का अर्थ शास्त्र दृष्टि से कूटस्थाद क्षरात् अथवा अव्याकृताख्याक्षरात् ऐसा कर दिया होगा जिससे आपको समझ में न आने से शास्त्रों का अर्थ अंधकार मय प्रतीत होने लगा। और भागवत के जिन बत्तीस श्लोकों में कुरानसम्बन्धी अर्थ छिपे हुये थे उसको व जिन श्लोकों के एक शब्द का भी अर्थ पंडित लोग नहीं कर सके उन सबों के अर्थों को लिख कर आप को प्रगट करना चाहिये था। ऐसा न करने से जो छल का दोष शास्त्र कारों को लगाया गया है वह दोष आप ही पर लागू होता है। और जो संस्कृत शब्द का अर्थ आप के द्वारा किया हैं इसी से आपके ज्ञान की प्रतिभा प्रकट हो जाती हैं। संस्कृत शब्द का अर्थ संदेह उत्पन्न होना नहीं हैं इसका अर्थ यह है कि जिन शब्दों का व्याकरण शास्त्र से संस्कार किया गया हो उस परिमार्जित भाषा को संस्कृत भाषा कहते हैं यह कारक, क्रिया, अव्यय, सर्वनाम, विशेषण आदि शब्दों का परिचय बताते हुये उनके वास्तविक अर्थ को प्रगट करता है जिसे

मनुष्य अध्ययन कर ज्ञान वान हो जाता हैं। संस्कृत ही भर में व्याकरण नहीं होता अंग्रेजी आदि भाषाओं में भी ग्रामर होता है। अत: प्रत्येक भाषाओं के ज्ञान प्राप्ति के लिये उसका व्याकरण पढ़ना अत्यावश्यक है।

उपर्युक्त चौपाइयों में वेद, शास्त्र, संस्कृत व्याकरण, देव भाषा, संस्कृत और संस्कृत के विद्वान पंडितों श्री कृष्ण का वाङ्मय विग्रह श्रीमद्भागवत ऋषि मुनियों की अत्यन्त कटु भाषा से घोर निन्दा की गई है। जब कि इस घोर कलियुग में भी समस्त विश्व के विद्वानों ने संस्कृत भाषा और उसके व्याकरण को सर्वाधिक वैज्ञानिक सिद्ध किया है। तथा वेद शास्त्रों को संसार का सर्वोत्कृष्ट साहित्य माना है परन्तु प्राणनाथ ने इन सबों की घोर निन्दा किया है। इससे इनका छिछोरपन प्रगट होता है।

और ये छल विद्या पढ़ने वाले पंडितों को केवल आपही ने मान्यता न दी होगी किन्तु विद्वानों की सर्वत्र पूजा होती है। आप ने अपनी समाज में विद्वान का मान इसलिये नहीं किया कि शायद ये पंडित हमारी इस पाखंड विद्या को कहीं समझ न जाँय। समझने पर हो सकता है कि समाज मुझे खुदा के पद से च्युत न कर दे जिस से ऐहिक ऐश्वर्य से भी वंचित होना पड़े। इन्ही कारणों से इन्होने अशिक्षित व्यक्तियों को समझ रक्खा था कि पंडितो को मान्यता न दी जाय। ऋषि मुनियो की रचनाओं (शास्त्रो) को छल की रूढ़ पागलो जैसा ज्ञान गोरखधंधा इत्यादि अश्लील शब्दो का जो प्रयोग किया गया है उसके विषय मे मनु स्मृति शास्त्र कहता है (स साधुर्भिर्बहिष्कार्यः नास्तिको वेद निन्दकः) गोस्वामी जी का भी कथन है (आप गये अरु आनहि घालहि जो कोई श्रुतिमारग प्रति पालहि सो कल्प कल्प भर इक इक नर्का परहि जो दूषहि

श्रुतिमा कर तर्का) (श्रुति संमत हरि भक्त पथ संयुत सुरत विवेक तेन आचरहि नर मोहवस कल्पहि पंथ अनेक)

आपने शास्त्रकारो को केवल बचनो के द्वारा कहा कि शास्त्रो ने बड़ा छल किया है छल करने के उनके कोई प्रमाण नही पेश किये इससे उक्त चौ० झूठी है और आपने वस्तुतः हिन्दू समाज से छल किया है इसका प्रमाण पूर्वाध भाग में कई जगह है आप हिन्दुओं की समाज मे चंदन माला तिलक साधु का भेष धारण कर कृष्णोपासक का बहाना कर उन्हे वेद मार्ग से च्युत करते थे और यवनो के पास फकीर मौलवियो का भेष धारण कर उन्हे कुरान का उपदेश देते थे और अपने को आखरी महंमद घोषित करते थे। जहाँ कही भी आप इस्लाम मत प्रचार के लिए जाते थे वही हंगामा मच जाता था और आपको भगना पड़ता था। सुल्तान के गुप्तचर हमेशा जांच पडताल में लगे रहते थे। आप जिन हिन्दू राजाओं से मिले उन सबों ने इसी छल के कारण आपके पेगांम को नही स्वीकार किया इसी तरह छत्रसाल से भी छल किया गया और बहुत दिनों तक कुरान के सिद्धान्त को छिपा रक्खा था और उन्हें निजवतनी लाहूत की सांकुडल वाई की वास्ना वताकर अपने जाल में फसाने का प्रयत्न किया। इस प्रकार इनकी समग्र रचना छल व्यवहारों से पूर्ण है।

अस्तु पाठकों को तो यह विदित ही हो गया होगा कि इन्होने वेद शास्त्रो के सिद्धान्तो को कहीं भी नहीं माना वल्कि उसका अपवाद कई जगह किया है। कुरान सम्बन्धी उपदेशो के सर्वत्र पाये जाने से ये इस्लाम मत के समर्थक सिद्ध होते हैं। किन्तु इस मत मे जो हिन्दू दीक्षित हैं उन्हे चाहिये कि वे अपनी प्राचीन आर्य संस्कृति को न त्यागे। वेद अपौरुषेय,पुरुष सम्बन्धी रचना न होने

से तथा ईश्वरोक्त वाणी होने से समस्त विश्व के लिए प्रामाण्य रुप है। भगवान ने कहा भी है (स्वधर्मे निधानं श्रेय: पर धर्मो भयावह:)अपने धर्म के लिए मर जाना भी श्रेयष्कर है किन्तु दूसरे का धर्म भय देने वाला है। अब स्वामी जी के सिद्धान्तो मे और कृष्ण के सिद्धान्तो मे जो मौलिक भेद दृष्टि गोचर होते हैं वे निम्न बारह प्रकार के हैं।

प्राणनाथ के सिद्धान्त	कृष्ण के सिद्धान्त
१- जीव अनित्य स्वप्न का विकार।	१- जीव अजन्मा अविनाशी शास्वत।
२- ब्रह्म व्यापक नहीं है।	२- ब्रह्म सर्वत्र व्यापक है।
३- खुदा एक देश विशेष में स्थित है।	३- ईश्वर सर्व देशीय है।
४- जीवात्मा के तीन भेद हैं।	४- जीवात्मा में औपाधिक भेद अज्ञान से प्रतीत होता है वस्तुत: ब्रह्म जीव में अभेद है।
५- खुदा सावयव है।	५-ब्रह्म सावयव निरयय व दोनों है सृष्टि काल में सावयव अभाव काल में निरवयव।
६- कुरान और वाणी प्रमाण है।	६- वेद शास्त्र प्रमाण है।
७- प्रकृति अनित्य है।	७- प्रकृति अनिर्वचनीय है।
८- इनका अवतार वेद छीनने के लिये।	८- इनका अवतार वेद की रक्षा करने के लिये।
९- ब्रह्म द्वैत है।	९- ब्रह्म अद्वैत है।
१०- खुदा जगत का कारण नहीं है।	१०- ब्रह्म जगत का कारण है।
११- खुदा सजातीय विजातीय धर्मों से युक्त है।	११- ब्रह्म सजातीय विजातीय धर्मों से रहित है।

१२-खुदा का अवतार नहीं होता। १२-ईश्वर का अवतार होता है।

इस तरह इनके धार्मिक सिद्धान्तो से वैदिक सिद्धान्तो से भिन्नता पाई जाती है। लौकिक आचार व्यवहार भी हिन्दुओं से भिन्न होने के कारण इन्हें हिन्दू नहीं कहा जा सकता क्योंकि जिस व्यक्ति को अपने देश और जातीयता पर गौरव नहीं उसे ईश्वर मानने की कौन कहे मानव कहने मे भी संकोच है।

इति निजानन्द मीमांसायामुत्तरार्धभागे इस्लाम मत वर्णनं नाम

षोड़शोऽध्यायः ।१६।

अभ्यासार्थक प्रश्नः—

१—स्वामीजी ने अपने धाम मे खुदा से महंमद की एकता का वर्णन किस प्रकार किया है।

२—यह प्रमाणित कीजिये कि इन्होंने सिद्धान्त इस्लाम मत ही का उपदेश दिया है।

३—इनके द्वारा चार प्रकार की नवीन मुक्ति की व्यवस्था करना क्यो शंभव नहीं है।

४-प्रतिबिम्ब को मोक्षाधिकार प्राप्त नहीं हो सकता इसे प्रमाणित करिये।

५—फिरस्तों के लिए नवीन मुक्ति की व्यवस्था क्यो शंभव नहीं है।

६—पेगम्बरो के लिए नवीन मुक्ति प्रदान करने से कौन कौन से दोष होते हैं।

७—सनंध प्र० १ चौ० १।२।३। के भाव को स्पष्ट करते हुये आलोत्मक विचार व्यक्त कीजिये।

८—अरबी भाषा का प्रयोग केवल समझाने के लिए नहीं हुआ इसे सप्रमाण सिद्ध कीजिये।

९—वेदो ने अपने जालो से संसार को बंधन मे डाल कर ज्ञान हीन कर दिया इस बिषय मे अपने विचार व्यक्त कीजिये।

१०—स्वामी जी कृष्ण उपाशना के उपदेशक नहीं हैं इसे प्रमाणित कीजिये।

११—शास्त्रकारों के प्रति जो दोष आरोपित किये गये हैं उस पर प्रकाश डालिये।

१२—वैदिक सिद्धान्तों से स्वामी जी के सिद्धान्तों में कौन-कौन से मौलिक भेद दिखाई देते हैं।

अथ सप्तदशोऽध्यायः १७

जीव के तीन भेद

स्वामी जी ने जीव के तीन भेद माना है। "किरंतन प्र० ७१।

शास्त्रो तीनो सृष्ट कही, जीव ईश्वरी ब्रह्म। तिनके ठोर जुदे जुदे, ये देखिये अनुकरंन ॥२२॥ जीव सृष्ट वैकुण्ठ लो, सृष्ट ईश्वरी अक्षर। ब्रह्म सृष्ट अक्षरातीत लो, शास्त्र कहे योकर ॥२३॥

अर्थ :—शास्त्रों में तीन प्रकार की सृष्टि कही गई हैं जीव, ईश्वरी, ब्रह्म, इनके स्थान भी भिन्न भिन्न हैं उनका अनुक्रम इस प्रकार है। जीव सृष्टि की पहुंच वैकुण्ठ तक है, ईश्वरी सृष्टि की अक्षर तक और ब्रह्म सृष्टि की पहुंच अक्षरातीत तक है।"

मीमांसक :—स्वामी जी ने जो जीव के साथ सृष्टि शब्द जोड़ा है यह गलत है यह आरबी उर्दू भाषा नहीं है यह सस्कृत शब्द है। व्याकरण में सृज विसर्गे धातु है जिससे यह सृष्टि शब्द बना है सृज का अर्थ होता है विसर्ग-उत्पन्न होना। **सृज विसर्गे अस्माद्धातो**

तिंपि शपि शब्लुकि सजति इत्यवस्थायां "व्रश्च भ्रस्ज सृज मृज यज राज भ्राजच्छशांषः" इति जस्य षत्वे "ष्टुनाष्टुः" इति ष्टुत्वे सृष्टि इति रूपं। अस्तु जीव सृष्टि शब्द का अर्थ हुआ जीवान् सृष्टिः जीव सृष्टिः अर्थात् जीव से उत्पन्न हुआ संसार ऐसा अर्थ होने से जीव में पंच महाभूतो की रचना करने की शक्ति नहीं है पंच महाभूतो की रचना करने की शक्ति केवल ईश्वर ही भर में है। श्रुति का भी कथन है (**एतस्मादात्मन आकाशः शंभूतः आकाशात्वायुः वायोरग्निः अग्नेरापः अद्भ्यः पृथ्वी।** उस ईश्वर से आकाश,आकाश से वायु,वायु से अग्नि,अग्नि से जल जल से पृथ्वी उत्पन्न हुई। जीव से सृष्टि का उत्पन्न होना वेदों में नहीं बताया गया। यदि कोई कहे कि संसार में एक जीव से दूसरे जीव की उत्पत्ति देखी जाती है इससे जीव सृष्टि कहना सार्थक है। तो ऐसा कहना भी युक्ति संगत नहीं क्योंकि संतानोत्पत्ति करना भी जीव के हाँथ नहीं संसार में ऐसे अनेक मनुष्य देखे जाते हैं कि संतान के निमित्त लाखो प्रयत्न करने पर भी उनका वंशोच्छेदन हो जाता है। इससे सिद्ध है कि जीव यहाँ की भी सृष्टि रचना नहीं कर सकता।

इनकी रचना में जहाँ कहीं भी जिन विषयों का वर्णन हुआ है वहाँ सर्वत्र मिथ्यावादों से पूर्ण है। उक्त चौपाई में जो इन्होंने बताया कि शास्त्रों में तीन प्रकार के जीव बताये गये हैं यह सर्वथा झूठा कथन है। शास्त्रों के प्रमाण का बहाना कर साधारण जन को भ्रम में डाला गया है। यह क्यों नहीं कहते कि ऐसा हमारा मत है। यदि शास्त्रों में ऐसा प्रमाण था तो उसे लिखा क्यों नहीं। शास्त्रों की तो इन्होंने स्पष्ट घोर निन्दा किया है। इसलिये शास्त्रों की दोहाई देकर हिन्दुओं को ठगा है। शास्त्रों के किसी एक सिद्धान्त को भी

इन्होंने माना नहीं और शास्त्र विरुद्ध सिद्धान्त को लिखते हैं कि ऐसा शास्त्रों में कहा है। इस तरह झूठा लिखने का कारण यही है कि शास्त्रों के प्रति भारतीयों में प्राचीन परम्परागत विश्वास स्थित है यदि शास्त्र का बहाना नहीं करते तो ये इस्लाम में दीक्षित कैसे होंगे।

और जब ईश्वरी सृष्टि कह दिया गया तब पुनरुक्ति ब्रह्मसृष्टि कहने की क्या आवश्यकता थी क्योंकि दोनों का अर्थ एक ही होता है ईश्वर ब्रह्म एक ही वस्तु है। ईश्वर के अनेक नाम शास्त्रों में आये हैं तो क्या जितने नाम हैं वे सब भिन्न भिन्न है। विष्णु सहस्र में विष्णु के हजार नाम हैं वे सब एक ही परमात्मा के अनेक नाम है। अतः चौपाई में ईश्वरी सृष्टि कह कर पुनः ब्रह्म सृष्टि शब्द का जो प्रयोग किया गया यह पुनरुक्ति दोष है। आप अपने मत के अनुकूल जो ब्रह्म सृष्टि शब्द का अर्थ रूह मोमिन बारह हजार सखियाँ मानते हैं यह अनर्थ करते हैं। ब्रह्म सृष्टि शब्द संस्कृत है। (सर्वेभ्यो बृहत्वात् ब्रह्म) जो सब से महान हो उसको ब्रह्म कहते हैं।

"बृंह वृद्धौ अस्माद्धातोः "बृंहेर्नोऽच्च" इति मनिन् नकारस्याकारे अनुबन्ध लोपे च यणि ब्रह्मन् इति जाते प्राति पदिकत्वे न पञ्चम्यैक वचन विविक्षायांङसि अनुबन्ध लोपे "अट्कुप्वाङ् नुम व्यवायेऽपि" इति नस्यणत्वे सस्य रुत्वे तस्य विसर्गे च ब्रह्मणः इति रूपं सिद्धम्। तत् व्याख्यायते ब्रह्मणः जातः सृष्टिः ब्रह्म सृष्टि अखिलं जगत् ब्रह्मणोहि जाय मानत्वादित्यर्थः न क्वचिदेक देश स्थित जीवस्येत्यर्थः।

अस्तु ब्रह्म सृष्टि शब्द का अर्थ हुआ ब्रह्म से उत्पन्न हुआ विश्व। इसका अर्थ वैदिक प्रक्रिया के अनुकूल ही होगा। श्रुति का भी कथन है **(तथाक्षरात् शंभवतीह विश्वम्)** उस अविनाशी परमात्मा से समस्त विश्व उत्पन्न हुआ। श्रुति के अनुकुल ही ब्रह्म सृष्टि शब्द का अर्थ समझना चाहिए। जबकि ब्रह्म सृष्टि शब्द से इनका अभिप्राय केवल खुदा के मोमिन भक्तों से है जीव सृष्टि से इनका तात्पर्य केवल हिन्दुओं से है और ईश्वरी सृष्टि से इनका तात्पर्य नूर जल्लाल की कुमारिका सखियों से है।

ईश्वरी सृष्टि का भी विवेचन ब्रह्म सृष्टि शब्द के अनुकूल ही है क्योंकि ये दोनों पर्यायवाची शब्द हैं। यद्यपि इनके मतानुसार ईश्वरी सृष्टि का अर्थ अक्षर ब्रह्म की चौबीस हजार कुमारिका सखियाँ होता है इस प्रकार का अर्थ करना इनकी मन मानी कल्पना है। ईश्वरी सृष्टि को इन्होंने अक्षर की सुरत से उत्पन्न होना भी बताया है अतः ये सखियाँ भी अनित्यपने के दोष से नहीं बच सकती।

उक्त चौ० में अनुक्रम भी बताया गया है कि जीव सृष्टि की पहुंच वैकुण्ठ तक है और ईश्वरी सृष्टि की पहुंच अक्षर तक है ब्रह्म सृष्टि की पहुंच अक्षरातीत तक है। इस तरह क्रम बतलाने से मुक्ति में अव्यवस्थित दोष आता है। क्योंकि एक ब्रह्मधाम के बाद जब दूसरा तीसरा भी है तो चौथा पांचवा या अनेक धाम भी हो सकते हैं क्योंकि प्रत्येक सांप्रदायिक अपने उपास्य देव को सर्वोपरि कह सकते हैं अपने इष्ट को निम्न कोटि में कौन गणना करेगा। सांसारिक व्यवस्था के अनुसार ईश्वर में क्रम बतलाने से स्वामी जी का खुदा देश काल से परिच्छिन्न हो जाता है। क्योंकि अक्षर ब्रह्म के आगे दूसरा अक्षरातीत ब्रह्म है। जिस धाम में अक्षर है उस धाम में अक्षरातीत नहीं है और जिस धाम में अक्षरातीत

है उस धाम में अन्तर नहीं है। इस तरह एक दूसरे का सीमा निर्देश करने से एक देशीय हो जायगा और काल से कवलित हो जायगा। इस विषय में वेद का निर्देश है **(यदल्पंतन्मर्त्यम्)** जो अल्पदेश में स्थित है अर्थात् जिसकी सीमा निर्धारित हैं वह मर्त्य (विनाश शील) है। इन्होंने अपने खुदा के धाम का तो यहां तक सीमा निर्देश किया है कि वह नौ भौम दशमी आकाशी पर्यन्त धाम में निवास करता है। अतः इस प्रकार वर्णन अनित्य पने के दोष से नहीं बच सकता। वेदों में ईश्वर का कोई क्रम नहीं बताया है। बल्कि उसका सर्वत्र होना बताया गया है। श्रुति **(पुरस्तान् ब्रह्म पश्चात् ब्रह्म दक्षिण श्चोत्तरेण अधश्चोर्ध्वं प्रसृतं ब्रह्मै वेदं विश्वमिदं वरिष्ठम्)**

अर्थ—वह ब्रह्म आगे भी है और पीछे भी है दक्षिण और उत्तर में भी है नीचे और ऊंचे भाग में भी है वह सर्वत्र फैला हुआ व्यापक है यह सम्पूर्ण विश्व वरिष्ठ ब्रह्म ही है। इन प्रमाणों से वह किसी देश विशेष में स्थिति नहीं है और न उसका कोई क्रम है ईश्वर असीम, अनन्त, व्यापक, सर्व देशीय है जिसके अनेकशः प्रमाण शास्त्रों में पाये जाते हैं।

इन्होंने जो यह बताया कि जीवात्मा में तीन भेद हैं वे क्रम के अनुसार अपने अपने स्थान पर पहुंचते हैं। इन विषयों की पुष्टि के लिये न तो कोई शब्द प्रमाण और न कोई युक्ति प्रमाण ही पेश किया है। जिससे दोनों बाते मिथ्या सिद्ध हो जाती है। केवल इनके कथन से कि मैं खुदा रूप हूँ हमारी वाणी ही प्रमाण है। इसे कोई नहीं मान सकता क्योंकि इनकी वाणी की कोई भी चौपाई सत्य प्रमाणित नहीं हुई जिससे ये आप्त आदर्श पुरुष भी नहीं कहे जा सकते आदर्श तो वे ही कहे जा सकते हैं जिनके

उपदेश वाणी में सत्यता हो क्या इन्होंने उक्त प्रकार का क्रम ईश्वर का देखा है। ईश्वर एक अप्रत्यक्ष वस्तु होने से कोई भी जीवात्मा चक्षुरादि इन्द्रियों द्वारा उसका विषय नहीं कर सकता यदि जीवात्मा इन्द्रियों द्वारा उसका विषय कर जाय तब तो जीवात्मा उससे विशेष हो जायगा क्योंकि विषय से विषयी बलवान होता है। अतः वह प्राकृतिक तत्वों द्वारा किसी का विषय नहीं हो सकता। वह तो जीवात्मा रूप से स्वतः विषयी है नाना विषयों का भोक्ता है श्रुति **(विज्ञातारमरे केन विजानीयात्)** उस विज्ञाता को किससे जाना जाय। भगवान ने गीता अ० १३ में कहा है।

(उपद्रष्टानुमन्ताच भर्ता भोक्ता महेश्वरः परमात्मेति चाप्युक्तो देहेस्मिन पुरुषः परः २२ ।

अन्वयार्थ—पुरुषः-ईश्वर अस्मिन देहे—इस शरीर में स्थितः अपि – स्थित हुआ भी परः—पर पुरुष ही है अर्थात् त्रिगुण मयी माया से सर्वथा अतीत है। उपद्रष्टा – केवल साक्षी रूप होने से उपद्रष्टा है च-और अनुमन्ता – यथार्थ संमति देने वाला होने से अनुमन्ता है। भर्ता—सब को धारण पोषण करने वाला होने से भर्ता है। भोक्ता – जीव रूप से सब विषयों का भोक्ता है। महेश्वरः – ब्रह्मादिको का भी स्वामी होने से महेश्वर भी है। परमात्मा इति उक्तः – और परमात्मा इस प्रकार से कहा गया है २२। श्लोक में भोक्ता शब्द आया है जिससे वह ईश्वर जीव रूप से सब विषयों का भोक्ता है उसको विषय करने वाला कोई नहीं है। क्योंकि कोई न उसके समान है न अधिक ही है। **(न तत्सम श्चाभ्यधिकश्चदृश्यते)** स्वामी जी ने ईश्वर का स्थान निर्धारित कर जो क्रम बताते हुये भेद दर्शाया है यह प्रमाण हीन होने से उक्त चौपाइ की रचना गलत है। जीव में स्वरूप गत भेद

किसी शास्त्रकार का मत नहीं। और अंडज, पिन्डज, स्वेदज, उद्भिज, ये चार प्रकार के जो जीव बताये गये हैं ये स्थान गत भेद है और चौरासी लक्ष योनिगत भेद है। जीव सबों में एक समान है।

ब्रह्मसृष्टि-मोमिन-मुसलमान भक्तों की आत्मा अन्य है व हिन्दुओ की आत्मा अन्य है इस तरह का बेढंगा ज्ञान हीन सिद्धान्त किसी का नहीं देखा गया। इसी ज्ञान का गरिमा को लेकर अपने को खुदा होना बताया है। प्रणामियों ने जिस ज्ञान के उपदेश से इन्हें खुदा माना है उन खुदा के लक्षणों को प्रगट करने वाली निम्न चौपाई को देखे। कलस प्रश्न २४ **वासना उत्पन्न अंग थे, जीव नीद की उतपत्ति। कोई न छोड़े घर अपना, या विध सत असत ॥२६॥** खुदा रूप स्वामी जी ने यहां रूप मामिनो की उत्पत्ति खुदा के अंग से बताकर उन्हे सत्य कहा और हिन्दू जीवों की उत्पत्ति रूहो के निद्रा से बताकर उन्हें असत कहा गया है। इस प्रकार के कथन से इन्हीं के पक्ष की पुष्टि नहीं होती क्योंकि जब रूह खुदा के अंग से उत्पन्न है तो यह निश्चित है कि उत्पन्न हुई वस्तु सत्य कभी नही हो सकती उसका विनाश होना अवश्यम्भावी है। अत: जिन्हें ये सत कहते हैं वही वस्तु इन्हीं के कथन से असत हो जाती है। अस्तु ऐसे ज्ञान हीन उपदेश होने के कारण इनमे खुदा के लक्षण नहीं पाये जाते। इस प्रकार की रचनाओ के देखने से प्रतीत होता है कि इन्होंने वैदिक दर्शन शास्त्रों का अवलोकन ही नहीं किया यदि भारतीय दर्शनों का अध्ययन करते तो आप का यह सब भ्रम दूर होकर हृदय में ज्ञान का प्रकाश हो जाता तब ऐसी अनर्गल बातें न लिखते। स्वामी प्राणनाथ जी ने अपनी चौपाइयों में संस्कृत भाषा और

हिन्दू शास्त्रों की घोर निन्दा किया है इससे स्पष्ट है कि इन्होंने ब्रह्म सृष्टि आदि संस्कृत भाषा के शब्दों को अपने धर्म की पुष्टि के लिये जो प्रयोग किया हैं वह मन मानी अर्थ की सिद्धि के लिये ही प्रयोग किया है। इनकी तारतम वाणी में ज्ञान की कोई मौलिकता नहीं पाई जाती इनके ग्रन्थ के जिस किसी भी प्रकर्ण को देखा जाय वहाँ सर्वत्र वैदिक सिद्धान्त से विरुद्ध आवाज है। और लाहूत धाम सम्बन्धी जो भी इनके प्रलोभन वाक्य हैं वे सब भारतीयों से छल कर स्वमत में दीक्षित करने के लिये ही हैं। युक्ति और शास्त्र प्रमाणो द्वारा इनके धाम सम्बन्धी विषयों पर इस ग्रन्थ में ऊहा पोह विचार किया गया है। वहाँ किसी प्रकार की वास्तविकता नहीं पाई जाती केवल ठगने के लिये ही वहाँ विभिन्न ऐश्वर्योपभोग का वर्णन किया है।

इति निजानन्द मीमांसायामुत्तरार्धभागे

जीव त्रय भेद वर्णनं नाम सप्त दशोऽध्याय: १७

अभ्यासार्थक प्रश्न

१—जीव सृष्टि, ब्रह्म सृष्टि शब्द के वास्तविक अर्थ को प्रकट करिये

२—जीवात्मा मे तीन भेद है इस कथानक पर अपने विचार व्यक्त कीजिये।

३—यह सिद्ध कीजिये कि ईश्वर के अनन्त होने से उसका कोई क्रम नही है।

अथ अष्टादशोऽध्यायः १८

भागवत

स्वामी जी ने आर्य भारतीयो को जो यह भ्रम मे डाला है कि भागवत मे हमारे मत का प्रतिपादन है उस विषय पर इस अध्याय में विचार किया गया है। "खुलासा प्र० ८ चौ० १०

फुरमान एक दूसरा, शुक जी ल्याये भागवत। ये खोल न सके त्रैगुन, यामे हमारी हकीकत ॥१०॥ अर्थ:- स्वामी जी कहते हैं कि कुरान के अलावा एक दूसरा फुरमान भागवत नामक ग्रंथ को शुकदेव जी ले आये हैं इसमे हमारे समाचारो का (धार्मिक सिद्धान्तो का) वर्णन है। इसके अर्थ को त्रैगुन (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) भी नही खोल सकते।"

मीमांसक:-स्वामी जी के कथनानुसार इनके सिद्धान्तों का कुरान में भी वर्णन है और भागवत पुराण मे भी। आपने प्रकाश नामक ग्रंथ प्र० ३६ मे लिखा है

या कुरान या पुराण, ये कागद दोऊ प्रमाण। याके मगज मायने हम पास, अंदर आय खोले प्राणनाथ ॥८६॥

अर्थ—हमारे मत की पुष्टि के लिये कुरान और पुरान ये दोनो प्रमाण रूप है। इनके छिपे हुये अर्थ हमारे पास है। धणी जी हमारे हृदय मे आकर उन गुह्य रहस्य को प्रकाशित कर दिया है। स्वामी जी के उक्त चौ० के कथन से कुरान पुरान और इनके प्रणामी संप्रदाय मे एक ही सिद्धान्त का प्रतिपादन पाया जाता है। किन्तु कुरान और भागवत के सिद्धान्त एक नहीं हो सकते यदि एक ही होते

तो सांप्रदायिकता मे भेद ही क्यों होता। इस बात को न मोमिन ही स्वीकार करते और न हिन्दू ही। यदि आप के सिद्धान्तानुकूल दोनो के सिद्धान्त एक थे तो आप ने कुरान के वारिस अर्थात उत्तराधिकारी केवल मोमिन ही है हिन्दू नही है ऐसा क्यों लिखा। मारफत सागर प्र० ६

कुरान वारस मोमिन कहे, पढाया उमी होय। बिन असर रूहे हक न्यामत, दूजा ले न सके कोय ॥७१॥

अर्थ—कुरान के वारिस (हकदार) केवल मोमिन ही है उस कुरान को मैं आखरी महम्मद उमी—गुरु रूप से पढ़ाया है क्योंकि धाम की रूहों के बिना खुदा के न्यामत कुरान रूपी धन को अन्य कोई ले नही सकता ॥७१॥ उक्त चौ० के अनुसार यदि कुरान के वारिस हिन्दू नहीं है तो आप ही के द्वारा सिद्ध हो जाता है कि कुरान, पुराण के सिद्धान्त भिन्न भिन्न हैं। इसी तरह आपने और भी लिखा है (सुरो पर आया वेद असुरो पर आया कुरान) इस चौ० द्वारा भी दोनों में भेद दिखाया गया है यदि दोनों के सिद्धांत एक होते तो देवताओं के लिए वेद आया है और राक्षसो के लिए कुरान आया है ऐसा क्यों लिखते। अस्तु आपके वचनों द्वारा भी प्रमाणित कर दिया गया कि दोनों के सिद्धांतों में भेद है। दोनों के सिद्धांतों में भेद सिद्ध हो जाने से आपके मत की पुष्टि कुरान पुराण दोनों से होती है यह कथन सर्वथा गलत है। यदि इनके सिद्धान्तों का प्रतिपादन दोनों में होता तो प्रमाण रूप से अवश्य ही लिखते न लिखने से सिद्ध हो जाता है कि इनके मत का प्रतिपादन कहीं भी नहीं है। और जो यह कहा गया कि खुदा ने हमारे अन्दर आकर कुरान-पुरान के गुह्य अर्थों को खोल दिया है तो यह इनका सम्प्रदाय में दीक्षित करने का एक बहाना है अंधविश्वासी ही ऐसी बातों पर

ध्यान देते हैं। क्या प्रमाण है कि आपके अंदर खुदा ने प्रवेश किया। कहीं खुदा का प्रवेश होना बताते हैं कहीं खुद खुदा महम्मद बन जाते हैं इस तरह विभिन्न वर्णनों से कोई बात निश्चित नहीं की जा सकती वक्तव्य विषय में एक वाक्यता न होने से खुदा नहीं कहे जा सकते।

श्रीमद् भागवत पुराण मे १८ हजार श्लोक कहे गये हैं इनमें किस श्लोक अध्याय और स्कंध में इनके मत का प्रतिपादन किया गया है इसका कोई भी उल्लेख स्वामी जी के ग्रन्थो मे नही पाया जाता भागवत में तो अनेक बाते हैं। उसमें पद-पद पर वैदिक सिद्धा-न्तो का ही प्रतिपादन किया है चार वर्ण चार आश्रम भागवत धर्म अवतारवाद आदि अनेको विषयो का वर्णन मिलता है स्वयं वेदो ने वेद स्तुति प्रकरण मे परमात्मा की स्तुति किया है। परन्तु ये तो वेद शास्त्र मानते ही नही। भागवत भगवान श्री कृष्ण का वाङ्मय विग्रह माना जाता है। भागवत में श्रीकृष्ण को भगवान विष्णु का साक्षात अवतार माना गया है। परन्तु ये तो विष्णु को ही नही मानते ११ वर्ष तक श्रीकृष्ण का अवतार ये स्वीकार करते हैं किन्तु इनका कहना यह है कि मुझ प्राणनाथ के ही तेज का संचार और आवेश ११ वर्ष तक श्रीकृष्ण में रहा और बाद में श्री प्राणनाथ जी ने अपना तेज श्री कृष्ण के शरीर से वापस खीच लिया और इनकी सब सखियों का तेज भी गोपियों के शरीर से वापस लौटा लिया गया तब गोप गोपी और श्रीकृष्ण सामान्य सांसारिक जीव की तरह हो गये। भागवत में तो कहीं भी इस प्रकार की बाते नही लिखी हुई है। श्रीमद् भागवत पर अब तक पूर्वाचार्यों की ५६ टीकायें प्राप्त बताई जाती है। उनमें कहीं भी प्राणनाथ के सिद्धांतो का प्रतिपादन और इनके संप्रदाय का वर्णन नहीं मिलता। इन्होने भागवत में कोई टीका लिखा नही भागवत के किस श्लोक में इनका मत प्रतिपादित

है उसे उद्धृत नही किया तब कैसे यह बात मानी जाय कि इनका मत भागवत सम्मत है। व्रजरास का वर्णन तो हर विषयी आदमी अपने स्वार्थ सिद्धि के लिये कर सकता है। इन्होने व्रजरास आदि शब्दो को भागवत से चोरी करके अपने ग्रन्थ में जो उद्धृत किया है केवल इससे यह कदापि नही माना जा सकता कि इनका मत भागवत पुराण से समर्थित है इसलिए यह ध्रुव सत्य है कि इन्होने भागवत पुराण की झूठी दोहाई देकर भगवान श्रीकृष्ण के भक्तो को महज ठगने और अपने इस्लाम मत में दीक्षित करने के लिए एक गहरा षड़यन्त्र किया है। भारत में जितने भी श्रीकृष्ण भक्त संप्रदाय हैं इनके मंदिरों में राधा कृष्ण की मूर्ति पाई जाती है। जबकि प्रणामी धर्म के मंदिरों में कहीं भी श्रीकृष्ण विग्रह पाया नहीं जाता वहां तो केवल मुकुट है। और श्रीकृष्ण विग्रह के स्थान पर स्वयं प्राणनाथ ही श्री कृष्ण हैं। इन्होंने जो भागवत के ३२ श्लोक का नाम लिया है पता नहीं इनका तात्पर्य किन ३२ श्लोकों से है स्कंध और अध्याय भी नही बताया कि वे ३२ श्लोक कहां के हैं। परन्तु अनुमान से ऐसा जान पड़ता है कि इनका तात्पर्य भागवत दशम स्कंध ८७ मी अ० की वेद स्तुति से है जो कि भागवत का सर्वाधिक क्लिस्टांश है। विद्यावतां भागवते परीक्षा प्रसिद्ध है। हो सकता है कि किसी पंडित के मुख से वेद स्तुति की पांडित्य पूर्ण विविध व्याख्या सुनकर इनका दिमाक चकरा गया हो और घबड़ा कर इन्होंने लिख दिया कि वेद स्तुति के श्लोकों का अर्थ जो इन्होने समझा वही है परन्तु इन्होंने क्या समझा यह भी नही लिखा वेद स्तुति के केवल २८ श्लोक हैं चार श्लोक उसके उपसंहार के हैं। हो सकता है कि ३२ श्लोकों से इनका तात्पर्य इन्हीं श्लोकों से है। किन्तु वेद स्तुति के इन श्लोक में कहीं भी प्रणामी धर्म और उससे प्रतिपादित मतवाद का उल्लेख किंचित

मात्र भी नहीं मिलता। अतएव हिन्दुओं को सावधान हो जाना चाहिये और केवल श्री कृष्ण और ब्रजरास के शब्दों के धोखे में आकर प्रणामी धर्म को श्री कृष्ण भक्त हिन्दुओं के धर्म का अंग कदापि नहीं मान बैठना चाहिये। ये तो हुई कृष्ण की बात हमारे उपनिषद् ग्रन्थों में ये बातें स्वीकार की गई है कि राम और कृष्ण दोनों एक ही सनातन विष्णु तत्व के अवतार हैं। स्वयं राम ने दण्ड कारण्य के ऋषियों को आश्वासन दिया था कि तुम लोग द्वापर के अन्त में ब्रज गोपी के रूप में जन्म ग्रहण करोगे तब हम श्रीकृष्ण रूप से अवतरित होकर तुमसे मिलेंगे। परन्तु प्रणामी धर्म में तो राम और रामायण का नाम लेना भी महापातक माना जाता है सभी सम्प्रदाय के हिन्दूगण पतित पावनी गंगा में स्नान करके विशुद्धी पर विश्वास रखते हैं। परन्तु प्रणामी सम्प्रदाय के लोगों को तो गंगा स्नान करने से ही पाप लगता है। श्रीमद्भागवत गीता में स्वयं भगवान श्रीकृष्ण ने अपने मुखारविन्द से कहा है कि रामः शस्त्रभृता-महम् शस्त्रधारियों मे मैं श्रीराम हूँ। इन वचनों से राम और कृष्ण की एकरूपता सिद्ध होती है। किन्तु ये राम और कृष्ण की एकरूपता नहीं मानते यही कारण है कि इनके सम्प्रदाय में आदि काव्य बाल-मीकि रामायण का श्रवण अत्यन्त निषिद्ध माना जाता है। हिन्दुओं के चौबीस अवतारों में श्रीकृष्णावतार में कृत कुछ गूढ़ लीलाओं के सम्बन्ध में तो कोई-कोई अँगुली भी उठाते हैं। किन्तु भगवान श्रीराम और सीता के आदर्श जीवन के सम्बन्ध में अखिल विश्व का कोई भी विद्वत् समाज आक्षेप नहीं करता भगवान श्रीराम मर्यादा पुरुषोत्तम थे जहाँ मर्यादा है वहीं धर्म है जहाँ धर्म है वही श्रीराम हैं जहाँ राम हैं वहीं धर्म है। राम रामायण को हिन्दू जीवन से निकाल दिया जाय तो हिन्दू धर्म प्राणहीन शव तुल्य हो जायगा। परन्तु दुर्भाग्य की बात है कि ये प्रणामी धर्म वाले राम और रामायण को

ही प्रणाम नहीं करते । इनका प्रणम्य तो केवल खुदा महम्मद और कुरान है। जो राम और रामायण को नहीं मानता उसका इस संसार में कोई धर्म नहीं है हिन्दू तो उसे किसी प्रकार माना ही नहीं जा सकता ।

ये जो यह कह कर हिन्दुओं को धोखा देते हैं कि भागवत पुराण को प्राणनाथ जी प्रमाण मानते हैं तो श्रीमद्भागवत एकादश स्कंध पंचम अध्याय श्लोक ३३।३४ पाठकों को ध्यान से पढ़ना चाहिये । ३३ मे श्रीकृष्ण स्तुति और ३४ मे राम स्तुति एक ही स्वर मे की गई है ।

ध्येयं सदा परिभवघ्नमभीष्ट दोहं तीर्थास्पदं शिव विरिन्चि नुतं शरण्यं । भृत्यार्तिहं प्रणत पाल भवाब्धिपोतं वंदे महापुरुष ते चरणार विन्दम् ।३३। त्यक्त्वा सुदुस्त्यज-शुरेप्सित राज्य लक्ष्मीं धर्मिष्ठ आर्य वचसा यद गादरण्यम् । माया मृगंदयितयेप्सित मन्वधावद् वंदे महापुरुपते चरणार विन्दम् ।३४।

अर्थ :—जो श्री कृष्ण भक्तों के सदा ध्येय पराजय नाशक अभीष्ट दोग्धा तीर्थास्पद शिव ब्रह्मादि द्वारा स्तुत सबके शरण्य भृत्य दुखहन्ता प्रणत पालक भवसागर के जहाज हैं उन श्रीकृष्ण महा-पुरुष के चरणार विन्दों की मैं वन्दना करता हूँ ।३३। जो भगवान श्री रामचन्द्र सुदुस्त्यज सुरेप्सित अयोध्या की राज लक्ष्मी को त्याग कर पिता आर्य दशरथ के वचन से धर्म में स्थित रह कर अरण्य को चले गये और वहाँ दयिता सीता द्वारा ईप्सित माया मृग के पीछे दौड़े उन श्रीराम महापुरुष के चरणार विन्दों की मैं वन्दना करता हूँ ।३४। भागवत के इन दोनों श्लोकों में भगवान श्रीराम और कृष्ण

को महापुरुष मानकर इनके चरणों की वन्दना शुकदेव ऐसे त्यागी मुनियों ने किया है। किन्तु स्वामी प्राणनाथ ये कैसे महापुरुष हैं जो इन अवतारों को प्रणाम नहीं करते। अतएव यह स्पष्ट है कि ये भागवत पुराण को नहीं मानते और राम कृष्ण आदि अवतारों को भी नही मानते ये केवल अपने को मानते हैं और कुरान महम्मद इस्लाम तथा अपनी कल्पना के खुदा को मानते हैं और उन्हीं को प्रणाम करते हैं। इसी में इनके प्रणामी शब्द की चरितार्थता है, ये कैसी विडम्बना है कि उत्तम गोत्र वाले गांम गांम के ब्राह्मण इस संप्रदाय मे दीक्षित होकर ठगे गये हैं। आज के युग मे कान फुकाकर दीक्षा देना लेना यह धंधा हो गया है। इसलिए ऐसे लोगों को गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु: नही माना जा सकता, जैसे एक कन्या पति को वरण करके उसके प्रति प्रतिव्रत धर्म का पालन करती है भले ही वह बाद में दुष्ट निकल जाय इस प्रकार प्रणामी धर्म मे दीक्षित परिवारो को प्राणनाथ के प्रति पातिव्रत धर्म के पालन करने की जरूरत नहीं है। भगवान राम कृष्ण विष्णु और नारायण ही वास्तव मे हिन्दुओं के प्राणनाथ हैं। वेद ही हिंदुओं के श्वास भूत प्राण हैं और इन्हीं के सामने श्रद्धा भक्ति से प्रणाम करने पर उनका प्रणामी धर्म सार्थक हो सकता है। जिसने हिन्दू छद्म से इस्लामधर्म का उपदेश हिन्दुओं में करके भोली भाली जनता को वर्गलाया है उसके चक्कर में नहीं आना चाहिए।

किसी के शरीर का नाम गुरु नही है मल मूत्र भरे किसी के हाड़ चाम को गुरु नहीं कहते गु माने अंधकार रु माने प्रकाश। जिससे अविद्या अंधकार दूर होकर हृदय में ज्ञान का प्रकाश हो जाय वही वास्तव मे गुरु है गृ निगरणे जो जीव के अज्ञानान्धकार को निगल जाय वही गुरु है। गुरु कोई व्यक्ति नहीं है वलिक गुरु एक सत्य तत्व है। शिव गुरु सब जीवो के गुरु हैं, भगवान सब गुरुओं के गुरु हैं। **(गुरुर्गरीयान्)** शिव गुरु शिव गुरु हिन्दुओं में प्रसिद्ध ही है। गुरु

स्तुति का जो श्लोक **गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः**............प्रसिद्ध ही है उसका यह भी अर्थ होता है कि ब्रह्माजी गुरु हैं विष्णु देव गुरु हैं महेश्वर देव ही वास्तविक गुरु हैं साक्षात् परब्रह्म ही गुरु हैं। **तस्मै श्री गुरुवे नमः** गुरु कीजै जान के, पानी पीजै छान के, ये लोकोक्ति प्रसिद्ध है फिर भी उत्तम परिवार के बड़े बड़े ब्राह्मणों ने इस इस्लामी धर्म को प्रणामी कह कर धोखे में फँस गये हैं। आशा है कि वे विवेक से काम लेंगे और अब आगे अपने परिवार के नवजात शिशुओं को इस तथ्य हीन धर्म से आत्म रक्षा करेंगे। गायत्री हिन्दुओं का सबसे बड़ा मंत्र है। गायत्री को वेद माता कहा है यज्ञोपवीत के समय प्रत्येक बालक को गायत्री मंत्र दिया जाता है इस लिए यदि कन फुकवा गुरु न भी बनाया जाय तो कोई विशेष हानि नहीं है। जिन्हें गुरुमुख होने का ही सौख है उनके भाग्य से भारत वर्ष में अभी भी सनातन धर्म में निष्ठा रखने वाले सच्चरित्र विद्वान विरक्त सद्गुरुजनों की कमी नहीं है। शाब्दे परेच निष्णातः गुरुः भागवत मे कहा है कि जो शब्द ब्रह्म वेद और परब्रह्म परमात्मा में निष्णात् है वही सच्चा गुरु है।

इस अध्याय की दशमी चौ० में कहा गया है कि भागवत के अर्थ को त्रिगुण नहीं खोल सकते। स्वामी जी ने त्रिगुण शब्द के अर्थ को त्रिगुणात्मक ब्रह्म (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) माना है। पाठक गण इनकी विचित्र ज्ञान की प्रतिभा को देखें। परम भागवत शुकदेव जी जिस परम तत्व विष्णु को भागवत ग्रन्थ के आदि से लेकर अन्त तक पर ब्रह्म कह कर उपास्य बताया उसी को आप कहते हैं कि ये भागवत का अर्थ नहीं खोल सकते। इनके कथन से यह अवगत होता है कि जब विष्णु आदि उसके अर्थ को नहीं प्रगट कर सकते तो भागवत में उन्हें ईश्वर माना ही नहीं गया। किन्तु कोई भी संस्कृत भाषा का

विद्वान भागवत धर्म से यह नहीं सिद्ध कर सकता कि विष्णु से भिन्न अन्य तत्व धणी जी का जोस महंमद की उपासना करने का निर्देश किया गया है।

कुरान के अलावा एक दूसरा फुरमान भागवत को शुकदेव जी ले आये हैं। इस कथन से क्या शुकदेवजी भी धाम की रूह मोमिन हैं। इनके सिद्धांतानुसार तो धाम में निसवती सुन्नी समाज के अलावा अन्य कोई पहुंच ही नहीं सकता विष्णु वहाँ का निसवती मोमिन न होने के, कारण जब उसके लाहूत में जाने का प्रयत्न करने पर भी पैर जलने लगते हैं तो शुकदेव जी के भी वहाँ जाने से पैर जल सकते हैं। क्योंकि इन्होंने जिस तरह पन्ना के छत्रसाल और औरंगजेब आदि को धाम की निसवतियों में गणना की है। उसी तरह अपने वाणी में शुकदेवजी की गणना रूह मोमिनो में नहीं किया है। अत: वहां इनकी पहुंच न होने से भागवत खुदा का फुरमान व उसमें तुम्हारी हकीकतों का वर्णन होना नहीं सिद्ध पाया जाता। इन्होने यह भूल की है जिस तरह विभिन्न मनुष्यों का नाम अपनी रचना में लिख कर उन्हें धाम की रूह बताया है उसी तरह शुकदेव जी को भी वहाँ की रूह बताना चाहिए था ऐसा न करने से तुम्हारे वचनों द्वारा ही सिद्ध हो जाता है कि भागवत खुदा का फुरमान नहीं है। और न उसमें तुम्हारे चौथे आसमान वाले अल्लाह का वर्णन ही है। अब भागवतादि ग्रन्थों से यह सिद्ध किया जायगा कि विष्णु ही परात्पर ब्रह्म है।

भागवत ग्रन्थ के आरम्भ में ही ब्रह्म का लक्षण बताते हुये जिस परम तत्व को उपासना करने की प्रेरणा दी गई है वह विष्णु के लिये ही है। भा० प्र० स्कंध अ० १ श्लोक १ (**जन्माद्यस्त यतः .... सत्यं परं धीमहि**) जिसमें जगत की उत्पत्ति स्थिति लय होता है वह ब्रह्म है उस सत्य पर ब्रह्म को मैं ध्यान करता

हूँ। यहाँ जगत की उत्पत्ति स्थिति लय करने वाले तीनों देव हैं। अवस्थान्तर भेद है वस्तुत: एक ही है। वह व्यापक विष्णु ही सृष्टि काल में निर्गुणावस्था से अपनी सतरज तमात्मिका प्रकृति का अवलम्बन कर तीन रूप में विभक्त हो जाता है।

(**ब्रह्मत्वे सृजते लोकान् विष्णुत्वे पालयत्यपि रुद्रत्वें संहरत्येव तिस्रो वस्थास्वयम्भुवा**) अर्थ स्पष्ट है। केवल नाम संज्ञा कार्य भेद से भिन्न वर्णन है। जिस तरह एक व्यक्ति चुनाव में जीतकर एम० एल० ए०, एम० पी० नाम से कहा जाता है फिर क्रमश: वही व्यक्ति मिनिस्टर और प्रधान मंत्री के नाम से कहा जाता है। कारण रूप व्यक्ति में कोई भेद नहीं हुआ अवस्थांतर भेद होने से भिन्न भिन्न नामों से पुकारा गया। उसी तरह एक ही ईश्वर के अनेक नाम शास्त्रों में आये हैं वे सब नाम परात्पर विष्णु ही हैं विष्णु सहस्र नाम के पेट में ईश्वर के सभी नाम समा जाते हैं क्योंकि उससे भिन्न तत्व अन्य कोई नहीं है।

वेदो मे भी इसी प्रकार देखा जाता है। (**द्वावेव ब्रह्मणो मूर्ते मूर्तश्चामूर्तश्चेति**) इस वेद वाक्य के अनुसार भी ब्रह्म के दोनों रूप है एक मूर्तवान दूसरा अमूर्तवान वे दोनों रूप विष्णु के ही हैं। क्योंकि विष्लृ व्याप्तौ यह धातु व्यापक अर्थ में है और व्यापक अमूर्त तत्व ही हो सकता है (**तदैक्षत् बहुस्यां प्रजायेय**) उस अमूर्त तत्व ने इच्छा किया कि मैं बहुत सी प्रजा वाला हो जाऊँ। इस तरह वह निर्गुणावस्था से सगुणावस्था में आकर तीनों रूपो में प्रतिभाषित होता है। ईश्वर के शास्त्रों में अनेक नाम आने से वे तत्वत: भिन्न भिन्न नही है। यदि उनकी वास्तविकता को भिन्न मानते हैं तो अनेक वैदिक वाक्यो से विरोध होता है।

श्रुति:—स ब्रह्मा स शिव: सेन्द्र: सोऽक्षर: परम: स्वराट्।
स एव विष्णु: स प्राण: स कालोऽग्नि: स चन्द्रमा: ॥

अर्थः—वह एक ही परमात्मा ब्रह्मा, शिव, विष्णु, इन्द्र, प्राण, काल, अग्नि, चन्द्रमा, और स्वयं प्रकाश स्वरूप परम अक्षर ब्रह्म है। श्रुति **(सदेव शौम्येदग्र माशीत् एक मेवा द्वितीयम्)** हेशौम्य इदम=यह जगत अग्रे =सृष्टि के पूर्व एक मे वा द्वितीयम् = एक अद्वितीय रूप सदेव आशीत् —सत्ब्रह्म (विष्णु) ही था। श्रुति **मृत्योः समृत्युमाप्नोति य इहनानेव पश्यति)** जो ईश्वर को नाना रूपो से देखता है वह मृत्यु से मृत्यु को प्राप्त होता है जिस तरह जल मे डूबे हुये घट के चारो ओर से जल परिपूर्ण है उसी तरह वह निर्गुण विष्णु भी संपूर्ण विश्व मे ओत प्रोत है। इसी से उसे **(आकाशवत् सर्वगतश्चनित्यः)** कहा गया है। श्रुतिः— **महतः पर मव्यक्त मव्यक्तात्पुरुषः परः पुरुषान्न परां किञ्चित सकाष्ठा स परागतिः।** महतत्व से पर अव्यक्त (मूल प्रकृति) पर है और अव्यक्त से पर पुरुष श्रेष्ठ है पुरुष से भिन्न कोई भी वस्तु पर नही है वही अन्तिम परा गति और पराकाष्ठा है। उक्त श्रुति मे जिसे पर पुरुष अन्तिम गति वताया गया है वह विष्णु से भिन्न अन्य पुरुष नही है। **(अक्षरात् परतः परः)** इत्यादि विभिन्न वेद वाक्यों में अव्यक्त अक्षर से भी पर जिस परम पुरुष का निर्देश किया गया है वह विष्णु ही है। परन्तु इन भले आदमियो ने हिन्दुओ के ऐसे भगवान विष्णु को काना और गदहा से सवार बताया है विष्णु भगवान इन्हें सद्बुद्धि दे.।

गीता अ० १५ श्लोक १६ मे क्षर पुरुष को स्थूल जगत् बताकर विनाश शील बताया गया है। और कूटस्थ अक्षर पुरुष की व्याख्या शांकर भाष्य देखिये—**(सर्वोऽपि विकार मात्रः तत्र कूटे स्वकार्यं**

सर्वत्र कारण त्वेन घटादिषु मृदिव वहिरंतश्च सर्वतो व्याप्त तिष्ठती त्यव्यक्तं मल प्रकृति शब्द वाच्यं कूटस्थ इत्युच्यते । यद्वा पुत्र संततेः पुत्रिका संततेश्च मूल भूतः पुरुषःकूटस्थ इत्युच्यते । यहाँ कूटस्थ अक्षर को अव्यक्त प्रकृति बताया गया है व माया मे स्थित पुरुष जीवात्मा को कूटस्थ पुरुष कहा गया है। गीता अ० १५ श्लोक १७ **उत्तमः पुरुष स्त्वन्यः परमात्मेत्युदाहृतः यो लोक त्रयमाविश्य विभर्त्यव्यय ईश्वरः** १७ अन्वयार्थ— उत्तमः पुरुषः तु अन्यः = क्षर अक्षर पुरुष से भी उत्तम पुरुष अन्य है यः लोक त्रयम् आविश्य = जो तीनो लोको मे प्रवेश कर विभर्ति = सब का धारण पोषण करता है अव्ययः ईश्वरः परमात्मा इति उदाहृतः = वह अविनाशी परमेश्वर परमात्मा ऐसा कहा गया है। उक्त श्लोक मे अक्षर से भी उत्तम जिस पुरुष के लिये कहा गया है उसे तीनो लोको मे प्रवेश होना भी बताया गया है। वह सब भूतो मे प्रवेश होने वाला विष्णु ही है। वेद वाक्य भी इसी का अनुमोदन करता है। (**तत्सृष्ट्वा तदेवानु प्राविशत्**)

प्रश्नः—कहीं वेद कहीं श्रुति कहते हैं तो क्या श्रुति, वेद एक ही वस्तु है। उत्तर जी हाँ श्रुति वेद एक ही वस्तु हैं इसमें शब्द कोष प्रमाण है [**श्रुतिः स्त्री वेद आम्नाय, इत्यमरः**] इसी तरह गीता अ० ७ श्लोक ४।५ में जिसे अपरा और परा प्रकृति के नाम से कहा गया हैं तथा अ० १३ श्लोक १ में जिसे क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ नाम से कहा गया है उन्हीं दोनों को यहाँ भगवान ने क्षर और अक्षर नाम से वर्णन किया हैं।

अस्तु जगत् के कारण रूप त्रिगुणात्मक ब्रह्म को भागवत के अर्थ का ज्ञान नहीं है इस प्रकार का कथन केवल अपनी अज्ञता का

परिचय देना मात्र हैं। जो विष्णु ज्ञान की पराकाष्ठा है जिस वेद [**यः सर्वज्ञः सर्व विद्यस्य ज्ञान मयं तपः**] कह कर पुकारते हैं यदि उसे ज्ञान नहीं है आपको भागवत के गुह्य अर्थ का ज्ञान था तो आप अपने मत की पुष्टि के लिये भागवत ग्रंथ की टीका क्यों नहीं लिखा जैसा की अन्य विद्वानों ने संस्कृत हिन्दी टीकायें लिखी हैं। आपने अपनी रचना में भागवत व अन्य किन्हीं शास्त्रों का एक भी प्रमाण नहीं लिखा जिससे विश्वास किया जाता कि वैदिक ग्रंथों में इस्लाम मत का प्रतिपादन है। आप्त पुरुषों के कोई प्रमाण न लिखने से यह भी प्रतीत होता है कि इन्हें संस्कृत भाषा का ज्ञान नहीं था हो भी कैसे सकता है क्योंकि ये संस्कृत भाषा के घोर निंदक थे। कुरान पढ़ने तथा उसके उपदेश देने के प्रमाण से यह ज्ञात होता है कि शायद आरवी भाषा का कुछ ज्ञान अवश्य रहा होगा। क्योंकि इनकी रचना में तीन चौथाई शब्द अरवीभाषा के ही मिलते हैं। अतः जिस संस्कृत भाषा को आप जानते ही नहीं उस भाषा के ग्रंथ भागवतादि पुराणों पर बोलना निरर्थक हैं।

स्वामी जी के मृत्यु के बहुत दिन बाद लोक निन्दा के भय से लोगों ने प्रमाण की खोज किया किन्तु इस्लांम मत की गंध शास्त्रों में कहाँ से मिले। कुछ भागवत वर्णित कृष्ण लीला में इनके अनुयायिओं ने प्रवेश किया। स्वामी जी का सिद्धान्त था कि ब्रज में रहने वाला कृष्ण केवल ११ वर्ष ५२ दिनों तक ही पूर्ण ब्रह्म-महंमद रूप रहा बाकी मथुरा द्वारिका लीला करने वाला कृष्ण विष्णु का रूप है और वह नाशवान है। इसका प्रमाण इनको भा० तृ० स्कन्ध अ० २ श्लोक २६ विदुर उद्धव के संवाद में मिला।

ततो नन्द ब्रज मितः पित्रा कंसाद्विविभ्यता एकादश समास्तत्र गूढार्चि सवलोऽवसत् २६।

अर्थ:—ततः = प्राकृतशिशु होने के अनन्तर कंसात् विबिभ्यता पित्रा = कंस से डरे हुये देवकी वसुदेव ने इतः = वंदी गृह से नन्द व्रजं = नन्द के व्रज को अनयत्र = ले गये तत्र = उस व्रज में गूढार्चिः सबलः = बलदेव के साथ अपने तेज को छिपाकर एकादश समाः = ग्यारह वर्ष तक अवसत् = निवास किया २६।

उक्त श्लोक में गूढार्चिः एकादशसमाः इन दो शब्दों में इनो का कथन है कि यहाँ गुप्त तेज अक्षर ब्रह्म की आत्मा सहित धणी जी का जोस है जो व्रज मे कृष्ण कलेवर मे ११ वर्ष ५२ दिन तक रहा। किन्तु यहाँ या भागवत ग्रंथ के किसी स्थल पर इन विषयों का कोई प्रसंग ही नहीं आता शब्द शब्दके अर्थ करने पर श्लोक से उक्त अर्थ नहीं निकलता। गुप्त तेज कहने का यह तात्पर्य हैं कि भगवान ११ वर्ष तक बाल्यावस्था में थे उस समय उनका तेज गोपनीय रहना स्वाभविक है। वे अपने द्वारा निर्मित की हुई प्राकृतिक व्यवस्थाओं का अतिक्रमण नहीं करना चाहते। लोक में सभी मनुष्यों में देखा जाता है कि जब तक बाल्यावस्था रहती है तब तक उसके बल पौरुष छिपे रहते हैं क्रमशः शक्ति का विकाश होता है। भागवत में किसी स्थल पर व्रज वाले कृष्ण और मथुरा द्वारिका में रहने वाले कृष्ण में किंचित मात्र भेद नहीं किया गया।

कंस के वंदी गृह मे जिस चतुर्भुज रूप ने वसुदेव देवकी को दर्शन दिया उसे ये विष्णु रूप मानते हैं किन्तु जब वह दो भुजा वाला बालक हो जाता हैं तब उसे विष्णु न मानकर धणी जी (अल्लाह) का जोस आने से पूर्णब्रह्म-महंमद रूप मानते हैं जिसका प्रमाण निम्न है **(महंमद श्रीकृष्ण जी श्याम)** पूरी चौ० इस्लाम अध्यायों में देखिये। यह भी भेद भागवत से नहीं सिद्ध होता जिसे स्वामी जी विष्णु कह कर हेय बताते हैं उसी चतुर्भुज रूप विष्णु को भागवत में **(साक्षात्पुरुषः प्रकृते परः)** आप साक्षात प्रकृति से पर पूर्ण ब्रह्म हैं

यह बताया गया है। और जिसे आप पूर्ण ब्रह्म कहते हैं उसके लिये **(बभूव प्राकृतः शिशुः)** माता पिता के देखते देखते प्राकृत शिशु होना बताया गया है। भागवत के किन्ही, श्लोको द्वारा कृष्ण स्वरूप में भेद नहीं पाया जाता जहाँ कहीं भी कृष्ण का वर्णन है वहाँ उनको विष्णु रूप ही बताया गया है चौथे आसमान लाहूल से उनमें खुदा का जोस आया यह वर्णन कहीं नहीं है।

भा० पूर्वार्ध १० स्कंध अ० २३ श्लोक ४८। **सएष भगवान साक्षात् विष्णुर्योगेश्वरेश्वरः जातो यदुष्वित्यश्रृण्म ह्यपि मूढा न विद्महे।**

अर्थ:—नाग पत्नियाँ कहती हैं योगेश्वरो का भी योगेश्वर वह साक्षात विष्णु यदुकुल में जन्म लिया इस बात को सुनकर भी हम मूढ़ों ने नहीं जान पायी ४८। दूसरा जब वृन्दावन में रास हो रहा था उस समय तो स्वामी जी ने अपने धणी जी को ही रास खेलना माना है। वहाँ विष्णु को रास खेलना ये नहीं मानते। रास खेलते समय भी कृष्ण के लिये विष्णु शब्द का ही प्रयोग शुकदेव जी ने किया है। भा० पू० १० स्कन्ध अ० ३३ श्लोक १७ रास क्रीड़ा।

एवं परिस्वङ्ग कराभिमर्श स्निग्धेक्षणोद्दामविलास हासैः रेमेरमेशो व्रज सुन्दरी भिर्यथा र्भकः स्वप्रतिबिम्ब विभ्रमः।

अर्थ:—हृदय से हृदय कंधो से कंधा मिलाते हुये एक दूसरे के हाँथो का स्पर्श करते हुये कोमल चितवनों के द्वारा अत्यन्त विलास पूर्ण हास्य से (रमायाः ईशः रमेशः) लक्ष्मी पति भगवान विष्णु व्रज सुन्दरियों के साथ रमण किया जिस तरह बालक अपने प्रतिबिम्ब को देखकर उसी में क्रीड़ा करता है १७। स्वामी जी का जो यह कथन है कि भागवत के अर्थ को त्रिगुण भी नही खोल सकते तो इस

श्लोक में रेमे रमेशः इन शब्दों में धणी जी के जोस वाला अर्थ कहाँ छिपा हुआ है। यहाँ तो विष्णु के ही लिये रास खेलने का स्पष्ट वर्णन है। अस्तु इस अध्याय के प्रारम्भ में लिखी हुई चौपाई सर्वथा गलत है।

और भी देखिये जब कृष्ण कंस से निर्मित मल्ल भूमि में जाकर कुवलया पीड आदि का संहार करते हैं तब उनके पराक्रम को देखकर वहाँ के उपस्थित व्यक्ति उनका परिचय देते हुये कहते हैं। भा० पू० १० स्कन्ध अ० ४३ श्लोक २३, २४।

एतौ भगवतः साक्षाद्धरे नारायणस्य हि अवतीर्णा विहांशेन वसुदेवस्य वेश्मनि।२३।।

ये दोनों बलदेव और कृष्ण साक्षात हरिनारायण भगवान के ही अंश से ये वसुदेव जी के घर में अवतीर्ण हुये हैं।

एषवैकिल देवक्यां जातो नीतश्च गोकुलं काल मेतं वसन्‌ गूढ़ो ववृधेनन्द वेश्मनि।

ये निश्चय ही देवकी माता से उत्पन्न हो गोकुल में ले आये गये हैं इतने दिनों तक ये गुप्त रूप नन्द के घर में निवास कर बड़े हुये। उक्त २३, २४ मे श्लोकों में कृष्ण को नारायण का ही अंश बताया गया है और ये लोग जो कहते हैं कि भागवत में जो गुप्त तेज लिखा है वह धणी जी का जोस अर्थात प्राणनाथ का ही अंश श्री कृष्ण को बताया गया है। यह चौबीसमें श्लोक में भी नहीं पाया जाता क्योंकि मल्ल भूमि में उपस्थित व्यक्ति यह बतला रहे हैं कि ये देवकी माता से उत्पन्न हो कंस के भय से पिता ने इनको पहुंचाया है। बालक होने के कारण अभी तक इनका ईश्वरी तेज छिपा था किन्तु अब ये बढ़ गये हैं अब इनका पौरुष देखो अस्तु इस श्लोक

में (गूढ़ः) शब्द से धणी जी का गुप्त तेज कृष्ण में था यह अर्थ नहीं निकलता। अतः प्रकाश ग्रन्थ की (**दो भुजा सरूप जो श्याम, आतम अक्षर जोस धणी धाम**) यह भागवत से अप्रामाणित हो जाती हैं। इस तरह इनके मूल भूत सिद्धान्त के अप्रमाणित होने से धाम सम्बन्धी जितनी सांप्रदायिक लीलाये हैं वे सभी काल्पनिक झूठी सिद्ध हो जाती हैं।

इन्होंने विष्णु को न्यून अर्थ में प्रयोग कर उसे अनित्य माना है निम्न श्लोक द्वारा विष्णु को अविनाशी परात्पर ब्रह्म सिद्ध किया जा रहा है। भा० पू० १० स्कन्ध अ० ४० श्लोक १।

नतोऽस्म्यहं त्वाखिल हेतु हेतुँ नारायणं पूरुष माद्य मव्ययम यन्नाभि जाता दरविन्द कोशात् ब्रह्माऽऽविरा सीद्यत एष लोकः।

यहाँ अक्रूर जी विष्णु की स्तुति करते हुये कह रहे हैं। जिनके नाभि से कमल की उत्पत्ति हुई जिस कमल से ब्रह्मा जी उत्पन्न हुए और जिस ब्रह्मा से सम्पूर्ण लोकों की रचना हुई उस अखिल जगत के कारण के भी महाकारण अविनाशी आदि पुरुष नारायण के लिये नमस्कार है श्लोक में आद्यम् पुरुषम् शब्द से परात्पर ब्रह्म और अव्यय शब्द से अविनाशी नारायण शब्द से विष्णु का स्पस्ट वर्णन है। शब्द कोष में भी नारायण, विष्णु और कृष्ण को पर्यायवाची माना है।

विष्णुर्नारायणः कृष्णो वैकुंठो विष्टरश्रवाः इत्यमरः।

अस्तु आशय यह कि भागवत ग्रंथ में जहाँ कहीं भी कृष्ण चरित्र का वर्णन है वहाँ सर्वत्र उन्हें विष्णु का ही अवतार माना गया है और उसी विष्णु को परात्पर ब्रह्म कहा गया है। भागवत धर्म

इस्लाम धर्म की गंध नहीं है यहाँ तो शुद्ध वैष्णवमत का प्रतिपादन है यदि कोई कहे कि कुरान में वैष्णवमत का प्रतिपादन है तो क्या कोई इस बात को मान सकता है। किन्तु अंधविश्वासियों ने इस तरह के उपदेशों को स्वीकार कर लिया है जो बड़े ही खेद का विषय है।

भा० प्र० स्कन्ध अ० ३ श्लोक २८ **एते चांश कला पुंसः कृष्णस्तु भगवानस्वयम् इन्द्रारि व्याकुलं लोकं मृऽयन्ति युगे युगे।**

इस श्लोक को लेकर कोई कोई कहा करते हैं कि अन्य जितने अवतार हुये हैं वे विष्णु के अंशावतार हैं अतः ये निम्न कोटि के हैं और भगवान कृष्ण साक्षात पूर्ण ब्रह्म हैं। इस श्लोक में कृष्ण को स्वयं भगवान कहा गया इस कथन से हमें कोई आपत्ति नहीं है। किन्तु अन्य अवतारों को निम्न मानना गलत है क्योंकि अन्य अवतारों को जो कला अंश से अवतार लेना कहा गया इससे उनकी न्यूनता नहीं सिद्ध होती क्योंकि श्लोक में इन्द्रारि व्याकुलं लोकं मृऽयन्ति युगे युगे असुरों से पीडित जनों के रक्षार्थ उन्हीं कृष्ण को युग युग में जन्म लेने को कहा गया है। इसी तरह गीता में भी भगवान ने कहा है कि मै युग-युग में जन्म लेता हूँ।

परित्राणाय साधूनां विनाशाय चदुष्कृताम् धर्म संस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे।

अर्थ स्पष्ट है। इस तरह कृष्ण ही जब कह रहे हैं कि मैं युग युग में अवतार लेता हूँ तब दूसरे अवतार न्यून कैसे हो सकते हैं। यदि अंश कहने से अन्य अवतारों को न्यून माना जाता है तो इसी अध्याय में वर्णित २३ श्लोक फिर से देखिये (**अवतीर्णा विहांशेन वसुदेवस्य वेश्मनि**) यहाँ कृष्ण को ही विष्णु के अंश से

उत्पन्न होना कहा है तो जिस कृष्ण को पूर्ण ब्रह्म कहा जा रहा है वही कृष्ण विष्णु के अंश से उत्पन्न होने के कारण न्यून हो जायगा और कृष्णस्तु भगवान स्वयम् की सिद्धि नहीं होगी । अस्तु २८ श्लोक में जो कला अंश से अवतार लेना कहा गया उससे अन्य अवतारों की न्यूनता नहीं सिद्ध होती क्योंकि अग्नि की एक छोटी सी चिनगारी में भी वही शक्ति है जो उसके समूह में शक्ति है ।

इन लोगों का भागवत के एक स्थल पर और कथन है कि जिस समय जरासंध ने मथुरा पर आक्रमण किया उस समय गोलोक वासी कृष्ण का अंश निकल चुका था उस समय कृष्ण मनुष्य मात्र रह गये थे इससे जरासंध के घेरा डालने से कृष्ण को चिन्ता हुई उसी समय विष्णु स्वरूप उनमें प्रवेश करता है ।

मीमांसक:—भागवत के किसी स्थल पर ऐसा लेख नहीं है कि गोलोकवासी कृष्ण का अंश कृष्ण से निकलकर गोलोक चला गया था जिससे वे मनुष्य मात्र रह गये ।

भा० दशम स्कन्ध अ० ५० श्लोक ६ **चिन्तयामास भगवान हरिः कारण मानुषः तद्देश कालानुगुणं स्वावतार प्रयोजनम् ६ ।**

यहाँ चिन्तयामास इस क्रिया में चिती संज्ञा ने धातु विचार करने अर्थ में है और दूसरी धातु (शुच शोके) शोक करने अर्थ में है इसलिये चिन्तयामास का अर्थ विचार करना ही है शोक करना नहीं है । श्लोक में आये हुये हरि शब्द से भगवान विष्णु ही ने विचार किया विष्णु से भिन्न मनुष्य ने विचार नहीं किया । यदि उनका अंश चला जाता मानव मात्र रह जाते तो श्लोक में (भगवान हरिः) ऐसा प्रयोग क्यों होता । इससे तुमारा यह कथन गलत है कि गोलोकवासी कृष्ण के चले जाने से वे मानव मात्र रह गये । उक्त श्लोक में कृष्ण कलेवर से किसी अंश का न जाना और न

किसी अंश का आना पाया जाता। और मानव शरीर को धारण कर विचार करना स्वाभाविक है। अवतार होते हुये भी वे मानवीय व्यवहारों व प्राकृत गुणों में ही वर्तते हैं। इससे श्लोक में कवि का यह कथन अनुचित नहीं है कि भगवान हरि ने मानव देह धारण करने के कारण विचार किया कि देशकाल के अनुसार हमारे अवतार लेने का क्या प्रयोजन है।

प्रणामी लोग नीचे के श्लोक को भी कृष्ण का मानव मात्र रह जाना और विष्णु का अंश प्रवेश होना बताते हैं।

भा० दशम स्कन्ध अ० ५० श्लोक ११ **एवं ध्यायति गोविन्द आकाशात्सूर्य वर्चसौरथा वुपस्थितौ सद्यः सम्रुतौ स परिच्छदौ ११।**

जरासंध के घेरा डालने के सम्बन्ध में (एवं ध्यायति) इस प्रकार हरि के विचार न स्मरण करने पर सूर्य के सदृश. अत्यन्त तेज युक्त आकाश से सारथी के सहित दो रथ शंख चक्र गदा खंग आदि सब आयुध उपस्थित हो गये। अस्तु इन श्लोक के आधार से किसी अंश का आना व जाना व मानव मात्र रह जाना नहीं सिद्ध पाया जाता किसी अंश के न आने जाने से कृष्ण स्वरूप में भेद बताना यह भागवत गीता आदि से सर्वथा विरुद्ध सिद्धान्त है। कृष्ण स्वरूप में भेद सिद्ध करने के लिये आपके पास कोई प्रमाण नहीं है। जिन श्लोकों का अर्थ छिपा हुआ मानते थे वह पाठकों के सामने उपस्थित हैं।

स्वामी जी ने तो कृष्ण के स्वरूप को विदूषक बना लिया है। लेखक के इसी ग्रन्थ के अध्याय ४, ५, में प्राणनाथ की नाटकीय चौ० को देखिये। कृष्ण के जन्म समय में चतुर्भुज रूप १ फिर बाद में गोकुल जाने पर धणी जी का जोस प्रवेश हुआ २ कृष्ण के अन्तरध्यान के समय धणी जी का जोस लाहूत

चला जाता है सखियों के विरह करने पर धणी जी का जोस नया शृंगार कर धाम से लौट आता है पुनः कृष्ण कलेवर में प्रवेश हो जाता है और रास क्रीड़ा होने लगती है ३ योग माया की रास खतम होने पर फिर वही धणी का जोस धाम को लौट जाता है फिर गोलोक वासी कृष्ण आते हैं ।४। कुछ दिन बाद गोलोक बासी भी अपने गोलोक धाम चले जाते है तब विष्णु का स्वरूप कृष्ण में प्रवेश करता है ५ । इस तरह कृष्ण कलेवर में पाँच पर्दे गिराकर नाटक दिखाया गया है । और भगवान श्री कृष्ण के दिव्य रूप के साथ खेलवाड़ की गई है ।

स्वामी जी ने जो यह लिखा है कि भागवत के अर्थ को त्रिगुण भी नहीं खोल सकते तो आपने उक्त पाँच रूपों में भागवत का अर्थ खोल कर अनर्थ किया है ।

इति निजानन्द मीमांसायांमुत्तरार्धभागे भागवत विषय वर्णनं
नाम अष्टादशोऽध्यायः १८

अभ्यासार्थक प्रश्नः—

१—इनके मत का प्रतिपादन कुरान पुराण में भी है इस विषय में अपने विचार व्यक्त कीजिये ।

२—वैदिक प्रमाणों से सिद्ध कीजिये कि विष्णु ही परात्पर ब्रह्म है ।

३—भागवत खुदा का फुरमान नहीं है यह क्यों कहा गया ।

४—त्रिगुणात्मक ब्रह्म भागवत के अर्थ को नहीं खोल सकते इस विषय में अपने विचार व्यक्त कीजिये ।

५—भागवत से यह सिद्ध कीजिये कि कृष्ण स्वरूप में कोई भेद नहीं है ।

६—भागवत में रास खेलना किसके लिए कहा गया है ।

७—चौबीसमें श्लोक से स्पष्ट कीजिये कि धणी जी का गुप्त तेज कृष्ण में नहीं था ।

८—भागवत ग्रन्थ में विष्णु से भिन्न अन्य तत्व को ब्रह्म नहीं माना है इसे समझाकर बताइये।

९—अंश के कथन से अन्य अवतार न्यून क्यों नहीं कहे जा सकते।

१०—यह प्रमाणित कीजिये कि कृष्ण किसी समय मानव मात्र नह रहें।

११—भागवत के अर्थ को इन्होंने किस प्रकार खोला है।

अथ एकोनविंशोऽध्यायः १९

अवतार वाद

"कलस प्र० १८ **वसुदेव गोकुल ले चले, ताय न कहिये अवतार ॥१४॥**

स्वामी जी कहते हैं कि वसुदेव जी कंस के बंदी गृह से जिस दो भुजा वाले कृष्ण को गोकुल नन्द के यहाँ पहुंचाने को ले चले उसे अवतार नहीं कहना चाहिये। साधो कृष्ण नहीं अवतारी। टेक साधो कृष्ण नहीं अवतारी राम आदि अवतार होत है सो वैकुण्ठ विहारी"।

स्वामी जी का सिद्धान्त है कि खुदा का अवतार नहीं होता किन्तु इन्हीं के वचनों द्वारा यह सिद्ध किया जायगा कि इन्होंने खुदा का अवतार माना हैं। (**बसरी मलकी हक्कों, कही रसूल तीन सूरत**) आपने लिखा है कि रसूल साहेब ने कुरान में खुदा की तीन सूरतो का वर्णन किया हैं। पहली बसरी सूरत अरब वाले महंमद दूसरी मलकी सूरत धणी देवचंद्र जी जिनका जन्म विक्रम संवत् १६३८ उमर कोट ग्राम में हुआ तीसरी हक्की सूरत स्वामी प्राणनाथ जी जिनका जन्म वि० सं० १६७५ में जामनगर

में हुआ। बताया जाता है इन तीनों सूरतों को खुदा का रूप मानने से व इह लोक में इनका जन्म स्पष्ट रूप में वर्णन होने से इन्हें खुदा का अवतार क्यों न माना जाय केवल कथन मात्र से कि हम ईश्वर का अवतार होना नहीं मानते वर्णन वही करते हैं। कुरान के सिद्धान्तानुसार खुदा को (वे चून वे चगून वे सवी वे नमून) अर्थात आकार रहित माना गया है तो इस्लाम मत वाले खुदा के अवयव रहित होने से उसका अवतार होना भले ही न माने उनका कथन युक्ति शंभव भी हो सकता है। किन्तु स्वामी जी के सिद्धान्त में तो पद पद पर सगुणवाद का वर्णन हैं जिससे अवतार का होना शंभव हो सकता हैं । फिर इन्होंने ऐसा कहा क्यों इनका कारण यही हो सकता है कि स्वामी जी इस्लाम मत के पक्षपाती हैं कुरान में खुदा का अवतार होना नहीं बताया गया हैं इससे इन्होंने भी खुदा का अवतार होना नहीं माना।

देवचन्द्र व प्राणनाथ के माता पिता से जन्म लेने के कारण इनका अवतार लेना पाया जाता है क्योंकि इस मत में ये खुदा रूप माने गये हैं। ये कहीं आकाश से तो नहीं टपक पड़े जिससे इन्हें अवतारी न कहा जाय। उसी तरह कृष्ण का भी जन्म माता पिता से होने के कारण उनका भी अवतार होना सिद्ध पाया जाता है। यदि यह कहो कि कृष्ण में धणी जी का जोस प्रवेश होने से उन्हें अवतार नहीं कहा जा सकता तो यह भी कथन गलत है क्यों कि जिस समय गोलोकवासी कृष्ण का अंश चला जाता हैं उस समय वे मानव मात्र रह जाते हैं। चिन्तित होने पर कृष्ण में विष्णु का अंश आ जाता है। जो जिस तरह धणी जी का जोस प्रवेश हुआ उसी तरह विष्णु ने भी प्रवेश किया [**इत आई सुरत चतर्भुज की**] अतः एक ही प्रकार दोनों को प्रवेश होना बताने से एक को

अवतार माना जाय दूसरे को अवतार न माना जाय यह सर्वथा युक्ति विरुद्ध है। स्वामी जी ने अपने सत्यासत्य वादों पर किञ्चित मात्र ध्यान नहीं दिया जिस कारण ये प्रत्येक जगह अपने वाक्यों द्वारा स्वतः फस जाते हैं इनका तो केवल यही लक्ष्य है कि इस्लाम मत की सिद्धि हो और वैदिक मत का खंडन हो।

यद्यपि इन्होंने गीता व अन्य शास्त्रों को प्रमाण रूप नहीं माना है किन्तु कृष्ण पर श्रद्धा रखने वाले प्रणामी धर्म के हिन्दू गीता के वचनों को अवश्य ही प्रमाण मानेंगे। गीता अ० ४ श्लोक ६

अजोपि सन्नव्ययात्मा भूतानामीश्वरोपि सन् प्रकृतिं स्वा-माधिष्ठाय संभवाम्यात्म मायया।

अर्थः—भगवान कहते हैं कि मैं अविनाशी स्वरूप अजन्मा होने पर भी तथा सब प्राणियों का ईश्वर होने पर भी अपनी प्रकृति को अधीन करके योग माया से अवतार लेता हूँ।६। इसी तरह भागवत प्र० स्कन्ध अध्याय तीन में चौबीस अवतारों का स्पष्ट वर्णन है अतएव गीता और भागवत इन दोनों से ईश्वर का अवतार होना सिद्ध है। अस्तु कृष्ण के सम्बन्ध में अध्याय के प्रारम्भ में कही हुई स्वामी जी की चौपाई सनातन वैदिक मत से अप्रमाणित हो जाती हैं।

स्वामी जी के प्रतिपाद्य विषयों में कोई निश्चयात्मक वर्णन नहीं है केवल हिन्दुओं से विपरीतता प्रदर्शन करना मात्र दिखाई देता है। क्योंकि अपनी रचना में इन्होंने अपने को बुद्ध और कल्की अवतार का होना भी कहा है।

"संनध प्र० ३६ **ना सुध ब्रह्म सृष्टि की, सुध सृष्ट न ईश्वरी। हिन्दू जो जीव सृष्ट के, तिन ये सुध न परी।।४५।। विजयाभिनन्दन बुद्ध जी, और नेहेकलंक अवतार। वेदा**

कह्या आखर जमाने, ये ही है सिरदार ॥४६॥ इनमें लिखी आखर, सो सुध न परी काहु जन । पढ़ पढ़ गये कै वेद को, पर उन पाया न क्यामत दिन ॥४७॥

अर्थः—स्वामी जी इस सनंध नामक पुस्तक में जीव के तीन भेद वर्णन करते हुये कह रहे हैं कि ये जो हिन्दू लोग हैं इन्हें ब्रह्म सृष्टि, ईश्वरी सृष्टि, जीव सृष्टि का ज्ञान नहीं है और वेदों में जो लिखा हुआ है कि आखर (अन्त) समय में विजय से स्वागत पाने वाले बुद्ध का और कल्की अवतार होगा और ये ही सब अवतारों में श्रेष्ठ माने जाँयगे। वेदों को कितने ही मनुष्यों ने पढ़ा पर किसी को उक्त बातों का ज्ञान नहीं हुआ और न किसी ने क्यामत के दिन को ही पाया।"

मीमांसकः—उक्त चौ० में इन्होंने अपने को बुद्ध और कल्की अवतार का होना बताया है इस कथन से इन्होंने खुदा का अवतार होना मान लिया इनके वचनों से ही पूर्व की कही हुई चौपाई झूंठी सिद्ध हो जाती है अथवा दो प्रकार के कथन से दोनों बाते झूंठी हो जाती हैं। और जीवों को तीन प्रकार के भेद का ज्ञान हिन्दुओं को अवश्य नहीं है क्यों असत वस्तु का ज्ञान किसी को न होना स्वाभाविक है। निम्न शब्दों से जीवों में भेद होना अर्थ नहीं प्रगट होता। जैसा कि ब्रह्म सृष्टि शब्द का अर्थ रूह मोमिन सुन्नत जमात ईश्वरी सृष्टि का कुमारिका सखी जीव सृष्टि का अर्थ हिन्दू किया गया है। इनका शब्द कोष संसार से निराला भिन्न है। और वेदों का आधार लेकर संप्रदायिकों को जो यह विश्वास दिलाया गया है कि अन्त में कल्की और बुद्धावतार होने को लिखा है वह मैं ही हूँ यह सर्वथा मिथ्या है क्योंकि वेदों में

इस तरह का कोई प्रमाण नहीं है यदि कोई वेदों में ऐसा प्रमाण था तो आपने लिखा क्यों नहीं।

प्राणनाथ को संसार में बुद्धावतार होना कोई नहीं जानता और न किसी इतिहासकार ने इन्हें बुद्धावतार लिखा ही है। यदि ये सत्य में बुद्धावतार हैं तो इनके अनुनायियों को सप्रमाण प्रकाशन करना चाहिये। अपने धार्मिक सिद्धान्तों के छिपाने से ही सिद्ध हो जाता हैं कि इनकी अठारह हजार वाणी में कोई सत्यता नहीं है।

भागवत वर्णित बुद्धावतार से संसार में गौतम बुद्ध को माना गया हैं जिनका प्रमाण अनेक विद्धानों के ग्रन्थों में पाया जाता हैं कपिल वस्तु नगर में राजा शुद्धोदन था उनके माया देवी पटरानी से सिद्धार्थ का जन्म हुआ। गया मे जाकर नदी के तट पर एक वट वृक्ष के नीचे बैठ कर इन्होंने कुछ काल घोर तपस्या किया जिससे इन्हें तत्व ज्ञान प्राप्त हुआ। तत्व ज्ञान के अवबोध होने ये बुद्ध नाम से विख्यात हुये इनके द्वारा बौद्ध मत का प्रचार किया गया इनके मृत्यु के बाद अशोक आदि सम्राटों ने बौद्ध धर्म के प्रचार के लिये महान् प्रयत्न किया। भारत के अलावा वर्मा, लंका, चीन, जापान, तिब्बत आदि विभिन्न देशों में बौद्ध मत पाया जाता है।

भागवत पुराण में व्यास जी २४ अवतारों की गणना करते समय बुद्ध और कल्कि अवतार के विषय में दो श्लोक लिखा है। भा० प्र० स्कन्ध अ० ३ श्लोक २४।२५ **ततः कलौ संप्रवृत्ते संमोहाय सुरद्विषाम् बुद्धो नाम्ना जन सुतः कीकटेषु भविष्यति २४।**

कलि के लगने पर असुरों को मोहित करने वाला बुद्ध नाम का अवतार कीकट देश में होगा।

अथा सौ युग सन्ध्यायाम् दस्यु प्रायेषु राजसु जनिता विष्णु यश सो नाम्ना कल्किर्जगत्पतिः २५ इनके अनन्तर इसी युग की सन्धि में प्रायः दस्यु राजाओं में विष्णु यश से जन्म लेकर जगत् की रक्षा करने वाला कल्कि अवतार होगा। इसी तरह भा० दशम स्कन्ध अ० ४० में अक्रूर जी सब अवतारों की स्तुति करते हुये अन्त में बुद्ध और कल्कि भगवान की स्तुति किया है। **नमो बुद्धाय शुद्धाय दैत्य दानव मोहिने म्लेच्छ प्राय क्षत्र हन्त्रे नमस्ते कल्कि रूपिणे ।२२।** दैत्य दानवो को मोहित करने वाले शुद्ध स्वरूप बुद्ध के लिये नमस्कार हैं म्लेच्छों के क्षत्र (राजस्वपद) को हनन करने वाले कल्कि भगवान् के लिये नमस्कार हैं। इन श्लोकों में बुद्ध और कल्कि इन दो अवतारों की भिन्न भिन्न गणना की गई है। ये दोनों एक नहीं हैं स्वामी जी ने तो दोनों अवतारो को अपने ही लिये कहा है कि मैं बुद्ध भी हूँ और कल्कि भी हूँ व अपनी रचना में अनेक अवतारों का होना बताया है किसी एक अवतार का निश्चय रूप कथन न होने से आपकी सब बाते बनावटी और मिथ्या प्रतीत होती हैं।

और जो गुरू देवचन्द्र आपके हृदय में प्रवेश हुये हैं जिन्हें निष्कलंक बुद्धावतार बताया गया हैं तो उनका जन्म मारवाड़ देश उमर कोट गांम पिता मत्तू मेहेता कायस्थ से होना बताया गया है जिससे भागवत वर्णित बुद्ध कल्कि अवतार की संगति नहीं बैठती। इससे वेदों में आपके सम्बन्ध में कोई वर्णन न होने से वेद प्रमाण है यह आपका कहना मिथ्या हैं। और जो यह कहा गया कि वेदों

के पढ़ते हुये हिन्दुओं ने क्यामत का दिन नहीं पाया क्यामत के निम्न चिन्ह जो आपने बताये हैं वे वेदों में नहीं पाये जाते। क्यामत करने वाले आखरी महंमद प्राणनाथ होंगे वे सबका हिसाब कर जो जिस योग्य होगा उसे दोजख (नरक) और भिस्त (मोक्ष) प्रदान करेंगे। कबर में गड़े हुये मुर्दे उठेंगे। सूर्य पश्चिम में उदय होगा आजूज माजूज जाहेर होंगे। इस प्रकार क्यामत के चिन्ह वेदों में कहीं नहीं पाये जाते। अतः इन्होंने जो लिखा है कि (पढ़ पढ़ गये कै वेद को पर उन्हों पाया न क्यामत दिन) यह चौ० सर्वथा मिथ्या है।

कलस प्र० १६ **शुके अवतार सब कहे, पर बुद्ध में रह्या उरझाय। ये भी सीधा न केहे सके, तो क्यों इनों कह्या जाय ॥२॥**

अर्थः—स्वामी जी कहते हैं कि शुकदेव जी ने सभी अवतारों के विषय में वर्णन किया हैं किन्तु बुद्धावतार के वर्णन करने में उझल गये जब ये ही सीधे ढंग से वर्णन करने में समर्थ नहीं हुये तो इन वेदों शास्त्रकारों से कैसे वर्णन किया जा सकता है।

मीमांसकः— इस कलस की दूसरी चौ० में खुद ही कह रहे हैं कि जब शुकदेवजी ही मुझ बुद्धावतार का वर्णन नहीं कर सके तो अन्य शास्त्रकार कैसे कर सकते हैं। तात्पर्य यह कि आप ही ने अपने लेख को झूँठा सिद्ध कर दिया जब आपके सम्बन्ध में कहीं वर्णन नहीं है तो यह क्यों लिखा कि (वेदो कह्या आखर जमाने ये ही है सिरदार) इन परस्पर चौपाइयों के विरोध होने के कारण यह निश्चित हो जाता है कि इनकी सब बनावटी लीलायें हैं। यदि शुकदेवजी इनके मतानुकूल यह लिख देते कि आखर के समय में वि० संवत १६७५ में जामनगर में केशव ठाकुर के यहाँ धणीजी

के जोस युक्त बुद्धावतार होगा और वह ईमाम मेहदी का रूप धारण कर क्यामत करेगा और हिन्दुओं से वेद धर्म छीन लेगा। तो उन्हें उलझने के लिये न कहते। इनके वेद धर्म छीनने के कथन से भी यह सिद्ध होता है कि ये बुद्धावतार नहीं है क्योंकि कोई भी ईश्वर का अवतार इस प्रकार का कार्य नहीं कर सकता। इन्होंने वेद छीनने के लिये निम्न चौ० द्वारा कहा है। खुलासा प्र० १२ **सो बुधजी सुर असुरन पे, लेसी वेद कतेब छीन। कहे असुराई मेट के, देशी सबों यकीन ॥३२॥**

अर्थ—मैं बुद्धावतार देवता और असुरो से वेद, कतेब छीन लूँगा और आसुरी स्वभाव को नष्ट कर सबको धार्मिक विश्वास दिलाऊँगा।३२। विद्ज्ञाने धातु से वेद शब्द बनता है जिसका अर्थ होता है ज्ञान, जब मनुष्यों से वेद छिन जायगा तो अवशेष क्या रहेगा अज्ञान जिस तरह प्रकाश के हटाने से अंधकार ही अवशेष रह जाता है उसी तरह ज्ञान के छीनने से अज्ञान मात्र शेष रहेगा। इस तरह पाठक स्वतः विचार कर देखें कि ये आसुरी स्वभाव को बढ़ा रहे हैं अथवा उसे नष्ट कर रहे हैं। जिन्होंने ऐसे व्यक्ति पर बुद्धावतार होने का विश्वास किया है उन लोगों ने बड़ी ही भूल की है।

अध्याय के प्रारम्भ में कही हुई चौ० के अनुसार इन्होंने शिशु रूप कृष्ण को अवतार नहीं माना है धणी जी का जोस आने से उसे महमंद रूप माना है ११ वर्ष ५२ दिन बाद वही जोस अरब देश जाकर फिर महंमद के रूप में प्रगट होता है महम्मद से भी वह जोस निकल कर देवचन्द्र में प्रवेश हो जाता है। रूहअल्ला रूप देवचन्द्र से भी जब वह जोस निकलता है तब प्राणनाथ में प्रवेश हो आखरी महंमद के रूप को धारण कर लेता है। अस्तु

इनकी सब पाखंड लीलाओं पर ऐतिहासिक दृष्टिकोण से विचार किया जायगा । उक्त विषयों को प्रमाणित करने वाली निम्न चौ० है । खुलासा प्र० १२ **श्री ठकुराणीजी रूह अल्ला, महंमद श्रीकृष्णजी श्याम । सखियाँ रूहे दरगाह की, सुरत अक्षर फिरस्ते नाम ॥५६॥**

अर्थ:—राधिका जी अल्लाह की रूह (आत्मा) है और श्रीकृष्णजी महंमद है सखियाँ दरगाह में रहने वाली रूह (मोमिन) है अक्षर की सुरत का नाम ही फिरस्ता है ।

खुलासा प्र० १३ **श्री कृष्ण जी ब्रज रास में, पूरे ब्रह्म सृष्टि मन काम । सोई सरूप ले आया फुरमान, तब रसूल केहे लाया स्याम ॥७५॥ चौथा सरूप ईसा रूह अल्ला, ल्याए किल्ली हकीकत धाम । पाचमा सरूप निज बुध का, खोल मायने भये ईमाम ॥७६॥ ए भी पाच सरूप का है, वेवरा माहे कुरान । जो कछू लिखा भागवत में, सोई साख फुरमान ॥७७॥**

अर्थ:—श्री कृष्ण जी ब्रज रास में ब्रह्म सृष्टियों के मनोरथ को पूर्ण किया वे ही कृष्ण ११ वर्ष ५२ दिन बाद अरब देश में जन्म लेकर कुरान को ले आये तब वे ही कृष्ण महंमद कहलाये ।७५। चौथा स्वरूप ईसा रूह अल्ला (देवचन्द्र) का है जो धाम की हकीकतों को खोलने के लिये कुंजी ले आये हैं और पाचमा अपना (प्राणनाथ) स्वरूप बुध का हैं कुरान पुरान के गुह्य अर्थो के खोलने से मैं आखरी ईमाम (महंमद) हुआ ७६। इस तरह इन पाचों सरूप का विवरण कुरान में लिखा हुआ हैं जो कुछ भागवत में लिखा

हुआ है वही साक्षी कुरान में भी है ७७। भगवान श्री कृष्ण महंमद के ही रूप थे इस विषय को इन्होंने कई जगह वर्णन किया हैं। निम्न चौ० को और देखिये —खुलासा प्र० १३ **स्याम रास से बराख, ले आया साहेब का फुरमान। हकीकत अखंड धाम की, तिन बाँधी सब जहान ॥३१॥**

अर्थ:—श्री कृष्ण ने रास क्रीडा खेल कर अरब में जन्म लिया और खुदा का कुरान भी ले आये इसमें हमारे अखंड धाम की हकीकतों का वर्णन है उस कुरान के उपदेश से सब संसार को धार्मिक मर्याद में बाँध दिया हैं।

अस्तु अनेक प्रमाणों से सिद्ध है कि इन्होंने भगवान श्री कृष्ण को महंमद मान कर उन्हें अरब में जन्म लेना बताया हैं कुछ लोग का कथन है कि प्राणनाथ जी समन्वयवादी थे किन्तु यह कथन सर्वथा गलत हैं क्योंकि वे ही कृष्ण भगवान जब मथुरा द्वारिका जाते हैं तब उन्हें महंमद रूप से पूज्य नहीं माना वहाँ तो कृष्ण को विष्णु रूप ही मानते हैं जिससे ये समन्वयवादी नहीं कहे जा सकते। उस विष्णु को तो अपराधी बताकर धिक्कार दिया है तथा उन्हें सैतान आदि का भी प्रयोग किया हैं जिसके निम्न प्रमाण हैं।

खुलासा प्र० १ **चौदे तवक के तखत, बैठा मल कूत अजाजील। राह मारत सब दुनी दिलो, अवलीस इनो वकील ॥२४॥**

लअर्थ:—अजाजील—भगवान विष्णु मलकूत—वैकुण्ठ मे चौदह लोकों के तखत पर बैठा है यह सब दुनियाँ के हृदय में मन रूप से यापक होकर खुदा के मार्ग को मारता हैं अर्थात कुरान वर्णित इस्लाम मत से सब दुनियाँ को रोकता है और अवलीस—सैतान

इस विष्णु का मन ही सबों का वकील है २४।

सिनगार प्र० २३ **हुई लानत अजाजील को, सो उलट लगी सब जहान, अबलीस लिख्या दुनी नसले कही ये बिध माहे कुरान १३३।**

अर्थः—स्वामी जी कहते हैं कि कुरान में इस प्रकार कहा हुआ है कि विष्णु को खुदा ने लानत-अपराधी बनाकर धिक्कार दिया है दुनिया को विष्णु के बताये हुये मार्ग में चलने से वह लानत--धिक्कार उलट कर सब संसार को लगी है दुनिया के तकदीर भाग्य में तो यह सैतान विष्णु ही लिखा हुआ हैं ॥१३३॥

सिनगार प्र० २३ **अवलीस सोई बतावसी जिनसो होसी दोजख ।१४३।**

अर्थः—यह सैतान विष्णु का मन सब संसार को वही मार्ग बतायेगा जिससे सबको दोखज-नरक की अग्नि में जलना पड़े १४३। पाठक बन्धु उक्त चौपाइयों को ध्यान से अवलोकन करें कि प्राणनाथ ने किस प्रकार का समन्वयवाद स्थापित किया हैं। यहाँ विष्णु को लानत देकर धिक्कार दिया है तथा उन्हें सैतान बताते हुये वैदिक मार्ग में चलने वालों को दोजख की अग्नि में जलने को कहा गया है। इस प्रकार के कथन से ये समन्वयवादी नहीं सिद्ध होते।

अस्तु इन्होंने ब्रजरास वाले कृष्ण से अपना सम्बन्ध जोड़ कर हिन्दुओं से महान छल किया है। यदि ये ऐसा नहीं करते केवल महम्मद अल्लाह का ही उपदेश करते हैं तो आर्य सीधे सीधे इस्लाम में कैसे दीक्षित हो सकते हैं। अतः भोली भाली अशिक्षित नीच कौम को वर्गला कर कुछ कृष्ण चरित्र का जाल फैलाया है। हिन्दुओं

को इनकी छल विद्या से सावधान हो जाना चाहिये कृष्णोपाशक लवलेश मात्र नहीं सिद्ध होते। भारत का कोई भी विद्वान या मौलवी इनके ग्रन्थ को अद्योपान्त देखकर यह नहीं सिद्ध कर सकता कि ये हिन्दू मत के उपदेशक हैं।

इसी तरह इतिहासकार लालदास आठ पहर की वृत्ति नामक प्र० में लिखते हैं। वीतक प्र० १०

अग्यारे वरस बामन दिन, पीछे पोहोचे बृन्दावन। एक रात तहाँ रहे, फेर तीसरा ईंड उत्पन्न ॥८१॥ तहाँ रासलीला करके, आये अराब श्याम। त्रेसठ वर्ष तहाँ रहे, वायदा किया इस ठांम ॥८२॥ रूह अल्ला आये दशमी मिने, रहे बरष चौहत्तर ॥८३॥

अर्थ: – ११ वर्ष ५२ दिन की अवस्था में कृष्ण गोकुल में रहकर वृन्दावन पहुंचे एक रात्रि वहाँ रहे उसी रात्रि में तीसरा ब्रह्माण्ड उत्पन्न कर रास लीला किया रासक्रीड़ा खत्म कर वे कृष्ण अपने वायदे (शर्त) के अनुसार अरब देश चले आये वहाँ कृष्ण महम्मद के रूप में ६३ वर्ष रहे और सब काम अपना पूरा किया। फिर दशमी सदी में रूह अल्ला (निजानन्द संप्रदाय के प्रवर्तक देवचन्द्रजी) मे आये चौहत्तर वर्ष इस संसार में रहे।८३।

मीमांसक: – उक्त चौपाइयों के अनुसार जो इनका कथन है कि भगवान कृष्ण ११ वर्ष ५२ दिन बाद अरब देश चले आये और महम्मद के रूप में प्रगट हुये–इस विषय का इनके पास कोई प्रमाण नहीं है। क्योंकि इन सब बात को कुरान के मानने वाले इस्लाम मत के ही स्वीकार करते और न पौराणिक लोग ही स्वीकार करते। ऐतिहासिक दृष्टिकोण से भी इसकी प्रमाणिकता नहीं सिद्ध होती।

क्योंकि महाभारत काल में इस्लाम मत के प्रवर्तक महम्मद का जन्म नहीं पाया जाता । इतिहासकारों ने महंमद का जन्म अरबदेश के कुरेशी कबीले के अब्दुल्ला नामक व्यक्ति के यहाँ मक्का नगर में ५७० ई० में बताया है आज १९७२ ई० होने से उनका जन्म हुये १४०२ वर्ष व्यतीत हो चुका । इसी तरह हिजरी सन् भी वर्तमान में १३९२ चल रहा है जो केवल हिजरी सन् और ईशवी में १० वर्ष का अन्तर पड़ता है इसका कारण यह है कि हिजरी सन् चन्द्रमा के गति पर आधारित है और ईशवी सूर्य की गति पर आधारित है अत: इतिहासकार ने ५७० ई० में जो जन्म लिखा वह ठीक ही है । भागवत के आधार पर कृष्ण का जन्म द्वापर युग के अन्त में बताया जाता है राजा परीक्षित से कलियुग का प्रवेश होता है कलि-युग की आयु ४३२००० बताई गई है जिससे कलियुग की आयु आज व्यतीत हुये ५०७२ वर्ष हो चुके हैं कलियुग से पूर्व कृष्ण का जन्म होने से उक्त ८१।८२ चौपाई में जो दिखाया गया है कि भगवान कृष्ण ११ वर्ष ५२ दिन बाद रास खेल कर अरब देश मे महंमद के रूप मे प्रगट हुये इसकी संगति नहीं बैठती क्योंकि महंमद को अरब देश में जन्म लिए आज १४०२ वर्ष होते हैं उस समय कलियुग ३६७० वर्ष व्यतीत हो चुका था ३६७० वर्ष कलि के व्यतीत होने पर महंमद का जन्म सिद्ध होने से और कृष्ण का जन्म द्वापर के अन्त में होने से उक्त कथन कि ११ वर्ष ५२ दिन बाद कृष्ण अरब देश आकर महंमद के रूप में प्रगट हुये यह सर्वथा अप्रमाणित हो जाता है ।

दूसरा इन्होंने यह भी बताया कि वे महंमद अरब में ६३ वर्ष रहे बाद में दशमी सदी मे वे ही महंमद रूप अल्ला के रूप में देवचन्द्र होकर मारवाड़ देश में प्रगट हुये । देवचन्द्र का जन्म वि० संवत् १६३८ में बताया गया है महंमद के मृत्यु के बाद देवचन्द्र के जन्म में १३३८ वर्ष का अन्तर पड़ता है जिससे यह भी संगति नहीं बैठती

कि महंमद ही देवचन्द्र के रूप में प्रगट हुये। इनके जितने भी धार्मिक सिद्धान्त के मूलाधार हैं वे सब बनावटी पाये जाते हैं। यद्यपि यह कथन इनके लिये असह्य होगा ये कहेंगे कि हमारे धार्मिक सिद्धान्तों को बनावटी कहा गया है यदि इनके रुचि के अनुकूल यही सत्य मान लिया जाय कि अरब वाले महंमद ही मारवाड़ देश में देवचन्द्र नाम से जन्म लिये और उनकी मृत्यु के बाद वे प्राणनाथ में प्रविष्ट हो आखिरी महंमद के रूप में विख्यात हुये तो ठीक है इनका धार्मिक मूलाधार उक्त चौपाईयों के अनुसार स्वीकार किया जाता है कि बनावटी नहीं सत्य है। इन सिद्धान्तों के सत्य होने से निजानंद मतावलम्बियों को यह भी चाहिये कि वे अपने को आर्य हिन्दू न घोषित करें।

हिन्दुओं को दीक्षा न दें। कोई हिन्दू इनसे दीक्षा न ग्रहण करें यदि दीक्षा ग्रहण करता है तो वह अपने को हिन्दू न माने जिसका ऐसा विश्वास हो कि मुहम्मद खुदा और कुरान उसके लिये सब कुछ है और वह मोमिन है केवल उसी को इनके मत में दीक्षित होना चाहिये अतएव हिन्दू लोग अपने को धोखा और वँचना न दें।

अस्तु इनका परम लक्ष महंमद पर ही निर्दिष्ट करता है इन्हीं कारणों से वैदिक ग्रन्थों को प्रमाण रूप नहीं माना है क्योंकि भारतीय दर्शनों व पुराणों में इस्लाम मत का प्रमाण कहाँ से प्राप्त हो पुराणों में तो वैदिक सिद्धान्तों का ही प्रतिपादन है। भागवत एकादश स्कन्ध अध्याय ३ श्लोक ४५ में देखिये।

नाचरेद् यस्तु वेदोक्तं स्वयमज्ञोऽजितेन्द्रियः विकर्मणा ह्यधर्मेण मृत्यो मृत्यु मुपैति सः ४५॥

जो स्वयं अज्ञ अजितेन्द्रिय पुरुष वेदों में कहे हुये धर्मों का आचरण नही करते वे विकर्म रूप अधर्म से मृत्यु से मृत्यु को बार-बार प्राप्त

होते हैं। इसी तरह गीता शास्त्र भी वैदिक सिद्धांतों का ही प्रतिपादन करता है बल्कि उस सिद्धान्त को उल्लंघन करने वाले की निन्दा करता है। गीता अ० १६ **यः शास्त्रविधिमुत्सृज्य वर्तते काम कारतः न स सिद्धिमवाप्नोति न सुखं न परां गतिम् २३ ॥**

जो शास्त्रों के विधि वाक्यों को त्याग कर मन मानी करता है वह न तो सिद्धि को प्राप्त होता है और न परम गति (मोक्ष) को तथा न सुख को ही प्राप्त होता हैं। इस तरह कृष्ण के उपदेश को न मानने से इन्हें कौन कह सकता है कि ये कृष्ण उपासक हैं। वैदिक ग्रंथों का प्रमाण न मानना ही इनका कृष्ण का उपदेश इस्लाम मत में हिन्दुओं को दीक्षित करने का एक तरीका सिद्ध हो जाता हैं। इनके कोई भी सिद्धान्त वेद मूलक न होने से उक्त चौ० के अनुसार महंमद के ही उपाशक कहे जा सकते हैं।

इन्होने कृष्ण को केवल ११ वर्ष ५२ दिन पूज्य बताया बाकी विष्णु स्वरूप कह कर उसे अपूज्य और अनित्य बताया हैं *यह सर्वथा भागवत गीता शास्त्र विरुद्ध है। और लोक दृष्टि से भी न्याय संगत नहीं है क्योंकि लोक में भी यदि किसी व्यक्ति का कुछ काल तक के लिये पूजन किया जाय फिर बाद में उसी का तिरस्कार किया जाय तो उसका क्या परिणाम होगा यह स्वतः बुद्धिमान विचार कर सकते हैं। इन्होंने अपने स्वार्थ के लिये मन मानी कल्पना कर शास्त्रों के विधायक वाक्यों का अतिक्रमण किया हैं। स्वामी जी तो अपनी रचनाओं में लिखते हैं कि **(शास्त्र तो गोरख धंध)** इन्होंने शास्त्रों को गोरख धंधा बताया हैं। किन्तु भगवान कृष्ण उन्हीं शास्त्रों को प्रमाण रूप बताते हैं।

गीता अ० १६ श्लोक २४ **तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्या कार्य व्यवस्थितौ ज्ञात्वा शास्त्र विधानोक्तं कर्म कर्तु मिहार्हसि ।**

---

* विष्णु के अनित्य होने का प्रमाण आगे २० अध्याय मे देखिये।

अर्थ :—अय अर्जुन तेरे लिये कर्त्तव्य और अकर्त्तव्य की व्यवस्था में शास्त्र ही प्रमाण है ऐसा जान कर तू शास्त्र विधि से नियत किये हुये कर्म को ही करने के लिये योग्य है २४। भगवान ने कहीं भी शास्त्रीय मर्यादा को भंग नहीं किया। संप्रदाय के परम आदरणीय लालदास जी जो स्वामी जी के द्वितीय भुजा माने जाते हैं वे लिखते हैं। वीतक प्र० ४५ **वेद वंध की मरजादा ताको सिर भाना मोमिन ॥६६॥**

अर्थः – वेदों ने विधि वाक्यों द्वारा जो मनुष्य को बंधन में डाला है उसके मर्यादा रूप सिर को मोमिनों ने भंग किया है।६६। अस्तु इनकी समग्र रचनाओं में जहाँ कहीं भी देखा जाता हैं वहाँ सर्वत्र शास्त्रीय मर्यादा को वल पूर्वक ठुकराया है। इन कारणों से इन्हें कृष्ण उपासक नहीं कहा जा सकता। कृष्ण के सर्वाङ्गीण उपदेशों को मान कर उपासना करना ही उनकी वास्तविक उपासना है। अन्यथा ११ वर्ष ५२ दिन ही भर पूज्य मानना यह स्वामी जी का वागजाल मात्र है अशिक्षित व्यक्तियो को धोखा देना हैं। इस अध्याय में उद्धृत स्वामी जी की चौ० से स्पष्ट है कि ये अपने श्री कृष्ण को अवतार नहीं मानते उनमें स्वयं अपने तेज का प्रवेश मानते हैं सो भी ११ वर्ष ५२ दिन तक ही इसके बाद श्री कृष्ण से वह तेज निकल जाता है और श्री कृष्ण सामान्य मनुष्य हो जाते हैं इससे ता सिद्ध होता है कि श्री कृष्ण कोई चीज नहीं वे तो प्राणनाथ जी के हाँथ के खेलौना है जव इनकी इच्छा होती है तव उन्हें खुदा मान लेते हैं और जव इच्छा न हुई तो कृष्ण को आदम और अनित्य वना देते हैं। किन्तु हिन्दू धर्म के किसी भी संप्रदाय में भगवान श्री कृष्ण को ऐसा नहीं माना गया। गीता शास्त्रों से भी इनकी ये वाते प्रमाणित नहीं होती श्री कृष्ण आदि में पूर्ण ब्रह्म

अन्त में पूर्ण ब्रह्म और मध्य में पूर्ण ब्रह्म थे। कृष्णस्तु भगवान् स्वयम्। इन्होंने भागवत वर्णित कृष्ण की रास लीला का जो सहारा लिया है वह केवल दिखावटी मात्र है हाथी के दाँत देखने के और खाने के और होते हैं इनका रास लीला से कोई सम्बन्ध नहीं। इन्होंने अपने सम्पूर्ण ग्रंथ में कहीं भी वेद की प्रशंसा नहीं किया और कुरान महंमद की सर्वत्र प्रशंसा किया। विष्णु वेद और हिन्दुओं की संस्कृति की सर्वत्र निन्दा किया हैं। इनका तेज कृष्ण मे जाता है फिर वही महंमद और देवचन्द्र में आता है इसलिये प्राणनाथ का अवतार चाहे महंमद को मान लिया जाय अथवा खुदा व महम्मद का अवतार प्राणनाथ को मान लिया जाय इनकी वाणी मुहम्मद के रूप मे कुरान है और प्राणनाथ के रूप में तारतम वाणी जो इन्हें माने वह मोमिन अर्थात मुस्लिम भक्त। मीमांसक पूँछता है कि इस संप्रदाय में दीक्षित कोई भी हिन्दू क्या अपने को मोमिन मानने को तैयार हैं यदि वह मोमिन नहीं हैं तो वह खुदा के धाम में पहुँच नहीं सकता इस्लाम धर्म स्वीकार किये बिना मोमिन नहीं हो सकता इसलिये हिन्दुओं को इस धर्म में दीक्षित होना आत्म बंचना करना हैं।

इनका अवतार न मानने का खास कारण यही है कि स्वामी जी हिन्दू शास्त्रों के किसी भी सिद्धान्तों को नहीं मानते तो अवतार वाद में ही हिन्दू धर्म शास्त्रों से एकता कैसे हो। इस्लाम मत वाले खुदा का अवतार होना नहीं मानते बस उसी पक्ष का समर्थन इन्होंने भी किया हैं। इसी से तो कृष्ण में खुदा का जोस संचार कर कृष्ण को महंमद का रूप माना है। इसी तरह इन्होंने मूर्ति पूजा का भी निषेध किया है जिस कारण ये अपनी मस्जिदों में कृष्णादिकों की कोई मूर्ति नहीं रखते किन्तु यह भी केवल हिन्दुओं से विपरीतता

दिखाना मात्र है क्योंकि मस्जिद में मूर्ति न रखकर ताज किरीट आदि रखकर पूजा करने से भी मूर्ति पूजा सिद्ध हो ही जाती है। पाठकों यह ध्यान रखना आवश्यक है कि संसार में कोई कितना ही महान क्यों न बनता हो किन्तु हमें उसके पीछे अंधे होकर न चलना चाहिये।

इति निजानन्द मीमांसायामुत्तरार्ध भागे अवतारवाद वर्णनं नाम एकोनविंशोऽध्याय: १६।

अभ्यासार्थक प्रश्न

१—ईश्वर का अवतार होता है इस सिद्धान्त की पुष्टी कीजिये।

२—इनके अवतार न मानने का कारण स्पष्ट कीजिये।

३—यह प्रमाणित कीजिये कि देवचन्द्र व स्वामी जी बुद्धावतार नहीं है।

४—इन्होंने बुद्धावतार के सम्बन्ध में शुकदेव जी को उलझने के लिये क्यों कहा ?

५—कृष्ण रास क्रीड़ा कर अरब देश चले आये इस कथानक पर अपने विचार व्यक्त कीजिये।

अथ विंशोऽध्याय २०

समाज का स्वरूप

किसी भी समाज के संस्कृति का परिचय प्राप्त करना है तो सबसे पहले उसके साहित्य पर विचार करना आवश्यक हो जाता है। इस दृष्टि कोण को रखते हुये निजानन्द संप्रदाय के प्रवर्तक द्वारा

प्रणीत रचे गये कुछ साहित्य के वाक्यों को उद्धृत कर समाज के वास्तविक स्वरूप पर विचार किया जायगा। स्वामी जी ने अपनी अन्तिम रचना में मारफत सागर और क्यामत नामा दो ग्रन्थ लिखा है इसमे इन्होंने अपने मोमिन समाज के रूप का परिचय दिया है।

मारफत सागर प्र० ६ **हक फुरमान माहूक ल्याइया, कुंजी रूह अल्ला साथ। सो ईमाम खोले बीच अरस रूहों, जो एक तन सुनत जमात ॥७२॥**

अर्थ: खुदा के वर्णन किये हुये कुरान को महंमद ले आये हैं और उस कुरान के अर्थ को खोलने की कुंजी रूह अल्ला (देवचन्द्र) ले आये हैं उस कुंजी को देवचन्द्र से प्राप्त कर ईमाम (प्राणनाथ) जी सुनत जमात (सुन्नी मुसल्मानों का समूह जो धाम की ब्रह्म सृष्टियों के एक ही अंग है उनके सामने १८ हजार इलंम लुदंनी तारतम वाणी द्वारा अर्थ खोल रहे हैं ७२। मारफत सागर का अर्थ इन्होंने ज्ञान का सागर माना है इस ज्ञान सागर में सुन्नी मुसल्मानों और ब्रह्म सृष्टियों को एक ही बताया हैं।

क्यामय नामा बड़ा प्र० १ **खास उमत सो कहियो जाय, उठो मोमिनो क्यामत आय। केहेती हों माफक कुरान, तुमारे आगे करों बयान ॥१॥ जो कोई खास उमत सिरदार खड़े रहो होय होसियार। वसियत नामे देवे साख, अग्यारे सद्दी होसी वेवाक ॥२॥ वरकत दुनिया और कुरान, और फकीरों की मेहेरवान। ये दरगाह से आया बयान, जबराईल ले जासी अपने मकान ॥३॥ और तिन दिन होसी अंधा धुंध, द्वार तो वाके होसी वंध। ब्रह्मा होसी और खेस, तब**

कोई किसी का नाही खेस ॥४॥ अब कहो जो बाकी क्या रह्या, निसान क्यामत का जाहेर कहा। पातसाही ईसा वरस चालीस, लिखा सिपारे अठ्ठाईस ।५॥ क्या हिन्दू क्या मुसल्मान, सब एक ठोर ल्यावे ईमान। सो क्या होसी उठे कुरान, ये विचार देखो दिल आन ॥६॥ नव से नवे हुये बितीत, तब हजरत ईसा आये इत। सो लिखा सिपारे अग्यारे माहे, मैं खिलाफ बात कहूँगी नाहे ॥७॥ रूह अल्ला पेहेने जामे दोय, ये लिखा कुरान में सोई होय। ये लिखा छठे सिपारे माहे, धोखा वाला जाय देखे ताहे ॥८॥

अर्थः – मैं कुरान के अनुसार ही तुम मोमिनों के आगे वर्णन कर रहा हूँ खुदा ने लिख भेजा है कि जो लाहूत की खास उमत (सुन्नी मुसल्मान) हो उनसे जाकर कहो कि अय मुसल्मानों अब जागृत हो उठो क्यामत का समय आ गया है १। जो कोई लाहूत के खास उमत होवें सावधान होकर खड़े रहे मैं वसियतनामे की साक्षी देकर कह रहा हूँ कि ग्यारहवीं सदी (क्यामत के समय) में सबों का निर्णय होगा २। ये खुदा के घर से व मक्का से वर्णन आया है कि दुनिया और कुरान की बरकत (महिमा) को और फकीरों की दया को जबराईल अर्थात विष्णु अपने मकान हर लेजायगा। ३ उस समय संसार में और ही समय आ जायगा खुदा के घर का दरवाजा विष्णु के लिये बंद हो जायगा ऐसे अंधाधुध के समय कोई किसा का साथ नहीं देगा ४। इस तरह क्यायत का चिन्ह कुरान में जाहेर कहा है अब कहने को बाकी ही क्या रह जाता हैं कुरान के अठ्ठाइसमे सिपारे मे लिखा है कि ईसा (देवचन्द्र प्राणनाथ) ४० वर्ष

तक बादशाही करेंगे ५। सभी हिन्दू और मुसलमान एक ईसा रूप प्राणनाथ पर ईमान ले आवेंगे। विष्णु के द्वारा कुरान की बरकत उठने से क्या होता है इन बातों को हृदय से विचार कर देखो ६। महंमद साहब को इस लोक से गये हुये ९९० वर्ष व्यतीत हो चुके तब ईसा अर्थात् (देवचन्द्र) ने अवतार लिया यह कुरान के ११ सिपारे मे लिखा हुआ है मैं प्राणनाथ खिलाफ वचंन नहीं कह रहा हूँ ७। अल्लाह की रूह देवचंद्र ने इस संसार में आकर दो प्रकार के जामे-वस्त्रविशेष-अर्थात् शरीर को धारण किया है (एक देवचन्द्र रूप दूसरा प्राणनाथ रूप) यह कुरान के छठमे सिपारे में जो लिखा हुआ है वही हो रहा है। जिसे संदेह हो वह कुरान में देख लेवें ८। क्यामतनामा प्र० ५।

लिख्या माहे नामे नूर, जाय देखों महंमद का जहूर आरफ कहावे मुसल्मान, पावे नाही हिरदा कुरान ॥१॥ महंमद मुरग कह्या आसमान, ये नीके कर देऊँ पेहेचान। इन मुरग ने किया गुसल, धोये पर अरक निरमल ॥२॥ तिन मुरग ने झटके अपने पर, ता बूंदों के भये पेगम्बर। एक लाख भये बीस हजार, जियो पेगाम दिये सिरदार ॥३॥ कलाम अल्ला की तो येह नकल, देखो दुनिया की अकल। महंमद को कह ही औरो समान, इन दुनिया की ये पेहेचान ॥४॥ जो कहावे महंमद के बंदे, सो भी न चीन्हे हिरदे के अन्धे। कहावे जाहेरी मुसल्मान, गिने महेंमद को औरो समान ॥५॥ किन खोले न कबूं कुरान पावे न हकीकत करे बयान। पढ़े आलम आरफ के जन, पर

एक हरफ न खोल्या किन ॥३२॥ अब देऊँ दरवाजे खोल, कहूँ हकीकत वातून बोल। जासो जाहेर होवे मारफत, दिन पाइये रोज क्यामत ॥३३॥

अर्थ – नूरनामे मे लिखे हुए महम्मद के तेज को देखो मुस्लिम जो आरफ (विद्वान) कहलाते हैं ये कुरान के गुह्य अर्थ को नहीं पाते १ और महम्मद को जो आसमान का मुर्ग कहा गया है इसे भी अच्छी तरह पहचान कराये देता हूँ इस महंमद रूप मुर्ग ने क्रोध किया और जल से पैरो को साफ कर इसने अपने पैरों को झटका उन्हीं बूँदों से एक लाख बीस हजार पेगम्बर पैदा हुए जिन्होंने खुदा के पेगाम (संदेश) को पहुंचाया है २।३। यह दुनिया की अकल को देखो ये तो कलाम अल्ला की नकल करते हैं महंमद को जो और अवतारों के समान कहा करते हैं यह दुनियावी मनुष्यों (जीवसृष्टि) अर्थात् हिन्दू की पहचान है ४। जो महंमद के भक्त कहलाते हैं और अपने को जाहरी मुसलमान कहा करते हैं वे भी हृदय के अंधे महंमद को नहीं पहचानते इनकी अन्य पेगम्बरों के साथ गणना करते हैं ५। किसी व्यक्ति ने कभी भी कुरान के अर्थ को नहीं खोला उसके हकीकत को न पाकर वर्णन किया है संसार में बहुत से मौलवियों ने कुरान को पढ़ा किन्तु इसके एक शब्द के अर्थ को भी कोई न खोल सका ३२। अब मैं उन सब दरवाजो को खोलकर गुह्य शब्दों की हकीकत को कहूँगा जिससे ज्ञान का प्रकाश होगा और क्यामत का दिन प्राप्त होगा ३३। क्यामत नामा प्र० ६

हो सैयां फुरमान ल्याये हंम, आये वतंन से वास्ते तुम इनमें खवर हे तुमारी, हकीकत देखो हमारी ॥१॥ सिफत रसूल

अल्ला कलांम, रुह अल्ला ईसा पाक ईमाम । कही खास उमत महंमद, जाकी सिफत को न पोहोचे शब्द ॥२॥ सोई कहूँगी जो लिखा कुरान, शब्द न काढ़ूँ बिना फुरमान । या तो कहूँ महंमद हदीस, भला मानो या करो रीस ॥३॥ दे साहेदी कहूँगी हक, सो देखो कुरान जाय होवे सक । अबलो जाहेर थी सरियत खोले मायने वातून हकीकत ॥४॥

अर्थ:—प्राणनाथजी कहते हैं अय सखियों (मोमिनो) कुरान मैं ले आया हूँ और खुदा के धाम से तुमारे लिये ही आया हूँ इस कुरान में तुम्हारी खबरो तथा हमारी हकीकतों का वर्णन है १ इसमें रसूल अल्ला कलाम[१] रुह अल्ला ईसा[२] पाक ईमाम[३] की बड़ाई का वर्णन है और महंमद को खास उमत अर्थात् खुदा के लोक में रहने वाली मोमिन सृष्टि जिसकी बड़ाई के लिये कोई शब्द नही पहुंच पाता २। मैं वही कहूँगा जो कुरान में लिखा हुआ है बिना कुरान के एक शब्द भी मुख से नही निकाल सकता या तो महंमद के हदीसों[४] का वर्णन करूँगा चाहे कोई भला माने या बुरा माने ३। मैं तो खुदा की साची देकर कह रहा हूँ जिसे इन विषयों में संदेह होवे वे कुरान को देखे इतने दिनों तक सरियत का मार्ग जाहर था किन्तु अब गुह्य अर्थ के खोले जाने से हकीकत मार्ग भी खोल दिया गया है ४। मारफत सागर प्र० ९ चौ० २१

कहयादज्जाल असवार गधे पर, कॉना आँख न एक । हक को न देखे आँख जाहेरी, रूह नजर न वातून नेक

---

१ महंमद २ देवचन्द्र ३ प्राणनाथ ४ हदीस कुराने के अर्थ को खोलने वाले मुसलमानों का एक ग्रन्थ

२१॥ अजाजील काना तो रानिया जो वातून नजर करी रद । देख्या ऊपली आँख सो, आदम वजूद गलद २२ ॥ गधा बड़ा दज्जाल का, कह्या ऊँचा लग आसमान । पानी सात दरियाव का, पोहोच्या नहीं लगरान ॥३॥

अर्थ-स्वामीजी कहते हैं कि दज्जाल अर्थात बिना इमान वाला विष्णु मनरूपी गदहे पर असवार कहा गया है यह एक आँख का काना होने से खुदा को जाहेरी आँख से नहीं देखता इसमें आत्म दृष्टि नहीं है जिससे गुह्य ज्ञान प्राप्त हो। अजाजील१ विष्णु काँना और वहिश्त से तिरस्कृत है जो दुनियाँ के आन्तरिक ज्ञान को नष्ट कर दिया है इसने वाह्य आँखों से ही देखा है इस आदम विष्णु का शरीर नश्वर है २। इस दज्जाल धर्महीन अर्थात ईमानहीन विष्णु का मन रूपी गदहा आसमान तक ऊँचा है सातों समुद्रों का पानी इसके घुटने तक नहीं पहुँच पाता ३। (स्वामीजी ने विष्णु के मन को प्रत्येक प्राणियों के मन में व्यापक माना है वह विष्णु का मन खुदा के मार्ग को रोकता है जिससे खुदा की पहचान किसी को नहीं हो पाती) तात्पर्य यह निकला कि इनके सम्प्रदाय में हिन्दुओं का विष्णु मोमिनो के लिए खुदा की प्राप्ति में अंतराय एवं वाधक है।

मारफत सागर प्र० ८

कह्या मगरब ऊगसी सूरज, दुनिया के दिल पर। नाही रोसनी तिन मे, तब होसी वखत आखर ॥४५॥ सूरज ऊग्या मगरब दिलो, कह्यारोसन नाहीतित। तो अकस सूरज की अँधेरी, सो गया ईमान रही जुलमत ॥४६॥ मारफत सागर प्र० ८। कहे आजूज माजूज, जाहेर होसी

आखर। खायजासी सबंन को, ऐसा होसी वखत फजर ॥५२॥ दीवाल कही अष्ट धात की, चाटे आजूज माजूज दायंम। पीछे रहे जैसी कागद, सुभा देखे त्योही कायम ॥५३॥ आजूज माजूज जुफ्त, गिनती लाखचार। सब पी जासी दुनिया पानी ज्यो, टूटे दीवाल न रहे लगार ॥५४॥ मारफत सागर प्र० ६ चारो निसान ये कहे, और देखो कहे जो तीन। ईसा ईमाम असराफील, जिन खड़ा किया झंडा दीन ॥१॥ निसान लिखे दिन क्यामत, सो तो रखे हक हादी हाँथ। या हादी खोले हक इलमे, या खोले सुन्नत जमात ॥२॥ तो लिख्या जाहेर कर, इतथे उठ्या झंडा नूर। खड़ा किया बीच हिन्द के, हुआ आसमान जिमि जहूर ॥३॥ निसान लिखे सो सब मिले, जो क्यामत के फुरमाय। तायनफा न देवे तोवा पीछली, जो अव्वल झंडे तले न आय ॥४॥

अर्थः—कुरान मे कहा है कि जब आखर (क्यामत)का समय आयेगा उस समय दुनियाँ के दिलोंपर पश्चिम में सूर्य उदय होगा किन्तु उसमें प्रकाश नहीं होगा ४५। वही कहा हुआ दुनिया के दिलो पर सूर्य उदय हो चुका है उसमें प्रकाश न होने से उसकी अक्स (आकृति) अँधेरी है जिससे सबका ईमान चला गया जुलमत[1] मात्र अवशेष रह गया है ४६। और आखर क्यामत के समय में जब फजर (प्रातःकाल) का समय होगा तब आजूज माजूज नाम के दो दानव जाहेर होंगे वे सबको खा जाँयेगे ५२। और अष्ट धातु की दीवाल कही गई है जिसे आजूज माजूज हमेशा चाटेंगे उसका पिछला भाग कागद जैसा

१—अज्ञान

रहेगा किन्तु उन्हें ऐसा संदेह होगा कि यह दीवाल ज्यों की त्यों बनी है आजूज माजूज की गणना चार लाख की गई है ये सब दुनिया को पानी की तरह पी जायँगे वह दीवाल भी. टूट जायगी रह नहीं सकती ५४। इस तरह क्यामत के चारो निशान (चिन्ह) कहे गये हैं और जो क्यामत के तीन निशान और भी कहे गये हैं उन्हें देखिये ईसा ईमाम और असराफील जिन्होंने इस्लाम मत का झंडा खड़ा किया। १ ये जो क्यामत के समय के चिन्ह कुरान में लिखे हुए हैं उन चिन्हों को खुदा के इल्म के द्वारा हादी (खुदा की पत्नी) या सुन्नी मुसलमान (ब्रह्मसृष्टि) ही खोल सकते हैं। २ और यह भी जाहेर कर कुरान में लिखा हुआ है कि अरब से महंमदी नूर झंडा उठाकर हिन्दुओं के बीच खड़ा किया गया है जिस झंडे का प्रकाश पृथ्वी और आकाश में सर्वत्र छा गया है ३ इस तरह क्यामत के चिन्ह जो कुरान मे कहे गये हैं वे सब मिल चुके हैं जो सबसे पहले इस महंमदी झंडे के नीचे नहीं आता उसे किसी प्रकार का लाभ नहीं होगा उसे पश्चाताप करना पड़ेगा क्यामत के सात निशानो का स्पष्टीकरण निम्न है—

१ काना दज्जाल (विष्णु) गदहे पर सवार होकर आयेगा उसे प्राणनाथ मारेंगे। २ पश्चिम से सूर्य उदय होगा उसमें प्रकाश नहीं होगा। ३ अरब से महंमदी नूर झंडा उठकर भारत में हिन्दुओं के बीच गाड़ा जायगा। ४ आजूज माजूज प्रगट होकर अष्ट धातु की दीवाल को चाटा करेंगे। ५ कब्र मुर्दे. उठेंगे उनका न्याय किया जायगा ६ दाभतुल अर्ज पैदा होगा उसे ईमाम मेहदी (अर्थात प्राण-नाथ) ठिकाने लगायेंगे ७ असराफील सूर फूँकेगा।

मीमांसक:—स्वामीजी की प्रतिपादक रचनाओं मे मारफत सागर और क्यामत नामा ये दोनों सिद्धान्त के ग्रंथ हैं इन ग्रंथों

में इन्होंने स्वसम्प्रदाय की वास्तविकता को प्रगट किया मुमुक्षुओं के लिए जिस धाम के लिये प्रेरित किया है उस धाम में रहने वाले खुदा के वर्णन किये हुये कुरान को महंमद ले आये हैं उसके गुह्य अर्थ खोलने की कुंजी रूह अल्ला (देवचन्द्र) ले आये हैं। उस कुंजी से मैं आखरी महम्मद सुन्नी मुसलमानों के बीच जो धाम की ब्रह्म सृष्टियों के एक मात्र अंग हैं उनके सामने मैं (प्राणनाथ) खोल रहा हूँ। क्यामत नामा प्र० ६ चौ० १ में स्पष्ट कहा गया है कि अय सखियों इस कुरान का पहले मैं (प्राणनाथ) ही ले आया था इस कथन से अरब वाले महम्मद से इन्होंने अपनी अभिन्नता दर्शाया है और मारफत सागर प्र० १२ चौ० ७२ में अपने को सुन्नी मुसल्मान घोषित किया है। इन्होंने अपनी अपनी रचनाओं में यह कहीं नहीं कहा कि मैं हिन्दू हूँ। जिस तरह सम्राट औरङ्गजेब अपने शासन काल मे सारे भारत को इस्लाम धर्म मे परिवर्तित करना चाहता था उसी तरह स्वामी जी हिन्दुओं के सामने कृष्णोपासना का वाह्याडंबर रचकर और हिन्दी में अपना कल्पित प्राणनाथ नाम रखकर सारे भारत में इस्लाम मत की स्थापना करना चाहते थे। जिस तरह सुल्तान सुन्नी मुसल्मानों का पक्षपाती था उसी तरह ये भी सुन्नी समाज जिसे ब्रह्म सृष्टि शब्द सम्बोधित किया गया है उसके कट्टर पक्षपाती थे। क्योंकि इन्होंने अपने प्रत्येक ग्रंथ में सुन्नी मुसल्मान (ब्रह्म सृष्टि) की स्थल स्थल पर प्रशंसा करते हुए उन्हें लाहूत का निवासी बताया है। धार्मिक दृष्टिकोण से उसी स्वर्ग रूप लाहूत में मुमुक्षुओं को पहुंचने के लिये प्रेरित किया है। पिछले अध्यायों में बताया जा चुका है कि बिना सम्बन्धी उस लाहूत में कोई नहीं पहुंच सकता वहाँ पहुंचने की कोशिश करने पर भी जब विष्णु तक के भी पैर जलने लगते हैं तो अन्य जीवों की गति वहाँ कैसे हो सकती है क्योंकि अन्य सभी हिन्द जीव असत

विनाशसील है। अतः वहाँ के सम्बन्धी सुन्नत जमात (ब्रह्म सृष्टि) ही लाहूत में पहुंच सकते हैं।

स्वामी प्राणनाथ जी भारतीय आर्यों को नीचा दिखाने और सुन्नी मुसल्मानों की सर्वोच्च प्रतिष्ठा करने मे ही इनके साहित्य की सफलता देखी जाती है क्योंकि इनकी तारतम वाणी मे इन विषयों पर व्यापक प्रकाश डाला गया है। पहले ऋषि मुनियों के सम्बन्ध में इनकी रचनाओं को देखिये।

सनंध प्र० २५ **हुये जो ज्ञानी अगुये, जिन लिये मायने वेद। सो ज्ञान हिन्दुओ आड़ा पड़ा, हुआ बड़ा छल भेद।३७।**

अर्थः—धर्म पथ प्रदर्शक ऋषि मुनि जो सबसे पहले हुये हैं जिन्होंने वेद धर्म को अपनाया है वह वेद ज्ञान भारतीय आर्यों के लिये सद्गति का अवरोधक होकर बड़ा ही छल (धोखा) देने वाला और हिन्दू मुसल्मानों मे भेद (फूट) डालने वाला हुआ। सनंध प्र० २५ **सो सत शब्द के मायने, ले न सक्या कोय। डूबे हिन्दू स्यानपे, सो गये प्यारी उमर खोय ॥३८॥**

अर्थः—कुरान में वर्णित सत शब्द के अर्थ को कोई हिन्दू नहीं ग्रहण कर सका जिस कारण स्यानपे-सयाने ऋषि मुनि अवतारादिक अपनी प्रिय उम्र को नष्ट कर डूब गये। उक्त चौपाइयों में प्राचीन महापुरुषों के लिये नीचा दिखाने में किसी प्रकार की कमी नहीं रक्खा है। अब निम्न चौ० को देखिये कि अपनी जातीयता को ऊँचा उठाने में आकाश को स्पर्श किया हैं। खुलासा प्र० १३ **चरन रज ब्रह्म सृष्टि के, ढूढ़ थके त्रैगुन। कै विध करी तपस्या, यो केहेवत वेद वचंन ॥५५॥**

अर्थ:—वेदों में ऐसा कहा हुआ है कि सुन्नी मुसल्मान-मोमिन समाज की चरण धूलि को खोजते खोजते त्रैगुण अर्थात हिन्दुओं के त्रिदेव ब्रह्मा विष्णु महेश थक गये उक्त तीनों देवता मोमिनों की उस चरण रज पाने के लिये बहुत प्रकार की तपस्या भी किया फिर भी सुन्नी मुसल्मानों की वह दुर्लभ चरण रज इन्हें प्राप्त नहीं हो सकी। यदि वेद-वाक्यों में उक्त प्रकार लिखा था तो स्वामी जी को प्रमाण लिखना चाहिये था ऐसा न करने से केवल मूर्खों को ठगने के लिये भूठी बाते लिखी गई हैं। स्वामी जी के साहित्य में इसी प्रकार की ज्ञान की गौरवता है। पाठक बन्धु अपनी सत् बुद्धि से विचार करें कि इन्होंने अपनी जातीयता के महिमा वर्णन में वेद सम्मत हिन्दुओ के उपास्य त्रिगुणात्मक सगुण ब्रह्म को कितना नीचा दिखाया है। ऐसी इनकी रचनाओं को देखते हुये भी जिन हिन्दू प्रणामियों को ऐसा विश्वास है कि स्वामी प्राणनाथ के सिद्धान्त हिन्दू धर्म मूलक हैं उनकी समझ के लिये कहा ही क्या जा सकता है। भारतीय ऋषि मुनि २४ अवतारों ने जो वेद मार्ग को अपनाया है वह वेद ज्ञान उनके सद्‌गति का अवरोधक धोखा देने वाला भारत में फूट पैदा करने वाला है इस प्रकार स्वामी जी के बचन से स्पष्ट है कि हिन्दुओं को वेद धर्म छोड़ देना चाहिये। और उन्तालीसमी चौ० के अनुसार कुरान में वर्णित सत शब्दों के अर्थ को ग्रहण करने के उपदेश से भी स्पष्ट है कि भारतीय आर्यों को इस्लाम मत ग्रहण कर लेना चाहिये।

अस्तु इन विषयों का निर्णय इस पुस्तक के पढ़ने वाले भारतीय आर्यों पर छोड़े देता हूँ।

मारफत सागर प्र० ६ **जब हके झंडा नूर महंमदी, बीच खड़ा हुआ हिन्द के। तब अकस नूर ईमान का, रहया अंधेर कुफर पीछे ॥७॥**

अर्थ:—जब हके=प्राणनाथ ने नूर महंमदी झंडे को हिन्दुओं के बीच खड़ा किया तब अज्ञान रूपी अंधेरा हट कर धार्मिक तेज का अक्स छा गया ७।

मीमांसक उक्त चौ० के अनुसार महंमदी झंडा खड़ा करने पर हिन्दू भी इस झंडे के नीचे आये। और स्वामी जी के मृत्यु के बाद मुसलमान इनकी संप्रदाय मे दीक्षित नहीं हुये हिन्दू दीक्षित होते रहे। इनकी समाज दो तरह की है एक फकीर समाज दूसरी गृहस्थ जो फकीर वर्ग का समाज है वह धणी जी की आज्ञा अनुसार इस्लाम पथ का अनुसरण करता है और उसी अनुकूल गृहस्थ वर्ग को भी प्रेरित करता है किन्तु हिन्दुओं मे विभिन्न जातियों के कारण गृहस्थ वर्ग में अपनी पूर्व जातीयता की झलक अभी तक अवश्य दिखाई देती है वे पूर्ण रूपेण लोकापवाद के भय से उस पथ का अनुसरण नहीं कर पाते। गृहस्थ वर्ग में ६० प्रतिशत ऐसे व्यक्ति हैं जिन्हें सांप्रदायिकता का किञ्चित भी ज्ञान नहीं है जिससे हिन्दुओं मे मिले जुले दिखाई देते हैं।

धार्मिक उपासना काल में दोनों वर्गों में समानता पाई जाती है। धणी जी की आरती करते समय निम्न चौ० द्वारा दोनों ही स्तुति करते हैं। **आरती आखरी ईमाम की गाइये, जाको नाम लिये सुख पाइये। पेहेली आरती करूँ महंमद सिर, जासे कुरान ल्याये हैं उमत पर ॥१॥ दूसरी आरती ईसा रूह अल्ला, जासे चौदे तवक भये सल्ला। 'तीसरी आरती करूँ तारतम की, जासे रोसनाई भई है अंदर की ॥२॥**

अर्थ:—आखरी ईमाम अर्थात महंमद रूप प्राणनाथ की आरती करते हुये उनके यश का गान करना चाहिये जिनके नाम लेने मात्र से आनन्द प्राप्त होता है सबसे पहले अरब वाले महंमद की आरती

करता हूँ । जिसने ब्रह्म सृष्टियों के लिये कुरान ले आये हैं । दूसरी आरती ईसा रूह अल्ला रूप देवचन्द्र की की जाती है जिसमें चौदह लोक पवित्र हो जाते हैं । तीसरी आरती तारतंम वाणी अर्थात जिसमें कुरान के सिद्धान्तों का सम्यक प्रतिपादन किया गया हो व कुरान के गुह्य अर्थों का प्रकाशन किया गया हो उसकी की जाती है उस तारतम ज्ञान से अन्तःकरण मे प्रकाश फैल गया है । इनके देवालयों मे कहीं भी हिन्दू देवताओं के पूजा का विधान नहीं है जो लोग इस भ्रम में पड़े हुये हैं कि इनके मंदिरों में कृष्ण का मुकुट हैं और ये कृष्णोपाशक हैं उनका यह भ्रम उपर्युक्त आरती पूजन के वचनों से दूर हो जाना चाहिये वह मुकुट महंमद के सिर को अलंकृत करने वाला है । स्वामी जी ने प्रत्येक जगह महंमद की ही उपाशना करने को कहा हैं । खुलासा प्र० ५ **लिखा है फुरमान में, खुदा एक महंमद बर हक तिनको काफर जानियों, जो इनमे ल्यावे सक ॥१२॥ खुलासा प्र० ६ जो इन पर यकीन ल्याईया, तायभिस्त होसी वेसक । जो इन बातो मुनकर, ताय होसी आखर दोजख ॥१०॥**

अर्थः—स्वामी जी कहते हैं कि कुरान में लिखा हुआ है कि खुदा एक महंमद वर हक ही है उनको धर्म हीन समझना चाहिये जो महंमद के खुदा होने में संदेह करता है १२ जो इस महंमद पर खुदा होने का विश्वास करेगा उसको निःसंदेह भिस्त (मोक्ष) होगा और जो इन विषयों से उदासीन रहेगा अर्थात ध्यान नहीं देगा उसे आखर—क्यामत के समय दोजख—नरक की अग्नि में जलना पड़ेगा १० । इन्होंने तो अपने मत की अभिन्नता इस्लाम मत से ही दिखाया है, वैदिक मत से नहीं । उसे तो पद पद पर ठुकराया है स्वामी जी के बाद लोगो ने लोक निन्दा भय से मोमिन समाज सुन्नत

जमात का नाम कृष्ण प्रणामी धर्म रख लिया। स्वामीजी की कृतियों में व लालदास की कृतियों में कहीं भी प्रणामी धर्म नहीं लिखा हुआ है। अस्तु उक्त पूजन पाठ से आखरी ईमाम=महंमद रूप प्राणनाथ की तथा ब्रह्म सृष्टियों के लिये कुरान ग्रन्थ को ले आने वाले महंमद की व ईसा रूह अल्ला रूप देवचन्द्र की आरती का स्पष्ट वर्णन है। उक्त तीनों स्वरूप जब एक में मिल जाते हैं तब प्राणनाथ रूप राज जी का सम्पूर्ण अवयव तैयार हो जाता है।

दूसरी आरती का नमूना देखिये। किरंतन प्र० ५६ **भई रे नई नवो खंढो आरती, श्री विजायभिन्दन बुद्ध की आरती। सखी प्रेम मगन हो उतारती, आप पिया पर वारती ॥१॥ सेन्या सहित आये त्रिपुरार, आए ब्रह्मा वेद पढ़त मुख चार विष्णु बोलत वाणी जै जै कार ॥७॥ आये धर्म राज और इन्द्र वरुण, नारद मुनि गंधर्व चौदे भवंन। सुर असुरो सबो लई सरंन ॥८॥ आये सनकादिक चारोथंभ, लिये खड़ विष्णु ब्रह्मांड। जो ब्रह्म अनभवी हुये अखंढ ॥९॥**

अर्थः—विजय की पताका फहराने वाले बुद्ध (आखरी महंमद) अर्थात प्राणनाथ स्वामी की भारतवर्ष के नवो खंडों में नवीन आरती हुई सखियाँ (रूहे) प्रेम में मग्न हो आरती उतार रही हैं अपने आपको प्रियतम अर्थात प्राणनाथ पर निछावर कर देती हैं उस आखरी महंमद की आरती में अपने गणों के सहित शंकर जी तथा चारों मुख से वेद पढ़ते हुये ब्रह्मा जी व जयध्वनि करते हुये विष्णु जी धर्मराज इन्द्र वरुण आदि हिन्दुओं के सभी देवता तथा नारद मुनि गंधर्व आदि मोहम्मद के गुणों का गान करते हुये उपस्थित हुये चौदह लोको के जितने सुर असुर थे उन सबों को

आखरी महम्मद रूप बुद्ध ने अपनी शरण में ले लिया और चारो सनकादिक जो ज्ञान के स्तम्भ माने जाते हैं उन्होंने भी आरती में भाग लिया ब्रह्माण्ड को धारण कर आरती में खड़े हुये विष्णु भगवान को उस समय प्राणनाथ पर अखंड ब्रह्म का अनुभव हुआ।

मीमांसक:—उक्त चौपाइयाँ स्वामी जी की ही बनाई हुई है जो अपनी इतनी प्रशंसा कर रहे हैं यदि आपको बुद्धावतार बनना था तो इन सब पाखंडों को छोड़ कर वैदिक ग्रन्थों का अध्ययन करते और तदनुकूल वैदिक धर्म का प्रचार करते जैसा कि शंकराचार्य रामानुजाचार्य आदि बड़े बड़े विद्वानों ने वैदिक ग्रन्थों पर अपने अपने भाष्य लिख कर वैदिक मत का प्रचार किये हैं। यदि इसी तरह आप भी करते और अपने भगवत उपाधि के लिये चाहे बुद्ध ही घोषित करते तब भले ही आप पर हिन्दू विश्वास कर लेते कोई आपत्ति नहीं थी किन्तु आपके हृदय में संदेह है कि कोई एक तरीके से नहीं मानता तो दूसरा तरीका अपनाने से शायद मान ले आपका कोई निश्चित सिद्धान्त नहीं है कहीं अपने को महंमद कहीं कृष्ण बुद्ध कल्कि आदि बताते हैं। इस तरह अनेक भ्रान्तमय ज्ञान होने से सभी बाते बनावटी और मिथ्या हो जाती हैं।

आपने जिस प्रकार उक्त प्रकार की आरती लिखी है उससे हिन्दुओं को आपकी बुद्धिमत्ता का परिचय मिल जाता हैं ब्रह्मा, विष्णु, महेशादि आखरी महंमद की आरती करने के लिये खड़े हैं इस प्रकार का कथन इस्लामियों के अलावा दूसरा कौन कह सकता है। किस व्यक्ति ने देखा है कि आपकी आरती करने के लिये हिन्दुओ के सर्व देवता आये हैं। आप एक 'मानव जाति औरंगजेब को अपने आधीनस्थ करने के लिये अथक परिश्रम किया जिसका परिणाम यह निकला कि आपके पेगाम देने वाले मोमिनो को

गिरफ्तार कर लिया और आप उसके भय के मारे इधर उधर छिपते रहे। अंत में जंगली क्षेत्र मे आकर पन्ना राज्य के छत्रसाल की शरण ले आत्म रक्षा की जब एक मानव जाति को अपने आधीन करने की शक्ति आप में नहीं पाई गई तो आपने इन अदृष्ट देवताओं को अपने अधीन कर लिया यह कैसे विश्वास किया जा सकता है। ऐसी कल्पित मिथ्या बातों का विश्वास उसी समाज ने किया हैं जो आप के साथ में रहने वाले अशिक्षित हीन वर्ग के मनुष्य जैसे तेली घाँची कलार ढेंढ़ और मुसल्मानों में भी निम्न कोटि के मनुष्य थे। पन्ना नगर में या जिले के अंदर एक भी व्यक्ति आप के संप्रदाय मे दीक्षित नहीं हुये वहाँ का प्रत्येक व्यक्ति इस समाज को उपेक्षणीय दृष्टि से देखता रहा। वर्तमान मे रीवा राज्य के यत्र तत्र ग्रामो में जो यह समाज दिखाई देता है वह १०० वर्ष से पूर्व का नहीं है यहाँ प्रणामी समाज का रूप देने मे एक ब्राह्मण साधु के श्रम का फल हैं। किन्तु उसने भी स्वामी जी की वास्तविकता को छिपाया है उस साधु सम्बन्धी उपदेश की यह भी जन श्रुति है कि वे अपने शिष्यों को पन्ना आदि तीर्थों में जाने के लिये रोकते थे। इसका खास कारण यही था कि शिष्यों के वहाँ जाने से उनको रहन सहन देख कर इन्हें संदेह हो जायगा। इसी तरह स्वामी जी के बाद जहाँ कहीं भी इस समाज का विकास हुआ वहाँ सर्वत्र इस्लाम मत को छिपाकर हुआ। समाज उसी अंध परम्पराओं अंधविश्वासो पर घसिटती जा रही हैं उसे धर्म कर्म के वास्तविकता से क्या प्रयोजन गुरु जी आये स्वागत से सत्कृत हो दक्षिणा प्राप्त कर अपने स्थान को वापस हुये उन्हें अपने उद्देश्यों का खुद पता नहीं, अंधविश्वास समाज क्या करे।

जिस परम तत्व विष्णु के लिए वेदों का कथन है (**यतो वाचा निवर्तन्ते अप्राप्य मनसा सह**) जहाँ से वाणी लौट आती है और जो मन में भी अप्राप्य है **(अक्षरात्परतः परः)** जो प्रकृति से भी पर है जो आदि अन्त मध्य रहित है जो समस्त विश्व का कारण है जिससे पर भिन्न तत्व कोई नहीं जिसे बड़े-बड़े योगी अपने हृदय में ध्यान करते हैं ऐसे परात्पर ब्रह्म विष्णु को स्वामी जी ने अपने किरंतन ग्रन्थ में लिखा है कि वह हमारी आरती में सेवा देने के लिये खड़ा था हमारा दर्शन करने पर उसे अखंड ब्रह्म का अनुभव हुआ। इस तरह के मिथ्या वादों से इनका ग्रन्थ परिपूर्ण है (अति सर्वत्र वर्जयेत् इस नीति के अनुसार इन्होंने असत्य भाषण करने में अन्त कर दिया। यद्यपि इन्होंने सर्वत्र असत्य भाषण किया है किन्तु कुछ उदाहरण पेश किये जाते हैं इनकी सांप्रदायिक बुनियाद का खास कारण रूहे लाहुत धाम मे विशेष अज्ञान दशा पर थी १ रूहे धाम से सृष्टि देखने को आई २ मैं रूहो को धाम से जागृत करने के लिये आया ३ हिन्दुओं का अक्षर ब्रह्म हमेशा खुदा का दर्शन करने जाता है ४ अक्षर को धणी जी के साथ विलास देखने की इच्छा हुई ५ रूहों के स्वप्न से सृष्टि की रचना हुई ६ कृष्ण में खुदा का जोस आने से कृष्ण को महंमद मानना ७ अक्षर ब्रह्म के हृदय में व्रज वाली रास लीला का अखंड होना ८ पुनः गोलोक धाम का प्रतिबिम्ब रास लीला को बताना ९ कृष्ण रास क्रीड़ा कर अरब देश में आकर महंमद रूप से प्रगट हुये १० कुरान को मैं प्राणनाथ ही ब्रह्म सृष्टियों के लिये ले आया हूँ ११ कुरान में सब हमारी धाम सम्बन्धी बाते हैं १२ मैं वैकुण्ठ जाकर विष्णु को मोक्ष देऊँगा १३ मैं कलिक बुद्ध महंमद का अवतार हूँ १४ हिन्दू जीव असत है १५ केवल मोमिन—ब्रह्म सृष्टि ही सत हैं १६ भागवत

का अर्थ ब्रह्मा विष्णु महेश नहीं खोल सकते १७ लाहूत धाम में सखियाँ शृंगार कर खुदा की शय्या पर केलि—(विहार) करती हैं १८ खुदा के अंग से रूहों की उत्पत्ति है १६ रूहें पाचमी भोम में खुदा के साथ तब तक सोती हैं जब तक प्रातःकाल नहीं हो जाता २० शरद ऋतु में धूप लेने के लिये खुदा सब सखियों के सहित झरोखो के पास बैठता है २१ बंदर साक ले आते हैं सखियाँ भोजन के लिये सुधारती हैं २२। इत्यादि अनेक विषयों के जो भी प्रसंग इनके ग्रन्थ में आये हैं वे सभी असत और काल्पनिक प्रमाणित हुये हैं इनकी १८ हजार तारतम वाणी में कोई भी ऐसे विषय नहीं है जिनमें कुछ भी सत्यता पाई जाती हो खेद तो उन अंधविश्वासी हिन्दुओं पर है जिन्होंने ऐसी असत काल्पनिक संप्रदाय पर विश्वास किया हैं। स्वामी जी प्राणनाथ जी ने अपनी आरती में हिन्दुओं के सभी देवताओं और ऋषि मुनियों को उपस्थित बताकर अवश्य ही उन्हें अपने से नीचा दिखाया हैं और अपने को उनके द्वारा वंदनीय और उपास्य बताया है। अतः इस पाखंड पूर्ण वचनावली से हिन्दुओं की आँखे खुल जानी चाहिये और उनके 'दिल का यह भ्रम सदा के लिये निकल जाना चाहिये कि संप्रदाय के प्रवर्तक ने श्री कृष्णोपाशना का उपदेश दिया हैं।

"इस मोमिन समाज ने स्वामी जी को खुदा का ही रूप मान कर पूजन किया है ये जिस समय पन्ना मे थे उस समय उनका समाज किस तरह सेवा में तत्पर रहता था इसका नमूना उनके शिष्यों द्वारा बनाये हुये गद्यो से देखिये ।

गोटा आतम उद्धार को। बड़े प्रात उठ कर ध्यान करने पाठ करनेई माफक सरूप वडो श्री जी साहेब जू को सरूप चित्त के विखे लीजे सुंदर या सरूप सो हमेशा रमे खेले श्री मुख की चर्चा वचन

वाणी याद कीजिये श्री जी साहेब जी प्रातः काल के समे सुख सेज्या से पौढ़े से उठे उठ ब्राजमान भये श्री वाई जू साहेब जू श्री साहेब के चरनो लागी जोड़े गादी पर ब्राजमान भये श्री महराजा जू श्री लालदास जू साथ सब श्री जू साहेब के चरनो लाग के आप अपनी सेवा में तत्पर खडे भये श्री जू साहेब जू सबको वचनों द्वारा अमृत सींचत है मेहेरबानगी कर वचन फुरमावत है श्री जी साहेब जू नख सिखलो सिनगार साज के तखत पर ब्राजमान भये बीच कुरान हदीशों के चेहेरा लिखे हैं सिर पर वारो की चोटी गेहुंआ रंग स्याह आँखे साहेदी खुदाय की खुदाय देवे करे बयान हुकुम सिर लेवे लायक पूजने के खुदा पाक एही वर हक है अत्र खुसबोय के रूमाल श्री जी साहेब के दोऊ हस्त कमलो में राखिये इनके चरणों वेर वेर लागिये सो ये चरन कमल कैसे है कि सदा सुखदायक हैं श्री जू वाई जू साहब अपने मंदिर से नख सिखलो सिनगार साज के मेवा मिठाई की थाल भराय के आरती को सराजाम लिवाय के आप सुख पाल में ब्राज मान होय आये श्री जू साहेब के चरनो लाग के हस्त कमल धुवाय के मुख हाँथ सो रूमाल पोछाय के मेवा मिठाई आरोगावने लगे भाँत भाँत के पकवान भाँत भाँत की तरकारियाँ अनेक भाँत के बहु व्यंजन मूग भात घृत दूध, भात खाँड़ दधी सिखरन सहित श्री जू साहेब जू अति रुचि सो आरोगतु जात हैं। अर्थ स्पष्ट हैं। ”

“प्राणनाथ को श्री जी साहेब तथा राज शब्द का भी प्रयोग किया गया है इनकी पत्नी के लिए श्री वाई जू साहेब श्यामा जी ठकुरानी जी इत्यादि नामो का प्रयोग किया जाता है। अतः इस समाज के लोग खुदा के स्थान पर राज श्यामा शब्द का भी जप करते हैं। लालदास ने लिखा है कि स्वामी प्राणनाथ की पहली पत्नी की मृत्यु हो गई थी उसने पुनः जन्म लिया जिस समय स्वामीजी

धार्मिक प्रचार के लिये निकले रास्ते में युवती लड़की के रूप में उस पूर्व पत्नी से पुनः भेट हो गई स्वामीजी को देखकर उसने अपने सिर को ढाँका और बोली आप मेरे पति हैं। अतः आप ही के साथ रहूँगी स्वामीजी ने स्वीकार कर लिया लड़की बिना माता पिता की आज्ञा के इनके पास रहने लगी इसका नाम राधिका और श्यामाजी रक्खा गया और पन्ना में उसके रहने के लिये अपने स्थान से एक फर्लाङ्ग की दूरी पर मकान बनवा दिया वहीं से नख से सिख तक शृंगार कर सुखपाल-(पालकी) मे सवारी कर श्री जी साहेब के तखत पर युगल जोड़ी विराजमान होती थ। सब मोमिन युगल छवि की आरती पूजा करते। रात को नृत्य वाद्य की झंकार उठती थी स्वामीजी कृष्ण वाईजू राधिका अन्य धामियों की पत्नी सखी बनकर रास खेलते थे।"

मीमांसकः—जिस तरह हिन्दू वल्लभ संप्रदाय मे बालमुकुन्द श्रीकृष्ण भगवान की अष्ट प्रहर की आरती पूजा होती है उसी तरह इन्होंने अपने इस्लाम मत में भी अपनी पूजा कराने के लिये हिन्दुओं का प्रतीक देकर छल किया है इस आरती पूजा को देखकर हिन्दुओं को भ्रान्त नहीं होना चाहिये वस्तुतः आज भी इनके मंदिरों में भगवान श्रीकृष्ण की पूजा नहीं होती। देवचन्द्र को वल्लभ सम्प्रदाय में दीक्षित बतलाये जाने से वे चाहे भले ही कृष्णोपाशक रहे हों किन्तु संप्रदायिक सिद्धान्तो को विकसित करने वाले प्राणनाथ के ग्रन्थो से कृष्ण की पूजा मन्दिरो में नहीं होती। वहाँ तो ताज और किरीट को धारण करने वाले महम्मद रूप प्राणनाथ की ही पूजा होती है। जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण है कि यदि ये कृष्णोपाशक होते तो इनके मन्दिरो मे कृष्ण की मूर्ति अवश्य होती भगवान श्रीकृष्ण की मूर्ति इनके किसी भी मन्दिरो मे न पाये जाने से

ही सिद्ध है कि प्रणामी लोग कृष्णोपाशक नहीं है। दूसरा प्रमाण यह भी है कि ये लोग जिस पन्ना को हज मक्का और पद्मावती पुरी धाम भी कहते हैं उसमे गुम्मटमन्दिर के शिखर भाग पर हजरत महम्मद के पंजे का खास चिन्ह लगा हुआ है तथा उसके प्रत्येक दीवारों पर कुरान की आयतो का उल्लेख था जिससे वह कृष्ण मन्दिर नहीं कहा जा सकता। अथवा प्राणनाथ और लालदास के समग्र ग्रन्थो का अध्ययन कर उसकी मीमांसा किये जाने पर उक्त व्यक्ति कहीं भी कृष्णोपदेशक नहीं सिद्ध हुये है। वस्तुत: ये लोग कृष्णोपाशक का बहाना कर हिन्दू समाज में छिपना चाहते हैं ऐसी अन्त: शून्य भावना वाली समाज को हिन्दू नहीं कहा जा सकता। यदि इनमें अपनी पूर्व जातीयता का गौरव है तो यह प्रणामी समाज अपने प्रत्येक मन्दिरो में कृष्ण की मूर्ति स्थापित कर इलंम[1] लुदंनी को सर्वथा त्याग करे तभी इस मोमिन समाज को हिन्दू कहा जा सकता है।

"गद्य के लेखक ने कुरान हदीशों मे लिखे हुये खुदा के चेहरे से स्वामी जी के चेहेरे की एकता का प्रतिपादन किया है कि सिर पर बालों की चोटी गेहुंआ रंग स्याह आँखें। इस तरह खुदा की साक्षी देने वाला खुदा ही है।"

मीमांसक:—अशिक्षित समाज ने ही इन्हें खुदा मान कर पूजन किया है विद्वत समाज मे तो इन्हें कोई जानता तक नहीं इनका गोपनीय ज्ञान होने से ये संसार क्षेत्र के सामने आये ही नहीं खुदा मानने की बात तो बहुत दूर है किसी भी भारतीय लेखक ने इनकी गणना महापुरुषो के समकक्ष मे भी नहीं किया है।

१-इलम लुदंनी शब्द से लेखक का अभिप्राय स्वामीजी की १८ हजार तारतम वाणी से है उसे त्यागकर समाज मे आमूल परिवर्तन करने की प्रेरणा दी गई है।

समाज से इतना पूजित होने पर भी इन्होने अपनी फोटो नहीं उतरवाया क्योंकि मुहम्मद साहब का फोटो या चित्र खीचना बहुत बडा गुनाह माना गया है और ये अपने को महंमद की प्रतिमूर्ति मानते थे अत: इनका चित्र न खीचना उचित ही है मुसलमानों में मूति की पूजा नहीं होती पन्ना में प्राणनाथ की पत्नी का जो मन्दिर बना है उसमें भी कबर के ऊपर केवल नारी के मुकुट की ही निशानी है। इनके गुरु देवचन्द्र की फोटो प्राप्त है।

स्वामीजी के मृत्यु के बाद इस समाज ने इनके बनाये हुए १४ ग्रंथों को उन्हीं का अंग मानकर पूजन किया है। वे चौदहों पुस्तकों के अंग निम्न है। रास, से खुदा रूप प्राणनाथ का चरण उसी तरह प्रकाश ग्रंथ से चरण के ऊपर का भाग पिडुरी, पटऋत से घुटना, कला से जंघा, सनंध से कमर, किरंतन से हाँथ, खुलासा से नाभि, खिलवत से उदर, परिकर्मा से हृदय, सागर से कंठ, सिनगार से मुख, सिन्धी से नासिका, मारफत सागर से श्रवण, क्यामत नामा से नेत्र। इस तरह १४ पुस्तकों से हर एक अंगों की कल्पना करने पर धणीजी का सम्पूर्ण अवयव तैयार हो जाता है। जिस तरह श्री मद्भागवत को श्रीकृष्ण का वाङ्मय विग्रह माना जाता है उसी प्रकार हिन्दुओं को धोखा देने के लिये इनके चतुर्दश ग्रंथो से प्राणनाथ के चौदह अंगों की कल्पना की गई है। उक्त आशय की चौपाई को प्रेमसखी ने प्राणनाथ की पूजा करते समय स्तुति पाठ के लिये लिखा है। जिस तरह अंगों मे शिरोभाग श्रेष्ठ माना जाता है उसी तरह मारफत सागर और क्यामत नामा ये दो पुस्तक धणीजी के शिरोभाग का वर्णन होने से अधिक श्रेष्ठ हैं। व इन दो पुस्तको में संप्रदाय के मूल तत्वो का प्रतिपाद्य विषय होने से अधिक प्रमाणित मानी गयी हैं।

अस्तु इन दोनों ग्रन्थो के अध्ययन से यही निष्कर्ष निकलता है कि इनके सभी धार्मिक सिद्धान्त कुरान और इस्लाम पर ही आधारित है। इन तथ्यों पर पहुंचते हुये यह अवश्य ही कहा जा सकता है कि ये हिन्दू धर्म के मौलिक सिद्धान्तों से सर्वथा उदासीन और विरुद्ध है इनकी वास्तविक प्रवृत्ति इस्लाम धर्म की ओर ही प्रवाहित होती है। जिससे यह भी कह देना अनुचित न होगा कि यह एक इस्लाम मत की ही शाखा है। मुगल काल में इसका प्रादुर्भाव होने से भारतीय आर्यों को इस्लाम मत में दीक्षित करने के दृष्टि कोण से तत्सम्बन्धी व्यक्ति द्वारा एक नवीन शाखा संचालित की गई है।

इति निजानन्द मीमांसायामुत्तरार्धं भागे
समाज स्वरूप वर्णनं नाम विंशोऽध्याय: २०

अभ्यासार्थक प्रश्न :—

१—इनकी कृतियो से समाज के स्वरूप का परिचय दीजिये।

२—हिन्दुओं के बीच नूरमहंमदी झंडा खड़ा करने का अभिप्राय था।

३—इनकी दो प्रकार की समाज मे किन किन विषयो पर भेद व अभेद पाया जाता है।

४—ब्रह्मा आदि देवता इनकी आरती में उपस्थित हुये इस विषय में अपने विचार व्यक्त कीजिये।

५—समाज ने आत्म उद्धार के लिये स्वामी जी का पूजन किस प्रकार किया है।

६—लेखक ने स्वामीजी के २२ सिद्धान्तों को जो असत बताया है उसे इस ग्रंथ के आधार पर एक-एक विषय की संक्षेप मे टिप्पणियाँ तैयार कीजिये।

उपसंहार

एकविंशोऽध्याय: २१

इस पुस्तिका में यह नही बताया गया कि प्राणनाथ जी का जन्म किस देश व जाति में हुआ इसका कारण यही है कि इनकी सच्ची जीवनी उपलब्ध न होने से यह विषय विवादास्पद है।

लोक में इनकी जीवनी के सम्बन्ध में प्रसिद्धता है। कि ये शाहजहाँ के चार पुत्रों में से शाहशुजा थे। इसके विरोध में पन्ना लाल धामी ने एक छोटी सी पुस्तिका में लिखा है। मालूम होता है कि किसी अत्यन्त चालाक व्यक्ति ने श्री प्राणनाथ प्रभु को शाहशुजा होने का गलत भ्रम फैला कर यह कलंक लगाया है। ये लिखते हैं शाहशुजा अराकाँन को भागा, किन्तु वहाँ के शासक द्वारा उसका वध हुआ।

शाहशुजा के वध होने की जो बात है वह भी इतिहासो मे विवादास्पद है। क्योंकि मिथिलेश चन्द्र उपाध्याय ने शाहशुजा का वध होना नहीं लिखा जिसका प्रमाण निम्न पृष्ट पेषण है।

इतिहास के पन्ने,

लेखक:—प्रो० मिथिलेश चन्द्र उपाध्याय

एम० ए०

नवीन संस्करण १६७२

शाहशुजा का अन्त—बहादुरगढ़ की पराजय के बाद शुजा बिहार की ओर भाग गया था। शाहशुजा ने शाहजहाँ को कारागार

से छुड़ाने और सिंहासन प्राप्त करने के लिए प्रयास किया था। औरंगजेब ने जब यह खबर सुनी तो खजवा के स्थान पर उसकी सेना को पराजित किया और वहाँ से वह अराकाँन की पहाड़ियों की ओर भाग गया। इस प्रकार औरंगजेब ने सिंहासन के सभी दावेदारों का अन्त कर दिया और अपने मार्ग को निष्कंटक बना लिया।

उक्त प्रमाण से यह भी संभव हो सकता है कि ये आत्म रक्षा के लिए हिन्दू भेष को धारण कर छिप गये हों और अपना संगठन बनाकर औरंगजेब को यह दिखाया हो कि तुम एक लौकिक सम्राज्य पद के उपभोक्ता हो मैं अलौकिक सम्राज्य पद प्राप्त कर लिया हुं जो मृत्यु के बाद भी हमारी पूजा होती रहेगी।

इनकी विदेश यात्रा के सम्बन्ध में माता बदल जायसवाल रीडर हिन्दी विभाग इलाहाबाद युनिवर्सिटी ने लिखा है कि प्राणनाथ गुरु की आज्ञा से ५ार्यवस वि० सं० १७०३ में चालीस दिन की जलयान यात्रा करके अरब देश गये वहाँ उन्हे ५ वर्ष रहना पड़ा वहाँ प्रचलित भाषा रीतिरिवाज तथा धर्म का उन्हे अच्छा परिचय प्राप्त हुआ।

उक्त कथन से भी सिद्ध है कि प्राणनाथ जी अरब देशीय भाषा संस्कृति को अपना कर भारत में भी उसी धर्म की शिक्षा देने का प्रचार हिन्दुओं में किया है। और अपनी रचना में लिखा है कि अरब की भूमि मुझे सबसे प्रिय है। वहाँ कि खुदा सम्बन्धी सब सम्पति और कुरान भी आया है।

किसी समाज या व्यक्ति के पूर्ण परिचय प्राप्त करने के लिये उसका साहित्य दर्पण है उससे उसकी वास्तविकता का पता चल जाता है। प्राणनाथ के सम्बन्ध में लाल दास ने जो हिन्दू कुल में जन्म लेना बताया है यह द्वितीय अध्याय में इन्ही के वचनों से सिद्ध कर दिया गया है कि इनका हिन्दू कुल में जन्म लेने का कथन झूंठा

है। प्राणनाथ जी की रचनाओं को आद्योपान्त पढ़ने से इनका हिन्दू होना नहीं पाया जाता इन्होने स्वत: अपने को मुस्लिम घोषित किया है। चाहे मुस्लिम शब्द का अर्थ सत्य का धर्म अनुगमन करने वाला ही माना जाय इससे हमारा कोई तात्पर्य नहीं।

वाक्य के अर्थ को समझना ही शब्द ज्ञान है उस शब्द ज्ञान (शब्दबोध) का कारण (असाधारण कारण) शब्द है इसलिये शब्द ही शब्द प्रमाण है। जिस तरह सोना चाँदी शब्द से एक पीतवर्ण धातु दूसरी सफेद वर्ण की धातु का ज्ञान होता है। उसी तरह इस्लाम मुस्लिम आदि शब्दो के प्रयोग से अरब देशस्थ महंमद द्वारा प्रवर्तित इस्लाम धर्म और उनके अनुयायी मुस्लिम समाज का शाब्दिक बोध होता है। संसार के सभी मतावलम्बियों को इस्लाम धर्मानुयायी नहीं कहा जा सकता सबो की अपनी अपनी सीमा है।

हकी सूरत का परिचय

स्वामी प्राणनाथ जी के साहित्यिक ग्रन्थ के आधार से विभिन्न विषयों पर विचार किया गया अब इनके विभिन्न वचनावलियों की एक वाक्यता तथा गुहा निहित चरम लक्ष्य किस दिशा की ओर संकेत करता हैं यह स्पष्ट किया जायगा। यह तो पिछले अध्यायों में बताया ही गया है कि लाहूत धाम से मोमन मुस्लिम आत्मायें सृष्टि रचना रूप खेल देखने को आये हैं। प्राणनाथ उन्हें संसार से मुक्ति प्रदान करने के लिये तीन रूपों में आये।

क्या० ना० छो० प्र० १ **बसरी मलकी और हकी ए तीनो के जुदे खिताब, एक फुरमान ल्याई दूसरी कुँजी, तीसरी खोले किताब।८।**

अर्थः—पहली वसरी सूरत अरब वाले महंमद जो कुरान को ले आये दूसरी मलकी सूरत देवचन्द्र जो कुरान के गुह्य अर्थ के खोलने की कुंजी ले आये तीसरी सूरत हकी—प्राणनाथ जी गुरु से कुंजी प्राप्त कर कुरान के अर्थ को खोला इन तीनों के भिन्न भिन्न पद हैं वास्तव में एक ही हैं।

क्या०ना०व०प्र० ८ **सिफत तीनो की जुदी कही, सो सब बुजरकी एक पर दई, ज्यों वसरी मलकी हकी, त्यो रसूल रूह अल्ला ईमाम पाकी ॥४५॥**

अर्थः—उक्त तीनों सूरतो की बड़ाई अलग अलग कही गई हैं किन्तु वसरी रूप रसूल (महंमद) और मलकी रूप रूह अल्ला (देवचन्द्र) इन दोनो की बड़ाई का विशेष महत्व एक पवित्र ईमाम[1] (प्राणनाथ) को ही दिया गया हैं ४५ **न पावे ऊपर मायने जाहेरी, ये मगजो सो इसारत करी। एक सरूप अवस्था तीन, ज्यों लड़का जवान बुढ़ापन कीन।४६।**

अर्थः—किन्तु उक्त सूरतों के सम्बन्ध में ऊपरी अर्थ करने से नहीं पहचाना जा सकता इन गुह्य रहस्यों का इशारा मात्र किया गया है। वास्तव मे इन तीनों का एक ही स्वरूप है जिस तरह एक ही मनुष्य की बाल युवा वृद्ध तीन अवस्थायें होती हैं। उसी तरह पहली सूरत महमद दूसरी सूरत देवचन्द्र तीसरी सूरत प्राणनाथ ४६।

सनंध प्र० १ **आप रसूले यो कहधा, काजी आवेगा खुद सोए, पर फुरमानयो केहे वही, जिनके हवे कोई दोय।२।**

अर्थः—रसूल साहब ने कुरान में कहा हैं कि आखर के समय मे न्याय करने वाला खुद आयेगा। किन्तु कुरान को ले आने वाले

१-ईमाम का अर्थ होता है खुदा की प्रार्थना (निमाज) के लिए प्रेरित करने वाला इन्होंने अपनी वाणी में खुदा की उपासना करने की प्रेरणा दिया है इसलिये प्राणनाथ ने अपना नाम ईमाम बताया है।

वसरी सूरत महंमद को और क्यामत के समय मे आने वाले हकी सूरत प्राणनाथ को कोई भी व्यक्ति भिन्न भिन्न न कहे।

खुलासा प्र० १५ **महंमद आया ईसे मिने, तब अहमद हुआ स्याम, अहमद मिल्या मेहेदी मिने, ए तीन मिल हुए ईमाम २१।**

अर्थ:—अरब वाले महम्मद जब देवचन्द्र जी मे प्रविष्ट हुये तब वे अहमद होकर कृष्ण कहलाये और अहमद जब मेहदी—प्राणनाथ मे मिले तब ये ईमाम कहलाये अर्थात तीनो के एक मे समावेश होने से प्राणनाथ को ईमाम की संज्ञा दी गई २१।

अलफ कह्यो महंमद को, रुह अल्ला ईसालांम, मीम मेहेदी पाक सो, तीनो एक कहे अल्ला कलाम २२।

अर्थ:-कुरान में कहे हुए अलफ, लाम, मीम, इन शब्दो का गुह्य अर्थ प्रगट करते हुये स्वामी जी कह रहे हैं। अलफ अरब वाले महम्मद हैं लाम – ईसा रूह अल्ला रूप देवचन्द्र हैं मीम—मेहेदी रूप पवित्र प्राणनाथ का नाम है इन तीनों को कुरान मे एक ही बताया गया हैं २२

मारफत सा० प्र० ६ **कह्या हके मासूक भेजोगा, उतरते रूहो अरस से, सिरदार तिन मे रूह अल्ला, हके तासो कौल किया आप में।६७। कहे रसूल रूह अल्ला वास्ते ल्याया आखरी फुरमान रूह अल्ला ईमाम आवसी ले हक इलंम पढसी कुरान ६८।**

अर्थ:— रूहो को धाम से उतरते समय खुदा ने कहा था कि मैं तुम्हारे लिये मासूक अर्थात् महम्मद को भेजूँगा उन रूहों में शिरोमणि सुन्दर बाई देवचन्द्र जी से भी यही इकरार किया था ६७।

महम्मद सा० कहते हैं कि देवचन्द्र के लिये मैं आखरी कुरान ले आया हूँ देवचन्द्र और प्राणनाथ आयेंगे वे खुदा के ज्ञान से कुरान को पढेंगे ६८।

मार० सा० प्र० १४ **असराफील के अमल मे, सक सुभे ना ही कोए, क्यामत फल पाया इतही, मगज मुसाफी सोए।३५।**

अर्थ:—असराफील—प्राणनाथ के शासन काल में किसी प्रकार का संदेह नहीं है कुरान के गुह्य रहस्य क्यामत रूपी फल इन्हीं से पाया जाता है ३५।

सनंध प्र० १६ **महंमद पेहेले आए के वरसाया हक कानूर, के बिध करी मेहेर वानगी, पर किने ना किया सहूर २०। ए शहूर तो करे जो होए अरस अरवाए, जिन उमत के खातर आवशी इत खुदाए २१**

अर्थ:—सबसे पहले महम्मद साहब अरव देश में आकर (कुरान के द्वारा) खुदा के तेज की वर्षा की इन्होंने कई तरह की कृपा की किन्तु किसी ने विवेक न किया २०। ये संसार के प्राणी विचार तो तब कर सकते थे जब कि लाहूत धाम की मोमिन आत्मायें होती। जिन उमत (मोमिनो) के लिये खुदा प्राणनाथ आयेंगे २१।

मीमांसक:—उपर्युक्त प्राणनाथ जी के चार पुस्तकों से एक वाक्यता दिखाई गई है यद्यपि इन विषयों का प्रतिपादन इनकी प्रत्येक पुस्तकों मे मिलता है वे विस्तार भय से नहीं लिखे जाते। लाहूत धाम मे अवतरित मुस्लिम आत्माओं को मुक्ति प्रदान करने के लिये अपने को तीन रूप में आना बताया हैं। पहले अरब में जन्म लेकर महंमद रूप से कुरान का उपदेश दिया फिर देवचन्द्र के रूप में कुरान के गुह्य अर्थ को खोलने की कुंजी ले आये उस कुंजी से

प्राणनाथ रूप महंमद ने कुरान के गुह्य रहस्यो को पूर्वोक्त चौपाई द्वारा प्रगट किया हैं। इन्होंने अपने साहित्य में 'कुरान की साक्षी देते हुये सहस्रों वाक्यों द्वारा यह दोहराया है कि उस अरब वाले महंमद को और मुझ आखरी महंमद को कोई भिन्न न कहे जिस तरह मनुष्य की बाल, युवा, वृद्ध तीन अवस्थायें होती हैं उसी तरह हम तीनों का केवल अवस्थान्तर भेद है वस्तुत: हम तीनों एक हैं। इन्होंने असराफील शब्द का प्रयोग करते हुये कुरान का गुह्य सिद्धान्त प्रगट कर संसार को क्यामत का फल अपने ही द्वारा प्राप्त होना बताया हैं। कुरान में वर्णित अलफ, लाम, मीम, इन शब्दों की व्याख्या करते हुये अरब वाले महंमद से अपना अभेदत्व दर्शाया हैं।

अस्तु इन कथानको से स्पष्ट है कि ये इस्लाम संप्रदाय के प्रवर्तक मौलवी मुस्लिम हैं। इन्होंने अपनी ग्रन्थ माला में अपने को हिन्दू कहीं भी नही लिखा एक इनकी चौपाई को लेकर लोग इन्हें हिन्दू बताते हैं वह चौ० निम्न है। **पर्दा लिख्यो हजरत के रुए पर सो वास्ते आवने हिन्दुओं माहे।**

अर्थ:—प्राणनाथ जी कहते है कि कुरान में ऐसा लिखा है कि मुझ महंमद के 'मुख पर पर्दा रहेगा वह पर्दा इसलिये रहेगा कि महम्मद को हिन्दुओं के बीच आना है।

इनके इस कथन से महम्मद छद्म भेष से अपने शरीर मे पर्दा डाल कर हिन्दुओं के बीच इस्लाम धर्म का उपदेश दिया है। चौ० मे हजरत शब्द महम्मद के लिये प्रयुक्त है। अत: इस्लाम धर्म के प्रवर्तक महम्मद ही छद्म भेष से हिन्दुओं मे आये हिन्दू बनकर तो हिन्दुओं मे नही आये। इस विषय के पूर्वार्ध भाग मे अनेक प्रमाण है कि ये हिन्दुओ के सामने तिलक माला साधु का भेष और

मुस्लिम समाज मे फकीर मौलवी का भेष धारण करते थे। ये खुद अपने शरीर पर पर्दा कर दूसरो को धोखा देते थे प्राणनाथ जो अपने शरीर पर पर्दा करना लिखते हैं तो इनके शरीर ही भर मे पर्दा नहीं सारे साहित्य में छद्‌म रूप पर्दा पड़ा हुआ है। और इसका क्या प्रमाण है कि कुरान मे ऐसा लिखा है यदि कुरान मे ऐसी बातें होती तो आपको मुस्लिम सम्प्रदाय के महम्मद क्यों न मानते। किन्तु आपको किसी ने महम्मद रूप नहीं स्वीकार किया इससे आप महम्मद रूप भी नहीं हैं। चौ० मे हिन्दुओं के बीच हजरत के आने का कथन होने से इनका हिन्दू कुल में जन्म लेना नहीं सिद्ध होता। महात्मा गांधी साबरमती आश्रम मे हरिजनो के पास आकर भाषण दिया, इस कथन से महात्मा जी हरिजन नहीं कहे जा सकते इसी तरह महम्मद सा० यदि पर्दा डाल कर हिन्दुओ के बीच उपदेश दिया तो वे हिन्दू नही कहे जा सकते। इनके सारे साहित्य मे छल विद्या का जाल फैलाया गया है उसी से हिन्दू रूपी मछलियों का वेधन किया है।

चौपाइयों के अर्थ करते समय यह सर्वत्र ध्यान रक्खा गया है कि इनके वर्णित विषयो का भाव कहीं स्खलित न हो अरबी भाषा के विद्वान इनके ग्रन्थ मे दिये हुये अरबी शब्दो के यदि दूसरा अर्थ करना चाहेंगे तो इनके वक्तव्य विषय का भाव नष्ट हो ग्रन्थ की संगति नही बैठेगी। इन्होंने तो हिन्दी संस्कृत शब्दकोषो को ही बदल दिया है। इसके उदाहरण इसी ग्रन्थ मे मिलेंगे। सनंध प्र० ३४।

अरबी—सम्मेन कलीम कलामी, नास कुरवना कसीर।१।

अनुवाद—नेक मै कहूँ मेरी बोली मे, आदमी कबीले मेरे बहुत है अल्ल की हकाइयां कलबना, मासफी सिनकुंम।

जो बात मेरे दिल की, ना छिपाऊँ तुमसे । कुम्यकून कुरवना अल्लजी रूह मुस्लिम ।३। तुम हो कबीले मेरे के, जो कोई रूह मुस्लिम है ।

प्राणनाथ जी अरबी बोलते हैं और उसे अपनी निजी भाषा बताते हैं और कहते हैं कि जो बातें हमारे दिल की है उसे किसी से छिपाना नहीं चाहता । जितने भी मुस्लिम आत्मायें हैं वे मेरे कबीले (संतान) हैं । यदि प्राणनाथ अपने को खुदा होने का दावा करते हैं तो केवल मुस्लिम आत्माओं को ही अपना कबीला क्यों बताते हैं खुदा का तो समस्त विश्व कबीला हो सकता है । केवल मुस्लिम को ही अपना कबीला बताने से इनमें जातीयता की भावना स्पष्ट है । इससे सिद्ध है कि ये मुस्लिम जाति के थे ।

मोमिन का समाज स्वरूप

कुलजम शरीफ, यह अरबी शब्द है इसका अर्थ लोग दरिया-समुद्र सर्वोच्च ज्ञान का सागर करते हैं । उक्त ग्रन्थ मे मोमिन शब्द के अनेकों पर्यायवाची शब्द मिलते हैं इन्हीं को ब्रह्म सृष्टि और सुन्दर साथ भी कहा गया है । इन्होने जिन-जिन शब्दों द्वारा मोमिन के लिये संकेत किया है वे प्राय: सभी शब्द इस पुस्तक मे आ गये हैं । अब आगे की चौपाइयों में उनके नाम और रूप का परिचय दिया जाता है । खुलासा प्र० १२ ।

ब्रह्म सृष्टि कहे मोमिन को, कुमारका फिरस्ते नाम ।
ठौर अक्षर सदरतुल मुतहा, अरस अजीम सो धाम ।५२।

अर्थ :—ब्रह्म सृष्टि मोमिन को कहा गया है कुमारिका सखी फिरस्तो का नाम है सदरतुल मुतहा अक्षर धाम को कहा गया है ।

जहाँ कुमारिका सखियों का निवास है और अरस अजीम धाम–दरगाह का नाम है जहाँ मोमिन निवास करते हैं। सनंध प्र० २४।

गिरो मोमन नाम अनेक है, जुदे-जुदे कहे नाम, वो होत नामों बुजरकियाँ, लिखी माहे अल्ला कलाम।८६।

अर्थ —इनके गिरो, मोमिन, अनेक नामों से भिन्न-भिन्न नाम कहे गये है कुरान में इनकी अनेक नामो से बड़ाइयाँ लिखी हुई है ८६। मारफत सागर प्र० १४।

रूहे गिरो दरगाह बीच, अरस अजीम जेताई, एही अरस दिल हकी का महम्मद के भाई।६७।

अर्थ :—अरस अजीम में जितने भी रूहो का समूह दरगाह के बीच निवास करता है वे सब महम्मद के भाई हैं और इन्हीं मोमिनो का दिल खुदा का घर है।६७। मा० सा० प्र० १३।

वाहे दत्त भी इनको कहे, जो हादी हक्क जात, त्यों नूर हादी का उमत, इन बीच और न समात।७।

अर्थ :—ये मोमिन आत्मायें खुदा और हादी (खुदा की पत्नी) की जाति है इसलिये इन्हें अद्वितीय भी कहा गया है। जिस तरह खुदा का तेज हादी है उसी तरह हादी का तेज रूहे-मोमिन है। इन तीनों मे अन्य किसी का समावेश नहीं है।७।

सुन्नत जमात इनको कहे, गिरो एक तन जुदी न होए, ए हक इलमे बेसक हुए, याकी सरभर करे नारी सोए।८।

अर्थ :—ऊपर की चौ० से जिन मोमिन का खुदा से अद्वितीयत्व वर्णन किया है वे ही उमत-सुन्नत जमात अर्थात् सुन्नी मुसल्मानो का समूह है। ये गिरो-सुन्नियो का समूह खुदा का एक तन होने से

उससे जुदा नहीं हो सकता ये खुदाई इल्म से संसय रहित हो चुके हैं इनकी समता बहत्तर फिरके भी करते हैं ।८।

वाहेद तन मोमन कहे, एही जमात सुन्नत एही फिरका नाजी कह्या, इनो हक हिदायत ।६।

अर्थ :—ये मोमिन खुदा के अद्वितीय तन कहे गये हैं इन्ही को सुन्नियो का समूह कहा गया है। और इन्हीं को नाजी फिरका कहा गया है इन्हें खुदा का आदेश है ।६।

मोमिन और दुनी के, एही तफावत, मोमिन तन अरस मे दुनी तन पेड़ गफलत ।२१।

अर्थ :—मोमिन अर्थात् ब्रह्म सृष्टि-सुन्दर साथ की आत्माओ मे यही भेद है कि सुन्दर साथ का शरीर खुदा के घर मे है अन्य दुनियाँ के जीवो का शरीर अज्ञानान्धकार के घर मे है ।२१।

खेल किया महंमद वास्ते, महम्मद आया वास्ते उमत, ताये एकदम न्यारी न करे, मेहेर कर धरी तीन सूरत ३४ ।

अर्थ:—यह सृष्टि रचना रूप खेल महम्मद के लिये किया गया है और महम्मद उमत-ब्रह्म सृष्टियों के लिये लाहूत धाम से आये हैं उन उमतो के लिये सहसा लाहूत धाम से अलग तो नही किया जा सकता इसलिये खुदा ने दया कर तीन सूरतो को धारण किया है ।३४।

एते दिन किन न कह्या, के रसूल आया इन पर, ना किन फुरमान सिर लिया, न किन लई खबर ।४१।

अर्थ-इतने दिनों तक अर्थात् विक्रम संवत् १७४० तक किसी व्यक्ति ने नही कहा कि महम्मद सा० रूहो के लिये आये हैं और न किसी ने

कुरान की आज्ञा को शिरोधार्य कर सहो अर्थ को अपनाते हुये इन विषयो की खबर ही ली ।४१।

ए हुज्जत जाहेर किन ना करी, हम रूहे अरस से आइं उतर,
कौल किया हके हम सो, बोला वे वखत फजर ।४५।

अर्थ:—यह दावा किसी ने प्रगट नही किया कि हम रूहे (सखियाँ) लाहूत से उतर आई है किन्तु वहाँ से हम सुन्दर साथ के उतरते समय खुदा ने वादा-इकरार किया था कि क्यामत के समय मे (हकी) रूप से हम तुम्हें बुलाने आयेंगे ।४५।

जलबिन जल जीव ना रहे, ना थल बिन जीव थल, तो
अरस रूहे अरस बिन क्यो रहे, ,जिनो हक वका अरस असल ।५१।

अर्थ:—जिस तरह जल के जीव जल बिना नहीं रहते और थल के जीव थल बिना नहीं रह सकते उसी तरह जिनका असल शरीर सत्य खुदा के घर में है वे रूहे धाम को छोड़कर अन्यत्र कैसे रह सकती है ।५१।

ए इसारते हक मुसाफ की, पाइए खुले हकीकत मारफत,
एहक इलमे पाईए मेहेर से, जो होए मूलनिसवत ।५।

अर्थ:—ये संकेत खुदा के कुरान की है ये संकेत तभी खुल सकते हैं जब ज्ञान के द्वारा पूर्ण पहचान हो जाय अथवा जिनका सम्बन्ध खुदा से होगा उनके खुदाई इल्म और उनकी कृपा से कुरान की इसारते समझी जा सकती ।है ५।

ए अरस मुझ विना लुदंनी, क्यो कर बूझा जाए हक
खिलवत वातेगेव की, दे अरस दिल मोमन वताए ।६।

अर्थ:—ये धाम सम्बन्धी खुदा की 'एकान्तिक बाते गोपनीय है

ये हमारे तारतम वाणी के बिना अन्य से कैसे समझा जा सकता है जिन मोमिनो का दिल खुदा का धाम हो चुका है वे ही बता सकते हैं ६। मारफत सा० प्र० १४

लिख्या आमेत सालून मे, बड़ाई रूहंन, देखो इत दिल देय के, निसा करो मोमिन।४८।

अर्थ :—आमेत सालून नामक कुरान के एक अध्याय में रूहो के बड़ाई के सम्बन्ध मे लिखा है उस अध्याय को तुम दिल से देखो देखकर अय सुन्दर साथ निद्रा को त्यागो।४८। खुलासा प्र० ७

वास्ते खास उमत के मैं ल्याय फुरमान, सो आखर को आवसी तब काजी होसी सुभान।६।

अर्थ : - प्राणनाथ जी कहते हैं कि खास उमत-ब्रह्म सृष्टियों के लिये मै कुरान ले आया हूँ उसमें लिखा है कि आखर के समय में साक्षात् खुदा काजी-न्यायाधीस बनकर आवेगा।६। सनंध प्र० २४।

मोमन उतरे नूर विलंद से, जो कहे भाई महम्मद के, महम्मद आया इनो पर, खेल किया इनो वास्ते।१६।

अर्थ :—मोमिन सुन्दर साथ खुदा के धाम से उतरे हुये हैं जो महम्मद के भाई कहे जाते हैं। महम्मद सा० इन्हीं के लिये (कुरान लेकर) आये है और इन्ही के लिये सृष्टि रचना रूप खेल भी किया गया है।१६। मा० सा० प्र० १३।

ढूँढे अपने रसूल को, और अपना फुरमान, और ढूँढे हक इलंम को, जासों बातून होए बयान।५२। राह देखे रूह अल्लाह की, और ढूँढे आखरी ईमाम हक हकीकत मारफत चाहे, फल क्यामत तमाम।५३।

अर्थ :—ये मोमिन अपने रसूल और खुदा के वर्णन किये हुये कुरान को और खुदा के इल्म (ज्ञान तारतमवाणी) को ढूँढ़ते हैं जिस इल्म से गोपनीय विषयों का वर्णन हो सके ।५२। अवतरित हुई ये धाम की रूहे देवचन्द्र और आखरी महम्मद (प्राणनाथ) का मार्ग देख रही है और खुदा के ज्ञान पूर्ण पहचान से सम्पूर्ण क्यामत के फल की भी कामना कर रही है ।५३। मारफत सा० प्र० १४।

और कोई अरस अजीम मे, पोहोच न सकल, जित हक हादी रूहे, महम्मद तीन सूरत ।४१।

अर्थ :—जहाँ पर हक, हादी, रूहे, और महम्मद की तीन सूरत है उस धाम मे अन्य कोई प्राणी नहीं पहुंच सकते ।४१।

मीमांसक :—प्राणनाथ जी ने जो अपनी समाज सुन्दर साथ के स्वरूप का परिचय दिया है उसे पाठक स्वत: देख कर इसका निर्णय लेवे कि इनकी समाज क्या है मैं अपनी तरफ से इन्हें कुछ नहीं कहना चाहता। मैं तो केवल इनके कथानकों का पृष्ट पेषण कर रहा हूँ। रहा हिन्दू समाज ने इनके मत को जो हिन्दू धर्म का अंग माना है यह हमारी समझ में नहीं आता।

इनके हर एक पहलुओं पर विचार करने से स्पष्ट है कि इन्होंने हिन्दुओं को हिन्दी संस्कृत शब्दों द्वारा भ्रान्त करके इस्लाम मत में ले आने का महान प्रयत्न किया है। महमूद गजनवी ने १७ बार भारत पर आक्रमण कर धन को लूटा किन्तु इस मौलवी फकीर ने हिन्दुओं के वेद धर्म को लूटा। इन्होंने ब्रह्म सृष्टि और सखियाँ सुन्नी मुसल्मानों का नाम बता कर उनकी स्थल-स्थल पर प्रशंसा किया है इतनी प्रशंसा करते हुये भी प्राणनाथ की मृत्यु विक्रम संवत १७५१ के बाद इनके मत में कोई मुस्लिम दीक्षित नहीं हुये केवल हव भागे हिन्दू ही एक दूसरे को देख सुन कर अंध विश्वास से दीक्षित होते आ रहे हैं।

मुसल्मानों के दीक्षित न होने का कारण यह है कि वे अपनी संप्रदाय और सिद्धान्त के पक्के होते हैं इन्होंने देखा] कि ये तो चंदन माला आरती पूजा भी करते हैं पूण रूपेण इस्लाम के पक्षपाती नहीं हैं। इस कारण उनकी मृत्यु के बाद लोगों ने दीक्षा लेना बंद कर दिया। यद्यपि चंदन माला पूजा आदि से इनकी कोई वास्तविकता नहीं है यह तो हिन्दुओं को स्वमत में ले आने की एक प्रकार की नीति है। हिन्दू इसी बहाने मुझ महंमद ही के चरणों में चन्दन पुष्प चढ़ा कर आरती उतारें। सम्पूर्ण ग्रन्थ में अपने को ही खुदा होने का निर्देश करने से कुरान वर्णित खुदा से भी इनका कोई तात्पर्य नहीं दीखता क्योंकि कुरान सिद्धान्त के अनुसार भी खुदा अवयव रहित है इन्होने खुदा को जो अवयव युक्त बताया है उसका खास कारण यह है कि यदि उसे शरीरी नहीं मानते तो वहाँ से सखियाँ अर्थात् सुन्नी मुसल्मानो का संसार में अवतरित होना नहीं बनता उनके अवतरित न होने से इनका भी खुदा के रूप मे अवतरित होने का कथन व्यर्थ हो जाता है। और इस्लाम मत की शाखा रूप नवीन सम्प्रदाय की कल्पना नही बन पाती। यद्यपि इन्होंने अनेको वाक्यो द्वारा कुरान महम्मद की प्रशंसा करते हुये कुरान की साक्षी दिया है कि रूहे खुदा के घर से अवतरित हुई हैं उन्हें क्यामत के समय आखरी महम्मद के रूप में मुक्त करने के लिये मै आया हूँ उक्त कथानकों की पुष्टि के लिये केवल कुरान की दोहाई देते हैं कि ऐसी बातें कुरान में लिखी है कुरान की आयतो का प्रमाण पेश नहीं करते जिससे मौलवी लोग उस अर्थ को समझ कर इनके मत का अनुसरण करें। इसी अध्याय में मा० सा० प्र० १३ की ४१।४५ चौपाई को देखें वहाँ ये खुद लिखते हैं कि इतने दिनो तक किसी व्यक्ति ने नहीं कहा कि महम्मद सा० रूहो के लिये आये हैं और न किसी ने कुरान के सही अर्थ को अपना कर इन विषयों की खबर ली।४१। यह दावा किसी ने प्रगट नही किया कि

रूहे लाहूत से उतर आई है किन्तु धाम से रूहो के उतरते समय खुदा ने इकरार किया था कि क्यामत के समय मे हकी रूप से हम तुम्हें बुलाने को आयेंगे ।४५। जब ये खुद कहते हैं कि इतने दिनों तक रूहो के उतरने का दावा किसी ने प्रगट नही किया तो प्राणनाथ के वाक्य कैसे प्रमाणित माने जांय। यदि कुरान में सही इन विषयों का प्रतिपादन था तो प्राणनाथ को कुरान की टीका लिखना चाहिये था। केवल कुरान महम्मद की दोहाई देने से इनके मत की पुष्टि नही होती। ये तो सर्वत्र यही कहते हैं कि कुरान पुरान के गोपनीय सही अर्थ को किसी ने नही समझा, मै ही उनके सही अर्थ को प्रगट कर रहा हूँ। किन्तु इन विषयो पर उत्तरार्ध भाग के तीन चार अध्यायों में अनेक प्रमाणो द्वारा सिद्ध किया गया है कि रूहे खुदा के घर से नही अवतरित हुई जिससे इनका मत निराधार प्रमाण शून्य है।

विष्णु की कुत्सा

इन्होंने असराफील, आदम, अबलीस, आदि शब्दों का प्रयोग किस अर्थ में किया है इसे प्रमाणित करने के लिये इनकी चौपाइयाँ उद्धृत की जाती है। जबराइल अजाजील आदि नाम विष्णु का है इसका प्रमाण दूसरी जगह लिख चुका हूँ।

मारफत सा० प्र० ६। **कह्या आवसी असराफील आखरी बड़ा निसान, जो फूंके जिमी पहाड़ उड़ाव सी दूजे फूँके कायम करे जहाँन ।८२।**

असराफील चिन्हाए सो, मगज मुसाफी गाय चौदे तवक एक सुर से करके साफ उड़ाये ।८३।

जब सुर वाजे दूसरा देवे हक चिन्हाये ।८४।

अर्थ :—कुरान में लिखा है कि क्यामत के समय का सबसे बड़ा चिन्ह असराफील आयेगा जिसके एक फूँक से जिमी पर्वत उड़ जायेंगे दूसरी फूँक से सब संसार स्थिर हो जायगा ८२। असराफील का पह्-चान यही है कि वह कुरान के गोपनीय सिद्धान्तों को गायेगा चौहदों लोकों को एक स्वर से उड़ा कर साफ कर देगा ८३। जब दूसरा स्वर फूँकेगा तब खुदा की पहचान करा देगा ८४।

उक्त चौपाइयों से प्राणनाथ ने अपने को संकेत किया है कि क्यामत के समय का चिन्ह असराफील मैं ही हूँ क्योंकि मैं कुरान के गोपनीय सिद्धान्तों का वर्णन कर खुदा की पह्चान करा रहा हूँ चौदह लोकों की उड़ने की जो बात है वह सब संसार के अज्ञान रूपी पहाड़ को उड़ाया गया है। नीचे के चौ० से और भी स्पष्ट है।

आया असराफील आखर साथ आखरी ईमांम, मायने मगज मुसाफ के किये जाहेर सब तमाम ।८५।

हके ऐसा साथ ईमाम के, दिया फिरस्ता मरद ।८६।

अर्थ :—क्यामत करने वाले प्राणनाथ के साथ मे असराफील आया और कुरान के सब गुह्य रहस्य को संसार में जाहर किया ८५। खुदा ने ऐसा ताकतवर फिरस्ता-असराफील को प्राणनाथ के साथ में दिया ८६।

मा० सा० प्र० १४ **तों रसूले अव्वल ऐसा फुरमाया, सो अपनी सरत पर, फिरस्ता आखरी आया २। कह्या पेगम्बर आखरी, असराफील भी आखर ये जुदे क्यो हो वही, देखो सहूर कर २६।**

अर्थ :—जो अरब वाले महंमद ने कुरान में वर्णन किया था वह असराफील अपनी शर्त के अनुसार प्राणनाथ के रूप में क्यामत के

समय आया २९। कुरान में जो आखरी पेगम्बर और आखरी असराफील कहा गया था वे अलग-अलग कैसे हो सकते हैं इन बातों को विचार कर देखो अर्थात् आखरी महंमद और आखरी असराफील मैं प्राणनाथ ही हूँ ।२९।

खुलासा प्र० १ **अरस से आया असराफील, दिया कै विध सूर बजाये, सो सोर पड़या ब्रह्मांड मे, पाक किये काजी कजाये ।८६।**

अर्थ: —लाहूत धाम से असराफील-प्राणनाथ आये इन्होंने तारतम वाणी रूपी स्वर को फूँका जिसके स्वर का प्रभाव सारे ब्रह्मांड में पड़ा वह न्यायी हो निर्णय कर सबको पवित्र कर दिया ८६ ।

अस्तु इनके ग्रन्थ की संगति के अनुसार उक्त चौपाइयों से स्पष्ट है कि इन्होंने असराफील, ईमाम, महंमद अपने को ही कहा है ।

मा० सा० प्र० ५ **हके आदम कह्या रसूल को ।४२।**

क्यामत नामा प्र० ८ **ईसा आदम महंमद नाम ये तीनों एक मिल भये ईमाम ।६० ।**

अर्थ :—खुदा ने महंमद को आदम कहा है ४२ ईसा, आदम, महंमद, इन तीनों के एक में समावेस होने से ईमाम अर्थात् प्राणनाथ कहे गये ।६०। इस तरह प्राणनाथने आदम अपने को कहा है और अवलीस विष्णु को अथवा विष्णु के मन को भी इबलीश संज्ञा दिया है ।

मा० सा० प्र० ६ **कह्या दज्जाल अस्वार 'गधे पर, काना आँख न एक, हक को न देखे आँख जाहेरी, रूह नजर न वातून नेक ।१। आजाजील काँना तो रानिया जो वातून नजर**

करी रद, देख्या ऊपली आँख सों आदम वजूद गलद ।२।

अर्थ :—यह पापात्मा विष्णु गदहे पर सवार है इसके एक आँख न होने से काना है खुदा को वाह्य नेत्रो से नही देख सकता निश्चित रूप से इसके हृदय के नेत्र नही हैं १। अजाजील—विष्णु काना तो है ही है किन्तु यह वहिश्त से तिरस्कृत भी है जिससे इसके हृदय के नेत्र नष्ट हो गये हैं इन्होंने ऊपरी आँखों से खुदा को देखना चाहा इस आदमी का शरीर नाशवान है २। क्या० ना० व० प्र० ६।

एह दज्जाल जो अजाजील सब मे दम इनका कमसील, न करे सेजदा ऊपर आखरी आदम, फेरया जाहेर कलांम अल्ला का हुकुंम ।२१।

अर्थ :—यह अधर्मी जो विष्णु है इस नीच की शक्ति संसार के सब प्राणियो मे है इसने आखरी आदम—प्राणनाथ को नमन नहीं किया इसने प्रत्यक्ष रूप से खुदा की आज्ञा का उल्लंघन किया ।२१। मा० सा० प्र० ५।

हके आदम कह्या रसूल को, वह तो अवली से किया, ख्वार, गेहूँ खिलाये काढया भिस्त से, करके गुन्हेगार ।४२।

अर्थ :—खुदा ने महम्मद को आदम कहा है सैतान विष्णु आदम रूप महम्मद को नमन न करने से बड़ा ही अपराध किया है जिस कारण अपराधी बनाकर वहिश्त से गेहूँ खिला कर निकाल दिया गया है। ४२।

दज्जाल एक आँख जाहेरी, कैविध तिनको लानत करी, नाही दज्जाल आँख बातूनी, जासो मारफत पाइए धनी ।३४।

अर्थ :—दज्जाल विष्णु के वाह्य एक आँख है इसे कई प्रकार से धिक्कार दिया गया है इसके आन्तरिक नेत्र नहीं है जिससे धनी अर्थात् प्राणनाथ खुदा की पूर्ण पहचान हो सके ३४। क्या० ना० व० प्र० ६।

खोलने न दे आँख अंदर, दिल पर दुश्मन जोरावर, पात साई करे सबो के दिल पर, ए जो बैठाले कुफर।३५।

अर्थ :— विष्णु प्रत्येक मनुष्य के दिल पर बैठा हुआ ऐसा ताकत वर दुश्मन है कि किसी भी मनुष्य के आन्तरिक नेत्रो को खोलने नहीं देता यह तो अधर्म-पाप को लेकर सबो के हृदय मे बैठा हुआ बादशाही कर रहा है। ३५।

छठे सिपारे लिख्या इन पर, ईसा मारसी इन काफर।३६।

अर्थ :—कुरान के छठमे सिपारे में विष्णु केलिये लिखा हुआ है कि इस अधर्मी को देवचन्द्र मारेंगे।३६। खुलासा प्र० १६।

विष्णु ब्रह्मा रुद्र की साहेबिया बुजरक, ए चौंदे तवक की दुनिया, जाने याही को हक।३३। खुदा याही को जान ही, जो मलकूत मे त्रैगुन, कदी ले इलंम आगू चले, गले ला मकान और सुन।३५। ए जो खावंद मलकूत के सो ढूँढ़े हक को अटकल, रात दिन करे सिफते, पर पावे नही असल।३६।

अर्थ :—चौदहो लोको मे ब्रह्मा, विष्णु, शंकर की बड़ी बड़ाई है दुनिया इन्हीं को खुदा जानती है ३३। ये जो वैकुण्ठ के त्रिगुणात्मक ब्रह्म है इसी को खुदा जानते हैं यदि कोई ज्ञान प्राप्त कर आगे बढ़ता है तो निराकार शून्य मे जाकर गल जाता है। ३५ ये जो वैकुण्ठ के

स्वामी त्रिदेवा हैं वे खुदा को अनुमान से ढूँढ़ते हैं और रात दिन उसकी बड़ाई करते रहते हैं किन्तु सत्य खुदा को नहीं पाते ३६। मा० सा० प्र० ३।

सिपारे चौवीस मे मिने, लिखी सूरत अवलीस, जल थल सवो मे ए कह्या, याको पूजे कर जगदीश ।२।

अर्थ :—कुरान के चौबीसमे सिपारे मे इस सैतान विष्णु की सूरत लिखी हुई है कि ये सर्वत्र जल थल मे व्याप्त हैं इसको लोक जगत का स्वामी मानकर पूजते हैं २। खुलासा प्र० २।

सो जबराईल जवरूत से आगे लाहूत मे न जवाए, नूर तजल्ला की तजल्ली, पर जलावत ताए ।५४।

अर्थ :—अक्षर धाम के आगे लाहूत धाम अर्थात् महम्मद के धाम मे उस विष्णु से नहीं जाया जाता खुदा का तेज उसके पैरो को जलाने लगता है ५४। सनंध प्र० १४।

अनेक अवतार तिर्थंकर, कै देव दानव वड़े वल, वुजरक नाम धराइया, पर छोड़े न काहू छल ।१६।

अर्थ :—हिन्दुओ के अनेक अवतार व जैनियो के तिर्थंकर और जिन्होंने अपना वहुत वड़ा नाम धराया है ऐसे महा शक्तिशाली देवता और दानवो को भी माया ने नहीं छोड़ा १६। सनंध प्र० १५।

कोई कहे पारव्रह्म वड़ा, कोई कहे पुरुपोत्तम, वेद के वाद अंधकारे, करे लड़ाई धरंम ।१७।

अर्थ :—वेद के सभी वाद विषय अज्ञानमय है क्योंकि कोई पारब्रह्म को और कोई पुरुपोत्तम को बड़ा कहता है ये धर्म के लिये लड़ाई करते हैं। १७। सनंध प्र० १५।

ए नख सिख लो देखिया, बड़ा दज्जाल का रूप ।३९। लाए नारायण कर सेवही ऐसी एकुफरान, पीर जैसे मुरीद तैसे एक रस ए निरवान ।४०।

अर्थ :—इस अधर्मी विष्णु के रूप को हमने नख से सिर तक विचार कर देखा है कि इसका बहुत बड़ा रूप है ।३९। यह दुनिया इतनी अज्ञानमय है कि इसे नारायण कह कर पूजती है जिस तरह गुरुओं मे अज्ञानता उसी तरह उनके शिष्यों मे, निश्चय ही दोनों एक समान हैं ४० । सनंध प्र० २४ ।

अजाजील और काफर, तिनो भी सुख नेहे चल, बरकत इन मोमिन की, साफ किए सब दिल ।७४।

अर्थ :—इन मोमिनो के कारण (कयामत के समय) सबों के दिल को शुद्ध कर विष्णु और हिन्दुओं को निश्चल सुख होगा ७४ ।

काफर रूह भी पाक होएसी, अन्दर आग जलाये ।
मोमिनो मुस्लिम खातर, भिस्त जो देसी ताये ८० ।

अर्थ :—अंदर अग्नि जला कर हिन्दुओं की भी आत्मा पवित्र होगी मुस्लिम मोमिनो के कारण इन्हें भी बहिश्त दिया जायगा ८० ।

सनंध प्र० ३८ **अजाजील भूल्या नही, परहुकमे भुलाया ताये, ओतो सिरले हुकम, खड़ा है ।एक पास २३। बुरका डाल अजाजील पर, हुकमे किया रद, सेजदा कराया आदम पर जित मेहदी मोमन महंमद ३८ ।**

अर्थ :—विष्णु आदम-महंमद रूप प्राणनाथ को नमन करना नहीं भूला किन्तु खुदा के हुक्म ने सेजदा करना भुला दिया वह तो खुदा के हुक्म को सिर मे धारण कर एक पैरो खड़ा है ३३। खुदा ने जिस समय मेहेदी-प्राणनाथ मोमन-मुस्लिम भक्त और महंमद रूप आदम को नमन करने का हुक्म दिया था उस समय विष्णु पर अज्ञान का पर्दा डाल कर उसे रद्द-बरबाद कर दिया ३८।

क्या० ना० व० प्र० २४ **सब जले जल्या अजाजील जाए उठाया असराफील ५। यों क्यामत हुई जाहेर दिन, महंमदे करी उमत रोसन ६।**

अर्थ :—क्यामत के समय संसार के सभी प्राणी और भगवान विष्णु भी नर्क की अग्नि में जला विष्णु को जलते देखकर प्राणनाथ ने रक्षा किया ५। इस तरह क्यामत के दिन जाहेर हुये प्राणनाथ ने मोमिनो के लिये ये बातें प्रगट कर दी है ६।

सनंध प्र० २५ **दीन मुस्लिम जो होएसी, सो लेसी शब्द घर मूल ३१। भिस्त चौदे तवक, देसी दुनिया दीन, देसी ब्रह्मा रुद्र नारायन को, आखर दे आकीन ४५।**

अर्थ :—जो मुस्लिम धर्म के होंगे वे धाम सम्बन्धी खुदा के मूल शब्दों को ग्रहण करेंगे ३१ चौदह लोकों के प्राणियों को दुनियाँ के सभी धर्मावलम्बियों को और ब्रह्मा रुद्र नारायण को भी मुस्लिम धर्म में विश्वास दे कर भिस्त-मोक्ष देंगे ४५।

नोट :—विष्णु के सम्बन्ध को निम्न चौपाइयाँ विरुद्ध अर्थ को प्रगट करती है।

सनंध प्र० २३ **जबराईल असराफील, हक नजीकी निदान, सो भी आये उमत वास्ते, जो दिल मोमन अरस सुभान १२।**

अर्थ :—विष्णु और असराफील ये दोनों निश्चय खुदा के नजीकी हैं जिन मोमिनो का दिल खुदा का घर है ऐसे उमतो के लिये आये हैं १२।

सनंध प्र० २४ **यामे रूह अजाजील असल, दूजी रूह कुफरान ७०।**

अर्थः—इसमे जो विष्णु की रूह है वह असल सत्य है और दूसरों की आत्मा अधर्म युक्त है ७०।

खुलासा प्र० ३ **बड़ा फिरिस्ता मलकूत का, जाये न सके जबरुत जित, सुनने हकीकत कुरान की, रखता नही ताकत ४३।**

अर्थ :—जब कि बैकुण्ठ का सबसे बड़ा देवता विष्णु अक्षर धाम तक नहीं जा सकता फिर वह लाहूत धाम से कुरान सम्बन्धी ज्ञान विषयो को सुनने की ताकत कैसे रख सकता है ४३।

विष्णु सम्बन्धी मीमांसा

इनकी रचना में सबसे बड़ा दोष यह है कि वक्तव्य विषयों मे एक वाक्यता नहीं है सनंध प्र० २३ चौ० १२ में कहते हैं कि विष्णु खुदा का नजदीकी है जबकि विभिन्न चौपाइयों में कहा गया है कि खुदा के पास जाने का प्रयत्न करने पर उसके पैर जलने लगते हैं। व, खुलासा प्र० ३ चौ० ४३ में कहते हैं कि वह अक्षर धाम तक नहीं जा सकता और खुलासा प्र० २ चौ० ५४ में अक्षर धाम तक

पहुंचने का कथन है इसी तरह सनंध प्र० २४ चौ० ७० में विष्णु की रूह को सत्य कहा जब कि इसके विपरीत विभिन्न चौपाई मे अधर्मी नीच एक आँख का काना नर्क में जलने को कहा।

इन्होंने विष्णु को खुदा का जोस भी बताया है इस कथन से तो इनका सारा साहित्य चौपट हो जाता है क्योंकि प्राणनाथ ने खुद कहा है कि मुझमें खुदा का जोस आया है जिससे मैं खुदा रूप हूँ ऐसे हो विष्णु में यदि खुदा का जोस है तब तो विष्णु भी खुदा हो जाता है। उक्त विषय को प्रमाणित करने वाली चौ० निम्न है।

(जवराईस जोस धनी का)

अत: एक ही विषय को दो प्रकार के कथन से कौन सी बात मानी जाय वर्णन में एक वाक्यता न होने से इनका सारा ग्रन्थ असत्य प्रमाणित होता है।

हरिहर निन्दा सुनै जो काना, पाप होय गोघात समाना।

रामचरित मानस

पाठको विष्णु सम्बन्ध की उपर्युक्त चौपाइयों को आपने पढ़ा होगा स्वामी प्राणनाथ जी इसी ज्ञान की प्रतिभा से अपने को कृष्ण होने का भी दावा रखते हैं। इनकी लेखनी और जिह्वा स्वतन्त्र है चाहे जिसको जो कुछ भी कहे। किन्तु किसी के प्रमाणहीन कथन से सत् पदार्थ का हनन नहीं होता। जो वेद को प्रमाण नहीं मानते ऐसे महान् तार्किको के द्वारा भी उस परमतत्व विष्णु का खन्डन नहीं हो सकता क्या संसार में कोई ऐसा मत है कि वेद को सप्रमाण अतिक्रमण कर जाय इन्होंने वेद विष्णु के लिये केवल कुत्सित शब्द कहे कोई विद्वत्ता पूर्ण उसके विषय को दूषित नहीं ठहराया। ये लिखते हैं

कि मुफ आखरी आदम को विष्णु ने नम्न नहीं किया कलाम अल्ला के हुक्म का उल्लङ्घन किया इसके हृदय के नेत्र नहीं है जिससे प्राणनाथ को पहचान सके यह दोजख की अग्नि में जला प्राणनाथ ने रक्षा किया इत्यादि अनेकों बातें जो इन्होंने कही है इन सब विषयों का क्या प्रमाण है केवल कथन मात्र से ये बातें प्रमाणित नहीं मानी जाती अत: इनका सम्पूर्ण ग्रन्थ मिथ्यावादो से भरा हुआ है ऐसा ही इन्होंने किरंतन ग्रन्थ में भी लिखा है कि हरिद्वार में हमारी आरती करने के लिये ब्रह्मा, विष्णु, शंकर आदि सभी देवता उपस्थित हुये किन्तु ऐसी असम्भव बातों पर विश्वास ही कौन करेगा असत्य वादिता की भी कोई सीमा होती है इनका सारा साहित्य मिथ्यावादो से भरा हुआ है।

द्वे वाव ब्रह्मणो रूपे मूर्त चैवा मूर्त च, श्रुति बृहदारण्यक। वेदो मे विष्णु के दोनों रूप बताया है एक मूर्तमान दूसरा अमूर्त (निराकार) अत: विष्णु का जो अमूर्त तत्व है उसका संसार में कौन सा तार्किक है जो अपने बौद्धिक तर्क के द्वारा उसका वेधन कर सके वह तत्व तो अवाङ् मनसा गोचर है वह आकाश से भी अत्यन्त सूक्ष्म है आकाश को कोई कहे कि हमने छेदन भेदन ग्रहण दहन क्लेदन स्पर्श किया यह अनुभवादि प्रत्यक्ष प्रमाणों द्वारा मिथ्या है। उसके असीम अनन्त विभु होने से प्राणनाथ के कल्पना किये हुये खुदा के धाम में भी पूर्ण रूपेण स्थित है क्योंकि वह अनन्त और व्यापक है जो अनन्त है उसकी इयत्ता तुम नहीं कर सकते कि लाहूत धाम में जाने से उसके पैर जलने लगते हैं वह अपाणिपाद है। पैर कैसे जलेंगे जाने का प्रयत्न ही क्यों करेगा। यदि वह वहाँ न होता तो जाने का प्रयत्न करना सम्भव हो सकता था वह तो तुम्हारे बुद्धि से कल्पना किये हुये खुदा के धाम से भी परे है। वेदों का कथन है (**यो वृद्धेः**

परस्तुसः) इन्होंने जो निराकार ब्रह्म को शून्य मान कर अभाव अर्थ ग्रहण किया है यह गलत है वह किसी के बुद्धि का विषय न होने से चाहे भले ही कोई शून्य की कल्पना करे किन्तु वह सर्वज्ञ सर्व शक्तिवान है। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है अपने ही शरीर को देखिये कि सूक्ष्म शरीर में स्थित जीवात्मा को क्या किसी डाक्टर वैज्ञानिकों ने देखा है कि उसका क्या रूप है यह तो सत्य है कि किसी ने नहीं देखा अतः किसी इन्द्रियों के द्वारा उसका प्रत्यक्ष न होने से जीवात्मा अभाव का प्रति पक्षी शून्य नहीं है जीवात्मा के शरीर में स्थित रहने पर सब क्रियायें प्रत्यक्ष देखी जाती है। इस प्रत्यक्ष प्रमाण से सिद्ध है कि इन्द्रियों से प्रत्यक्ष न होने वाले शरीर से जीवात्मा सत रूप से विद्यमान है। उसी तरह परमपिता परमेश्वर भी किसी इन्द्रियों का विषय न होने से शून्य होते हुये भी सर्वज्ञत्वादि गुणो से युक्त है।

वेद का कथन है। **अन्तः शून्यं बहिः शून्यं शून्य कुम्भमिवाम्वरे, अन्तः पूर्णं बहिः पूर्णं पूर्णं कुम्भमिवाम्वरे।** जैसे घट मे स्थित आकाश घड़े के बाहर और भीतर भी शून्य है। और उसी घड़े मे आकाश बाहर और भीतर पूर्ण रूपेण स्थित भी है। इसी तरह वह निराकार होते हुए भी पूर्ण रूपेण सत रूप से विद्यमान है। किरंतन प्र० १०७।

पाँच तत्व गुन तीनो ही, ए गोलोक चौदे भवन।
निरगुन सुन या निरंजन, ज्यों पैदा त्योही पतंन।८।

अर्थ :—पाँच तत्व सत रजतम त्रिगुणात्मक ब्रह्म गोलोक सहित चौदहो लोक निर्गुण शून्य और निरंजन जैसे ही ये उत्पन्न है उसी तरह इनका विनाश भी है। उक्त चौ० से उन्होंने वेदो से पतिपादित निर्गुण ब्रह्म को भी विनाशसील बताया है। अस्तु इस विषय का

निराकरण पूर्वोक्त प्रकार से ही समझना चाहिये व इसका विवेचन अन्य अध्यायों मे हो चुका है।

इन्होने ब्रह्मा, विष्णु को भी मोक्ष देना कहा है। इस कथन से इनमे राग द्वेष की भावना स्पष्ट है। ये अपने को खुदा कहते हैं खुदा के लक्षण प्रगट करने वाले वाक्यों को देखिये। राग द्वेष का अभाव तो मुमुक्षु पुरुषों में ही होना चाहिये। मुमुक्षुओं के लक्षण गीता शास्त्र मे देखिये। प्राणनाथ जी मे मोक्ष के कारण रूप योग बुद्धि के अभाव होने से उसका कार्य भूत मोक्ष इन्हें कभी सम्भव नहीं दूसरे को क्या मोक्ष देंगे। गीता अ० २ श्लोक ४५ मे निर्द्वद्व शब्द की व्याख्या कर देना चाहता हूँ। निर्द्वद्वश्च:—अय अर्जुन इष्ट और अनिष्ट ये दो पदार्थ द्वंद्व शब्द वाचक हैं और राग द्वेष के उत्पन्न करने वाले हैं उनमें समबुद्धि होकर उनसे निकल जाओ। इनमे राग क्या है कि सभी कोई हमारे चरणों की वन्दना करते हुये पूजा आरती करें, द्वेष वैदिक मत से है कि इसके सिद्धान्तों को दूषित बतलाने से इसे त्याग कर हमारी उपासना करेंगे। अत: निर्द्वंद्वों भव—इस कृष्ण वाक्य से आप मोक्ष के अधिकारी भी नहीं होते। जो वास्तव मे कृष्ण नारायण स्वरूप है उन्हीं को दोजख में जलाकर मोक्ष देना बताते हैं इससे भी सिद्ध है कि ये कृष्ण के उपदेसक भी नहीं हैं। इनके मत वाले जो अपने को कृष्ण प्रणामी कहते हैं वे बड़ी भूल मे हैं।

इनके प्रत्येक ग्रन्थ के अध्ययन से स्पष्ट है कि इन्हें वैदिक साहित्य का ज्ञान नहीं था इनमें विदेशी साहित्य का प्रभाव स्पष्ट है।

वेद के वास्तविक ज्ञान को सर्व साधारण मनुष्य नहीं समझ सकते क्योंकि इसका वास्तविक ज्ञान शास्त्रों के अध्ययन से ही हो सकता है। संस्कृत वाङ्मय दो तरह का है शास्त्र और काव्य

जिन्होंने पाणिनि, गौतम, कणादि ऋषियों के शास्त्रों का अध्ययन नहीं किया है वे काव्य ज्ञान मे व्युत्पन्न नहीं हो सकते। अत: काव्य ज्ञान के पूर्व शास्त्र ज्ञान की आवश्यकता है। अतः प्रथम शास्त्रों का अध्ययन करे जैसे बिना दीपक के अंधकार में किसी वस्तु का प्रत्यक्ष नहीं होता उसी तरह काव्य ज्ञान के लिये प्रकाश स्थानीय शास्त्र हैं वे काव्य दो प्रकार के होते हैं। (१) पौरुषेय—किसी पुरुष के द्वारा बनाये हुये। (२) अपौरुषेय—उससे भिन्न अनादि, जिसकी किसी पुरुष द्वारा रचना न हो अर्थात् ईश्वरोक्त वेद। अस्तु शास्त्राध्ययन के बाद ब्रह्म विद्या की प्राप्ति के लिये, विवेक वैराग्य शमदमादि सम्पत्तियों से युक्त हो ब्रह्म निष्ठ तत्व दर्शी महापुरुषों के पास समित्पाणि हो जाना आवश्यक है वे तत्वदर्शी वेद के अन्तिम सिद्धान्त जो ज्ञान की पराकाष्ठा है उसका उपदेश करेंगे। जिस तत्व ज्ञान से मानव के संसार वृद्धि का मूल हेतु जो भेद ज्ञान है वह विनष्ट हो जायगा और एकत्व की अनुभूति होने लगेगी।

वेदो में नारायण से भिन्न अन्य कोई सत्ता नहीं है वह समस्त विश्व रूप और विश्व से परे जिसको वेदो मे परात्पर अर्थात अक्षर से भी परे निर्गुण तत्व बताया है वह नारायण ही है। कैवल्योपनिषत्—स ब्रह्मा स शिव: सेन्द्र: सोऽक्षर: परम स्वराट स एव विष्णु: सप्राण: सकालोग्नि: सचन्द्रमा: ८ स एव सर्वं यद्भूतं यच्च भव्यं सनातनम ज्ञात्वातं मृत्यु मत्येति नान्य: पन्था विमुक्तये ६। नारायणोपनिषत् नारायणं पर ब्रह्म तत्वं नारायण: पर: यत्किंचिज्जगत्सर्वं व्याप्य नारायण: स्थित:। इस प्रकार जो नाना देवी देवताओं को भिन्न समझता है वह वेदान्त के रहस्य को नहीं समझता। सर्व देव•नमस्कारं केशवं प्रति गच्छति। कोई किसी देव की पूजा करता है वह विष्णु की ही पूजा करता है रह गया ज्ञानपूर्वक

अभेद उपासना होना चाहिये जो नाना देवी देवताओं को नारायण से भिन्न मान कर उपासना करता है वह वेद के ब्रह्म विद्या को नहीं जानता वेद की स्पष्ट घोषणा है। **मृत्योः स मृत्यु माप्नोति य इह नानेव पश्यति।** जो ईश्वर तत्व मे नानात्व देखता है वह मृत्यु से मृत्यु को प्राप्त होता है इस तरह वेद के सार्वभौम व्यापक सिद्धान्त से किसी भाषा भाषियों से द्वेष नहीं रहता अल्लाह खुदा भी विष्णु-मय है। खुदा अन्य है, विष्णु अन्य है विष्णु नर्काग्नि मे जलने वाला है इस तरह भेद प्रतिपादक वाक्य तत्व ज्ञान से रहित है और राग द्वेषादि के सूचक हैं।

प्राणनाथ जी ने वेद ऋषि देवताओं के लिये जो कुत्सित शब्दों का प्रयोग किया है उसका मैं प्रतीकार नहीं करना चाहता क्योंकि उनकी आत्मा में भी हमारे वेद भगवान का निवास है इसलिये उन्हें भी नमन करता हूँ रह गया जो इन्होंने अपनी अज्ञतावश अनात्म ज्ञान का परिचय जन समूह को ग्रन्थो मे दिया है उसके समाधान हेतु यह ग्रन्थ लिखना पड़ा है। इनके धर्मानुयायी आवेश मे आकर धैर्य न छोड़े पक्षपात से रहित हो ग्रन्थ का चिन्तन करे और देश समाज का कल्याण हो इस सेवा भाव से ही यह लिखा गया है।

इस्लाम धर्म का झंडा

मारफत सागर प्र० १०

कहे आयते हदी से जाहेर, नूर महम्मदी झंडा जे दिन दिन घड़ी घड़ी पल, नूर बढ़ताई देखोगे।४। ना सक महम्मद दीन मे, नासक महम्मद सरियत नासक सुन्नत जमात मे, कहे यों हदीस आयत सूरत।३०।

अर्थ :—हदीस की आयते स्पष्ट रूप से कह रही है कि जो तेजवान महम्मदी झंडा है उसका तेज प्रति दिन प्रति घड़ी और प्रत्येक पल में बढ़ता ही नजर आयेगा ४। इस्लाम धर्म मे किसी प्रकार शंसय नहीं है और न इस्लाम धर्म के कर्म मे ही कोई सक है मुन्नियो का समूह अर्थात् ब्रह्म सृष्टियों मे भी कोई संदेह नहीं है इस प्रकार कुरान की आयते कहती हैं ३०। सा० सा० प्र० ११।

सों नूर झंडा बीच हिन्द के किया खड़ा नूर इस्लाम,
इत आई सवन्यामते, और आया अल्ला कलाम ।६।

अर्थ :—इस तरह प्रकाशवान इस्लाम धर्म का झंडा हिन्दुस्तान में खड़ा किया गया इस झंडे मे अरब देशस्थ खुदा सम्बन्धी सब धन आया और कुरान भी आया ६। खुलासा प्र० ४।

इन महम्मद के दीन मे, सक सुभे जरा नाहे, सो हके
दिया इलंम अपना, ए सिफत होए न इन जुवांए ।१०।

अर्थ :—इस महम्मदीय धर्म मे किन्चित मात्र, सक सुभा नहीं है खुदा ने इस अपने ज्ञान को मुझे दिया है इसकी बड़ाई मुख से वर्णन नहीं की जा सकती १०। सनंध प्र० ३६।

जब आया रब आलमीन, तब आया सबो आकीन, और
मजहब सब उड़ गये, एक खड़ा महम्मद दीन ।१६।

अर्थ :—जब संसार का स्वामी[1] आ गया तब सबों को विश्वास हो गया और दुनियाँ के सभी मजहब—धर्म उड़ गये केवल इस्लाम धर्म कायम रह गया १६। सनंध प्र० ११६।

१—प्राणनाथ।

ए कलमा जो समझ हा, सोई महम्मद दीन, जिन ए कलमा हक किया, मै तिनका जामिन ।२३। जिन ए मेरा कलमा, लिया न माहे वाहेर सो दुनियां आखर दिनो, जलसी आग जाहेर ।३५।

अर्थ :—इस कलमा अर्थात् कुरान के मन्त्र का अभिप्रेत अर्थ को प्रकाशित करने वाली हमारी तारतम वाणी को जो समझ चुका है वही इस्लाम धर्म का है और जिसने इस कलमे को सत्य माना है उसका उत्तरदायित्व मुझ प्राणनाथ पर है ।२३। जिसने हमारे कलमे को हृदय से और वाह्य व्यवहारो से नहीं ग्रहण किया उन मनुष्यो को क्यामत के समय मे दोजख की अग्नि मे प्रत्यक्ष जलना पड़ेगा ३५। सनंध प्र० २२।

लाख वेर कह्या रसूले, जन जन सो लर लर ।२। कोट वेर जाहेर सवो, रसूले फुरमाया जेह सो कलमा सिर लेए के, पाँउ भरे हम एह ।३।

अर्थ :—महम्मद सा० ने लाखो बार प्रत्येक व्यक्ति से लड़ लड़ कर कहा २। महम्मद सा० ने कुरान मे जो वर्णन किया है वह करोड़ों बार सब को जाहर है उसी कुरान के कलमे (मंत्र) को सिर मे धारण कर हमने इस तरह अर्थात् इस्लाम मत प्रचार करने का कदम उठाया है। सनंध प्र० २१।

इन कलमे के शब्द से, सब छूटेगा संसार ।४८। ए कलमा इन दुनी का, सब दुख कर सी दूर, तिनको भी भिस्त होए सी, जिनके नही अंकूर ।४६।

अर्थ :—इस कलमे (कुरान के मंत्र) से सब संसार मुक्त हो जायगा ४८। और यह कलमा संसार के सभी दुखो को दूर करेगा जिनका खुदा से पूर्व सम्बन्ध नहीं है उनको भी बहिश्त (स्वर्ग) दिया जायगा ४६। सनंध प्र० २६।

कुरान जिनो न विचारिया, जलो सो तिनकी मत, जो जागी रसूल हुकुनामे, हाए हाए आग।परो गफलत ।२२।

अर्थ :—जिस व्यक्ति ने कुरान के अर्थों पर विचार नहीं किया उनकी बुद्धि जल जाय रसूल की आज्ञा को पाकर जो इस्लाम मत मे नहीं जागृत हुआ हाय हाय इस प्रकार की भूल करने वाले प्राणी पर आग पड़े २२। सनंध प्र० २७।

बलिहारी महम्मद की, बलिहारी मुसाफ, बल बल जाउँ काजी की, जिन आए किया ईसाफ ।४। बड़े बड़े ज्ञानी गुनी मुनी, पर पाया न काहूँ हारद कथ कथ सब खाली गए, बिना एक महम्मद ।७।

अर्थ :—महम्मद के लिए बलिहारी है कुरान के लिये भी बलिहारी है और काजी रूप प्राणनाथ के लिये भी बल बल जाता हूँ जिन्होंने क्यामत के समय आकर न्याय किया ४। संसार में बड़े बड़े ज्ञानी ऋषि मुनी हो गये किन्तु किसी ने सत्य खुदा को प्राप्त नहीं किया एक महम्मद के अलावा सभी कह कह कर खाली रह गये ७। सनंध प्र० ३०।

धनं रसूल धनं फुरमान, धनं आया जिद खातर, धनं मेहेदी महम्मद रूह अल्ला, धनं धनं ए आखर ।३७।

अर्थ :—महम्मद और कुरान को धन्यवाद है और जिन ब्रह्म सृष्टियो के निमित्त महंमद और कुरानआया उन्हें भी धन्यवाद है।

प्राणनाथ, अरब वाले महम्मद, देव चन्द्र को धन्यवाद है और इस क्यामत के समय को भी धन्यवाद है ।३७।

मा० सा० प्र० ३ **आयते हदी से सब कहे, खुदा एक महम्मद बर हक, और न कोई आगे पीछे बिना महम्मद बुजरक ॥८८॥**

अर्थ--कुरान की आयते हदी से सब कह रहे हैं कि एक महम्मद ही सत्य खुदा है महम्मद के बिना कोई भी आगे पीछे सर्वोच्च श्रेष्ठ तत्व नहीं है ॥८८॥

क्यामतनामा बड़ा प्र० ५ **जो कोई होसी वे फुरमान, नेहेचे सो दोजखी जान, ताको ठोर ठोर लानत लिखी, सो जाहेरियो ने हिरदे रखी २१ ।**

अर्थ—जो कोई भी कुरान के सिद्धान्त को नहीं अपनायेगा उसे निश्चय ही दोजख की अग्नि में जलना पड़ेगा उसके लिए कुरान मे प्रत्येक जगह धिक्कार दिया गया है इन बातों को ऊपरी अर्थ करने वालों ने छिपा रक्खा है २१। क्यामत ना० ब० प्र० ८

बिना मोमन ए जो और, ताको दोजख भिस्त बीच ठौर, और काफर दोजख मे जल, देखे भिस्ती मरे जल ३८। भिस्ती देखे दोजखियो दुख, देखे मोमिन होवे सुख ।३९।

अर्थः—बिना मुस्लिम के जो अन्य प्राणी हैं उनके लिये स्वर्ग मे दोजख का स्थान नियत है भिस्त में रहने वाले मोमिन समाज हिन्दुओं को नर्क की अग्नि मे जल कर मरते हुये देखेंगे ।३८। भिस्त में रहने वाले मोमिनो का समूह उन नर्कियों के दुख को देखकर आनन्द मनायेंगे ३९ ।

खुलासा प्र० २ जबरूत ऊपर अरस लाहूत इत महंमद पोहोचे हजूर रद बदल बंदगी वास्ते करी हक सो आप मजकूर ५५। हक सूरत किन देखी नहीं है कैसी सुनी न किन तरफ न जानी चौदे तबक मे महंमद पोहोचे ठोरतिन ५६। करी महंमदे मजकूर तिनसे सुने हरफ नब्बे हजार जहूद तिन साहब को कहे सुन निराकार ६०। ए भी कहे हक की सूरत नहीं जो कहावे महंमद के सोई शब्द सुन पकड़्या आगू काफर कहते थे जे ६१।

अर्थः—अक्षर धाम के आगे लाहूत धाम है इस धाम में खुदा के पास महंमद सा० पहुँचे हुये हैं सेवा के लिये निश्चय करके आपने खुदा से बात चीत की है ५५। चौदह लोको के किसी मनुष्य ने खुदा की सूरत को नहीं देखा और न किसी ने सुना ही और न किसी ने यही जाना कि वह किस दिशा की ओर है किन्तु मंहमद सा० उस स्थान तक पहुँचे हुये हैं ५६। उस स्थान पहुँच कर मंहमद सा० ने बात-चीत की और नब्बे हजार शब्द (कुरान) के सुना ऐसे खुदा को हिन्दू लोग शून्य निराकार कहते हैं ६०। और जो मंहमद धर्म के मुस्लिम है वे भी कहते हैं कि खुदा का कोई आकार नहीं है इन्होंने वही शब्द सुन कर पकड़ लिया है जो आगे अधर्मी हिन्दू लोग कहा करते थे ६१।

खुलासा प्र० ७ हाय हाय गिरो महंमदी कहा वही, कहे हक को निराकार, जो जहूदो ने पकड़्या, इनो सोई किया करार २३।

अर्थ:—हाय हाय ये महंमद जमात के तो कहलाते हैं किन्तु खुदा को निराकार बताते हैं इन्होंने वही निश्चय कर लिया है जो हिन्दुओं ने मान रक्खा था २३।

क्या० ना० ब० प्र० १ **हकुल्य कीन और सुन्नी जोए पेहेले ईमान ल्यावेगा सोए, पीछे जाहेर होसी साहेब तब तो ईमाम ल्यावेगे सब ४०।**

अर्थ:—पूर्ण विश्वास वाले जो सुन्नी मुसलमान हैं वे सबसे पहले हमारी बातों का विश्वास करेंगे और बाद में साहब के प्रकट होने पर सभी विश्वास ले आवेंगे ४०।

मीमांसक:—पूर्वोक्त चौ० से यह भी स्पष्ट है कि इन्होंने हिन्दुओं के बीच इस्लाम धर्म का झंडा खड़ा किया है और उस झंडे के नीचे अरब देशस्थ खुदा सम्बन्धी सब सम्पत्ति कुरान के सहित आना बताया है क्यामत के समय में मुझ आखरी महंमद के आने से संसार के सभी मजहब (धर्म) उड़ गये केवल इस्लाम धर्म कायम रह गया। कलिमा—कुरान के मंत्र से अभिप्रेत तारतम वाणी को जो समझ चुका है वही इस्लाम धर्म का है जिस व्यक्ति ने हमारे इस कलमे—तारतम वाणी को सत्य माना है उसका उत्तरदायित्व मुझ पर है। महंमद ही सत्य खुदा है महंमद के बिना कोई भी आगे पीछे सर्वोच्च श्रेष्ठ तत्व नहीं है। उक्त तीसरी चौ० से और भी स्पष्ट है कि कुरान के कलमा—मंत्र को हमने सिर मे धारण कर इस्लाम मत प्रचार करने का कदंम उठाया है वह कलमा मंत्र निम्न हैं (ला इलाह इल्लल्ला मुहम्मदुर्रसूलुल्ला)

जब इनका सारा ग्रन्थ महंमद मोमिन कुरान की प्रशंसा से भरा हुआ है तो इस्लाम संप्रदाय के मुस्लिम प्राणनाथ पर आखरी महंमद

और खुदा होने का विश्वास करें। हिन्दू समाज की क्या आवश्यकता है कि प्राणनाथ को महमद खुदा मान कर पूजन करें। जब कि इनका अनेको बार कथन है कि हिन्दू जीवात्मा असत् होने से खुदा के धाम मे नहीं जा सकते वहाँ केवल मोमिन ही जा सकते हैं ऐसा नियम होने से हिन्दुओं के बीच इस्लाम धर्म का प्रचार करना व्यर्थ है।

अस्तु इनके ग्रन्थ के आद्योपान्त विहङ्गावलोकन से यह स्पष्ट है कि इन्होंने हिन्दू संस्कृति वेद शास्त्र ऋषि मुनि २४ अवतार यहाँ तक की वेदों से प्रतिपादित परम तत्व विष्णु को भी अत्यन्त नीचा दिखाने का प्रयास किया हैं। और इनके विपरीत कुरान के आदेशों को सिर में धारण करते हुये इस्लाम मत प्रचार के लिये कदम उठाना कहा है अत: इनके ग्रन्थों से यह निर्विवाद सिद्ध है कि इन्होंने हिन्दुओं के बीच वाक् छल द्वारा प्रच्छन्न रूप से इस्लाम धर्म का उपदेश देकर स्वमत मे दीक्षित किया है। इनकी वाक् छल की नैतिकता उत्तरार्ध भाग व्रजरास आदिक अध्यायों को देखिये वहाँ भी यह सम्प्रदाय हिन्दू धर्म का कोई अंग नहीं पाया जाता हैं। जो पूजा आरती तिलक आदि देख इसे हिन्दू धर्म का अंग मानते हैं वे महान भूल में है वह पूजा आरती महंमद रूप प्राणनाथ की ही है। यदि कुछ ऐसा बाह्य व्यवहार नहीं अपनाये जाते तो हिन्दू समाज इस्लाम मे कैसे प्रवेश हो सकता है।

अस्तु इनके बाह्य और आन्तरिक व्यवहारों पर विचार करने से यह सिद्ध है कि यह समाज हिन्दू धर्म की तो कोई शाखा नहीं है। बल्कि इस्लाम मत की एक नवीन शाखा है जो हिन्दुओं को इस्लाम मत में दीक्षित करने की दृष्टि से तत्सम्बन्धी व्यक्ति द्वारा संचालित की गई है।

इस्लाम मत की शाखा होने पर भी इनकी अपनी भी विशेषता है वह यह कि बसरी रूप महंमद और कुरान से भी इनका तात्पर्य नहीं रहा अब तो आखरी महंमद और उनके बनाये हुये कुरान-एलान से तात्पर्य है अतएव वेद, कतेब[1] के अतिक्रमण करने से इनका मत निराधार प्रमाण सून्य हो जाता है।

हम यह चाहते है कि आर्यो मे जो विदेशी संस्कृति का गहरा प्रभाव पड़ा हुआ है उसे हटाने के लिये शिक्षित समाज प्रयत्नशील हो। प्रणामी हिन्दू समाज इस ग्रन्थ को पढ़कर अपने मे आमूल परिवर्तन ले आने का प्रयत्न करे। अपने देवालयों मे भगवान कृष्ण की मूर्ति स्थापित कर भागवत धर्म के अनुसार उनका पूजन करें और प्राणनाथजी की तारतम वाणी के सिद्धान्तों को सर्वथा त्याग कर अपने पूर्व रूप में स्थिर हो।

ॐ भद्रं कर्णे भिरिति शान्तिः

इति निजानन्द मीमांसाया मुत्तराधे भागे ग्रन्थोंपसंहार वर्णनं एकबिंशोध्याय: २१

१—अंजील, तौरेत, जंबूर, कुरान,—इन चारो ग्रन्थो को कतेब संज्ञा दी गई है।

शुद्धि अशुद्धिपत्र

पेज नं०	लाइन	अशुद्ध	शुद्ध
३६	४	बोल	बोला
३६	६	आलम	आतम
३६	१४	मानेगे	भानेगे
४०	३	भजन	भोजन
४२	१३	दखत	देखत
५१	२०	दिन	दीन
५३	८	सेखा	शेख
६६	८	माया	होजा
६७	१७	स्वामीजी पूछा	स्वामीजी से पूछा
६६	२५	ह	एही
७७	१५	आमूलत	आमूल्य
७६	२५	मिथ्या नहीं	मिथ्या ज्ञान नहीं

पेज नं० ८० के बाद पृष्ठसंख्या ६७ से ११२ छप गया है कृपया उसे पृष्ठसंख्या ८१ से ६६ समझ कर पढ़े ।

८३	प्रश्न ५	सम्दाय	सम्प्रदाय
"	"	वन प्रपाती	वनपाती
६०	१८	उसका	उसकी
६८	२०	सवबुद्धिहक	सर्वबुद्धिद्रक
१०२	२५	प्रयाग	प्रयोग
१०३	१०	से	के
१०६	७	का	की
११४	१६	यहाँ	यह

पेज नं०	लाइन	अशुद्ध	शुद्ध
१२०	५	ब्रह्म	ब्रह्
१२७	६	ब्रह्म	ब्रह्
१४७	२५	महंमद	महम्मद के
१७१	१०	कहे	हके
१७४	२५	विषय में कोई	×
१७५	३	सम्भव	संदेह
१७७	२३	किद्रतन	किरंतन
१७८	११	पाती	पाते
१८२	१६	स्थिति	स्थित
१८३	७	शरीर	इस हृदय
१८६	१६	ह	हो
१८८	३	हो	होना
२००	१०	के	को
२०२	३	महन्त	महल
२०३	१३	जामे चरण	जामे मे चरण
२०४	११	अट	ओट
२०४	१६	चाल	जाल
२०७	७	पिड	पिउ
२०७	१८	खूदा	खुदा
२१४	२५	धाम का वर्णन	धाम वर्णन
२३६	१२	अर्यद	अभेद
२३६	१८	शरीरी	शरीर
२३८	१७	शील	शीत
२३८	२६	देने	होने

पेज नं	लाइन	अशुद्ध	शुद्ध
२४३	५	और प्रशंसा	और कुरान की प्रशंसा
२४७	२६	सब	सर्वत्र
२६७	१६	मुर्दा	मुर्दार
२७०	१७	का	की
२७१	१	जगह	जगत
२८१	१६	स्वर्थ	स्वार्थ
२८२	६	दूरा	दूसरा
"	१६	हाता	होता
२८८	१	महंमद	महंमद न
"	८	इसका	इनका
"	१५	पी	पि
२८६	१८	सकता	सकते
२६३	२३	सधु	साधु
२६६	१२	इन्होंने सिद्धान्त इस्लाम	इन्होंने इस्लाम
२६८	१	सजति	सृजति
३०१	१०	पुरस्तान	पुरस्ताद्
३०२	३	चत्तुणादि	चणरादि
३०३	२	स्थान	संस्थान
"	१३	रूप	रूह
३१४	१२	विष्णु ही	विष्णु के ही
३१७	८	प्रतिपादन हैं	प्रतिपादन नहीं है

पुस्तक प्राप्ति स्थान

भीमसेन त्रिपाठी

ग्राम, पोस्ट-कपसा

रीवा (म० प्र०)